प्रकाशक
"भूगोल"-कार्यालय
प्रयाग

पहला संस्करण, जुलाई १९३१
दूसरा संस्करण, मार्च १९३५
तीसरा संस्करण, जुलाई १९३८
चौथा संस्करण, सितम्बर १९३९
पांचवां संस्करण, जुलाई १९४३
छठवां संस्करण, अगस्त १९४४
सातवां संस्करण, जुलाई १९४५
आठवां संस्करण, अगस्त १९४६
नवां संस्करण, अक्टूबर १९४७
दसवां संस्करण, अगस्त १९४८
ग्यारहवां संस्करण, जुलाई १९४९
बारहवां संस्करण, नवम्बर १९४९

मुद्रक

प्रस्तावना

आज से प्राय: ४० वर्ष पहले मैंने भारतवर्ष का अच्छा भूगोल अँग्रेजी में देखा। उसे देखते ही मेरे मन में यह विचार उठा कि हिन्दुस्तानी लोग अपने देश का भूगोल स्वयं क्यों नहीं लिखते हैं। आगे चल कर शायद इसी विचार ने मुझे प्रेरित किया।

मैं देश से परिचय प्राप्त करने के लिए भिन्न भिन्न भागों की यात्रा करने लगा। यात्रा से मुझे बड़ा लाभ हुआ। इसलिये कठिनाइयों से कुछ भी न डर कर, मैंने धीरे-धीरे सारे भारतवर्ष ब्रह्मा और लंका का पर्यटन कर डाला।

इस यात्रा के आरम्भ से लेकर अब तक भारतवर्ष के सम्बन्ध में मुझे जितने ग्रन्थ मिले, मैंने उन्हें बड़े चाव से पढ़ा। प्रस्तुत पुस्तक इसी यात्रा और अध्ययन के आधार पर १९२१ ई० में पहली बार प्रकाशित हुई।

पुस्तक को भूगोल के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने अपना कर मुझे आशातीत प्रोत्साहन दिया। इसीलिये आवश्यक परिवर्तन और संशोधन के साथ फिर पुस्तक को बारहवीं बार प्रकाशित कर रहा हूँ।

इस पुस्तक में प्रादेशिक विवरण के साथ-साथ मानवी भूगोल

को सब कहीं प्रधानता दी गई है। प्रथम प्रकरण में भारतवर्ष की भू-रचना जलवायु आदि का विवरण सामूहिक दृष्टि से किया गया है। दूसरे प्रकरण में प्रदेश के अनुसार राजनैतिक प्रान्तों का विवरण है। तीसरे प्रकरण में व्यापार सम्बन्धी बातें हैं। परिशिष्ट में उन उपयोगी तालिकाओं को दिया है जो भूगोल के विद्यार्थी को समय समय पर काम देंगी। उनकी सहायता से ग्राफ आदि क्रियात्मक पाठ हो सकेंगे। इनके अन्त में प्रश्न दिये हैं। जिनसे पाठक अपने भौगोलिक ज्ञान की परीक्षा कर सकते हैं।

मैं उन सब मित्रों का बड़ा ही कृतज्ञ हूँ, जिनकी कृपा से यह द्वादशावृत्ति प्रकाशित करने का मुझे अवसर मिला है।

२० नवम्बर, १९४९

रामनारायण मिश्र
"भूगोल"-कार्यालय,
प्रयाग।

विषय-सूची

भारतवर्ष

का

भूगोल

संसार के प्राकृतिक विभागों में भारतवर्ष का स्थान

भारतवर्ष का भूगोल

पहला अध्याय

पाकिस्तान और स्वतन्त्र भारत

जब भारतवर्ष स्वतन्त्र हुआ, तब देश का वह भाग अलग हो गया जहाँ मुसलमान बहुसंख्या में रहते थे। सिन्ध, बिलोचिस्तान, सीमाप्रान्त और पश्चिमी पञ्जाब प्रधान पाकिस्तान है। यह पश्चिमी पाकिस्तान कहलाता है। इसका क्षेत्रफल १,७८,००० वर्गमील है। पूर्वी पाकिस्तान में पूर्वी बंगाल और सिलहट का जिला शामिल है। पूर्वी पाकिस्तान का क्षेत्रफल ५४,००० वर्गमील है। पूर्वी पाकिस्तान पश्चिमी पाकिस्तान से स्थल मार्ग से लगभग १२०० मील दूर है। दोनों पाकिस्तानी क्षेत्रों का क्षेत्रफल २,३३,००० वर्गमील है। पाकिस्तान की जनसंख्या लगभग ६ करोड़ है। इसमें चार करोड़ मनुष्य पूर्वी पाकिस्तान में और २ करोड़ प्रधान पश्चिमी पाकिस्तान में रहते हैं। पश्चिमी पाकिस्तान रेगिस्तान है। इसी से यहाँ जनसंख्या कम है। पूर्वी पाकिस्तान प्रबल वर्षा और बाढ़ का प्रदेश है। यहाँ बङ्गाली मुसलमानों की अधिकता है।

पश्चिमी पाकिस्तान की लम्बाई ९०० मील और चौड़ाई औसत से २०० मील है। भारत का विभाजन किसी प्राकृतिक या वैज्ञानिक आधार पर नहीं हुआ। अतः पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच की

दूसरा अध्याय

भारतवर्ष का विस्तार और स्थिति

जिस देश में हम रहते हैं, उसकी स्थिति भूमंडल में बड़े महत्व की है। इसी स्थिति के कारण संसार का सभ्य समाज भारतवर्ष से सदा से ही परिचित रहा है।

भारतवर्ष की स्थिति को ठीक ठीक समझने के लिये संसार का नक़शा सामने रख लेना चाहिये। संसार का विशाल स्थलसमूह भूमध्य-रेखा के उत्तर में ही है। हमारे देश का अत्यन्त दक्षिणी भाग (लंका का दक्षिणी तट) भूमध्य रेखा से केवल ४०० मील (उत्तर की ओर) दूर है। पर कर्क रेखा भारतवर्ष को दो भागों में बांटती है। यह रेखा कच्छ, गुजरात, मालवा, मध्यप्रान्त, छोटा नागपुर होती हुई गंगा के डेल्टा को कुछ दूर दक्षिण में छोड़ देती है। इसी कर्क रेखा से कुमारी अन्तरीप तक दकिखन का पठार प्रायः समद्विबाहु त्रिभुज बनाती है। इस रेखा के उत्तर में एक दूसरे विषमबाहु त्रिभुज का उत्तरी सिरा पामीर के नीचे प्रायः ३७ अक्षांश पर काश्मीर का अत्यन्त ऊपरी स्थान है। उत्तरी ध्रुव इस स्थान से प्रायः साढ़े तीन हजार मील दूर है। चूँकि उत्तरी ध्रुव और भूमध्य रेखा के बीच सवा छः हजार मील की दूरी है इसलिए उत्तर से दक्षिण तक भारतवर्ष की अधिक से अधिक लम्बाई २,००० मील है। ८० पूर्वी देशान्तर काश्मीर के पूर्वी सिरे और लङ्का के पश्चिमी तट को पार करता है। भारतवर्ष की यही प्रायः मध्यवर्ती देशान्तर रेखा है। सौराष्ट्र (कच्छ) का पश्चिमी सिरा ६९ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है और आसाम का पूर्वी सिरा ९९ पूर्वी देशान्तर को छूता है। इस प्रकार पूर्व से पश्चिम तक भारतवर्ष का

'मा भी प्राकृतिक नहीं है। अरब सागर की ओर कच्छ के उत्तर में सिंध नदी के दक्षिणी मुहाने के पास से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सीमा आरम्भ होती है। कच्छ के उत्तर में पाकिस्तान की लूट-मार से सुरक्षित रखने के लिये भारतीय सरकार को यहां सैनिक प्रबन्ध करना पड़ा। जैसलमेर अब विशाल राजस्थान का अंग है। राजस्थान और पाकिस्तान कई सौ मील तक एक दूसरे को छूते हैं। फाजिल्का (फीरोजपुर) से पठान कोट तक पूर्वी पंजाब और पाकिस्तानी पश्चिमी पंजाब एक दूसरे को छूते हैं। यहाँ से उत्तर-पश्चिम की ओर भारतीय संघ का काश्मीर राज्य कई सौ मील तक पाकिस्तान के पश्चिमी पंजाब और उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रान्त को छूता है। लगभग ५०० मील तक नेपाल का स्वाधीन और मित्र राज्य अपने देश की उत्तरी सीमा बनाता है। इसके आगे चीन और बरमा के राज्य हैं। पूर्व में पूर्वी पाकिस्तान का पूर्वी बङ्गाल प्रान्त अपने पश्चिमी बङ्गाल और आसाम प्रान्त को छूता है।

दूसरा अध्याय

भारतवर्ष का विस्तार और स्थिति

जिस देश में हम रहते हैं, उसकी स्थिति भूमंडल में बड़े महत्व की है। इसी स्थिति के कारण संसार का सभ्य समाज भारतवर्ष से सदा से ही परिचित रहा है।

भारतवर्ष की स्थिति को ठीक ठीक समझने के लिये संसार का नक़शा सामने रख लेना चाहिये। संसार का विशाल स्थलसमूह भूमध्य-रेखा के उत्तर में ही है। हमारे देश का अत्यन्त दक्षिणी भाग (लंका का दक्षिणी तट) भूमध्य रेखा से केवल ४०० मील (उत्तर की ओर) दूर है। पर कर्क रेखा भारतवर्ष को दो भागों में बांटती है। यह रेखा कच्छ, गुजरात, मालवा, मध्यप्रान्त, छोटा नागपुर होती हुई गंगा के डेल्टा को कुछ दूर दक्षिण में छोड़ देती है। इसी कर्क रेखा से कुमारी अन्तरीप तक दक्खिन का पठार प्रायः समद्विबाहु त्रिभुज बनाती है। इस रेखा के उत्तर में एक दूसरे विषमबाहु त्रिभुज का उत्तरी सिरा पामीर के नीचे प्रायः ३७ अक्षांश पर काश्मीर का अत्यन्त ऊपरी स्थान है। उत्तरी ध्रुव इस स्थान से प्रायः साढ़े तीन हजार मील दूर है। चूँकि उत्तरी ध्रुव और भूमध्य रेखा के बीच सवा छः हजार मील की दूरी है इसलिए उत्तर से दक्षिण तक भारतवर्ष की अधिक से अधिक लम्बाई २,००० मील है। ८० पूर्वी देशान्तर काश्मीर के पूर्वी सिरे और लङ्का के पश्चिमी तट को पार करता है। भारतवर्ष की यही प्रायः मध्यवर्ती देशान्तर रेखा है। सौराष्ट्र (कच्छ) का पश्चिमी सिरा ६९ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है और आसाम का पूर्वी सिरा ९९ पूर्वी देशान्तर को छूता है। इस प्रकार पूर्व से पश्चिम तक भारतवर्ष का

अदन और स्वेज होकर योरुप में हम प्राय: दो ही सप्ताह के भीतर पहुँच सकते हैं। योरुप के आगे अमरीका का पूर्वी तट बम्बई से प्राय: उतना ही दूर है जितना कि अमरीका का पश्चिमी तट कलकत्ते से पूर्व की ओर है। संसार की परिक्रमा करने वाले हिन्दुस्तानी यात्री अक्सर योरुप होकर
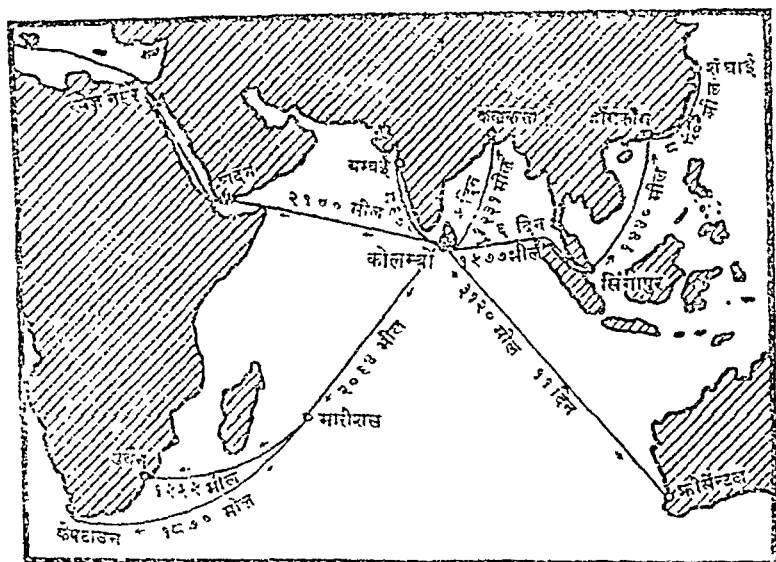
संसार के मार्गों के लिये कोलम्बो की महत्वपूर्ण और केन्द्रवर्ती स्थिति

न्यूयार्क पहुँचते हैं और जापान होकर घर लौट आते हैं। वायु-मार्ग के लिये भारतवर्ष की स्थिति और भी अधिक महत्वपूर्ण है। हवाई जहाज द्वारा संसार का चक्कर लगाने वाले प्राय: सभी यात्री कराची या कलकत्ते में पेट्रोल लेने के लिये उतरते हैं।

त्वी हैं। अगर समुद्र की गहराई २०० गज कम हो जावे तो लङ्का ं भी और आगे प्राय: ५०० मील तक सूखी भूमि निकल आये जहां हम भारतवर्ष से पैदल जा सकते हैं।

पर्वतीय प्रदेश

विशाल हिमालय पर्वत दुनिया भर के पहाड़ों से कहीं अधिक ऊँचे हैं। इनकी पर्वत-श्रेणी पामीर (बामे दुनिया या संसार की छत) से आरम्भ होती है। दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ने के कारण इस पर्वत श्रेणी का आकार तलवार के समान हो गया है। इस उत्तरी पर्वतीय प्रदेश में हिमालय की एक ही श्रेणी नहीं है। वास्तव में यहां कई
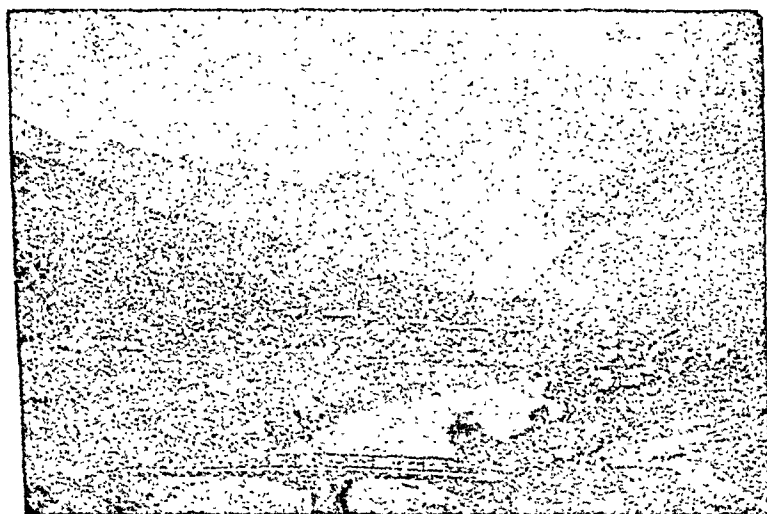
३—पहलगांव का पर्वतीय दृश्य और पुल

पर्वत-श्रेणियां हैं। इनके बीच में दुर्गम हिमागार और डरावनी घाटियां हैं। इस पर्वतीय प्रदेश के दक्षिण में सिंध और गङ्गा का उपजाऊ और नीचा मैदान है। इसके उत्तर में तिब्बत का प्राय: तीन

में हिमरेखा १९,००० फुट की ऊँचाई पर मिलती है। दूसरी ओर तिब्बत में हिमरेखा की ऊँचाई इससे भी (२,००० फुट) अधिक हो जाती है, क्योंकि दूसरी ओर पहुँचने पर मानसूनी हवा में नमी नहीं रहती है। हिमालय की छोटी श्रेणी की ऊँचाई १२,००० फुट के भीतर ही है, इस लिये इस समय यहां हिमागारों का अभाव है। इन पर पुराने हिमागारों के चिन्ह अवश्य मिलते हैं, पर २०,००० फुट की ऊँचाई पर हिमालय में अनेक हिमागार (ग्लेशियर) हैं इनमें से कुछ तो दुनिया भर में सबसे बड़े हिमागार हैं। कुछ विशाल हिमागार ऊँचे खड्डों से नीचे नहीं उतरते हैं। फिर भी आर्क्टिक प्रदेश के हिमागारों से टक्कर लेते हैं। हिस्पार, चोगोलुङ्मा आदि कुछ हिमागारों की लम्बाई २४ मील के ऊपर है। बाल्टोरो आदि एक दो तीन प्राय: ४० मील लम्बे हैं। पर अधिकांश हिमागारों की लम्बाई दो तीन मील ही है। लम्बाकार हिमागार (काश्मीर में) ७ या आठ हज़ार फुट तक नीचे उतर आते हैं। पर समानान्तर घाटियां में विचरने वाले हिमागार १०,००० फुट से नीचे नहीं आते हैं। हिमागारों की दैनिक गति किनारों पर तीन चार इंच होती है, पर बीच में एक फुट तक देखी गई है। भारतवर्ष के प्रसिद्ध हिमागारों की लम्बाई आगे दी जाती है:—

शिकम

हिमागार	लम्बाई
जेमू	१६ मील
किंचिंगा	१- मील

काश्मीर

हिमागार	लम्बाई
रुपल	१० मील
दिमामीर	७ मील
सोनापानी	७ मील
रुनदुन	१२ मील

कमायूं

हिमागार	लम्बाई
मिलन	१२ मील
केदारनाथ	९ मील
गंगोत्री	१६ मील
कसा	७ मील

कराकोरम

हिमागार	लम्बाई
बियाफ़ो	३९ मील
हिस्पार	२५ मील
बतीरो	२४ मील
गशरब्रम	४२ मील
चोगोलुङ्मा	२४ मील
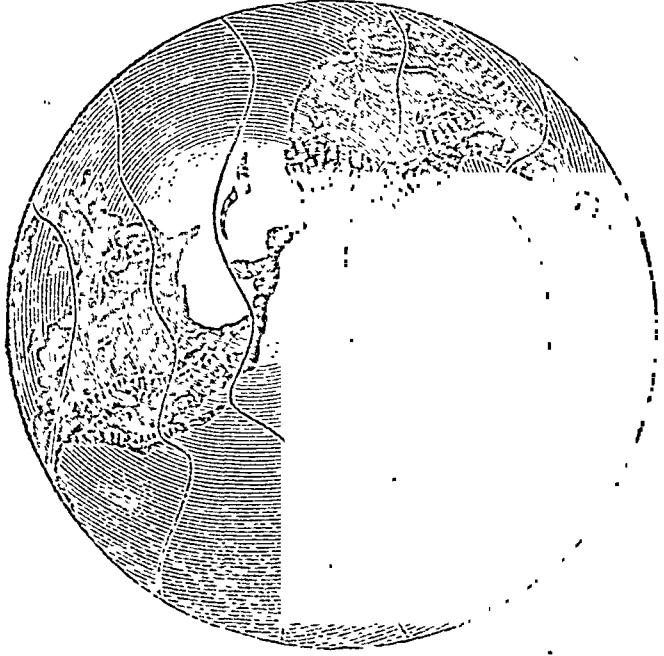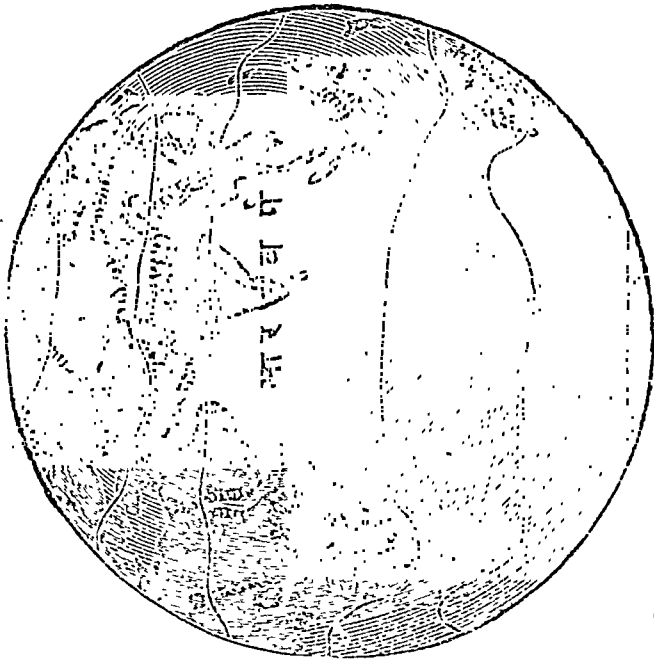
६—संसार की पर्वत श्रेणियाँ

दूसरी श्रेणी के उत्तर में हिमालय की सब से ऊंची तीसरी श्रेणी की औसत ऊँचाई १९,००० फुट है। अधिक ऊँचाई चोटियाँ ये हैं:— नागा पर्वत २६,६२९ फुट (काश्मीर में) नंदादेवी २५६६२ फुट (संयुक्तप्रान्त) में गौरीशंकर या माउ एवरेस्ट २९१४१ फुट, किंचिनजंगा २८१४६ फुट और धवलागिरि २६,८२६ फुट नेपाल में ऊंची हैं। इस श्रेणी की सब चोटियां साल भर बरफ से ढकी रहती हैं।

३—रहू की भाग का पूर्व खंड
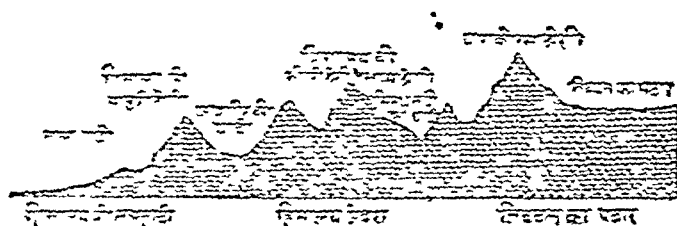
इस उच्च पर्वत श्रेणी के दर्रे १७,००० फीट से ऊंचे हैं और आठ नौ महीने बरफ से घिरे रहते हैं यह बर्फीली श्रेणी मैदान से प्रायः १०० मील ही दूर है। पर यहां पहुँचना या इसको पार करके तिब्बत के पठार में जाना सरल नहीं है। पहाड़ी प्रदेश के मार्ग अत्यन्त दुर्गम हैं। सड़कों के स्थान पर केवल पगडंडियां हैं। कहीं कहीं इनका भी अभाव है हिमगारों में यात्री को बरफ काटकर अपना मार्ग बनाना पड़ता है। नदियां अत्यन्त गहरी कन्दराओं में होकर जाती हैं। इन्हें पार करने के लिये रस्से का पुल बना होता है। पर पहाड़ी लोग बोझा लाद कर इन पुलों को बेधड़क पार कर जाते हैं। साधारण ऊंचाई पर भेड़ से और अधिक ऊंचाई पर याक से बोझा ढोने का काम लिया जाता है।

८—यह पहाड़ी पोस्टमैन अपने दुर्गम मार्ग के संकटों को हँस-हँस कर पार करता है।

से तिब्बत जाने वाले मार्गों पर पड़ते हैं। लेह से आगे चलने पर प्रसिद्ध कराकोरम दर्रा पश्चिम तिब्बत के लिये रास्ता खोलता है। शिमला के आगे सतलज की कन्दरा के ऊपर शिपकी दर्रा पड़ता है। नैनीताल और अलमोड़ा के आगे भी हिमालय में माना और नीति दर्रे हैं। हिन्दू यात्री इसी मार्ग से मानसरोवर को जाया करते हैं। कुछ और पूर्व काली नदी ने एक (मार्कशांग) दर्रा बना दिया है। दार्जिलिंग के आगे चोला और जलप दर्रा चुम्बी घाटी में होकर लासा को मार्ग गया है। सम्भव है कि ब्रह्मपुत्र की घाटी का मार्ग भविष्य में सिन्ध के मार्ग की तरह प्रसिद्ध हो जावे। पर आजकल इस ओर खूंखवार लोग बसे हुये हैं। इन सब दर्रों से साल के कुछ महीनों में थोड़ा सा व्यापार होता है। अधिकतर महीनों ये दर्रे बरफ से घिरे रहते हैं। ये दर्रे फौजी सामान के लिए अत्यन्त दुर्गम हैं। इसी लिये इनके सिरों पर कहीं भी किले नहीं बने हैं।

उत्तरी पश्चिमी शाखायें

हिमालय की उत्तरी पश्चिमी शाखायें पाकिस्तान में हैं। हिमालय के पश्चिम में हिन्दूकुश पर्वत है। जो दक्षिण-पश्चिम की ओर अफ़ग़ानिस्तान में चला गया है। काबुल नदी के दक्षिण में सफेद-कोह (पर्वत) है। यह पहाड़ प्रायः पूर्व-पश्चिम की ओर चला गया है। सफेद-कोह के दक्षिण में और पञ्जाब के पश्चिम में सुलेमान पहाड़ उत्तर से दक्षिण को गया है। इस पहाड़ के मध्य में तख्त सुलेमान चोटी ११,३०० फुट ऊंची है। सुलेमान के दक्षिण में और सिन्ध प्रान्त के पश्चिम में किरथर या हाला पहाड़ है। किरथर पहाड़ की कई समानान्तर श्रेणियां दक्षिण में प्रायः समुद्र तट तक चली गई हैं।

हिमालय की पश्चिमी-पूर्वी शाखायें अधिक नीची और उजाड़ हैं। इन पहाड़ियों को काट कर सिन्ध में मिलने वाली नदियों ने

में कई सुगम दर्रे में शिकारपुर और कन्धार के बीच में बोलन सर्वोत्तम है वह दर्रा आज कल भारतीय सीमा के बाहर है।

उत्तरी-पूर्वी शाखायें

ब्रह्मपुत्र के मोड़ के आगे हिमालय की शाखायें दक्षिण की ओर हाथ की अंगुलियों की तरह निकली हुई हैं। पटकोई, नागा और लूशाई पहाड़ियां आसाम को ब्रह्मा से अलग करती हैं मनीपुर-राज्य में होती हुई ये पहाड़ियां बरमा से अराकान योमा से मिल जाती हैं। और इरावदी-मुहाने के पश्चिम की ओर नेग्रेस अन्तरीप में समाप्त होती हैं। वास्तव में अंडमान और निकोबार द्वीपों के द्वारा इन पहाड़ियों की श्रेणी पूर्वी द्वीपों समूह (सुमात्रा) से जुड़ी हुई है। पटकोई पहाड़ी के दक्षिण में नागा पहाड़ी से प्रायः समकोण बनाती हुई जयन्तिया, खासी और गारो पहाड़ियां ठीक पश्चिम की ओर चली गई हैं। वे आसाम की घाटी की सिलहट और कछार से अलग करती हैं। हिमालय की पूर्वी शाखाओं का दृश्य पश्चिमी शाखाओं के दृश्य से बिल्कुल भिन्न है। प्रबल वर्षा के कारण ये पहाड़ियां सघन और दुर्गम बनों से ढकी हुई हैं। उत्तर में हुकांग घाटी ने अपने पहाड़ी मार्ग को काट कर मार्ग बना दिया है। इसी तरह दक्षिण में चिंडविन (इरावदी की प्रधान सहायक नदी) भी एक सहायक नदी ने मनीपुर से ब्रह्मा के लिए दरवाजा खोल दिया है। पर यह दरवाजे ऐसे भयानक हैं कि इस स्थल मार्ग की अपेक्षा कलकत्ता और रंगून के बीच के समुद्री मार्ग कहीं अधिक पसन्द किये जाते हैं।

मैदान

पहाड़ी दीवार के दक्षिण में सिन्ध और गङ्गा का उपजाऊ मैदान है। यह समतल मैदान बहुत ही घना बसा है। कहीं प्राचीन समय की सर्वोच्च सभ्यता का जन्म हुआ। इसका क्षेत्रफल पांच लाख वर्ग-मील है। इसमें सिन्ध का बड़ा भाग, उत्तरी राजपूताना, समस्त

पञ्जाब, संयुक्त-प्रान्त विहार, बंगाल और आधा आसाम शामिल है। इसकी अधिक से अधिक चौड़ाई (पश्चिमी भाग में) ३०० मील है। कम से कम चौड़ाई (पूर्व में) प्राय: ९० मील है। इसकी मुटाई का अभी तक पूरा पूरा पता नहीं लगा है। एक दो जगह की खुदाई से जाना गया है कि इसकी गहराई ऊपरी धरातल से १,३०० फुट अर्थात् समुद्र तल से १,००० फुट नीची है। पाताल तोड़ कुआं खोदने के लिये अब कहीं गहराई की जांच की गई तो नीचे की कड़ी चट्टान का पता नहीं लगा। न बारीक मिट्टी (कांप) का ही अंत मिला। हावड़ा में जमीन के नीचे नीचे चलने वाली रेल के लिये जो खुदाई हुई उसमें कई तरह की मिट्टी निकली।

मैदान की अधिक से अधिक ऊंचाई समुद्रतल से ९०० फुट है यह ऊंचा भाग सहारनपुर, अम्बाला और लुधियाना जिलों के बीच पञ्जाब में स्थित है। यही ऊंचा भाग (जल-विभाजक) गंगा में आने वाले पानी को सिन्ध में जाने वाले पानी से पृथक करता है। पर यह जल विभाजक बहुत पुराना नहीं है। कुछ लोगों का अनुमान है कि वैदिक काल की सरस्वती नदी पहले पूर्वी पञ्जाब और राजपूताना में होकर समुद्र में गिरती थी। फिर वह पूर्व की ओर हटते हटते प्रयाग में गङ्गा में मिल गई और यमुना कहलाने लगी। सरस्वती के पुराने मार्ग में अब एक छोटी नदी बहती है जो बीकानेर के रेत में समा जाती है।

इस विशाल मैदान में जहां तहां कंकड़ को छोड़कर पत्थर का नाम नहीं है। इसका पुराना ऊंचा भाग संयुक्त प्रान्त और बङ्गाल में बांगर कहलाता है। नये नीचे भाग को खादर या कछार कहते हैं। गंगा का डेल्टा (५०,००० वर्गमील) वास्तव में खादर का ही भाग है। इसी प्रकार सिन्ध का डेल्टा सिन्ध के खादर का भाग है। सिन्ध नदी का वर्तमान डेल्टा बहुत ही नया है। पहले यह नदी अधिक पूर्व की ओर कच्छ या खम्भात की खाड़ी में गिरती थी। फिर कुछ समय तक कच्छ के रन में गिरती रही। अन्त में वर्तमान डेल्टा बना।

गङ्गा की घाटी की तरह पञ्जाब का ढाल बहुत ही क्रमशः है। पञ्जाब में यह ढाल दक्षिण-पश्चिम की ओर है। पञ्जाब के दक्षिण-पश्चिम में सिन्ध प्रान्त का प्रायः प्रत्येक भाग सिन्ध नदी के नीचे रह चुका है।

राजपूताना का रेगिस्तान प्रायः ४०० मील लम्बा और सौ मील चौड़ा है। अरावली पहाड़ ने इसे उत्तरी-पश्चिमी और दक्षिणी-पूर्वी दो भागों में बांट दिया है। दक्षिणी-पूर्वी भाग वास्तव में गङ्गा नदी का वेसिन है। चम्बल नदी इस प्रदेश का पानी यमुना में बहा लाती है। उत्तरी-पश्चिमी राजपूताना सिन्ध नदी का वेसिन है। यही असली रेगिस्तान है और हवा से उड़ा कर लाई हुई बालू से बना है। जगह जगह पर सौ दो सौ फुट ऊँचे रेतीले टीले मिलते हैं। यहां की प्रधान नदी लूनी है जो कच्छ की खाड़ी में गिरती है और प्रायः सूखी पड़ी रहती है। अधिक दक्षिण में काठियावाड़ का थैलीनुमा प्रायः द्वीप है। इसकी लहरदार धरती बीच में तीन चार हजार फुट ऊंची है। सम्भव है कि पहले यह एक द्वीप रही हो और कच्छ और खम्भात की खाड़ियाँ एक दूसरे से मिलती हों। काठियावाड़ के उत्तर में कच्छ का उजाड़ रेतीला और पहाड़ी द्वीप है। बड़ा रन दो सौ मील लम्बा और एक सौ मील चौड़ा है। इस और रेतीला नमकीन उजाड़ रहता है, जहां जङ्गली गधे लोटते हैं। पर मानसून के दिनों में जुलाई से नवम्बर तक यह नमकीन और उथले (एक दो गज गहरे) पानी से घिर जाता है।

गङ्गा और सिन्ध के मैदान के दक्षिण में पठार की भूमि कछारी मिट्टी के नीचे दबती जा रही है। मैदान के दक्षिण में कुछ दूर तक कछारी मिट्टी से ढकी हुई पहाड़ियां और चट्टानें मिलती हैं। इस मैदान के उत्तर में हिमालय की पर्वत-श्रेणियां एकदम ऊँची होती जा रही हैं।

भावर

जहां पर हिमालय की श्रेणियों का आरम्भ होता है वहीं पर

असंख्य धाराओं और नदियों ने कंकड़-पत्थर का ढेर इकट्ठा कर दिया है। इस तरह के पथरीले ढाल हिमालय के एक सिरे से दूसरे सिरे तक मिलते हैं। कंकड़ और पत्थर मिले हुए निर्जल भाग को भावर कहते हैं। इस ढाल को पार करते समय केवल बड़ी नदियों का पानी ऊपर रहता है। छोटी छोटी धाराओं का पानी कंकड़ों के नीचे छिप जाता है। इससे इस प्रदेश में बड़े-बड़े पेड़ तो नजर आते हैं पर खेती और आबादी का प्रायः अभाव है। यह प्रदेश ५ मील तक चौड़ा है।

तराई

अधिक आगे भावर की जमीन मैदान में मिल जाती है। यहां पर (भीतर का) पानी ऊपर प्रगट हो जाता है। इससे बड़े बड़े दलदल हो गये हैं। इन दलदलों में ऊंची घास और घने पेड़ हैं। इन भयानक जङ्गलों में मलेरिया के कारण आबादी नहीं है। अभी बड़े बड़े जङ्गली जानवर बहुत हैं। इस रोगग्रस्त प्रदेश को तराई कहते हैं। जिस तरह हिमालय की पहाड़ियों के नीचे एक सिरे से दूसरे तक भावर है उसी तरह भावर के नीचे तराई का प्रदेश है। अधिक पश्चिम में वर्षा की कमी के कारण सिंध के मैदान और हिमालय के ढालों के बीच में भावर तो बहुत है, पर तराई का अभाव है। असली तराई का प्रदेश सहारनपुर, पीलीभीत, खीरी, बहराइच, गोरखपुर, मोतिहारी, जलपाई. गुड़ी आदि नगरों के उत्तर में आरम्भ होता है। भावर की अपेक्षा तराई का प्रदेश अधिक चौड़ा है।

मिलती हैं। पर विन्ध्याचल काफी ऊँचा और लम्बा है। यह पर्वत बम्बई प्रान्त से शुरू होता है और मध्यप्रान्त, बघेलखंड, संयुक्त-प्रान्त होता हुआ बिहार-उड़ीसा प्रान्त में सोन-घाटी के ऊपर ऊंची दीवार के समान खड़ा हुआ है। यह पहाड़ गंगा के प्रवाह-प्रदेश को नर्मदा, ताप्ती और महानदी में मिलने वाले पानी से पृथक करता है। नर्मदा की घाटी विन्ध्याचल को सतपुड़ा पहाड़ से अलग करती है।

१०—भारतवर्ष का पहाड़ी ढांचा

सतपुड़ा पहाड़ विन्ध्याचल के ही समानान्तर ७०० मील तक (प्रायः अरब सागर से गंगा के मैदान तक) चला गया है। इसकी ऊंचाई प्रायः तीन चार हजार फुट है। सतपुड़ा के दक्षिण में ताप्ती नदी की घाटी है। इन दोनों नदियों ने काफी चौड़े कछारी मैदान बना दिये हैं। नर्मदा का मैदान प्रायः जबलपुर से हरदा तक २०० मील लम्बा है। इसकी चौड़ाई १२ मील से २५ मील तक है। गाडरवारा में इसकी गहराई ५०० फुट से भी अधिक पाई गई है। ताप्ती का मैदान प्रायः १५० मील लम्बा और २० मील चौड़ा है। दोनों घाटियां

समुद्र तल से प्रायः १०० फुट ऊंची है। इसलिये एक घाटी से दूसरी घाटी में जाना सुगम नहीं है। पर खंडवा और बुढ़ानपुर के बीच में पहाड़ियों के नीचे हो जाने से दो घाटियों के बीच सुगम मार्ग बन गया है। उत्तरी भाग से दक्खिन में पहुँचने के लिये सदियों तक यही राजमार्ग रहा है। इस समय बम्बई और जबलपुर को जोड़ने के लिए ग्रेट इण्डियन पेनिन्सुला रेलवे ने भी इसी मार्ग का अनुसरण किया है।

ताप्ती नदी दक्षिण में दक्खिन का असली त्रिभुजाकार पठार है। यह पठार पश्चिम में सब से अधिक ऊंचा है और दक्षिण-पूर्व की ओर क्रमशः नीचा होता गया है। इस पठार का पूर्वी किनारा पूर्वी-घाट के नाम से प्रसिद्ध है। पूर्वी घाट की टूटी-फूटी पहाड़ियों की औसत ऊंचाई दो हजार फुट से अधिक नहीं*है। पहाड़ियाँ पूर्वी समुद्र-तट के समानान्तर चली गई हैं। पूर्वी घाट के पीछे की धरती पश्चिम की ओर ऊंची होती गई है। बीच में ऊँचे और चौड़े मैदान हैं। कुछ मैदान भूरे रंग के हैं पर अधिकांश काले हैं। कहीं कहीं पर चपटी चोटी वाली विचित्र पहाड़ियां हैं। पश्चिमी किनारे पर पश्चिमी घाट वास्तव में पहाड़ कहे जा सकते हैं। इनकी औसत ऊंचाई ३,००० फुट है। दक्षिण में नीलगिरि की सर्वोच्च चोटी (दोदाबेटा) की ऊंचाई प्रायः नौ हजार फुट है। पश्चिमी घाट बम्बई से लेकर प्रायः कुमारी अन्तरीप तक फैले हुये हैं। समुद्र की ओर से देखने पर पश्चिमी घाट वास्तव में ऊंचे घाट की तरह नज़र आते हैं। इनको पार करने के लिए केवल तीन सुगम दर्रे हैं। थाल-घाट ([illegible] फुट से कुछ कम) बम्बई के उत्तर-पूर्व में और भोरघाट ([illegible] फुट से कुछ ऊपर) बम्बई के दक्षिण-पूर्व में स्थित

है। नीलगिरि के दक्षिण में २० मील चौड़ा और केवल एक हज़ार फुट ऊंचा है पालगाट का विचित्र दरवाज़ा है।

तटीय मैदान

पूर्वी घाट और बङ्गाल की खाड़ी के बीच में कारोमण्डल का चौड़ा और उपजाऊ समतल तटीय मैदान है। पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच का तटीय मैदान तंग है और मालाबार तट के नाम से प्रसिद्ध है।
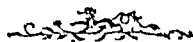
चौथा अध्याय

नदियाँ

गङ्गा

गङ्गा नदी मध्यवर्ती हिमालय में १३,८०० फुट की ऊँचाई पर गङ्गोत्री के पास गौ-मुख (गाय का मुँह) की हिमकन्दरा से निकलती है। इसकी समस्त लम्बाई १,५५० मील है। आरम्भ में यह भागीरथी कहलाती है। निकास के पास गङ्गा केवल २ गज चौड़ी और १५ इंच गहरी है। प्रथम १८० मील तक यह एक प्रबल पहाड़ी धारा रहती

दक्षिण-पूर्व की ओर मन्दगति से बहती है। इसके बाद घाघरा के संगम तक गङ्गा का रुख कुछ उत्तर-पूर्व की ओर हो जाता है। इस संगम के आगे गङ्गा पूर्व की ओर बहती है। राजमहल की पहाड़ियों के आगे गङ्गा फिर एक बार दक्षिण की ओर मुड़ती है और कई शाखाओं में बंट जाती है। इसकी प्रधान शाखा पद्मा दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। गोआलंडों के पास ब्रह्मपुत्र की प्रधान शाखा यमुना भी पद्मा (पद्दा) में मिल जाती है। गङ्गा की पश्चिमी बड़ी शाखा पहले भागीरथी फिर मुहाने के पास हुगली कहलाती है। हुगली के ही बायें किनारे पर कलकत्ता और दूसरी ओर दाहिने किनारे पर हावड़ा बसा हुआ है।

यमुना

दाहिने किनारे की सहायक नदियों में यमुना मुख्य है। यमुना नदी नन्दादेवी के उत्तरी ढाल में ११,०७० फुट की ऊँचाई पर यमुनोत्री से निकली है। यमुनोत्री और गङ्गोत्री पास ही पास हैं। ८६० मील बहने के बाद यमुना (इलाहाबाद में) गङ्गा से मिलती है। संगम के आगे कुछ दूर तक यमुना का नीला पानी गङ्गा के भूरे जल से बिल्कुल अलग दिखाई देता है। चम्बल नदी मालवा पठार (पश्चिमी विन्ध्याचल) और अरावली (क्योंकि अरावली के पूर्वी ढाल से निकलने वाली बनास नदी चम्बल में गिरती है) का वर्षाजल* यमुना में बहा लाती है। सिन्ध, बेतवा और केन नदियों द्वारा विन्ध्याचल के उत्तरी ढाल का पानी भी यमुना में आ मिलता है। इस प्रकार यमुना नदी गङ्गा के प्रवाह प्रदेश को बहुत बड़ा बना देती है।

रामगङ्गा और गोमती नदियां बाईं ओर से गङ्गा में मिलती हैं,

---

*मालवा पठार और विन्ध्याचल अधिक पुराना होने से कड़ी चट्टान का बना हुआ है। यही कारण है कि इधर बहने वाली नदियों के पानी में मिट्टी कम मिली रहती है। पर वर्षा का अधिकांश जल नदियों में बह आता है और कड़ी चट्टान में भिद नहीं पाता है।

तिब्बत

नेपाल

बिहार

आसाम

बंगाल
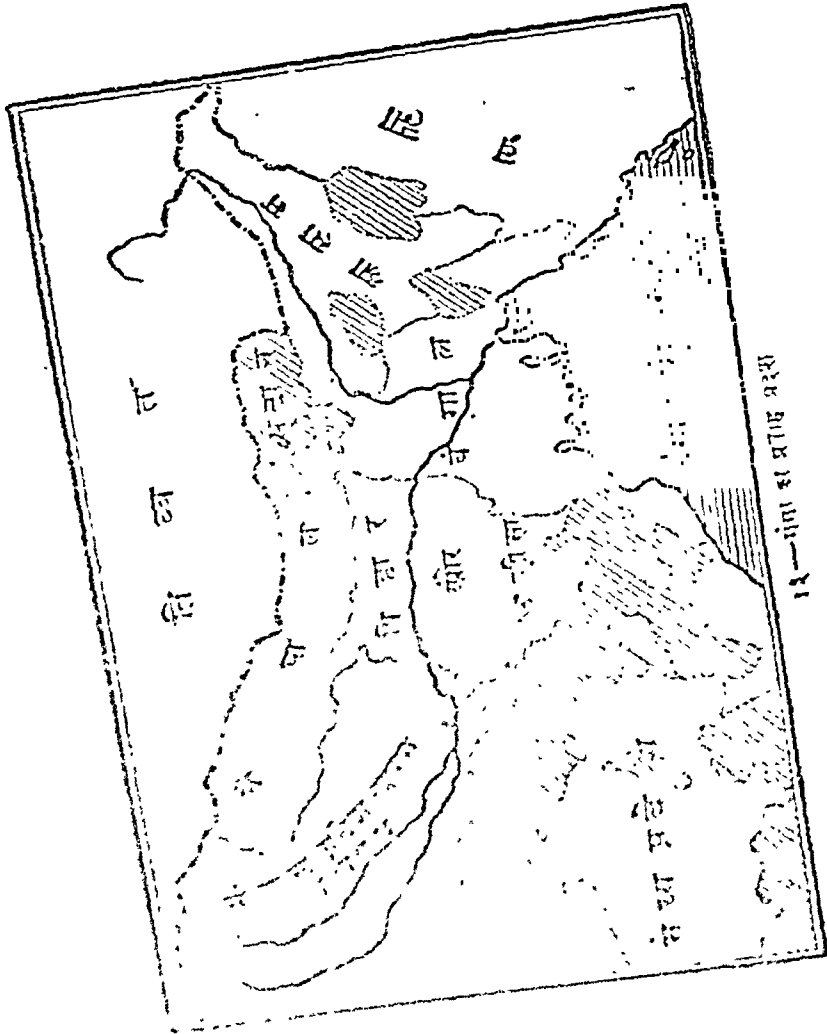
१२—गंगा का प्रवाह प्रदेश

और संयुक्त प्रान्त के एक बड़े भाग का पानी बहा लाती हैं। रामगङ्गा अपने पास के गांवों को काटने के लिये और गोमती भयानक बाढ़ के दिनों में अपने पास के गांवों को डुबाने के लिये प्रसिद्ध है। घाघरा या सरजू नदी सिन्ध और सतलज की तरह हिमालय की प्रधान श्रेणी के उत्तरी ढाल से निकलती है। वास्तव में घाघरा, सतलज, सिन्ध और ब्रह्मपुत्र का निकास पास ही पास है। नैपाल से बाहर आने पर सारदा नदी दाहिनी ओर से और ताप्ती नदी बाईं ओर से घाघरा में आ मिलती हैं। अन्त में घागरा नदी छपरा के पास गङ्गा में आ मिलती है। इस संगम से कुछ नीचे बायें किनारे पर गंडक नदी मिलती है। दाहिने किनारे पर सोन नदी मिलती है, जो अमरकंटक (नर्मदा के निकास) के पास से निकलती है और विन्ध्याचल के उत्तरी-पूर्वी भाग का बरसाती पानी बहा लाती है। सोन नदी सिंचाई की नहरों और बांस वा लकड़ी के लट्ठों के बहाने लिये भी प्रसिद्ध है। अधिक पूर्व में कोसी नदी हिमालय की ओर से गंगा में मिलती है। अन्त में छोटा नागपुर के पठार से दामोदर नदी हुगली के दाहिने किनारे पर मुहाने के पास आ मिलती है।

डेल्टा

गंगा का डेल्टा तीन नदियों के मिलने से बना है। गंगा और ब्रह्मपुत्र गोआलंडो में मिलती हैं। कुछ नीचे की ओर सुरमा या बारक नदी मिलती है डेल्टा की प्रधान धारा मेघना कहलाती है। डेल्टा प्रदेश का क्षेत्रफल ५०,००० वर्गमील है। यह डेल्टा उस अपार कांप से बना है, जो नदियों द्वारा हिमालय, आसाम की पहाड़ियों और ऊपर ब्रह्मा से लाई गई है। डेल्टा का कुछ भाग जंगल और दलदल है। शेष में धान के खेत हैं। डेल्टा में नदियों की अनेक धारायें हो गई हैं। बङ्गाल की खाड़ी के नीचे दलदली भाग में सांप, मगर और चीता आदि जंगली जानवर बहुत हैं। यहीं एक पेड़ होता है जिसे बङ्गाली में सुन्दरी कहते हैं। इसी लिए डेल्टा का वह भाग सुन्दरवन कहलाता है।

यदि मिस्र को नील नदी का वरदान कहें तो उत्तरी-पूर्वी भारत को गंगा का वरदान कह सकते हैं। गंगा की लाई हुई उपजाऊ मिट्टी और मीठे पानी से करोड़ों मनुष्यों का पालन-पोषण होता है। भोजन, जल और आने जाने की सुविधा होने के कारण गंगा के किनारे संसार की एक उच्च कोटि की सभ्यता का विकास हुआ है। कई अंशों में भारतवर्ष का इतिहास गंगा का इतिहास है। फिर इसमें आश्चर्य ही क्या यदि यहां के निवासी गंगा को पूज्य समझें और उसे गङ्गामाता कह कर पुकारें ?

ऊँचाई) हिमालय की प्रधान श्रेणी के उत्तरी ढाल के पास से निकलती और उत्तर-पश्चिम की ओर बहती है। गिलगिट के पास दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़कर हिमालय के पश्चिमी सिरे को पार करती है। सिन्ध नदी के ऊपरी मार्ग में शांयक और गिलगिट नदियाँ कराकोरम का बर्फीला पानी सिन्ध नदी के दाहिने किनारे पर ले आती है। काश्मीर छोड़ने के बाद सिन्ध नदी पाकिस्तान में प्रवेश करती है। काबुल नदी स्वात और कुँआर नदियों के द्वारा से हिन्दुकुश का पानी अटक के पास सिन्ध नदी में गिरता है। अटक के पास सिन्ध का पहाड़ी मार्ग पीछे छूट जाता है। दो तीन मील ऊँचे भयानक पहाड़ी किनारे भी पीछे ही रह जाते हैं पर अटक के आगे भी कालाबाग तक सिन्ध की धारा काफ़ी तेज है और छोटी छोटी पहाड़ियों के बीच में घिरी हुई है। कुर्रम नदी अपनी सहायक टोची का पानी लेकर सिन्ध नदी के दहिने किनारे पर मिलती है। इसके बाद गोमल नदी अपनी सहायक जोब को मिला कर डेरा इस्माइलखाँ के पास दाहिनी ओर से सिन्ध में मिलती है।

बाईं ओर की सहायक नदियों में सतलज प्रधान है। सतलज नदी सिन्ध के निकास के पास ही राक्षस-ताल से निकलती है और हिमालय को पार करके प्रायः पश्चिम की ओर बहती है। दाहिने किनारे पर सीधी रेखा में व्यास नदी सतलज से मिलती है। व्यास के संगम के बाद चनाब का पानी मिलाने लिये सतलज का रुख दक्षिण पश्चिम की ओर हो जाता है। सतलज के मिलाने से पहिले चनाब के दाहिने किनाने पर झेलम और आगे चल कर बाये किनारे पर रावी नदी गिरती है। चनाब और सतलज की संयुक्त धारा पंचनद कहलाती है। ६० मील बहने के बाद पञ्चनद सिन्ध के बायें किनारे पर जा मिलती है। इस संगम के बाद किसी ओर से और कोई नदी सिन्ध में नहीं मिलती है। हैदराबाद के नीचे सिन्ध का डेल्टा आरम्भ होता है। सिन्ध और उसकी प्रधान सहायक नदियों का मैदानी भाग पाकि-

स्तान में स्थित है। सतलज नदी हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच कुछ दूर तक सीमा बनाती है।

सिन्ध और उसकी सहायक नदियों में पहाड़ी बरफ के पिघलने से पानी आता है। इसलिये ये नदियाँ सिंचाई के लिये बहुत ही अच्छी हैं। सिंचाई के लिये सिन्ध और इसकी सहायक नदियोंका संसार भर में प्रथम स्थान है। नील नदी कुछ-कुछ सिन्ध की बराबरी कर सकती है।

मध्य भारत और दक्खिन की नदियां

नर्मदा

अमरकंटक से निकलकर नर्मदा एक तंग और सीधी घाटी में पश्चिम की ओर चलती है। नर्मदा के उत्तर में विन्ध्य और दक्षिण में सतपुड़ा की ऊँची पहाड़ी दीवार खड़ी हुई है। जबलपुर के नीचे संगमरमर की चट्टानों और प्रपात का दृश्य बड़ा मनोहर है। मध्यप्रान्त छोड़ने के बाद नर्मदा बीच में चौड़ी हो जाती है। लेकिन इसकी धारा मन्द पड़ जाती है भड़ौच के नीचे इसकी एस्चुअरी (खुला मुहाना) १३ मील चौड़ी है। यहां बड़ी बड़ी नावें चलती हैं। पर नर्मदा का ज्यादी भाग नाव चलाने और सिंचाई करने के लिये अनुकूल नहीं है। गंगा की भांति नर्मदा नदी भी पवित्र मानी जाती है होशङ्गाबाद आदि बहुत से स्थानों पर नर्मदा नदी के किनारे सुन्दर घाट और मनोहर मन्दिर हैं।

१४—जबलपुर में नर्मदा का जल-प्रपात

महानदी

महानदी रायपुर जिले में अमरकंटक के पूर्वी सिरे से निकल कर दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। यह नदी मध्यप्रान्त के आधे भाग और मद्रास के कुछ भाग का पानी लेकर ५०० मील बहने के बाद उड़ीसा में डेल्टा बनाती। डेल्टा के पास ही बाईं ओर से ब्राह्मणी नदी आ मिलती है। दोनों का संयुक्त डेल्टा अत्यन्त उपजाऊ है।

गोदावरी

गोदावरी बम्बई के उत्तर में नासिक के पास पश्चिमी घाट से निकलती है। इस नदी के पथ का दृश्य बड़ा मनोहर है। भवभूति आदि पुराने संस्कृत-कवियों ने भी इसके दृश्य की प्रशंसा की है। यह नदी ९०० मील लम्बी है। अपने तिहाई भाग में यह नदी हैदराबाद राज्य में होकर ठीक पूर्व की ओर बहती है। यहीं दक्षिण में मंजीरा नदी गोदावरी के समानान्तर बहने के बाद दाहिने किनारे पर मिल जाती है। इस राज्य के बाहर निकलने पर यही नदी दक्षिण पूर्व की ओर मुड़ती है। मोड़ के पास ही इसके बायें किनारे पैनगंगा, वर्धा और वैनगंगा का संयुक्त जल गोदावरी में आ मिलती हैं। मोड़ के आगे कुछ दूर तक गोदावरी नदी हैदराबाद-राज्य और मद्रास प्रान्त के बीच में सीमा बनाती हैं। यहीं इंद्रवी नदी दुर्गम प्रदेश को पार करती हुई गोदावरी के बायें किनारे पर आ मिलती है। इन्द्रावती की ही पहाड़ियों में गोंड़ लोग रहते हैं जो बीसवीं सदी में भी पत्थर के हथियार काम में लाते हैं। इन्द्रावती के संगम के बाद उत्तर-पूर्व से चलकर सबरी नदी गोदावरी में गिरती है। इन नदियों में मिलने से गोदावरी का जल बहुत बढ़ जाता है। पर गोदावरी को पूर्वी घाट की पहाड़ियां पार करनी पड़ती हैं। इसलिये मद्रास के २० मील में गोदावरी की घाटी बहुत ही तंग हो जाती है। पूर्वी घाट को पार करने के बाद अपने अन्तिम ६० मील में यह नदी फैल कर इतनी चौड़ी हो जाती है कि इसके में अकसर द्वीप बन गये हैं। राज-

महेन्द्री के पास गोदावरी की धारा के आरपार ढाई मील लम्बा बांध (एनीकट) बना हुआ है। यहां से तीन नहरें निकाली गई हैं जिन्होंने गोदावरी डेल्टा को ८ लाख एकड़ धरती को अत्यन्त उपजाऊ बना दिया है।

कृष्णा

कृष्णा नदी अरब सागर से केवल ४० मील पूर्व में महाबलेश्वर के पास से निकलती है। आरम्भ में यह नदी बम्बई प्रान्त में दक्षिण की ओर बहती है। फिर पूर्व की ओर मुड़कर कृष्णा नदी हैदराबाद राज्य में प्रवेश करती है। यहीं पर भीमा नदी उत्तर की ओर से कृष्णा में मिल जाती है। जहाँ कृष्णा हैदराबाद को पार कर पूर्व की ओर मुड़ती है और मद्रास प्रान्त के साथ हैदराबाद राज्य की दक्षिणी सीमा बनाती है, वहीं पर मैसूर के उच्च पठार से आने वाली तुङ्गभद्रा नदी कृष्णा के दाहिने किनारे पर मिल जाती है। पूर्वी घाट को पार करने पर कृष्णा नदी मद्रास के निचले तटीय मैदान में होकर बहती है। बेजवादा के पास कृष्णा में एनीकट बना कर दो नहरें निकाली गई हैं। इन नहरों से कृष्णा-डेल्टा की सवा दो लाख एकड़ ज़मीन सींची जाती है। कृष्णा का डेल्टा गोदावरी के डेल्टा को छूता है। कृष्णा के दक्षिण में पन्नर, पालार, पोनियार, कावेरी और वैगाई नदियाँ बङ्गाल की खाड़ी में गिरती हैं। इनमें कावेरी सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

कावेरी

कावेरी नदी कुर्ग से निकलती है और दक्षिण-पूर्व की ओर मैसूर राज्य और मद्रास प्रान्त में होकर बहती है। मैसूर-राज्य में इसके किनारों पर उपजाऊ भूमि है, इसलिये इसके बहाव को रोकने के लिए दस-बारह जगह पर सिंचाई के बांध बनाये गये हैं। मेटूर बांध (डैम) सिंचाई के बांधो में संसार भर में सब से बड़ा है। मैसूर-राज्य में इसने सिरंगापट्टम (यहां टीपू का किला था) और शिव-

समुद्रम द्वीपों को घेर रक्खा है। यह दोनों द्वीप*पवित्र गिने जाते हैं। स्वयं कावेरी भी दक्षिणी गंगा कहलाती है। शिवसमुद्रम् के नीचे कावेरी की दोनों शाखाओं में कई सुन्दर प्रपात हैं। झरनों की सहायता से १०० फुट के नीचे उतर कर कावेरी नदी मद्रास प्रान्त में प्रवेश करती है। इसके डेल्टा से हो तंजोर का उपजाऊ जिला बना है जो दक्षिण-भारत का बगीचा कहलाता है।

भारतीय नदियों की विशेषतायें

प्रदेश के अनुसार नदियों की गति भिन्न हैं। उत्तरी-पश्चिमी भारत की नदियां वर्षा की कमी के कारण प्रायः साल भर सूखी पड़ी रहती हैं केवल बरफ के पिघलने पर उनमें ग्रीष्म के आरम्भ में कुछ पानी हो जाता है।

हिमालय के बड़े बड़े हिमागारों का बर्फीला पानी लाने वाली सिन्ध आदि नदियों में ग्रीष्म ऋतु में प्रबल बाढ़ आती है और ऋतुओं में भी उनमें काफी पानी रहता है। इसीलिए सिन्ध और पञ्जाब के उपजाऊ प्रदेश को सींचने के लिये इन नदियों से बड़ी बड़ी नहरें निकालने में सुविधा हुई है। मध्य और पूर्वी हिमालय से निकलने वाली नदियों में दो बार बाढ़ आती है। ग्रीष्म के आरम्भ में बरफ पिघलने से पहली बार बाढ़ आती है। इस बाढ़ से नदियों में पानी बढ़ जाता है पर पानी मटीला नहीं होता है। दूसरी और अधिक बड़ी बाढ़ प्रबल वर्षा से होती है। इसी से पानी एकदम मटीला हो जाता है और अक्सर किनारे के गांव डूब जाते हैं। इन नदियों का मध्यवर्ती भाग उपजाऊ है और प्रायः समतल मैदान में स्थित है। इसलिये ये नदियां सिंचाई करने और नाव चलाने के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं दक्षिणी भारतवर्ष की नदियां ऐसे भागों से निकलती हैं। जहां बरफ कभी नहीं गिरती है। इन नदियों में केवल वर्षा-जल रहता है। इनका अधिकतर भाग कड़ी चट्टानों के प्रदेश में

---

*कावेरी का तीसरा प्रसिद्ध द्वीप श्रीरङ्गम है जो त्रिचनापल्ली के पास है।

स्थित है। इसलिये धरती में पानी न भिदने के कारण नदियों में अचानक बाढ़ आती है। खुश्क ऋतु में इनमें बहुत ही कम पानी रहता है नदियों की तली इतनी गहराई पर होती है कि पथरीली जमीन में यदि किसी तरह अपार धन खर्च करके नहरें बना भी ली जावें तो उनमें लगातार पानी न रह सके और ऊसर जमीन से उसका खर्चा न पूरा हो सके। इसलिये दक्खिन की नदियाँ छोटे से डेल्टा-प्रदेश को छोड़कर अपने शेष लम्बे मार्ग में सिंचाई के लिए अनुकूल नहीं हैं। वर्षा ऋतु में तेज धारा और ग्रीष्म-ऋतु में उथला पानी होने के कारण वे नाव चलाने के योग्य नहीं हैं।
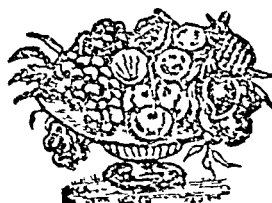
पांचवां अध्याय

भूगर्भ-विद्या प्राकृतिक सम्पत्ति

भूगोल में पृथ्वी के धरातल का वर्णन रहता है भूगर्भ-विद्या में पृथिवी के गर्भ अर्थात् पपड़े की चट्टानों की रचना, उनके परिवर्तन और अवस्था का अध्ययन रहता है। इस प्रकार भूगर्भ विद्या का अध्ययन अधिक गहरी तह तक पहुँचता है। भूगर्भ विद्या के विद्वानों ने पृथिवी की चट्टानों को चार बड़े बड़े युगों में बांटा है। अति प्राचीन या एजोइक चट्टानों में किसी प्रकार के पशु या वनस्पति सम्बन्धी जीवों के ढाँचे या चिन्ह नहीं मिलते हैं। प्राचीन या पेलिओजोइक चट्टानें उस समय की हैं। जब कि जीवधारियों का प्रथम विकास हुआ। इसलिये इनमें कहीं कहीं आरम्भ काल के जीवधारियों के ढांचे और चिन्ह पाये जाते हैं। मध्यकालीन या मेसोजोइक चट्टानों में अधिक विकसित जीवों के निशान मिलते हैं। नवीन या निओजोइक अथवा केनिओजोइक चट्टानों में आजकल के प्रायः सभी जीवधारियों के ढाँचे मिलते है।

भारतवर्ष का दक्षिणी प्रायद्वीप अत्यन्त पुराना भाग है। दक्खिन की २लाख वर्गमील भूमि समय समयपर ज्वालामुखीके फूट निकलनेसे लावा की तहों से बनो हैं। लावा की एक एक तह दो गज से लेकर २०० गज तक मोटी है। कहीं कहीं पर समस्त तहों की मुटाई ४००० गज है। इन चट्टानों के घिसने से उपजाऊ रेगर या काली मिट्टी बन गई है। यहाँ घास बहुत होती है। पर प्रायद्वीप का आधे से अधिक भाग (४ लाख वर्गमील अति प्राचीन चट्टानों का बना हुआ है। ये चट्टानें कुमारी अन्तरीप से लेकर गङ्गा के पास (कोल-गांव) १४०० मील तक फैली हुई हैं। बुन्देलखंड की चट्टानें सबसे अधिक पुरानी हैं।

राजमहल की पहाड़ियाँ दामोदर-घाटी, उड़ीसा के मुहाल, छत्तीसगढ़, छोटा नागपुर, ऊपरी सोन-घाटी और गोदावरी के पास सतपुरा श्रेणी ऐसे प्राचीन प्रदेश हैं, जिनमें पुराने समय के पौधों के निशान तो मिलते हैं पर उनमें जानवरों के ढांचों का पता नहीं लगता है। ये प्रदेश गोंडवाना विभाग में शामिल हैं।

हैदराबाद राज्य मध्यप्रान्त और उत्तरी-पश्चिमी हिमालय के प्रदेशों में मध्यकालीन चट्टानें मिलती हैं। इनमें रेंगने वाले विशाल जानवरों के ढांचे मिले हैं।

हिमालय और मैदान आदि भारत के नवीन भाग हैं।

हीरा आदि बहुमूल्य खनिज अधिक पुरानी चट्टानों में पाये जाते हैं। कोयला मध्यकालीन चट्टानों में ही मिल जाता है। खेती के योग्य उपजाऊ जमीन नवीन काँप में होती है।

भारतवर्ष में नई पुरानी सभी तरह की चट्टानें हैं। इसी से यहाँ भिन्न प्रकार के निम्न उपयोगी पदार्थ मिलते हैं :

जल

गंगा और सिन्ध के मैदान में कुछ ही फुट गहरा खोदने से कुआँ में पानी निकल आता है। पहाड़ी स्थानों में चश्मों से पानी मिलता है। बिलोचिस्तान में कारेज और पाताल-तोड़ कुएँ हैं। गुजरात के नवसारी वीरमगांव और गाही जिलों तथा पाँडचेरी में आर्टिजिन कुएँ खोदे गये हैं। गरम पानी तथा धातु मिश्रित पानी के चश्मे भी हिन्दुस्तान के कई स्थानों पर पाये जाते हैं। गङ्गोत्री और कुलू के गरम कुण्ड प्रसिद्ध हैं।

मिट्टी

जबलपुर और अम्बाला के रेत से अच्छा शीशा बनता है। मैदान में कंकड़ बहुत से स्थानों में मिलता है। इससे सीमेन्ट तैयार किया जाता है और कंकड़ बनता है। सड़कें भी बनाई जाती हैं। चिकनी मिट्टी बहुत स्थानों में पाई जाती है। राजमहल की पहाड़ी,भागलपुर

और गया की मिट्टी सर्वोत्तम है। कटनी, जैसलमेर और बीकानेर में मुलतानी मिट्टी मिलती है।

इसी से पक्की सड़कें भी बनाई जाती हैं। निम्नलिखित स्थानों में चूना और सीमेन्ट तैयार करने के बड़े बड़े केन्द्र हैं।

कटनी—(जबलपुर) यहां कच्चा माल विन्ध्याचल की निचली पहाड़ियों से आता है।

सतना—(रीवां) यहां कच्चा माल ऊपरी विन्ध्याचल से मिलता है।

गङ्गापुर—(बङ्गाल) यहां कच्चा माल कुछ विन्ध्याचल से और कुछ स्थानीय कंकड़ों से लिया जाता है।

शाहाबाद—(बिहार) जिले के कारखानों में रोहतास (विन्ध्याचल) के चूने का पत्थर काम आता है। सीमेन्ट बनाने के लिए रिवाड़ी, साल्टरेंज, हजारा और बाहरी हिमालय में भी कच्चा माल मिलता है।

मकान बनाने या पत्थर

आर्काट, बङ्गलौर और दक्षिणी भारत के बहुत से स्थानो में सुन्दर पत्थर निकलता है। यह पत्थर संसार के और देशों के पत्थरों से कहीं अधिक मज़बूत होता है। दक्षिणी भारत के प्रसिद्ध मन्दिर (सदियों पहले) इसी पत्थर के बने थे और आज भी वैसे ही मजबूत हैं। चूने का पत्थर अरावली तथा अन्य कई भागों में मिलता है। यह पत्थर, चूना सड़क और घर बनाने के काम आता है।

संगमरमर

यह पत्थर भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न स्थानों में विशाल मात्रा में मिलता है। मकाना (जोधपुर), खेरवा (अजमेर) मौंडला और भैंसलाना (जैपुर) ददिका (अलवर) तथा अन्य स्थानों में कई तरह और कई रङ्ग का संगमरमर पत्थर निकलता है। ताजमहल आदि मुगल-भवनों का निर्माण इसी सुन्दर पत्थर की अधिकता के

कारण हुआ। अराकान (बरमा) और बिलोचिस्तान का लहरिया पत्थर घरों के भीतरी भागों के सजने के लिये अच्छा होता है।

स्लेट

केवल कांगड़ा (हिमालय और रिवाड़ी, अरावली) में मिलती है। बलुआ पत्थर बहुत से स्थानों में पाया जाता है।

कोयला

हिन्दुस्तान के खनिज पदार्थों में कोयला सर्व प्रसिद्ध है। प्रतिवर्ष लगभग दो करोड़ टन कोयला भिन्न-भिन्न स्थानों से निकाला जाता है जो भारतवर्ष की आवश्यकता के लिये काफी होता है। साढ़े इक्यानवे फीसदी कोयला रानीगञ्ज, झरिया, गिरिडीह और डाल्टनगञ्ज (बङ्गाल, बिहार और उड़ीसा) में मिलता है। साढ़े तीन फीसदी कोयला सिंगरेनी (हैदराबाद राज्य) से, डेढ़ फीसदी बेलारपुर पेंचघाटी और मोहपानी (मध्यप्रान्त) से, २ फीसदी उमरिया (मध्य भारत) से निकलता है। शेष माकूम (आसाम), दंदोत और पलना (बीकानेर) से निकलता है। इसके अतिरिक्त मध्यभारत काश्मीर और कच्छ में भी कोयला निकाला जा सकता है।

पीट

नीलगिरि, नैपाल और काश्मीर की घाटियों और कई झीलों में पीट पाया जाता है। इसे काटकर और सुखा कर जलाने के लिये ईंधन बनाया जाता है।

मिट्टी का तेल

जहां हिमालय के दोनों सिरे मुड़ते हैं वहीं मिट्टी के तेल के प्राचीन केन्द्र हैं। यह अधिकतर पूर्व की ओर बरमा और आसाम प्रान्त में मिलता है। कुछ पश्चिम की ओर पाकिस्तान (पञ्जाब) और बिलोचिस्तान से निकलता है। बरमा में यनाजाऊं, सिंजू, यनांजात और मिनबूप्रसिद्ध तेल केन्द्र हैं। यहाँ प्रतिवर्ष प्राय: २७ करोड़ गैलन तेल निकलता है। आसाम के लखीमपुर जिले के तेल का सम्बन्ध

कुल्लू, गढ़वाल आदि कुछ स्थानों में तांबा पाया जाता है। प्रायः दो ढाई लाख रुपये का तांबा इस प्रकार निकलता है। पर देश में तांबे की बड़ी मांग है। इस मांग को पूरा करने के लिए प्रतिवर्ष ३ करोड़ रुपये का तांबा विदेशों से मंगाया जाता है।

लोहा

सर्वोत्तम लोहा उड़ीसा के मयूरभञ्ज, मध्यप्रान्त में रायपुर जिले और मैसूर के बाबाबूदन पहाड़ से निकलता है। बङ्गाल-बिहार अपनी सिंहभूमि, मानभूमि, बर्दवान और सम्भलपुर लोहे की खानों के लिये प्रसिद्ध है। बङ्गाल में दामूदा के लोहिया पठार के पास को ला बहुत समय से निकलता है। आसाम में भी कोयले के पास ही लोहा मिलता है। मद्रास प्रान्त में सलेम, मदुरा, कड़ापा और कर्नूल के जिलों से लोहा निकलता है। मध्यप्रान्त के चांदा जिले में खंडेश्वर नामी लोहे की पहाड़ी २५० फुट ऊँची है। जबलपुर और बिलासपुर में भी लोहा बहुत है। बम्बई प्रान्त में कुछ नदियों के रेत में लोहा मिलता है। हिमालय के कमायूँ और जम्मू प्रदेश में भी लोहा मिलता है।

मेंगनीज़

रूस को छोड़ कर हिन्दुस्तान दुनिया भर में सब से बड़ा मेंगनीज केन्द्र है। प्रतिवर्ष सात या आठ टन मेंगनीज निकलता है। मध्य प्रान्त के बालघाट, भंडारा, छिन्दवाड़ा, जबलपुर और नागपुर जिलों में समस्त उपज का $\frac{2}{3}$ भाग निकलता है। मद्रास के सन्दूर और विजगापट्टम जिलों का दूसरा स्थान है। बम्बई में पंचमहल, उड़ीसा में गंगापुर, मैसूर में चित्तलदुर्ग और शिमोगा और मध्य भारत में झलना दूसरे केन्द्र हैं।

कटनी और बालाघाट, कालाहांडी, सरगूजा, महाबलेश्वर भोपाल और पलना पहाड़ियाँ (मद्रास से अलमोनिया निकलती) है।

हजारीबाग, मानभूमि और मध्यप्रान्त के कुछ जिलों में सीसा

मिलता है। बरमा के बाडविन स्थान में चांदी की प्रसिद्ध खान है। इसी से जस्ता भी निकलता है। पालनपुर, हजारीबाग और मरगुई (लोअर बरमा) टीन के लिए प्रसिद्ध हैं।

हीरा

बुंदेलखंड "पन्ना" और कर्नूल, कड़ापा तथा बिलारी जिले गोलकुण्डा हीरे के लिए प्रसिद्ध है।

बरमा का मोगो (मागोक) जिला लाल के लिए प्रसिद्ध है। काश्मीर में पुखराज निकलता है।

अन्य मूल्यवान पत्थर भी कहीं कहीं हिमालय या बिन्ध्याचल के पहाड़ी भागों में पाये जाते जाते हैं।

नमक

मद्रास तथा बम्बई तट कच्छ और सिन्ध डेल्टा के पास समुद्र के पानी को धूप में सुखाकर नमक तयार किया जाता है। जैपुर की सांभर, जोधपुर की डीडवाना तथा फलौदी और बीकानेर की लूनकरनसर झीलों से भी नमक निकाला जाता है। बिहार, दिल्ली और संयुक्त-प्रान्त के आगरा आदि खुश्क जिलों में खारी सोतों और कुओं से नमक बनाया जाता है। उत्तरी भारत में पहाड़ी नमक अपार है, झेलम जिले में खेउड़ा की खानों से शुद्ध नमक निकाला जाता है। एक तह की मुटाई ५५० फुट है। इसकी लम्बाई बहुत बड़ी है। कोहाट जिले में बहादुरखेल के पास नमक की एक पहाड़ी की मुटाई १००० फुट और लम्बाई ८ मील है।

शोरा

बिहार, पञ्जाब, सिन्ध आदि प्रान्तों में खारी मिट्टी को खुरच कर उससे शोरा बनाया जाता है। पहले बारूद बनाने के लिए हिन्दुस्तानी

एक शिला ४ मील लम्बी ४ फुट चौड़ी और कहीं कहीं ६२० फुट गहरी है।

शोरा योरुप को बहुत जाता था। पर अब बनावटी शोरा तयार हो जाने से बहुत थोड़ा शोरा बाहर जाता है।

फिटकरी

बनावटी फिटकरी तयार हो जाने से हिन्दुस्तान में अब केवल कच्छ और कालाबाग (पाकिस्तान) में फिटकरी तयार की जाती है।

सोहागा

पुगाघाटी, लद्दाख से गरम चश्मों और तिब्बत की झीलों से सुहागा मिलता है।

रेह

गंगा की घाटी में रेह वहुत है। पर यह अभी बहुत कम काम में आता है।

अभ्रक

बिजली और शीशे के सामान में इसकी बड़ी आवश्यकता पड़ती है। दुनिया भर में इसकी सब से अधिक उपज हिन्दुस्तान में होती है।

हजारीबाग, नेलोर, गया, मुंगेर, अजमेर और मेरवाड़ा में अभ्रक मिलती है।

गन्धक

लद्दाख और पश्चिमी बिलोचिस्तान से गंधक आती है।

कांप

गंगा और सिन्ध आदि नदियों ने अपनी बारीक मिट्टी से विशाल उपजाऊ मैदान बना दिये हैं जो खेती के लिये प्रसिद्ध हैं :—

भारतवर्ष की अधिकांश जमीन चार तरह की है :—

१—सिन्ध और गंगा की कांप खुलते रंग की होती हैं। इसकी मिट्टी बहुत ही बारीक होती है। इसमें पत्थर के टुकड़ों का बिल्कुल अभाव है। कहीं कहीं धरातल के पास कंकड़ अवश्य मिलते हैं।

इस जमीन में कहीं रेत कहीं मटियार या चिकनी मिट्टी और कहीं दोनों का मिश्रण (लोम) या मटियार मिलता है।

२—रेगर या दक्खिन की काली जमीन काफी उपजाऊ होती है। इसमें चूना आदि कई खनिज पदार्थ मिले रहते हैं।
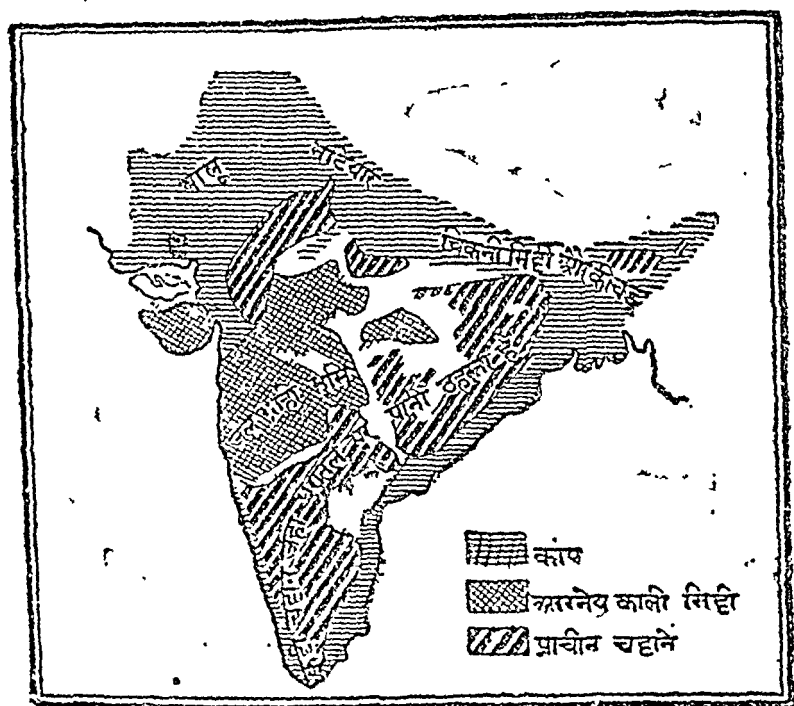
१६—भारतवर्ष की मिट्टी

३—मद्रास की भूरी कछारी जमीन गङ्गा के मैदान की जमीन से कम उपजाऊ होती है।

४—मद्रास प्रान्त की पहाड़ी लाल जमीन (जो कोयम्बटूर, मदुरा, करनूल और कृष्णा जिलों में मिलती है) कमजोर होती है। यह ऐसी चटानों के घिसने से बनी है जिनमें पौधों का भोजन अधिक नहीं रहता।

५—लुहारी मिटी महाराष्ट्र, रीवाँ आदि हिन्दुस्तान के बहुत से भागों में पाई जाती है। इसमें पच्चीस या तीस फी सदी लोहा मिला रहता है। जब यह ताजी खोदी जाती है, तो वह मुलायम होती है। इसमें लाल, पीले और भूरे रंग के निशान रहते हैं।
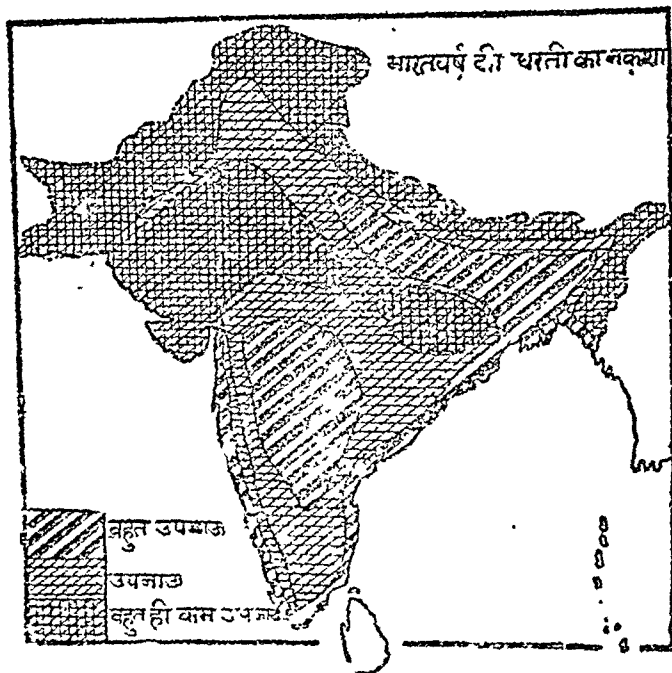
१०—भारतवर्ष की धरती का नक्शा

इसके अधिक भाग में सफेद रंग रहता है। सूखने पर यह मिट्टी कड़ी हो जाती है। अक्सर इसकी तहें २०० फुट मोटी मिलती है। यह बहुत कम उपजाऊ होती है।

छठा अध्याय

जलवायु

भारतवर्ष एक विशाल देश है। यह प्राय: ६ उत्तरी अक्षांश से लेकर ३० उत्तरी अक्षांश तक फैला हुआ है। इसका बहुत सा भाग समुद्र-तल से कुछ ही ऊंचा रहता है। कुछ भाग समुद्र-तल से चार-पांच मील ऊंचा है। कहीं समुद्र पास है कहीं समुद्र और भीतरी प्रदेश के बीच में सैकड़ों मील की दूरी है। देश के कुछ भाग पानी लाने वाली हवाओं के मार्ग में स्थित हैं। कुछ भाग इनके मार्ग से दूर अलग पड़े हुये हैं। इन सब कारणों से हमारे देश में प्राय: सभी तरह की जलवायु पाई जाती है। दक्षिणी भाग में भूमध्य रेखा की उष्णार्द्र (गरम और तर) जलवायु है। हिमालय के उच्च शिखर ध्रुव प्रदेश की भांति ठंडे हैं।

तापक्रम (सरदी और गरमी) नमी, हवा और वर्षा ही जलवायु के ४ प्रधान अंग हैं।

तापक्रम

सरदी गरमी की मात्रा को ही तापक्रम कहते। तापक्रम नापने के लिये आजकल हजारों मनुष्य थर्मामीटर का प्रयोग करते हैं। देश के बहुत से शहरों में प्रतिदिन यह तापक्रम लिख दिया जाता है। यों तो तापक्रम में प्रति घंटे कुछ न कुछ अन्तर रहता है। पर प्राय: सवेरे चार बजे अल्प तापक्रम होता है। तीसरे पहर लगभग दो बजे परम तापक्रम होता है। अल्प तापक्रम और परम तापक्रम को जोड़ कर दो से भाग देने से किसी दिन का औसत तापक्रम निकल आता है। अगर हम परम तापक्रम में अल्प तापक्रम को घटावें तो तापक्रम-भेद शेष रहता है। दो स्थानों का औसत तापक्रम चाहे समान हो, पर यदि उनके तापक्रम-भेद में भारी अन्तर हो तो उनकी जलवायु में भी भारी अन्तर होगा।

हिन्दुस्तान का दक्षिणी आधा भाग कर्क रेखा और भूमध्यरेखा के बीच में स्थित है। दक्षिणी हिन्दुस्तान लंका और टनासिरम (ब्रह्मा) में दोपहर का सूर्य कभी अधिक नीचा नहीं होता है। यहां साल के सभी समय में दिन और रात की लम्बाई में भी बहुत ही थोड़ा अन्तर रहता है। इसलिये ये भाग प्रायः साल भर गरम रहते हैं। कोलम्बो के लोग दिसम्बर-जनवरी में भी बरफ का शरबत पीते हैं और दोपहर को धूप में छाता लगाते हैं। दक्षिण-भारत के लोग आग तापना या गरम ऊनी और रुई भरे हुये सूती कपड़े पहनना जानते ही नहीं हैं। लंका के दक्षिणी स्थान में साल के अत्यन्त ठंडे और अत्यन्त गरम महीने के तापक्रम में केवल ४ अंश फारेनहाइट का भेद होता है।

अगर हम उत्तर में बम्बई तक बढ़ें तो ताप-क्रम-भेद भी बढ़ता जायगा। पर प्रायः द्वीप के सब भागों में यह तापक्रम-भेद एकसा नहीं बढ़ता है। एक ही अक्षांश में पश्चिमी तट का तापक्रम-भेद सब से कम, पूर्वी तट की ओर उससे अधिक और समुद्र से दूर बीच में सब से अधिक है। उदाहरणार्थ पश्चिमी तट पर मंगलोर, पूर्वी तट पर मद्रास और मध्य में बङ्गलोर प्रायः एक अक्षांश में स्थित हैं पर अत्यन्त ठण्डे और अत्यन्त गरम महीने का तापक्रम भेद मंगलोर में ७ अंश मद्रास में १२ अंश और बंगलोर में १२ अंश होता है। सूरत, नागपुर और कटक भी प्रायः एक अक्षांश में हैं, पर सूरत का तापक्रम-भेद १६ अंश नागपुर का २६ अंश और कटक का १९ अंश है। पर अधिक तर उत्तर की ओर चल देने पर पश्चिमी तट के पास वाले स्थानों का तापक्रम-भेद पूर्वी-तट के स्थानों के तापक्रम-भेद से कहीं अधिक बढ़ जाता है। अत्यन्त ठण्डे और अत्यन्त गरम महीने तथा तापक्रम भेद हैदराबाद सिन्ध) में २८ अंश, बनारस में ३० अंश, सिलचर (आसाम) में १८ अंश होता है। इन एक अक्षांश वाले स्थानों में सूर्य की किरणें समान कोण से गिरती हैं। दिन रात की लम्बाई भी समान होती है। पर हवा की नमी और खुश्की के कारण इनके ताप-

क्रम में भेद हो जाता है। हवा जितनी ही अधिक नम (आर्द्र) होगी उतना ही कम भेद शीतकाल और ग्रीष्मकाल के तापक्रम में रहेगा।
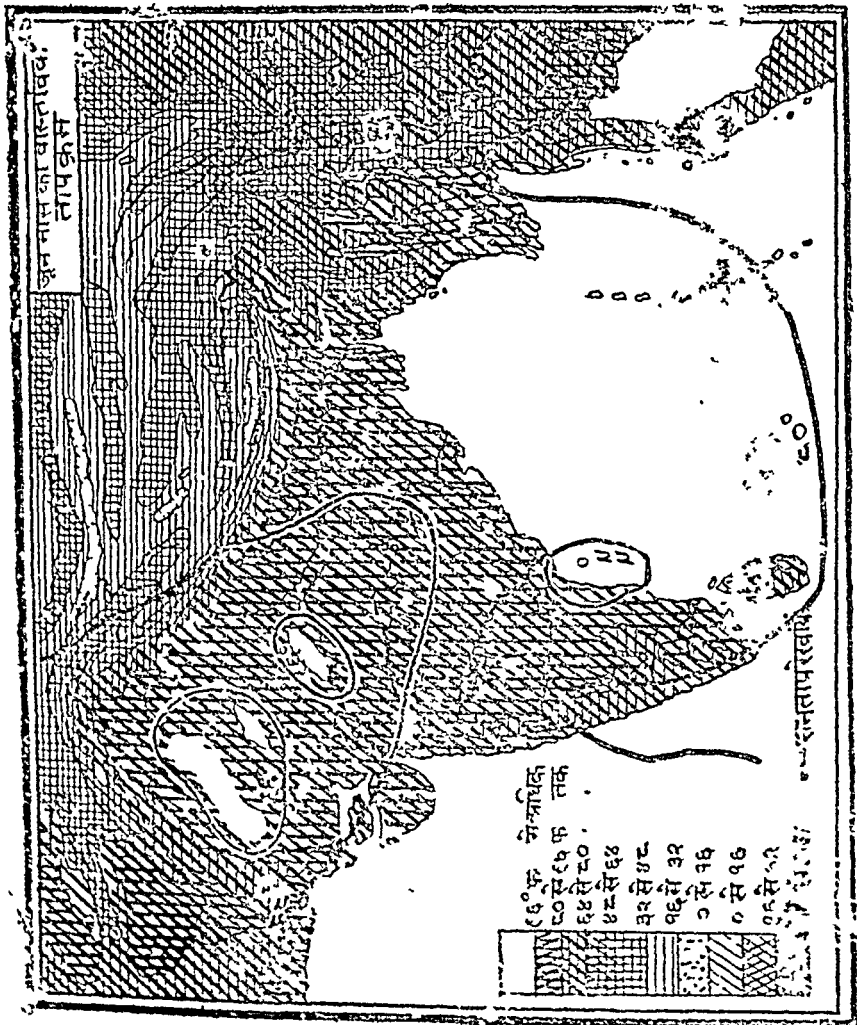
१८—संकेतों में फारेनहाइट होने चाहिये। नीचे के अन्तिम तीन संकेतों में ऋणों से पढ़िये—[चित्र ६]

बम्बई के दक्षिण में पश्चिमी तट की हवा पूर्वी तट की हवा से कहीं अधिक नम होती है। मध्य भाग की हवा दोनों तटों से भी कहीं

अधिक खुश्क होती है। ऊपरी सिन्ध, राजपूताना, सीमा प्रान्त और पंजाब में यह भेद और भी अधिक विकराल हो जाता है। जैकबाबाद
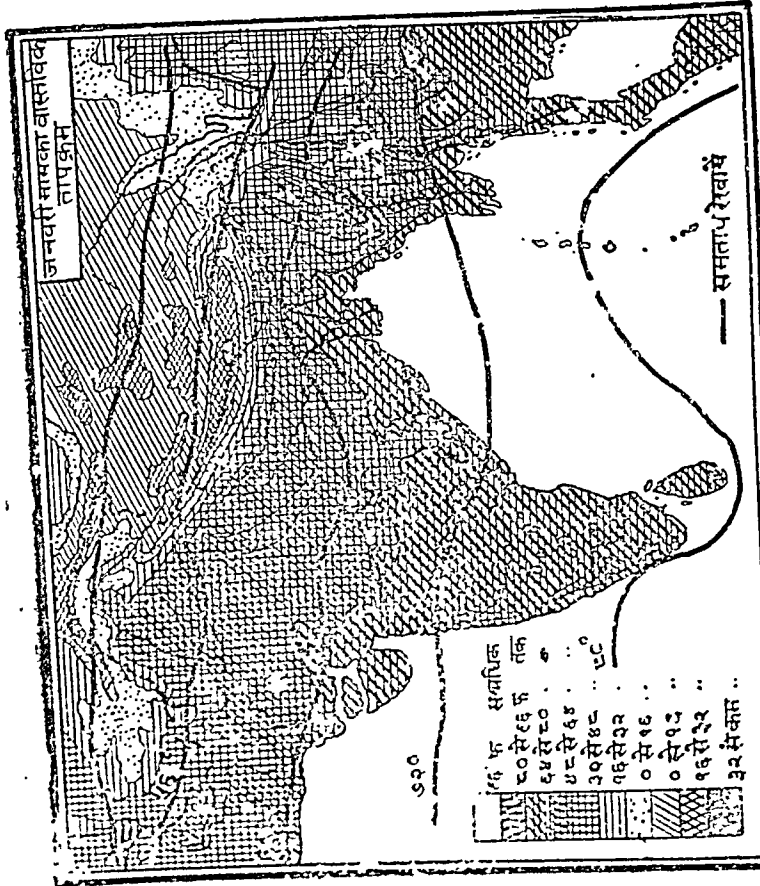
और सीवी में गरमी की ऋतु में दिन का तापक्रम १२० अंश से अधिक हो जाता है पर वहाँ के लोग गरमी को ऋतु में

रात की ठंड से बचने के लिये कुछ न कुछ गरम कपड़ा पास रख कर सोते हैं। डेराइस्माइलखाँ में किसी किसी साल सरदी की ऋतु में बरफ पड़ जाती है, पर गरमी के तापक्रम में १२० अंश फारेनहाइट रहता है। इसके उपरोक्त आसाम और पूर्वी बङ्गाल में गरमीकी ऋतु कभी खुश्क नहीं होती है। जिन दिनों में उत्तरी-पश्चिमी भारत में खेतों की घास झुलस जाती है और गलियों में धूल उड़ा करती है उन दिनों में भी आसाम, बंगाल, लङ्का, ब्रह्मा के तर आर्द्र भागों में सब कहीं हरियाली रहती है।

गुजरात, मध्यप्रान्त, मध्यभारत, बिहार और संयुक्तप्रान्त न सिन्ध की तरह खुश्क और न आसाम की तरह नम हैं। कर्क रेखा से भी दूर नहीं हैं। इसलिये यहां गरमियों में काफी गरमी पड़ती है और सरदी में मामूली ठंड होती है।

ऊंचाई और तापक्रम

समुद्र-तल से प्रायः प्रति ३०० फुट की ऊँचाई पर १ अंश फारेन-हाइट तापक्रम कम होता जाता है। इसी से हिमालय की ऊँची चोटियों पर जून के महीने में भी बरफ जमी रहती है। गरमी की ऋतु में जब मैदान में हम लोग पसीने से भीग जाते हैं और रात को हवा चलने से भी चैन नहीं पाते हैं उसी समय छः सात हज़ार फुट की ऊँचाई पर उसी अक्षांश में ऐसी ठंडक रहती है कि लोग गरम कपड़े पहनते हैं और रात को अँगीठी जलाकर मकान के अन्दर सोते हैं। औसत से ७००० फुट की ऊँचाई पर हमारे यहां उसी तरह की ठण्डी जलवायु है जिस तरह की दक्षिण योरुप में रहती है। पर उत्तरी हिन्दुस्तान में शीतकाल दक्षिणी योरुप के ग्रीष्मकाल से बहुत कुछ मिलता है। यही कारण है कि हिन्दुस्तान के प्रायः प्रत्येक प्रान्त में योरोपियन लोगों ने गरमियों में रहने के लिये कोई न कोई पहाड़ी स्थान निश्चित किया था।

मानसून

तापक्रम के विवरण में हम देख चुके हैं कि हिन्दुस्तान के बहुत से भागों की जलवायु अनुकूल रहती है। समुद्र और भूमध्यरेखा की समीपता के अतिरिक्त हिन्दुस्तान की बनावट भी इस जलवायु को अनुकूल बनाती है। हिन्दुस्तान का जो भाग भूमध्यरेखा के पास है वही भाग ऐसा त्रिभुजाकार है कि इसपर समुद्र का अधिक से अधिक असर पड़ता है। पठार की ऊँचाई भी प्रायद्वीप की गरमी को कुछ कम कर देती है। सिन्ध और गंगा के मैदान के उत्तर में प्रायः चार पांच मील ऊँचा हिमालय का पहाड़ है। यह पहाड़ दूसरी ओर वाले दो तीन मील ऊँचे तिब्बत के पठार को ठंडी (धरातलीय) हवाओं को हिन्दुस्तान में नहीं आने देता। हिन्दुकुश, सफेद-कोह सुलेमान आदि उत्तर-पश्चिम की पहाड़ियां भी औसत से छः सात हजार फुट ऊँची हैं। इनके पीछे ईरान का पठार औसत से पांच हजार फुट ऊँचा है। इसलिये हिन्दुस्तान की उत्तरी पश्चिमी पहाड़ियां भी ईरानी तूफानों से हिन्दुस्तान को काफी सुरक्षित रखती हैं। दर्रों के द्वारा से आने वाली हवा का असर बहुत अधिक नहीं होता है।

दक्षिणी-पश्चिमी मानसून

हिमालय की ऊँची पहाड़ी दीवार से दूसरा लाभ यह है कि हिन्दुस्तान की पानी बरसाने वाली हवाओं को बाहर नहीं जाने देती है। यदि अटलांटिक महासागर और प्रशान्त महासागर की तरह हिन्दमहासागर भी उत्तर में आर्कटिक महासागर तक फैला होता तब तो हिन्दमहासागर में भूमध्यरेखा के पास सदा परम तापक्रम और अल्प-वायु-भार रहता है। इसलिये यहां उत्तरी पूर्वी ट्रेड हवायें चल

* शिमला (पंजाब) मंसूरी और नैनीताल (संयुक्तप्रान्त) रांची (बिहार) दार्जिलिंग (बंगाल) शीलांग (आसाम) पचमढ़ी (मध्यप्रान्त) आबू (राजपूताना) महाबलेश्वर (बम्बई), उटकमण्ड (मद्रास) के सब स्थान ५,००० और ८००० फुट के बीच की ऊंचाई पर बसे हैं।

करती हैं। पर हिन्द महासागर के उत्तर में स्थल समूह है जो गर्मी के दिनों में समुद्र से कहीं अधिक गरम हो जाता है। जून-जुलाई में
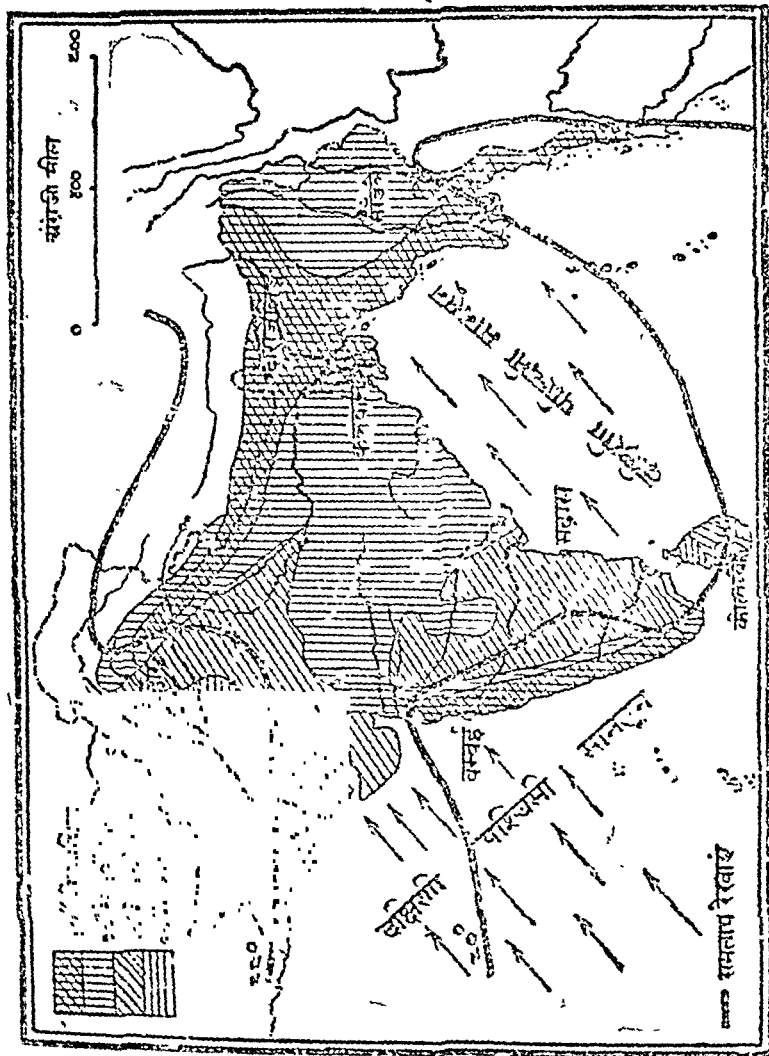
२०—ग्रीष्म ऋतु की वर्षा

भूमध्यरेखा के पास हिन्द महासागर का औसत तापक्रम केवल ७६ अंश फारेनहाइट होता है। पर इन्हीं दिनों में भारतीय प्रायद्वीप का

औसत तापक्रम ६० अंश हो जाता है। पर अधिक गरमी के कारण स्थल की हवा इसका स्थान भरने के लिये आती है। लगातार भाप के मिलते रहने से यह नमी से सन्तृप्त होती है। इस हवा का एक भाग पूर्वी अफ्रीका (एबीसिनिया) की ओर जाता है। दूसरा भाग हिन्दुस्तान की ओर आता है अरबसागर की हवा पहले पहल पश्चिमी घाट से टकराती है। यह हवा प्रतिवर्ष प्रायः नियत समय पर बड़े वेग (प्रतिघंटे प्रायः २० मील की चाल) से आया करती है। दक्षिणी-पश्चिमी मानसून हिन्दुस्तान के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भिन्न-भिन्न तिथियों को पहुँचा करती है। सब प्रान्तों से इसके लौटने का समय भी भिन्न है:—

प्रान्त	मानसून के आरम्भ होने की तिथि	लौटने की तिथि
बम्बई	५ जून	१५ अक्टूबर
बङ्गाल	१५ जून	१५-२० अक्टूबर
संयुक्त प्रान्त	२५ जून	३० सितम्बर
पंजाब	१ जुलाई	१४-२१ सितम्बर

जुलाई तक यह हवा समस्त हिन्दुस्तान में फैल जाती है। साल भर की ८५ फीसदी वर्षा इसी हवा से होती है। पर यहां मानसून लगातार पानी नहीं बरसाती है। बीच बीच में वर्षा रुक जाती है।

सब भागों में एक सी वर्षा नहीं होती है। लंका और पश्चिमी घाट में अधिक वर्षा (१०० इंच के ऊपर) होती है। बम्बई में प्रति वर्ष औसत से ७१ इंच वर्षा होती है। बम्बई के दक्षिण में तट पर वर्षा की मात्रा बढ़ते-बढ़ते धुर दक्षिण में २०० इंच तक हो जाती है। पर बम्बई के उत्तर में वर्षा की कमी है। कराची में प्रतिवर्ष औसत से केवल ६ इंच वर्षा होती है। सिन्ध का डेल्टा अक्सर खुश्क पड़ा

रहता है पश्चिमी घाट को पार करने के बाद इस हवा में बहुत कम नमी रह जाती है। इसलिये दक्खिन में बहुत थोड़ी (६ इंच) वर्षा होती है।

अरब सागर की ओर से आने वाली मानसून की मात्रा बंगालकी खाड़ी की मात्रा से कहीं अधिक होती है। बगाल की खाड़ी वाली मानसून का विस्तार अधिक हो जाता है इस हवा से इरावदीके डेल्टा ब्रह्मा के पश्चिमी तट और गंगा के डेल्टा में प्रबल वर्षा होतीहै।आगे बढने पर खासिया पहाड़ और अराकानयोमा के बीच में इस हवा को तंग रास्ते में एकदम ऊँचा चढ़ना पड़ता है। मैदान मेंअधिकतर पानी होने से तापक्रम भी ऊँचा रहता है। इसलिये जहाँ मैदानमें (ढाकामें) ४७ इंच पानी बरसता है। वहीं सिल्हट में १०४ इंच पानी बरसताहै। पर सिलहट भी पहाड़ के नीचे मैदान पर ही बसा है। चेरापूँजी ४४५ फुट ऊँची पहाड़ी के ठीक दक्षिणी ढाल पर बसा है। यहाँ दुनियां भर में सब से अधिक (४०० इंच) वर्षा होती है। एक वर्ष तो यहाँ ९०५ इंच वर्षा हुई। इस पहाड़ी के अधिक आगे भी वर्षा कम है। चेरापूंजी से ४५ मील भीतर की ओर होने से शीलांग में ५० इंच ही वर्षा होती है। हिमालय की रुकावट होने से बङ्गाल की खाड़ी का प्रधान भाग उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ता है। पर अधिक पश्चिम की ओर बढ़ने से वर्षा क्रमशः कम होती है। बरेली में ३९ इंच और पेशावर में केवल ४ इंच वर्षाहोती है। इनमानसूनों केउत्तरी सिरे पर (हिमालय) सब कहीं दक्षिणी सिरे से अधिक वर्षा होती है। गया में पटना से. झांसी में इलाहाबाद से आगरा में बरेली से, दिल्ली में देहरादून से, कहीं कम वर्षा होती है। अक्टूबर के महीने से शीतकाल आरम्भ हो जाता है तभी जल की अपेक्षा स्थल अधिक ठंडा हो जाता है और हवा को समुद्र की ओर लौटना पड़ता है। लौटते समय इस हवा में अधिक नमी नहीं रहती है। बङ्गाल की खाड़ी में कुछ भाप मिल जाने से यह हवा पूर्वी तट में गोदावरी के

मुहाने से कुमारी अन्तरीप तक पूर्वी लंका में विशेष रूप से पानी
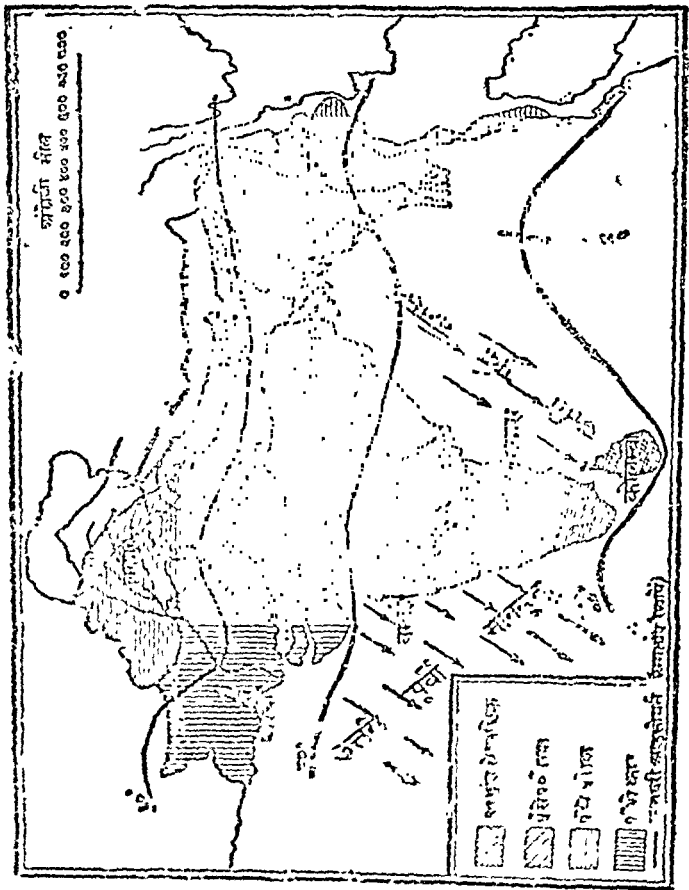
२१—शीत काल की वर्षा

बरसाती है। अरब सागर की मानसून लौटते समय मलाबार तट पर पानी बरसाती है।

इस समय सीमाप्रान्त पञ्जाब और संयुक्तप्रान्त के पश्चिमी जिलों

में दो-तीन इंच पानी बरसा देती है। अधिक ऊँचाई पर बरफ गिरती है। इस प्रकार वर्षा के अनुसार हिन्दुस्तान चार भागों में बँटा हुआ है :—

१—अधिक वर्षा के प्रदेश

१०० इंच से ऊपर वर्षा पश्चिमी तट, गंगा डेल्टा, आसाम और सुरमाघाटी, ब्रह्मा के तट और इरावदी डेल्टा में होती है।

२—अच्छी वर्षा के प्रदेश

५० से ८० इञ्च तक वर्षा गंगा की घाटी में इलाहाबाद तक, पूर्वी तट दक्षिणी ब्रह्मा से उत्तरी-पूर्वी पहाड़ी प्रदेश में होती है।

३—खुश्क प्रदेश

२० से ४० इञ्च तक वर्षा दक्खिन, मध्यभारत के पठार और मांडले के दक्षिण में ब्रह्मा के मध्य भाग में होती है।

४—अधिक खुश्क प्रदेश

१ से १० इंच तक वर्षा अरावली के पश्चिम में पाकिस्तान के सिन्ध और बिलोचिस्तान में होती है। अकाल से पीड़ित होने वाले प्रान्त क्रमशः ये हैं :—सिन्ध और कच्छ, संयुक्त प्रान्त खानदेश और विहार, हैदराबाद, मध्यभारत, गुजरात, बम्बई वाला दक्खिन प्रदेश, मैसूर, करनाटक, राजपूताना, पंजाब, उड़ीसा और उत्तरी मद्रास।

बङ्गाल की खाड़ी के चक्रवात

ये कुछ दूर भीतर तक पहुँचते हैं और निचले भागों में अपने साथ पानी भी बहा लाते हैं। अगर इनके साथ ज्वार भी मिल गया तो कुछ ही मिनट में दस बारह गज पानी बढ़ आता है। १८७६ ई० की लहर में आध घंटे के भीतर ही भीतर मेघना के कछार (बाकर-गंज) में १ लाख से अधिक मनुष्य डूब गये और इससे जो बीमारी

फैली उनसे भी २ लाख मनुष्य मर गये। पर ऐसे भयानक तूफान कहीं दस बीस वर्ष में एक दो बार आते हैं।

मानसून से निम्न बाहरी बातों का गहरा सम्बन्ध है

१—जब हिमालय और उत्तरी-पश्चिमी पहाड़ों पर मई के महीने तक भारी बरफ पड़ती रहती है तो उत्तर की ओर पूर्वी खुश्क हवायें चलने लगती हैं। इसमें मानसून देरी से आती है और कम पानी बरसाती है।

२—मारीशस के पास हिन्द महासागर में हवा का बहुत भारी दबाव होने से हिन्दुस्तान में भी हवा का भार बढ़ जाता है और मानसून अच्छी चलती है।

३—मार्च अप्रैल और मई महीनों में जिस तरह का वायु-भार आर्जेन्टाइना और चिली (दक्षिण अमरीका) में रहता है उसका उल्टा हिन्दुस्तान में देखा गया है। यदि वह वायु-भार ऊंचा होता है तो मानसून अच्छी चलती है।

४—यदि अफ्रीका में जंजीबार आदि भूमध्यरेखा के पास वाले स्थानों में अप्रैल और मई में जोर की वर्षा होती है तो मानसून कमजोर पड़ जाती है। यदि इन महीनों में वहां कम पानी बरसता तो मानसून खूब पानी बरसाती है।

५—यदि हिन्द महासागर के दक्षिणी भाग में अधिक बरफ पाई जाती है तो मानसून उस साल खूब पानी बरसाती है।

६—नील नदी में अधिकतर बाढ़ एबीसीनिया की वर्षा से होती है। जिस साल नील नदी में बाढ़ आती है उस साल हिन्दुस्तान में मानसून से भी अच्छी वर्षा होती है।

७—यदि हिन्दुस्तान में किसी वर्ष वायु-भार ऊंचा रहता है तो दूसरे वर्ष वायु-भार कम रहता है और वर्षा अच्छी होती है।

सातवां अध्याय
सिंचाई

हिन्दुस्तान में बहुत से भाग ऐसे हैं जहां काफी पानी नहीं बरसता है। सिचाई के बिना वहां मुश्किल से एक फसल उग सकती हैं। कुछ भागों में तो सिचाई के बिना एक भी फसल नहीं उग सकती है। इसलिए यहां सिचाई की ओर अति प्राचीन समय से ध्यान दिया गया है। कुओं से सिंचाई का काम बहुत पहले से लिया गया। इस
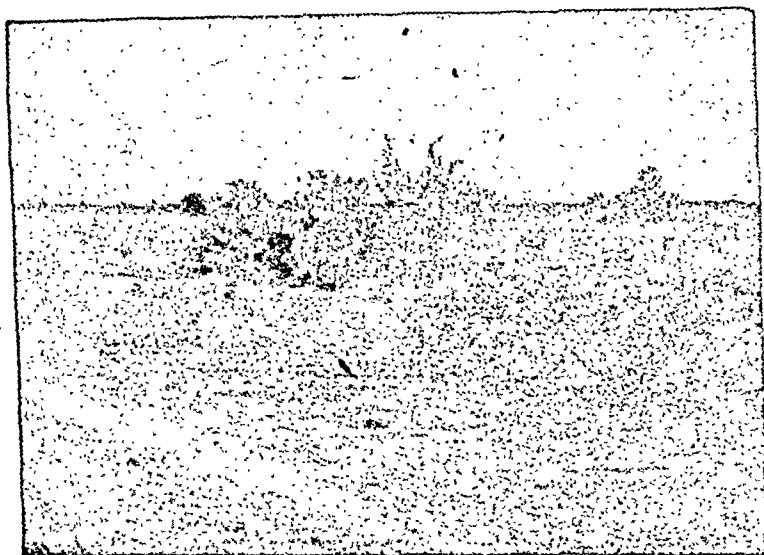
२२—सिचाई के पहले का दृश्य

समय भी सींची जाने वाली जमीन का प्रायः $\frac{1}{3}$ भाग कुओं से सींचा जाता है। कुओं से सींची जाने वाली जमीन में छोटे-छोटे किसानों को खर्च भी कम पड़ता है और नहर से सींची हुई जमीन से सवाई उपज होती है। तालाबों की संख्या भी बहुत है। केवल मद्रास प्रान्त में ही २९ हजार तालाब हैं जो तीस लाख एकड़ जमीन सींचते हैं।

पर तालाब अधिकतर दक्खिन की पहाड़ी भूमि में ही हैं। राजपूताना की रेतीली भूमि में जहां-तहां तालाबों और कुओं से सिंचाई होती है। बिलोचिस्तान में सिंचाई का एक विचित्र साधन है जिसे कारेज कहते हैं। कारेज (नहर) जमीन के भीतर ही चलकर पहाड़ी ढाल का पानी समतल खेतों तक ले जाती है।
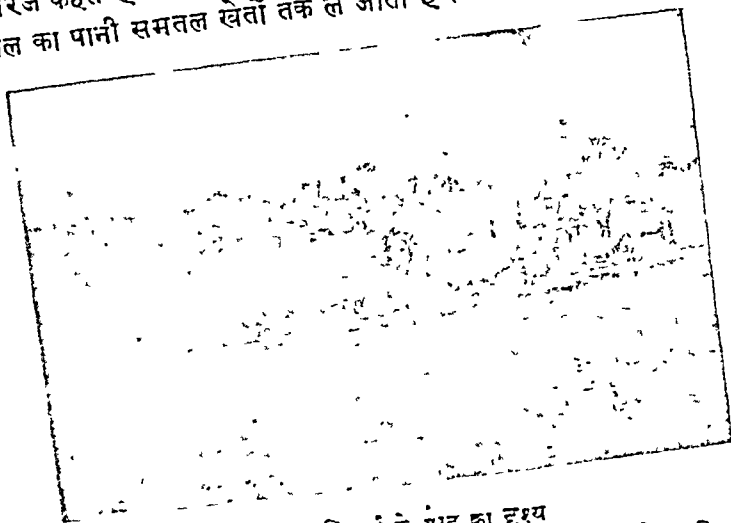
२३—सिंचाई के बाद का दृश्य

उत्तरी हिन्दुस्तान के पहाड़ी जिलों में तथा सिन्ध और पश्चिमी पञ्जाब में सिंचाई के पुराने चिन्ह मिलते हैं। यमुना की दो नहरें और कावेरी डेल्टा की नहरें बहुत पहले बनाई गई थीं।

केवल बङ्गाल और आसाम ऐसे प्रान्त हैं जहाँ वर्षा की अधिकता के कारण नहरों की आवश्यकता नहीं है। बिहार-उड़ीसा में भी काफी वर्षा होती है। इसलिए वहां भी नहरें कम हैं। सोन-नहर से दक्षिण बिहार में, त्रिवेणी नहर से चम्पारन में और उड़ीसा प्रोजेक्ट से उड़ीसा में सिंचाई होती है। लोअर ब्रह्मा में भी वर्षा की अधिकता होती है। केवल मध्य ब्रह्मा की सूखी जमीन सींचने के लिये मांडले और श्वेबो नहरें निकाली गई हैं।

बारी द्वाब नहर

सिंचाई की बड़ी बड़ी नहरें आजकल पञ्जाब, सिन्ध और संयुक्त-प्रान्त में पाई जाती हैं। कुछ प्रसिद्ध नहरों का उल्लेख नीचे किया जाता है :—

सरहिन्द नहर

रावी नदी के दाहिने किनारे से उस स्थान (मधुपुर) से निकलती है जहां रावी नदी पहाड़ों से बाहर आती है। यह नहर रावी और व्यास नदियों के बीच में गुरुदासपुर, अमृतसर और लाहौर जिलों के एक बड़े प्रदेश (२९ लाख एकड़) को सींचती है।

यह नहर सिवालिक के पास रूपर स्थान पर सतलज नदी से निकलती है और पटियाला, नाभा, झींद, फरीदकोट रियासतों तथा लुधियाना और फिरोजपुर जिलों की जमीन को सीचती हैं।

लोअर चनाब नहर

यह दुनिया की बड़ी नहरों में से एक है। चनाब नदी में वजीराबाद के पास खानकी स्थान पर बांध बना कर यह नहर निकाली गई है। इस नहर से २५ लाख एकड़ जमीन सींची जाती है।

लोअर झेलम नहर

यह नहर रसूल नगर के पास झेलम नदी से निकलती है।

अपर चनाब और लोअर बारी द्वाब नहरों को ट्रिपिल प्रोजेक्ट भी

१—पञ्जाब की नहरें सिक्खों की दूसरी लड़ाई के बाद आरम्भ हुई। जब वीर सिक्ख सेना छिन्न-भिन्न कर दी गई तब पञ्जाब से विद्रोह की आशङ्का थी। इस लिये बेकार सिपाहियों को काम देने के लिये नहरें बनने लगीं।

२—संयुक्त-प्रान्त की नहरें प्रायः अकाल के समय में खोदी गईं। अकाल पीड़ित मजदूरों ने दो चार मुट्ठी भर अन्न के लिये दिन भर खुदाई की। इस लिये वे बहुत सस्ती बन गईं।

कहते हैं। इनके निकालने में बड़ी होशियारी से काम लिया गया है। रावी नदी में पुल बनाकर चनाब नदी का पानी दूसरी ओर पहुँचाया गया है। यहां इसे लोअर बारी द्वाब नहर कहते हैं। लोअर चनाब
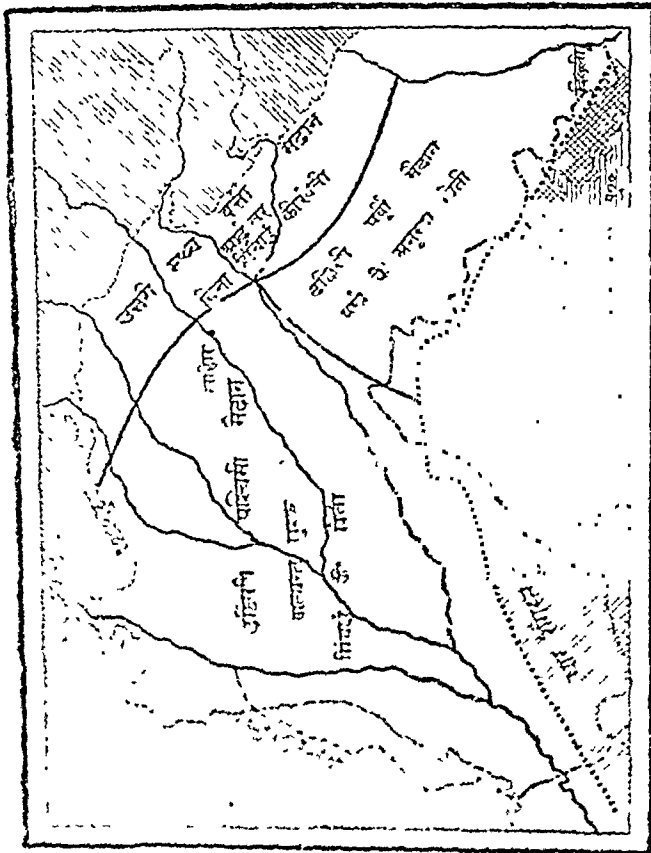
२४—पञ्जाब की नहरें

नहर में भी पानी की कमी न पड़े, इसलिये झेलम नदी का पानी नहर ही के द्वारा चनाब नदी में छोड़ दिया गया है।

गंगा नहर

यह नहर सबसे पहले खोली गई है। हरिद्वार के घाट के नीचे यह नहर गङ्गा के दाहिने किनारे से निकलती है। नहर का ढाल क्रमशः रक्खा गया है। इसलिये मार्ग के नालों और छोटी नदियों को पार करने के लिए कहीं नहर के ऊपर पुल बनाया गया है और नदी का पानी नहर के ऊपर से निकाल दिया गया हैं, कहीं नदी के ऊपर पुल बनाया गया है और नहर का पानी नदी के ऊपर से लाया
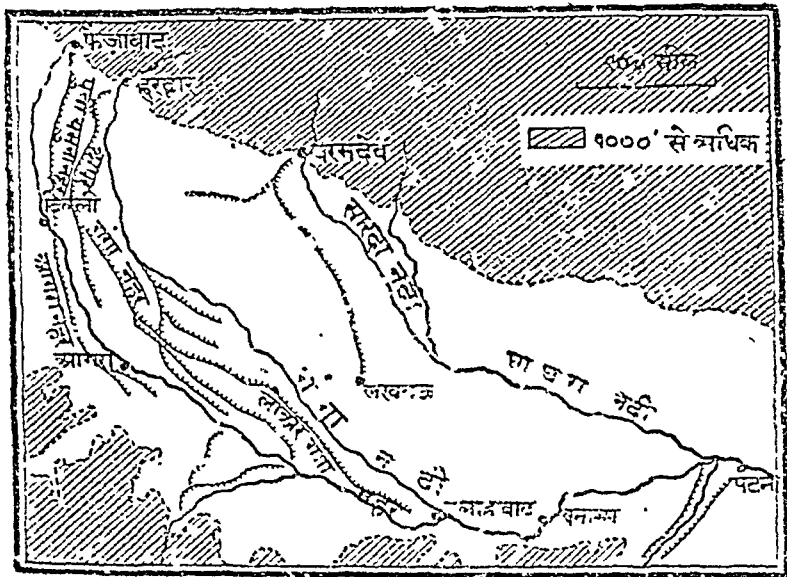
२९—संयुक्तप्रान्त की प्रधान नहरें

गया है। रुड़की के पास सोलानी नदी के ऊपर पुल बांध कर नहर का पानी दूसरी ओर ले जाने में बड़ी कुशलता दिखलाई गई है। हरिद्वार से १२० मील नीचे नारोरा (अलीगढ़) में इसी नहर से गङ्गा की छोटी नहर निकाली गई हैं। बड़ी नहर द्वारा (गङ्गा और यमुना के बीच का प्रदेश) ऊपरी भाग की और छोटी नहर द्वारा निचले भाग की सिचाई होती है।

यमुना नहर

पश्चिमी यमुना नहर को पहले पहल फीरोज तुगलक ने हिसार
जिले को सिंचाने के लिए निकलवाया था। यह नहर यमुना के दाहिने
किनारे से मैदान के आरम्भ से निकलती है। पास ही पूर्वी यमुना
नहर बायें किनारे से निकलती है। यह नहर भी पुरानी है और
अकबर के समय में निकाली गई थी। आजकल दोनों नहरें पहले
से बहुत सुधर गई हैं। आगरा नहर बहुत छोटी है और दिल्ली से
१ मील नीचे ओखला स्थान के पास यमुना के दाहिने किनारे से
निकलती है। यह नहर गुड़गांव, मथुरा और आगरा जिलों की
जमीन को सींचती है।

बेतवा नहर

यह नहर यमुना की सहायक बेतवा नदी के बायें किनारे से
निकलती है। यह नहर झांसी से बारह मील उत्तर से आरम्भ होती
है और बुन्देलखण्ड के जालौन और हमीरपुर जिलों को सींचती है।

सारदा नहर

सारदा नदी संयुक्त प्रान्त और नेपाल की सीमा पर बहती है।
ब्रह्मदेव के पास इस गहरी नदी में बीस-बीस फीट की दूरी पर १६
फौलाद के फाटक लगे हैं। यहीं से दुनिया भर में सबसे अधिक
लम्बी (शाखाओं समेत चार हजार मील) सारदा नहर निकाली गई
है। इस की नालियां १८ हजार मील लम्बी है। रुहेलखंड और अवध
के उपजाऊ प्रदेश की १५ लाख एकड़ जमीन सींची जाती है।

दक्खिन की नहरें

गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों के डेल्टा बड़े उपजाऊ हैं।
वर्षा कम होने के कारण इधर सिंचाई की बड़ी आवश्यकता थी। इस
लिये डेल्टा के पास इन नदियों में बांध बनाकर सिंचाई का प्रबन्ध
किया गया है। कर्नूल-कडापा नहर तुंगभद्रा नदी से निकलती है।

पर सबसे अधिक विचित्र नहर पेरियर प्राजेक्ट है। पेरियर नदी ट्रावनकोर राज्य में स्थित थी और पश्चिमी घाट से निकल कर अरब सागर में गिरती थी। पश्चिमी घाट की घाटी प्रबल वर्षा से मदुरा के खुश्क जिले में सिंचाई करने के लिये पेरियर नदी की घाटी में एक विशाल (६२ गज) ऊंचा बांध बांधा गया। जब यह घाटी एक बड़ी झील बन गई तब पश्चिमी घाट में सुरंग लगाया गया। इस सुरंग के द्वारा पेरियर नदी का पानी पूर्व की ओर वैगाई नदी में छोड़ा गया। इससे पूर्वी खुश्क भाग में सिंचाई सुगम हो गई। बम्बई
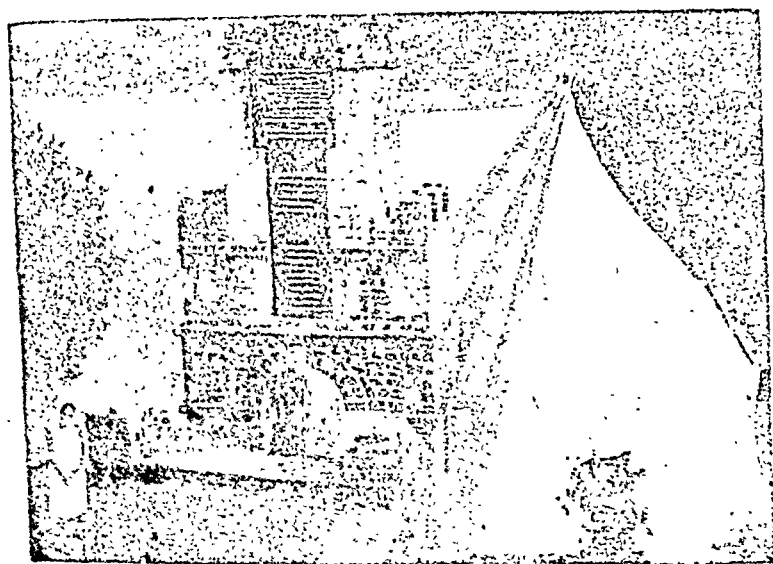
२६—पेरियर-बांध

प्रान्त में छोटी छोटी नहरें हैं। नीला मूठा और गोदावरी नहर प्रधान हैं।

पहले दक्खिन (मैसूर राज्य) में कृष्ण राजा सागर सिंचाई के लिये सबसे बड़ा तालाब बनाया गया। पर हाल में कावेरी नदी में

मेट्टूर डैम (बांध) दुनिया भर में सब से बड़ा बांध तयार किया गया है। हैदराबाद का निजाम सागर भी बड़ा है।

सिन्ध का प्रान्त सिंचाई पर ही निर्भर है। सक्खर नहर संसार की सब से बड़ी नहर है। सक्खर नहर में पास की सिन्ध नदी से ७ बड़ी-बड़ी नहरें निकाली गई हैं। तीन दायें किनारे और चार बायें किनारे से चलती हैं। इनमें से प्रत्येक नहर स्वेज नहर के बराबर है। ये कई लाख एकड़ जमीन सींचती हैं। इन नहरों के निकालने से सिन्ध प्रान्त की काया पलट हो गई है।

बीकानेर की गंगा नहर विशेष उल्लेखनीय है। रेतीली भूमि नहर के पानी को सोख न ले, इसलिये नहर की समस्त लम्बाई भर नहर की तली और दीवारें सीमेंट लगा कर पक्की कराई गईं। अधिक खर्च होने के कारण यह नहर बहुत दूर तक न बढ़ाई जा सकी। यह नहर सतलज के पानी से बीकानेर के उत्तरी भाग को हरा भरा करती है।

अपर स्वात नहर सीमाप्रान्त से १० मील आगे स्वात नदी से आरम्भ होती है। स्वात-घाटी में ४ मील बहने के बाद नहर के मार्ग में मलाकन्द श्रेणी पड़ती है। इस श्रेणी को पार करने के लिये १८ फुट चौड़ी, १० फुट ऊँची और २ मील लम्बी सुरंग बनानी पड़ी। चट्टानें कड़ी होने के कारण सुरंग बनाने में साढ़े तीन वर्ष लग गये। अन्त में यह नहर दरगाई प्रदेश को सींचने लगी जिससे सीमाप्रान्त के कुछ लड़ाका लोग शान्तिपूर्वक खेती के काम में लग गये।

———

आठवाँ अध्याय

वनस्पति और पशु

यदि हम किसी देश की जमीन और जलवायु को ठीक ठीक समझ लें तो वहां की वनस्पति का समझना सरल हो जाता है। पिछले पाठों में हम पढ़ चुके हैं कि हिन्दुस्तान का प्रायः आधा भाग उष्ण कटिबन्ध में है। दूसरा आधा भाग शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित है। कुछ भाग समुद्र-तल से अधिक ऊँचे नहीं हैं। लेकिन कुछ भाग समुद्र-तल से हजारों फुट ऊँचे हैं। कहीं वर्षा का प्रायः अभाव रहता है, कहीं १०० इञ्च से ऊपर वर्षा होती है। कुछ भागों की हवा प्रायः बिल्कुल खुश्क और कुछ भागों की हवा अत्यन्त आर्द्र रहती है। जमीन भी एक सी नहीं है। इन सब कारणों से भारतवर्ष की वनस्पति कई प्रकार की है :—

सदा बहार वाले वन

पश्चिमी घाट पूर्वी हिमालय के निचले ढाल, आसाम, अराकान-तट अंडमन द्वीप आदि प्रदेशों में जहां प्रतिवर्ष ८० इञ्च से अधिक वर्षा होती है वहीं सदा हरे भरे रहने वाले वन मिलते हैं। इन वनों के पेड़ बड़े ऊँचे और मजबूत होते हैं। पर तरह-तरह की बेल और छोटे-छोटे पौधों की अधिकता से वे प्रायः दुर्गम होते हैं।

पतझड़ वाले प्रदेश

दक्खिन, मध्य-हिमालय और ब्रह्मा के जिन मानसूनी भागों में ८० इञ्च से कम, पर ४० इञ्च से अधिक वर्षा होती है, वहां पतझड़ वाले वन मिलते हैं। इन भागों में ऊँचे और मजबूत पेड़ों के लिये काफी पानी बरस जाता है, पर वर्षा की इतनी अधिकता नहीं होती है कि वन दुर्गम हो जावें। ब्रह्मा का सागोन और हिमालय (गोरखपुर नैपाल आदि के पास) का साल का पेड़ इन्हीं पतझड़ वाले प्रदेशों में उगता है।

कँटीले जंगल

पंजाब, मध्यभारत, काठियावाड़, मध्य ब्रह्मा आदि भागों में ४० इंच से भी कम पानी बरसता है। वर्षा की कमी से पेड़ भली-भांति नहीं उग पाते हैं। पानी की किफायत करने के लिए प्रकृति ने उनका कद नाटा कर दिया है और इन्हें कांटों का जामा पहना दिया है।
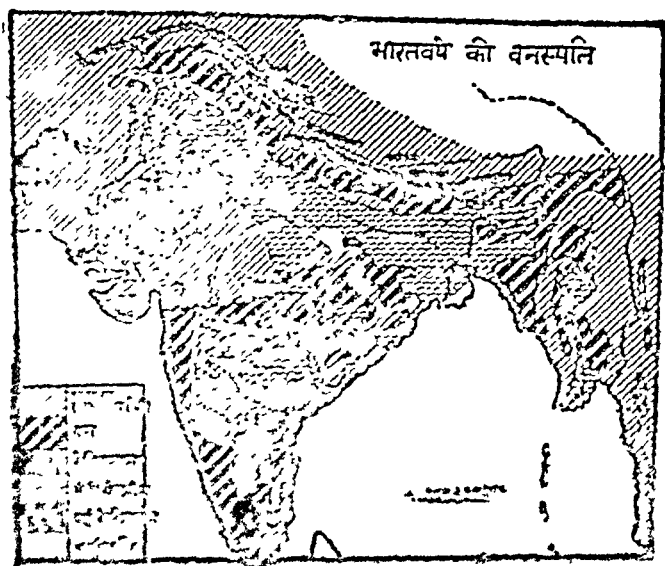
२०—रेगिस्तान में न केवल रेतीला बालू वरन् [illegible] भी शामिल है जंगलों में आमतौर में कंटीली झाड़ियां अधिक हैं। उपयोगी पेड़ों का अभाव है।

घास के प्रदेश

कम वर्षा वाले प्रदेशों में पेड़ों के बीच बीच में घास है।

२८—रेगिस्तानी पौधा

रेगिस्तानी पौधे

पश्चिमी राजपूताना सिन्ध बिलोचिस्तान आदि भागों में प्रतिवर्ष १५ इंच से भी कम वर्षा होती है। इसलिये यहां कांटेदार पेड़ और झाड़ियां भी कम हैं। केवल कहीं कहीं लम्बी जड़ वाले और मोटी गूदेदार तने वाले पौधे मिलते हैं। इनमें पत्तियों के स्थान पर काँटे होते हैं।

पर्वतीय वनस्पति

पहाड़ों पर ऊँचाई के अनुसार भिन्न-भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न प्रकार की वनस्पति हैं। समुद्र-तल से चार पांच हजार फ़ुट की ऊंचाई तक उष्ण प्रदेश की वनस्पति है। इससे अधिक ऊँचाई पर ठंड के कारण देवदारु आदि शीतोष्ण प्रदेश के बन हैं। उनसे ऊपर ढालों पर घास है। १८,००० फ़ुट से ऊपर सब कहीं शाश्वत हिम है।

गोरन के वन

हिन्दुस्तान और ब्रह्मा के कुछ तटीय भाग ज्वार की बाढ़ में समुद्र नमकीन पानी में डूब जाते हैं। इन वनों को लकड़ी जलाने और छाल चमड़ा कमाने के काम आती है। सुन्दर वन में सुन्दरी पेड़ के की लकड़ी छोटी छोटी नाव बनाने के काम आती है।

वनों के लाभ

और जिन भागों में पेड़ नहीं होते हैं वहां अधिक वर्षा होने पर जोर की बाढ़ आती है। प्रबल बाढ़ के साथ अच्छी मिट्टी भी खिसकती जाती है। ये वन वर्षा के प्रबल वेग को रोक लेते हैं। उनकी मजबूत जड़ें ढीली मिट्टी को भी जकड़े रहती हैं। वनों के कारण वर्षा का
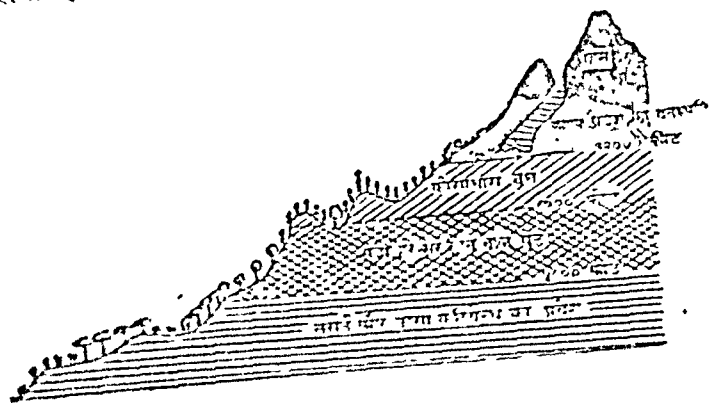
विचित्र होते हैं। वे दूर दूर की छलांग मारते हैं। यदि वे छलांग मारने पर दूसरी ओर न पहुँच सके तो। उल्टे और जाते हैं। पहले उत्तरी-पश्चिमी हिन्दुस्तान में शेर बहुत थे पर अब वे केवल काठियावाड़ में मिलते हैं। चीते और तेंदुए अब भी हिन्दुस्तान के बहुत से भागों में पाये जाते हैं। वे किसानों के जानवरों को अक्सर खा जाते हैं। भेड़िया, गीदड़, लोमड़ी और वनबिलाव प्रायः सर्वसाधारण हैं। हिमालय के पहाड़ी वनों में भालू बहुत मिलते हैं। पर हाथी सिर्फ आसाम और बरमा के घने वनों में मिलते हैं। तराई में गैंडा मिलता है। हिरण खुले मैदानों या वनों में मिलता है। नदियों में मछली और कछुओं के सिवा मगर और घड़ियाल भी होते हैं। मोर आदि पक्षियों की सम्पत्ति भी अपार है। पालतू जानवरों में गाय, बैल और भैंस अधिक उपयोगी हैं। घोड़ा और खच्चर भी सर्वसाधारण हैं। पहाड़ी भागों और खुश्क चरागाहों में भेड़ और बकरी बहुत पाली जाती हैं। उत्तर-पश्चिम के खुश्क भागों में ऊँट और गधा बड़े काम का होता है। आसाम, बरमा और लंका के तर भागों में हाथी बड़ा उपयोगी होता है।
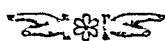
नवाँ अध्याय

कृषि

यदि प्रकृति के काम में बाधा न डाली जाती तब तो सारे भारतवर्ष में किसी न किसी तरह के वन-प्रदेश का ही साम्राज्य होता। पुराने समय में भी अब से कहीं अधिक वन-प्रदेश था। पर आबादी के बढ़ने से अधिक भोजन की आवश्यकता पड़ी। इसलिये मनुष्यों ने वनों को काट कर खेती के लिये ज़मीन साफ कर ली। इस समय जलवायु और जमीन के अनुसार भारतवर्ष में तरह तरह की खेती होती है। पर भारतवर्ष की समस्त खेती का क्षेत्रफल प्राय: ६५ करोड़ एकड़ है। खेती ही इस देश का प्रधान पेशा है। प्राय: ९० फीसदी लोग खेती ही की फसलें उगा कर अपना निर्वाह करते हैं। अपने देश की मुख्य फसलें ये हैं :—

धान

धान का जन्म-स्थान पूर्वी द्वीप-समूह है। पर अपने देश में अति प्राचीन समय से इनकी खेती होती है। धान को बहुत पानी, सूर्य की गरमी और चिकनी मिट्टी की आवश्यकता होती है। आरम्भ में पौधे का प्राय: $\frac{1}{3}$ भाग पानी में डूबा रहता है। जहां प्रबल वर्षा की बाढ़ से कुछ दिनों तक जमीन डूबी रहती है अथवा जहां नहरों द्वारा सिंचाई हो जाती है वहीं धान की फसल आसाम, बरमा, बिहार, उड़ीसा,

पूर्वी संयुक्तप्रान्त और मालाबार-तट से खूब उगाई जाती है। गोदावरी आदि नदियों के

२०—धान की पकी बाल
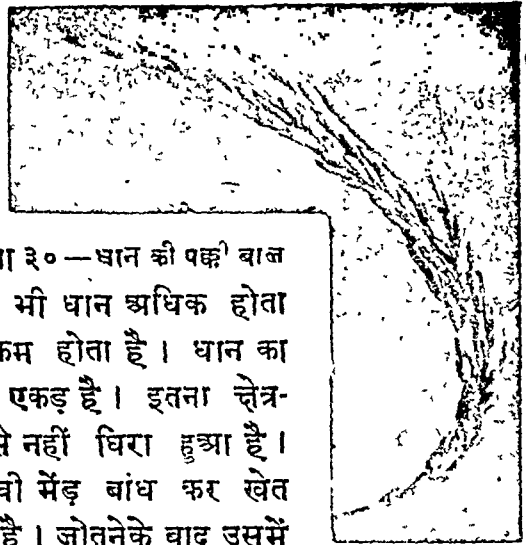
डेल्टा में सिंचाई की सुगमता हो जाने से मद्रास प्रान्त में भी धान अधिक होता है। दूसरे प्रान्तों में धान कम होता है। धान का क्षेत्रफल लगभग ८ करोड़ एकड़ है। इतना क्षेत्रफल किसी दूसरी फसल से नहीं घिरा हुआ है। धान बोने के लिए कुछ ऊँची मेंड़ बांध कर खेत का पानी घेर लिया जाता है। जोतनेके बाद उसमें फी एकड़ एक या डेढ़ मन बीज फेंक-फेंक कर बो दिया जाता है। पर अच्छे धान को पहले क्यारियों में बो देते हैं। जब पौधा एक बालिस्त ऊँचा हो जाता है तब उसे जड़-समेत सावधानी से उखाड़ कर एक वर्षा होने पर खेत में चहोर (जमा) दिया जाता। इस ढङ्ग से बीज कम लगता है। सितम्बर या अक्तूबर में फसल काट कर पैर (गांव या खेत के पास ऊँची और साफ़ जगह) में पौधों के गट्ठों को डाल देते हैं फिर डण्डा मार-मार कर पौधों के दाने अलग कर लिए जाते हैं अथवा बैलों की दायँ चलाकर गाहते हैं। हर एकड़ में पौधे (तिनके) तीस-चालीस मन निकलते हैं। पर इसका चारा जानवरों को अच्छा नहीं लगती है। इसलिये प्याल अधिकतर बिछाने या छप्पर छाने के के काम आता है। धान को कूट कर और फटक कर भूसी अलग कर ली जाती है। इस प्रकार साफ चावल निकाला जाता है। बड़े-बड़े कारखानों में चावल साफ करने का काम कल से किया जाता है।

बङ्गाल में सब से अधिक चावल पैदा होता है। पर घनी आबादी होने के कारण सब का सब चावल वहीं खर्च हो जाता है। बरमा में

बहुत सा चावल फालतू बचता है और दिसावर को भेजा जाता है।

गेहूँ

गेहूँ का पौधा प्राय: धान के पौधे के बराबर होता है। पर गेहूँ को
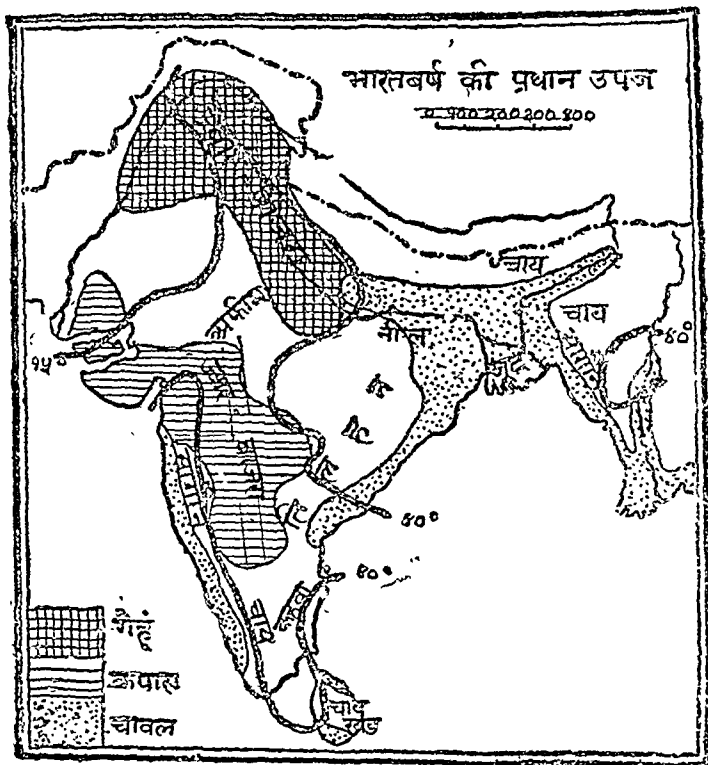
२१—भारतवर्ष की प्रधान फ़सलें

खुश्क और ठण्डी जलवायु की आवश्यकता होती है। अधिक नमीं में यह सड़ जाता है। इसलिए पञ्जाब और संयुक्तप्रान्त की कछार ी या रेत मिली हुई चिकनी मिट्टी में अच्छा गेहूँ पैदा होता है। गेहूँ को
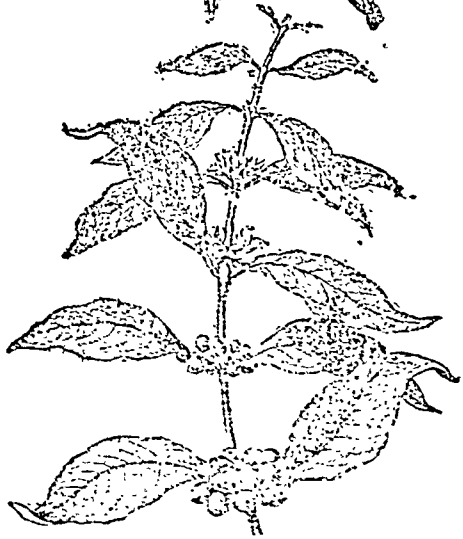
७१—धान, चाय, गेहूँ और क़हवा के पौधे

केवल एक-दो सिंचाई की जरूरत पड़ती है। यह सिंचाई नहर या कुओं से होती है। मध्यप्रान्त और बम्बई की रेगर या काली मिट्टी में सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। बरसात के बाद खेत तीन चार बार जोता जाता है। ढेले फोड़ने के लिए पटेला भी चला दिया जाता है। शीतकाल के आरम्भ होने पर बीज बो दिया जाता है। सिंचाई चाहने वाले खेत में क्यारियां बना ली जाती हैं। होली के आस-पास दाना पक जाता है और गरमी पड़ते ही काट लिया जाता है। फिर दांय चलाकर भूसे से गेहूँ को अलग कर लेते हैं।

चावल की अपेक्षा गेहूँ कहीं अधिक पुष्टिकारक भोजन होता है। इसीलिये चावल खाने वाले लोगों से गेहूँ खाने वाले (उत्तरी भारत के) लोग अधिक बलवान होते हैं। पर जिस तरह मांड़ निकाला हुआ चावल अधिक लाभदायक नहीं रहता उसी तरह महीन छना हुआ मैदा भी बलदायक नहीं रहता।

जौ

जौ के पौधे की जड़ें गेहूँ के पौधे से कम गहरी होती हैं। इसलिये जौ अधिक खुश्की नहीं सह सकता। जौ अक्सर गेहूँ से पहले पक जाता है। इस लिये संयुक्तप्रान्त के गरीब किसान प्रायः मकई की फसल काट कर उसी खेत में जौ बो देते हैं।

चना, मटर और मसूर अक्सर गेहूँ या जौ के साथ मिलाकर बोये जाते हैं। अधिक नमी की ऋतु में किसान लोग ज्वार या बाजरा को बिना काटे ही खुरपी से जरा सा गढ़ा करके चना गुल देते हैं। ज्वार या बाजरा की फ़सल कट जाने पर चना तेजी से बढ़ आता है। और गेहूँ के साथ काटा जाता हैं।

इसी रबी की फ़सल के साथ तेल के लिये सरसों, दुआं और अलसी के बीज बो दिये जाते हैं। पर ये चीजें गेहूँ से पहले काटी जाती है।

मक्का या मकई, मकरा, ज्वार और बाजरा की फ़सले वर्षा

आरम्भ होते ही जुलाई में बो दी जाती हैं। सबसे पहले मक्का काटी जाती है। अगहन मास तक खरीफ की सब फ़सलें कट जाती हैं। इनके साथ ही किसान लोग उर्द, मूँग, और अरहर (दाल के लिये) और तिल (तेल के लिए अथवा खाने के लिए) बो देते हैं। उर्द और

३३—जौ

मूँग कोखरीफ़ की फ़सल के साथ ही काटते हैं। तिल एक दो महीने बाद और अरहर को वैसाख में काटते हैं। इस प्रकार अरहर के बड़े दाने को पकने में आठ-दस महीने लगते हैं। मेंड पर अंडी बो दी जाती है। इसको तैयार होने में एक वर्ष लग जाता है। इसका तेल कई कामों में आता है। पत्ते रेशम के कीड़ो को खिलाये जाते हैं। पर सर्वोत्तम रेशम शहतूत के पत्ते खिलाने से मिलता है।

ईख

गन्ने को अच्छी जमीन, काफी गरमी और अधिक सिंचाई की जरूरत होती है। इसलिये यह अधिकतर (प्रायः २,००० वर्गमील) संयुक्त-प्रान्त और कुछ (१,००० वर्गमील) बङ्गाल और (५०० वर्ग-मील) पञ्जाब में होती है। गन्ना काट-काट कर चैत के महीने में बोया जाता है, इसको तैयार होने में दस-ग्यारह महीने लग जाते हैं। जाड़े के दिनों में गन्ना को लोहे के कोल्हू में पेर कर रस निकाल लेते हैं। इस रस को बड़े-बड़े कड़ाहों में औट कर गुड़ या शक्कर बना लेते हैं। हर एकड़ में औसत से ४० मन गुड़ पैदा होता है। पर कुछ पहले इस उपज से काम नहीं चलता था। इसीलिये बहुत सी शक्कर जावा, मारीशस आदि बाहरी देशों से मँगाई जाती थी।

कपास

कपास को गर्म और खुश्क जलवायु अच्छी लगती है। हिन्दुस्तान के जिन भागों में ४० इंच से कम पानी बरसता है उन सभी प्रान्तों में कपास उगती है। सारे हिन्दुस्तान में दो करोड़ एकड़ क्षेत्रफल कपास उगाने के काम आता है। पर दक्खिन की गहरी काली मिट्टी (रेगर) में कपास सब से अधिक होती है। इस उपजाऊ मिट्टी में नमी बहुत दिनों तक बनी रहती है। पर सिन्ध और गङ्गा के बाहरी मैदान में कपास का पौधा अधिक बड़ा होता है। यहीं सिंचाई कर के अधिकतर अमरीकन कपास उगाई जाती है। इस कपास का रेशा देशी कपास के रेशे से अधिक बड़ा होता है।

कपास वर्षा के आरम्भ में ही आषाढ़ के महीने में बो दी जाती है। कार्तिक में फूल आते हैं। अगहन या पौष महीने में टेंट इकट्ठे किये जाते हैं। खेती में अक्सर चार-पाँच बार चुनाई होती है। कपास को ओट कर बिनौले अलग कर लिये जाते हैं। बिनौले से तेल निकाला जाता है और खली जानवरों को खिलाई जाती है। धुनने के बाद रुई कात की जाती है और धागे से तरह तरह के कपड़े बुने

जाते हैं। बहुत सी रुई दिसावर भेज दी जाती थी और इसके बदले में विलायती कपड़ा मँगाया जाता है। इससे दाम भी अधिक देने पड़ते थे और देश में बेकारी भी अधिक फैलती थी।
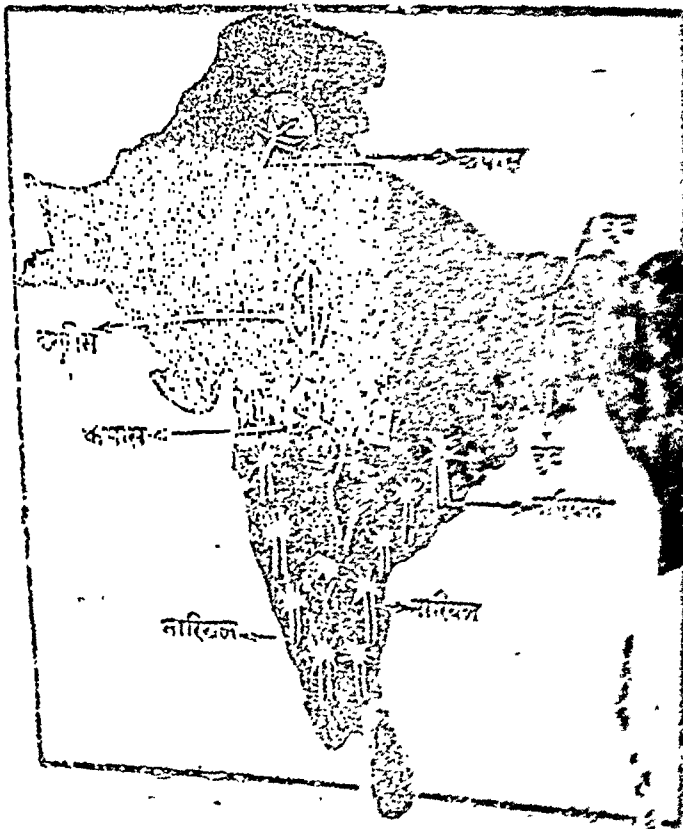
२४—भारतवर्ष की फसलें

जूट या पाट

जूट एक पौधे का रेशा है। जूट के पौधे को ज्यादा गर्म और तर जलवायु और उपजाऊ कछारी मिट्टी चाहिये। जूट की फसल जमीन को शीघ्र ही कमजोर कर देती है। इसलिये कछारी मिट्टी पर हर साल बाढ़ के साथ लाई गई बारीक मिट्टी की तह पर तह

आवश्यकता होती है। इन कारणों से दुनिया भर में जूट का एक मात्र प्रदेश गङ्गा और ब्रह्मपुत्र की निचली घाटी में, पूर्वी, उत्तरी और दक्षिणी बङ्गाल आसाम में स्थित है।

बसन्त-ऋतु की वर्षा के बाद जूट के खेत की जोताई आरम्भ हो जाती है। मार्च, अप्रैल या मई महीने में बीज बो दिया जाता है। जुलाई या अगस्त में फल आने से पहले ही फसल कट जाती है।

३४—जूट (पाट) की कटाई

पौधों को छोटे छोटे गट्ठों में बांध कर पास के तालाब में गाड़ देते हैं और प्रायः २१ दिन तक गाड़े रखते हैं। इसके बाद ऊपर की छाल बिल्कुल सड़ जाती है और मार मार कर पानी में धोने से साफ़ रेशा निकल आता है। फिर यह रेशा लकड़ी से अलग कर लिया जाता है।

३६—रेंडी, सरसों, जूट और कपास

छोटे-छोटे सौदागर किसानों से जूट मोल लेकर शहरों के बड़े बड़े सौदागर के हाथ बेच देते हैं। वे लोग जूट को कलकत्ते भेज देते हैं। यहां रेशों को कातने और बोरे बुनने के बड़े बड़े कारखाने हैं। पर इन कारखानों में सारा जूट खर्च नहीं होता है। बचे हुये जूट को बड़े बड़े गट्ठों में बांध कर व्यापारी लोग दिसावर भेज देते हैं। जूट के व्यापार को आरम्भ हुये प्राय: १०० वर्ष हुये हैं। इससे बड़े बड़े व्यापारियों को लाभ अवश्य हुआ है, पर बङ्गाल के तालाबों का पानी बड़ा मैला बदबूदार हो गया है जिससे मलेरिया का प्रकोप बढ़ता जा रहा है।

बिहार और संयुक्त-प्रान्त में सन, रस्सी आदि घरेलू काम के लिये उगाया जाता है।

नील

यह भी एक छोटा पौधा है और गङ्गा की ही घाटी में उगाया जाता है। पर जब से जर्मनी में बनावटी नीला रङ्ग तैयार होने लगा तब से हिन्दुस्तान में नील की खेती कम हो गई है।

अफ़ीम

यह पोस्ते के पौधे का सूखा हुआ रस है। वह पौधा शीतकाल में बोया जाता है। होली के निकट इनमें सफेद फूल आते हैं। फूल आने के बाद और दाना पड़ने के पहले किसान लोग दोपहर के बाद ढोंडी (कच्चे फल) आंकते हैं और दूसरे दिन रस को इकट्ठा कर लेते हैं। अन्त में अफ़ीम के सरकारी दफ्तर में सब अफीम मोल ले ली जाती है। गङ्गा की मध्य घाटी और मालवा-प्रदेश में अफीम बहुत पैदा की जाती थी पर जब से चीनी लोगोंने अफीम खाना और हुक्के में रखकर पीना बन्द कर दिया, (तब से यहां उसकी खेती बहुत कम हो गई है। किसान लोग पोस्ते के साथ अक्सर धनियाँ, सौंफ और अज्वाइन भी बो देते हैं।

तम्बाकू

हिन्दुस्तान में १६०५ ई० में पहले-पहल पुर्तगाली लोगों के हाथ

अलसी नील पोस्ता (अफीम)

तम्बाकू

२८—अलसी, नील, पोस्ता और तम्बाकू

से तम्बाकू का आगमन हुआ। तम्बाकू के पौधे को उपजाऊ जमीन

के साथ साथ काफी गर्मी और पानी की जरूरत होती है। इसलिये बङ्गाल, मद्रास, बम्बई, बर्मा, पञ्जाब और संयुक्त-प्रान्त में इसकी खेती बहुत होती है। तम्बाकू का पौधा जमीन को जल्द कमजोर कर देता है। इसका पानी विशेष कर छोटी उम्र में तन्दुरुस्ती को बिगाड़

२६—नालाबों की अधिकता होने से बङ्गाल में जूट पाट धोने के लिये बड़ी सुविधा है।

देता है। फिर भी इसका प्रचार इतना बढ़ रहा है कि देश में पैदा की गई तम्बाकू की खपत हो जाने के बाद प्रायः २ करोड़ रुपये की तम्बाकू बाहर से आती है।

चाय

चाय के पौधे को प्रबल वर्षा और तेज धूप चाहिये। लेकिन

इनकी जड़ों में पानी का भरा रहना पौधे को बिगाड़ देता है। इसलिए चाय का पौधा आसाम की पहाड़ियों के ढालों तथा दार्जिलिंग और
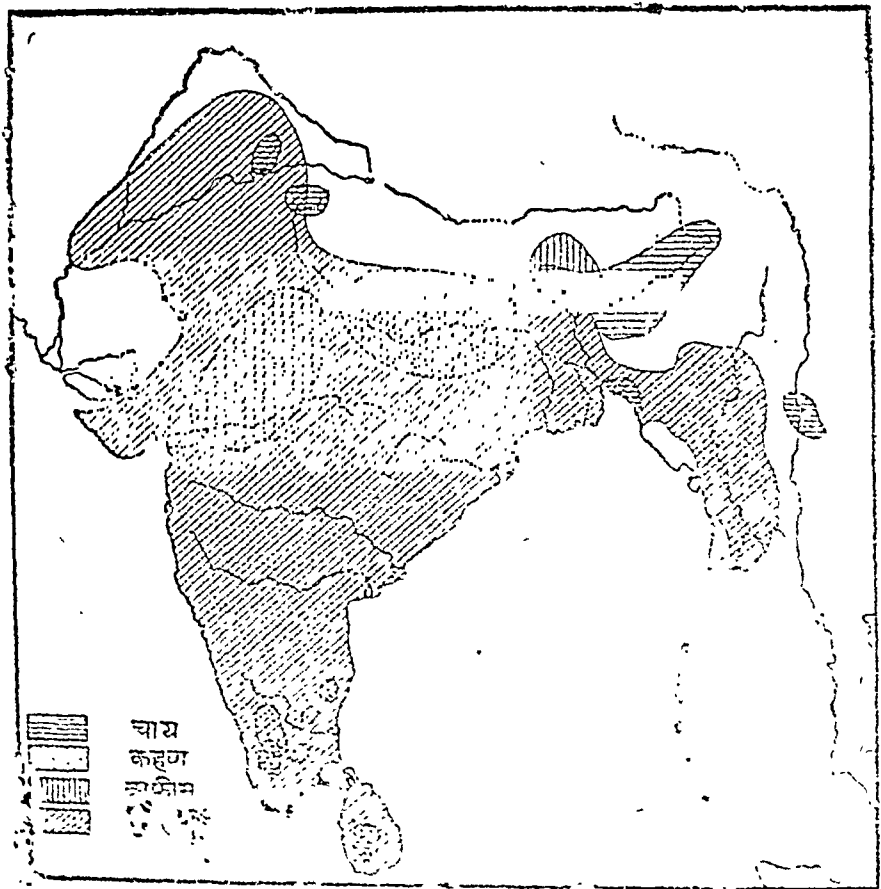
६६—चाय, कहवा, अफीम और तिलहन के प्रधान प्रदेश

देहरादून में हिमालय के ढालों पर खूब उगता है। लङ्काद्वीप और नीलगिरी के ढाल भी चाय के केन्द्र हैं। पत्तियां तोड़ने का काम औरतें और बच्चों से कराया जाता है। पत्तियों को धीमी आंच से सुखाने के बाद मशीनों का प्रयोग होता है।

क़हवा

यह पौधा भी पहाड़ी ढालों पर लगता है। यह मानसूनी हवा का वेग नहीं सह सकता है। इसलिये क़हवा अधिकतर मैसूर और लंका में हवा से सुरक्षित ढालो पर होता है। पौधे के बीजों को भून कर पीस लिया जाता है और फिर यह पीने के काम आता है।

पान

पान की वेल कुछ ऊँची गीली जमीन पर लगाई जाती है, क्योंकि बँधा हुआ पानी इसको हानि पहुँचाता है। बेल के सहारे के लिये थोड़ी थोड़ी दूर पर दो ढाई गज ऊँचे पतले खम्भे गाड़ दिये जाते हैं। धूप और आंधी से बचाव के लिये ऊपर छाया कर दी जाती है। एक बार पान का बगीचा ठीक लग जाने पर पन्द्रह बीस वर्ष तक पान (पत्ता) मिलता रहता है।

सुपारी

सुपारी का पेड़ समुद्र-तट के पास आसाम और बङ्गाल में उगाया जाता है। पन्द्रह बीस वर्ष के बाद इसमें फल आने लगता है। सुपारी का पेड़ मार्च में फूलता है, पर सुपारी (फल) दिसम्बर या जनवरी में तोड़ी जाती है। सुपारी का खर्च अधिक होने के कारण हमारे यहां बहुत सी सुपारी मलय प्रायद्वीप और लङ्का से मँगाई जाती है।

नारियल

नारियल का पेड़ सुपारी से कहीं अधिक और मोटा होता है। यह भी समुद्र के पास रेतीली ज़मीन में उगता है जहां अधिक वर्षा होती है। नारियल को समुद्री नमकीन वायु और तटीय रेतीली मिट्टी विशेष प्रिय है। इसलिये पूर्वी और पश्चिमी तटीय मैदानों और लङ्का में नारियल बहुत होता है। पर तट से अधिक दूर जाने पर नारियल का पेड़ नहीं मिलता है। हरे फल का रस पिया जाता है। पक्के फल को काट कर खोपड़ा या गरी निकाल लेते हैं, जिससे तेल तैयार किया जाता है।

४१—नारियल

४२—केला
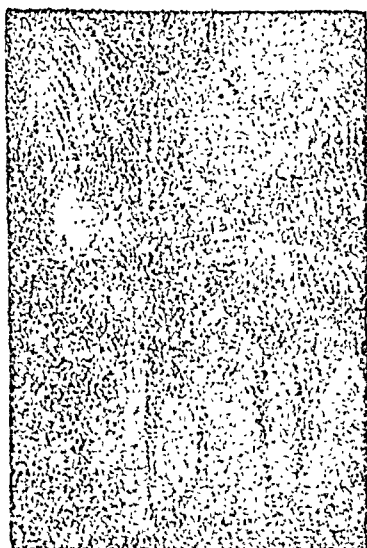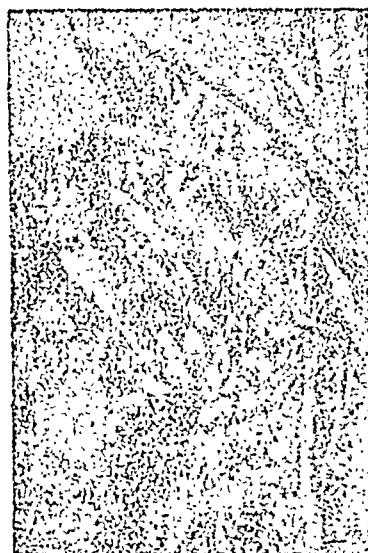
मूंगफली

मूंगफली के पौधे को कुछ कुछ रेतीली भूमि और उच्च तापक्रम और साधारण नमी की जरूरत होती है। इसलिये मद्रास, बम्बई, बिहार और ब्रह्मा प्रान्त में विशेष रूप से मूंगफली की खेती होती है। फल से तेल निकाला जाता है।

मसाले

लालमिर्च प्रायः सब कहीं पैदा होती है। मूंगफली की तरह हल्दी एक चौड़ी पत्ती वाले पौधे की जड़ में लगती है। काली मिर्च और इलायची मलाबार की पहाड़ियोंके ढालों पर उगाई जाती है। जब गुच्छे हरे होते हैं तब मिर्च का रंग काला नहीं होता है। सूखने से ऊपरी छिलका सिकुड़ जाता है और उसका रंग काला पड़ जाता है।

फल

हिन्दुस्तान में केला, सेब, अमरूद आदि तरह तरह के फल बहुत होते हैं। पर इनमें आम सर्व प्रसिद्ध है।

४२—मूंगफली
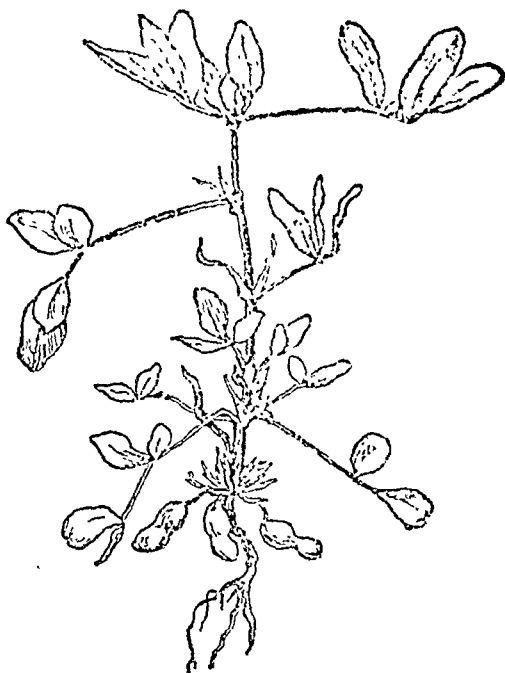
तरकारियाँ

यहां आलू, गोभी, गाजर, लौकी आदि तरकारियाँ अनेक हैं। पर अच्छी खाद मिलने से शहरों के पास अधिक उगाई जाती है। और मांग अधिक होने से वहीं उनका अच्छा दाम लगता है।

४२—जायफल का पेड़ और फल

सिनकोना

सिनकोना की छाल को कूट कर कुनैन बनाते हैं। सिनकोना के पेड़ का असली घर दक्षिणी अमरीका में एंडीज के ऊंचे ढालों पर है। पर अब से ७० वर्ष पहिले नीलगिरी, मैसूर, ट्रावनकोर और दार्जिलिंग में सिनकोना के पौधे लगाये गये। इन्हीं से देश भर के लिये कुनैन तयार की जाती है।

रबड़ एक पेड़ के रस से तयार की जाती है। यह पेड़ अत्यन्त गर्म और तर जलवायु में उगता है। इसलिये लङ्का और लोअर (निचले, ब्रह्मा में इसके बगीचे लगाये गये हैं।

४।—काली मिर्च

लाख

यह एक तरह की गोंद है जिसे एक कीड़ा इकट्ठा करता है। छोटा नागपुर और आसाम की जङ्गली जातियां अधिकतर लाख बाहर भेजती हैं। मिर्जापुर में लाख साफ करने के कई कारखाने हैं।

दसवाँ अध्याय

कला-कौशल

कृषि प्रधान देश होने पर भी भारतवर्ष सदा से स्वावलम्बी रहा है। पहले आवश्यकताएं कम थीं। जो आवश्यकताएँ थीं उनकी पूर्ति यहीं हो जाती थी। प्रत्येक गाँव में लुहार खेती के औज़ार और अस्त्र-शस्त्र बनाता था। बढ़ई लकड़ी का काम बनाता था कुम्हार घड़े आदि मिट्टी के बरतन तैयार करता था। चमार मरे जानवरों का चमड़ा निकालता था और जूते, जीन आदि चमड़े का सामान बनाता था, जुलाहा या कोरी कपड़ा बुनता था। दर्जी उसे सीता था और आवश्यकता पड़ने पर रंगरेज़ उसे रङ्ग देता था। सुनार जेवर बनाता था और तेली तेल पेरता था। कहीं-कहीं पर ये तथा इसी तरह के दूसरे काम हज़ारों घराने मिल जुल कर करते थे जिससे फालतू माल दूसरे देशों को भी पहुँचता था पर जबसे पश्चिमी योरुप में बड़े-बड़े कारखाने खुल गये। उनकी सरकारों ने अपने अपने कारखानों को मदद दी, जहाजों और रेलों ने सस्ते किराये पर वह माल हिन्दुस्तान के बाज़ारों में भरना शुरू कर दिया, तब से यहां के कारीगरों की दशा बड़ी शोचनीय हो गई है।

बड़े-बड़े शहरों में चतुर कारीगर लोग राजा-महाराजा और धनी लोगों के लिये बढ़िया कारीगरी का काम तैयार करते थे। पत्थर का तराशना लकड़ी का खरादना, हाथी दाँत की पच्चीकारी करना, रेशमी कपड़ों पर सोने, चांदी के तारों से बेल बूटा बनाना और सूती कपड़ों पर चिकन का काम करना बहुत प्रचलित था। पर पुराने राज्यों के नष्ट होने और लोगों में निर्धनता बढ़ने से भोग-विलास का सामान तैयार करने वाले कारीगर एकदम बेकार हो गये। दिल्ली, आगरा,

बनारस, मथुरा, ग्वालियर, जयपुर, ढाका, अमृतसर, मुरशिदाबाद

४६—कुम्हार की कारीगरी

और श्रीनगर आदि शहरों में अब भी पुरानी कारीगरी के कुछ काम

होते हैं। बड़े पैमाने पर सामान तैयार करने-वाले कारखाने हिन्दुस्तान भर में १६ हजार से कुछ ही अधिक हैं। वे सब अभी हाल में खोले

४७—दक्षिणी भारत के बढ़ई अपने सीधे-सादे औजारों से बढ़िया कारीगरी की चीजें तैयार करते हैं।

गये हैं। इन सब कारखानों में लगभग ३० लाख मनुष्य लगे हुये हैं। इन कारखानों में निम्न प्रधान हैं।

जूट

बंगाल में जूट का घरेलू धन्धा बहुत पुराना। पर १८८५ ई० में श्री रामपुर के पास रिशरा में पहली मिल खुली। इस काम में बहुत ही अधिक लाभ हुआ। आजकल २४ लाख एकड़ जमीन जूट उगाने के काम आती है। प्रति एकड़ में औसत से पन्द्रह-बीस मन पाट (जूट) पैदा होता है। जिससे किसान को लगभग १००) मिलते

हैं। । ब्रह्मपुत्र का पानी बहुत साफ है। इसलिये इधर के जिलों का जूट सर्वोत्तम होता है। गंगा के प्रदेश में पानी मटीला होने से जूट का रंग कुछ पीला होता है और कम चमकीला होता है। पुर्णिया जिले का बिहारी जूट गंदले पानी में धुलने के कारण बहुत ही घटिया होता है। हाथ या दबाने वाली मशीनों से दबाकर जूट के रेशे के गट्ठे बांध लिये जाते हैं और हावड़ा को भेज दिये जाते हैं।

अधिक लाभ होने के कारण कलकत्ते से ३५ मील उत्तर बंसबरिया नगर से लेकर कलकत्ते के ·५ मील दक्षिण शामगंज तक हुगली के किनारे किनारे जूट के ८० बड़े बड़े कारखाने हैं। इन कारखानों में कई लाख मजदूर काम करते हैं प्रतिदिन ५ हजार टन पक्का माल (बुना हुआ कपड़ा) तैयार होता है।

इस देश में कारखानों का अड्डा होने के कई कारण हैं :—

(१) समीपवर्ती प्रदेश में कच्चा माल बहुत होता है जो जल और स्थल मार्गों से यहां सुगमता से आता जाता है।

(२) गङ्गा के अपार जल से कारखाने के काम में सहायता मिलती है।

(३) कोयले की खाने पास हैं। विदेश से मशीनें भी आसानी से आ जाती हैं।

(४) उत्तरी भारत, उड़ीसा और मध्यप्रान्त से लगातार मज़दूर मिलते रहते हैं।

इन कारखानों में प्रतिवर्ष ५० करोड़ रुपये का माल तैयार होता है। पहले जूट के प्रायः सब कारखाने विदेशियों के हाथ में थे, इस लिये लाभ का अधिकतर भाग देश के बाहर चला जाता है।

सूती कपड़ा

सूती कपड़ा बनने का काम आजकल भी देश के बहुत से भागों में होता है। हाथ के करघे से बहुत मोटा खद्दर या गाढ़ा बुना

जाता है। अथवा बहुत बारीक कपड़ा तयार किया जाता है। हाथ का बुना हुआ मोटा कपड़ा मिलके कपड़े से अधिक दिन चलता है। इसलिये लोग हाथ के बुने हुये कपड़े को पसन्द करते हैं। असहयोग आन्दोलन के समय से दूसरे पढ़े-लिखे देश भक्त हिन्दुस्तानी खद्दर पहनने लगे हैं। इससे गरीब जुलाहों की दशा कुछ हद तक सुधर गई है। ढाका, बनारस, बुढ़ानपुर और राजमहेन्द्री में हाथ से बढ़िया कपड़ा बुना जाता है। कानपुर, बम्बई, अहमदाबाद, शोलापुर, बेलगांव, हुगली, बरौदा, इन्दौर, उज्जैन, नागपुर, जबलपुर, मद्रास, बङ्गलौर और हैदराबाद में बड़े-बड़े पुतलीघर हैं। इन पुतलीघरों में लगभग ४ लाख मजदूर काम करते हैं। ये सब शहर कपास पैदा करने वाले प्रदेश के पास हैं। नारायणगञ्ज और श्रीरामपुर (कलकत्ते के पास) ऐसे स्थान हैं जो रुई के प्रदेश से दूर हैं। पर उनमें रुई मंगाने की सुविधा है। बम्बई और अहमदाबाद में अनुकूल जलवायु और उपज की सुविधा होने से सारे हिन्दुस्तान के प्रायः सभी कारबार की पूंजी और प्रबन्ध हिन्दुस्तानियों के हाथ में है।

रेशम

रेशम बुनने का काम कुछ अधिक धनी लोगों के हाथ में है। ये लोग संगठित भी हैं। गुजरात आसाम, मैसूर, पञ्जाब और काश्मीर में रेशम बुनने के प्रधान केन्द्र हैं। हिन्दुस्तान की अपेक्षा ब्रह्मा में अधिक रेशम पहना जाता है। बनारस आदि कई शहरों में रेशम पर सोने चांदी का काम होता है। मुरशिदाबाद आदि कुछ शहरों में सूती कपड़ों पर रेशम की कढ़ाई होती है। आजकल बनावटी विलायती रेशम के आने से देशी कारखानों को बड़ा धक्का पहुँच रहा है। फिर भी अहमदाबाद, बेलगांव, शोलापुर, पूना, धारवार, नासिक, सूरत, काठियावाड़, मांडले, प्रोम, अमरावती, चांदा, होशङ्गाबाद, रायपुर, गुजरानवाला झेलम, जालन्धर, लुधियाना, मुल्तान, पेशावर,

रावलपिंडी, बनारस, शाहजहांपुर, बङ्गलौर, वारङ्गल, औरंगाबाद, श्रीनगर, जम्मू, गांकुड़ा, वर्द्धवान, हुगली, जलपाईगुड़ी, मालदा, मुर्शि-
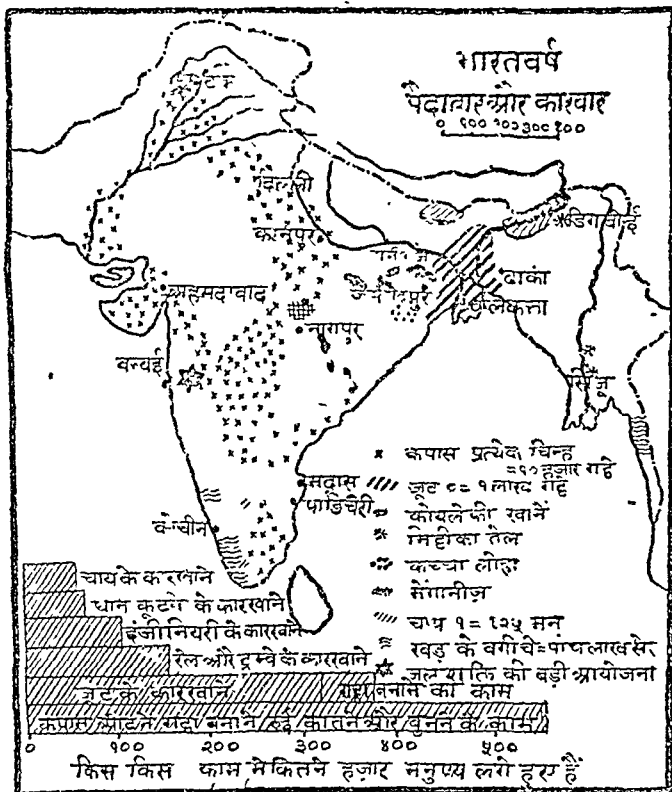
४८—पैदावार और कारबार

दाबाद, राजशाही, अनन्तपुर, बिलारी, कोयम्बटूर, मदुरा, तंजौर,

त्रिचनापल्ली, भागलपुर, गया और सम्भलपुर में रेशम के कारखाने चल रहे हैं।

ऊन

ऊनी कपड़ा बहुत थोड़े स्थानों में बुना जाता है। अच्छी ऊन केवल उत्तरी हिन्दुस्तान में और विशेष कर हिमालय के प्रदेश में मिलती है। अधिक गरम भागों में भेड़ के बाल मोटे हो जाते हैं। इसलिये सबसे अच्छे ऊनी शाल-दुशाले श्रीनगर (काश्मीर) अमृतसर, लाहौर और मुल्तान आदि शहरों में तयार किये जाते हैं। मोटे देशी कम्बल गड़रिये लोग बहुत स्थानों में बुन लेते हैं। ऊनी कपड़े बुनने की बड़ी-बड़ी मीलें कानपुर और धारवाल (अमृतसर के पास) में

४६—काश्मीरी जुलाहे

हैं। अन्य मिलें लाहौर, अमृतसर, बम्बई, बङ्गलोर और कनानोर (मद्रास) में हैं। धारीवाल और कानपुर में कांगड़ा कमायूं नैपाल और पूर्वी पञ्जाब की ऊन आसानी से आ जाती है। बम्बई के कारखानों में खानदेश और दक्खिन की ऊन आती है। बङ्गलौर के मिल

के लिये मैसूर राज्य की ऊन काफी होती है। इनमें लगभग ७००
मनुष्य काम करते हैं।

मिट्टी के बरतन

मिट्टी के बरतन प्रायः सब कहीं बनाये जाते हैं, पर अच्छे चिकने
और चमकीले बर्तन, चुनार, खुरजा, पेशावर और मुल्तान आदि शहरों
में बनते हैं। ग्वालियर, दिल्ली, जबलपुर और कलकत्ते में यह काम
बड़े पैमाने पर होता है। इन सब जगहों में कच्चा माल (चिकनी
मिट्टी) पड़ोस में ही मिलता है।

धातु का काम

कुम्हार की तरह लुहार भी बहुत से स्थानों में लोहे का काम
करता है । बड़े-बड़े शहरों में ताले और ट्रंक बनाये जाते हैं।
बराकर (बंगाल) में बड़े पैमाने पर लोहा गलाने का काम होता है।
पर लोहे और फौलाद का सबसे बड़ा कारखाना (टाटा आयरन एण्ड
स्टील वर्क्स) उड़ीसा और मध्यप्रान्त की सीमा पर जमशेदपुर में होता है।
यह नगर कलकत्ते से १५१ मील पश्चिम की ओर ऐसे स्थान पर बसा
है जहां कोयला (झरिया से) लोहा, चूना, और मैंगनीज पास ही
मिलता है। अच्छे पानी के लिये स्वर्णरेखा नदी बिल्कुल पास है।
मध्यप्रान्त और उड़ीसा से मजदूर बहुत मिल जाते हैं। यही कारण है
कि जहाँ पहले एक छोटा सा गांव था वहाँ अब ताता महाशय का
फौलादी कारखाना एशिया भर में सर्व प्रथम और संसार भर में
तीसरा स्थान प्राप्त कर चुका है। प्रति दिन छः लाख टन लोहा साफ
होता है और पटरी चादर आदि चार पांच लाख टन फौलाद का
माल तयार होता है। इस सामान का आधा भाग देश में खर्च हो
जाता हैं। शेष आधा भाग विदेशों को जाता है।

इस कम्पनी के सहारे से टीन, कनस्टर कांटेदार तार आदि
सामान बनाने के लिये जमशेदपुर में दूसरी कम्पनियां स्थापित हो

गई हैं। आसनसोल और कुलटी में लोहे के दो कारखाने और हैं। छोटे-छोटे कारखाने बम्बई, बड़ौदा, हावड़ा, दिल्ली टीटागढ़ आदि कई स्थानों में हैं।

पश्चिमी मैसूर में शिमोगी का कारखाना विशेष प्रसिद्ध है। कोयला न मिलने के कारण यहाँ का लोहा लकड़ी से साफ किया जाता है। इससे बहुत अच्छा लोहा निकल जाता है। लोहे के कारखानों में हिन्दुस्तान भर में प्राय. २०००० मनुष्य लगे हुये हैं।

तांवे और पीतल के बर्तन ठठेरे लोग बहुत से स्थानो पर बनाते हैं। पर बनारस दिल्ली, पूना और जैपुर में बरतनों पर बढ़िया चित्रकारी की जाती है। मुरादाबाद में बरतनों पर कलई की जाती है। ब्रह्मा में कांसे की बड़ी बड़ी मूर्तियां और घंटे ढाले जाते हैं। मांडले के पास मिगन का विशाल घंटा जगत् प्रसिद्ध है।

लकड़ी पर सुन्दर चित्रकारी का काम अधिकतर काश्मीर, नैपाल, ब्रह्मा, पञ्जाब, गुजरात और मैसूर में होता है।

कागज़ का काम

मोटा कागज़ पुराने समय में भी कुछ स्थानों में बनता था। पर नये ढङ्ग से कागज़ बनाने की बड़ी-बड़ी ९ मिलें लखनऊ, जगाधारी, बम्बई, सतारा, चिटगांव, टीटागढ़, पूना राजमहेन्द्री आदि शहरों में स्थापित हैं। कागज़ की लुब्दी बैब, सवाई घास, और बांस से बनाई जाती है। सवाई घास साल भर मिलती है और छोटा नागपुर से लेकर हिमालय के तराई प्रदेश तक उगती है। साहबगंज और चेतिया घास के मुख्य केन्द्र हैं। घास के अतिरिक्त पानी और कोयला भी अत्यन्त आवश्यक है। अभी हिंन्दुस्तान देश की मांग के लिये काफी कागज़ नहीं बनाता है और बहुत सा (१ लाख टन) कागज़ कनाडा, ग्रेटब्रिटेन आदि से आता है।

चावल आदि के कारख़ाने

धान कूट कर चावल तैयार करने की बड़ी-बड़ी २०० मिलें रंगून कलकत्ता, चिटगांव, मद्रास और बम्बई आदि नगरों में है। इनमें ६५ हज़ार मनुष्य काम करते हैं। लकड़ी चीरने की मिलें ब्रह्मा में हैं। शक्कर के कारखाने अधिकतर संयुक्तप्रान्त, बिहार, आसाम, बङ्गाल, मद्रास और मैसूर में हैं। कुछ पञ्जाब और बम्बई प्रान्त में है। आटा पीसने की चक्कियां उत्तरी भारत में बहुत हैं। तिलहन अधिकतर दिसावर को भेज दिया जाता है। इसलिये तेल पेरने का काम बहुत कम हो गया है। सारे देश में केवल ८०० मिलें हैं। कपास के बिनौले से तेल निकालने की मिलें कानपुर और अकोला (बरार) में हैं छापेखाने सभी बड़े-बड़े शहरों में बढ़ रहे हैं।

चमड़े के कारख़ाने

जूते के अतिरिक्त तबला, ढोल, आदि बाजों और ज़ीन, मियान, मशक आदि अनेक कामों से सदा खाल मिलती रहती है। पर अधिक तर खाल मारे हुये जानवरों से निकाली जाती है। यों तो प्रायः हर शहरमें जानवर काटे जाते हैं। पर सबसे अधिक जानवर फ़ौजी छावनियों में मारे जाते हैं। गारन बबूल आदि पेड़ों की छाल और खारी से चमड़ा कमाया जाता है। बम्बई और मद्रास प्रान्त में इस सामान की अधिकता होने से इन दो शहरों में चमड़ा कमाने के ४०० कारखाने खुल गये हैं, जिनमें १६,९० मजदूर काम करते हैं। यहां से हर साल कई लाख रुपये का चमड़ा दिसावर भेजा जाता है।

आगरा, दिल्ली जयपुर, लुधियाना आदि शहरों में देशी जूते बहुत बनते हैं। आगरा, ग्वालियर, कलकत्ता, अटक, कानपुर, मद्रास और बङ्गलौर में नये ढङ्ग से काम होता है। कानपुर में रेलों की सुविधा के

---

*नैनी, शाहजहांपुर, कानपुर, गोरखपुर, पूना, आदि शहरों में शक्कर के ४ कारखाने हैं।

कारण तराई के जानवरों की खाल और मध्य भारत से चमड़ा कमाने का सामान सुगमता से आ जाता है। जीन और बूट आदि सामान यहां फौज के लिए थोक में बिक जाता है। इसलिये कानपुर में चमड़े के बड़े-बड़े कारखाने स्थापित हो गये हैं।

चाय के कारख़ाने

चाय के बड़े कारखाने वहीं सफल हो सकते जहां चाय उगती है। इसलिये चाय के बड़े-बड़े कारखाने दार्जिलिंग, आसाम और लंका में हैं। इनमें १० लाख से अधिक मनुष्य काम करते हैं। पर यह कारबार अधिकतर विदेशों के हाथ में है। इसलिये इस व्यापार का अधिकांश लाभ विदेशों में चला जाता है।

दियासलाई के कारख़ाने

दियासलाई के लिये हिन्दुस्तान में हिमालय, पश्चिमी घाट और ब्रह्मा के कई पेड़ों की लकड़ी अनुकूल पड़ती है। गन्धक और लकड़ी चीरने की मशीनें बाहर से मँगा ली जाती हैं। बम्बई, कलकत्ता, मद्रास बिलासपुर, अहमदाबाद, लाहौर, बरेली, पटना आदि नगरों में दियासलाई के ८८ कारखाने हैं जिनमें लगभग ६,००० मनुष्य काम करते हैं। पर अधिकतर कारखाने स्वीडन वालों के हाथ में है जिससे लाभ उन्हीं को होता है।

रेलवे के कारख़ाने

रेलवे गाड़ियों की मरम्मत के लिये प्रत्येक बड़ी लाइन का कोई न कोई कारखाना है। जहां हज़ारों मनुष्य काम करते हैं। जमालपुर खड़गपुर, झांसी, लखनऊ, मुगलपुरा (लाहौर) अजमेर और मिंगे (मांडले) में बड़े-बड़े कारखाने हैं। ट्राम्वे के काम में भी हज़ारों मनुष्यों को जीवका मिलती है। ट्राम्वे का काम कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, करांची रंगून आदि शहरों में होता है।

मोटर

मोटर काम दिनों दिन बढ़ रहा है। इसकी मरम्मत के कारखाने प्राय: सभी बड़े शहरों में हैं।

शीशे के कारखाने

शीशे के लिये बालू, सोडा, नमक, सिक्का आदि पदार्थों की जरूरत पड़ती है। ये चीजें हिन्दुस्तान के कई भागों में मिलती हैं। आजकल शीशे के बड़े-बड़े कारखाने नैनी (इलाहाबाद) बहजोई (मुरादाबाद), लाहौर, अमृतसर, अम्बाला, बम्बई, बेलगांव, सतारा, हैदराबाद (दक्षिण) जबलपुर और कलकत्ता में हैं। फीरोजाबाद में चूड़ी बनाने का काम होता है। फिर भी शीशे का बहुत सा माल चेकोस्लोवेकिया, बेलजियम, जापान और अमरीका से आता है।

मकान बनाने का काम

हिन्दुस्तान में बड़े-बड़े शहरों के अधिकतर मकान पत्थर ईंट और लकड़ी के बने हुये हैं। हिमालय प्रदेश के मकान लकड़ी और पत्थर से बनाये जाते हैं। राजपूताना, दक्षिण के पठार में भी पत्थर की अधिकता होने से पत्थर के ही मकान बनते हैं। पर गङ्गा और सिन्ध के मैदान में ईंट और खपरैल का प्रयोग होता है। इसीसे ईंटों में भट्टी, सीमेंट चूना और लकड़ी के काम से लाखों मनुष्यों को जीविका मिलता है। शहरों में ही सोडा, बरफ, सिगरेट, सिनेमा,फोटोग्राफी, आदि कई तरह का काम बढ़ रहा है।

कोयला आदि खनिज पदार्थों के खोदने में भी तीन लाख से ऊपर मनुष्य काम करते हैं।
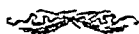
ग्यारहवाँ अध्याय

मनुष्य

हिन्दुस्तान की जन-संख्या लगभग ३४ करोड़ है जो समस्त संसार की जन-संख्या का लगभग २० प्रतिशत है। चीन को छोड़ कर संसार के किसी एक देश की जन-संख्या से यह कई गुनी अधिक है। पर
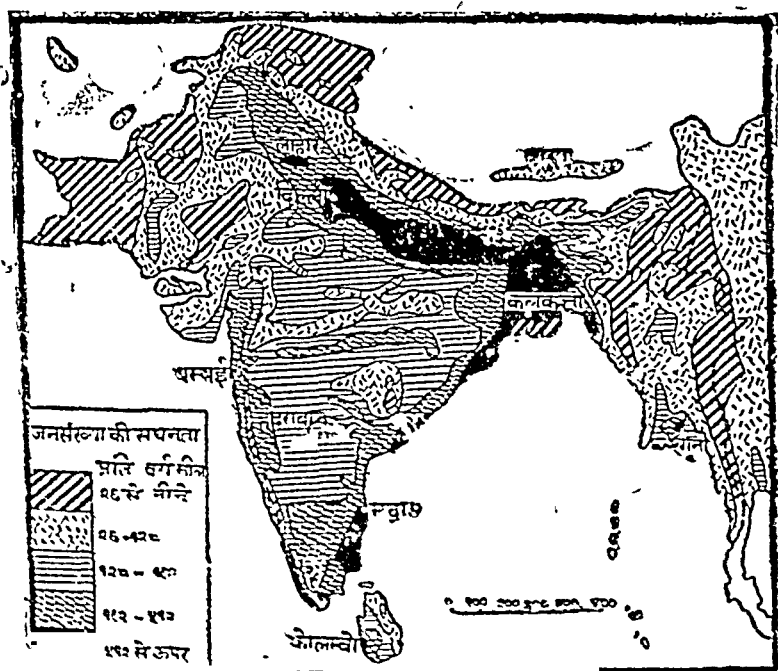
२०—जनसंख्या की सघनता

यह जन-संख्या सारे हिन्दुस्तान में समान भाग से विभक्त नहीं है। औसत से प्रति वर्गमील में १७८ मनुष्य रहते हैं। थार रेगिस्तान के

खुश्क प्रदेश में और हिमालय पर्वत के हिम प्रदेश में कई ऐसे भाग हैं जहां हज़ारों वर्गमील में एक भी मनुष्य नहीं रहता है। इसके विपरीत गंगा के मैदान में बड़ी घनी आबादी है। ढाका ज़िले में औसत से प्रति वर्गमील में ११०० मनुष्य रहते हैं। कलकत्ता शहर में प्रति एकड़ में प्राय: ७० मनुष्य रहते हैं। इसलिए वहां एक वर्गमील की औसत आबादी ४२०००.है। पर हिन्दुस्तान एक कृषि-प्रधान देश है। प्राय: ९० फी सदी लोग किसान हैं जो अपने खेतों के पास गांवों में रहते हैं। केवल १० फी सदी लोग शहरों और कस्बों में रहते हैं। जिन कछारी मैदानों में अथवा कुछ ऊँचे भागो में ज़मीन उपजाऊ हैं और वर्षा अच्छी है अथवा सिंचाई के साधन हैं वहां घनी आबादी है। इसके विपरीत जहां सघन बन हैं, या जहां पथरीली और रेतीली ज़मीन है और वर्षा की कमी है सिंचाई के भी साधन नहीं हैं वहां की आबादी बहुत कम है।

उत्तरी हिन्दुस्तान के लोग आर्य हैं। उनका कद लम्बा, रंग गोरा और शरीर मज़बूत होता है। दक्षिणी हिन्दुस्तान में प्राय: द्राविड़ लोग रहते हैं। इनका कद कुछ छोटा और रंग काला होता है। ब्राह्मण आदि पूर्वी भागों के रहने वालों में मंगोल रुधिर की अधिकता है।

धर्म

भारतवर्ष के अधिकांश निवासी (प्राय: २० करोड़) हिन्दू या आर्य हैं जो वैदिक धर्म के मानने वाले हैं। यह धर्म सबसे अधिक पुराना है। आरम्भ से गुण और कर्म के अनुसार वैदिक धर्मानुयायियों में ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र केवल चार वर्ण और ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वाणप्रस्थ और सन्यास चार आश्रम माने जाते हैं। ज्ञान, कर्म और भक्ति द्वारा ईश्वर की उपासना करना प्रत्येक हिन्दू का कर्त्तव्य है हिन्दू धर्म आत्मा को अमर मानता है। जिस तरह मनुष्य पुराने कपड़े को उतार कर नया कपड़ा पहन लेता है उसी तरह हिन्दू-धर्मानुसार एक शरीर के नष्ट होने पर आत्मा दूसरा शरीर धारण कर लेता

है। जब हिंदू धर्म जटिल होने लगा तब अब से ४,५०० वर्ष पूर्व महात्मा गौतम बुद्ध ने हिन्दू धर्म से सीधे-सादे मूलतत्वों को लेकर उस समय की लोक-भाषा पाली या प्रकृति में एक नवीन धर्म का
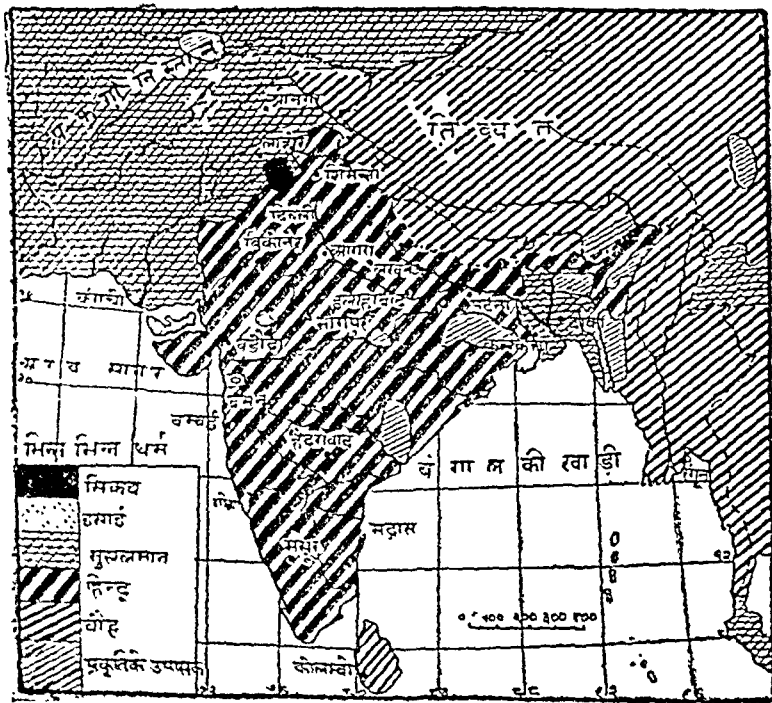
५१—भारतवर्ष के धर्म

प्रचार किया। बौद्ध धर्म में वर्णव्यवस्था नहीं मानी जाती है और अहिंसा पर अधिक जोर दिया जाता है। इस लोक प्रिय धर्म का शीघ्रता से प्रचार हुआ। चीन, जापान आदि देशों में इस समय भी बौद्ध धर्म के मानने वाले और किसी धर्म के मानने वालों से संख्या में बढ़े हुए हैं। पर जिस भारतवर्ष ने महात्मा बुद्ध को जन्म दिया वहां बौद्ध धर्म प्रायः लुप्त हो गया। भारतवर्ष में केवल ५ करोड़ १५ लाख बौद्ध हैं जो अधिकतर ब्रह्मा और लङ्का में बसे हुये हैं। जैन

धर्म प्रायः हिन्दू और बौद्ध धर्म का मिश्रण है। इसके मानने वाले ५० लाख हैं जो अधिकतर पश्चिमी भारत में फैले हुए हैं।

भारतवर्ष का दूसरा बड़ा धर्म इस्लाम है। इस धर्म पर चलने वाले मुसलमान लोग केवल एक ईश्वर को मानते हैं और मुहम्मद साहब को ईश्वर का रसूल (दूत) समझते हैं सुन्नी लोग हजरत अबूबकर, उमर और उस्मान के खलीफा या मुहम्मद साहब को वली मानते हैं। पर शिया लोग इस बात से इनकार करते हैं। शिया लोग चौथे खलीफा अली का बड़ा मान करते हैं और कभी-कभी तो उन्हें ईश्वर तुल्य समझते हैं। हिन्दुस्तानी मुसलमानों में सुन्नी लोगों की प्रधानता है। शिया लोग बहुत ही कम हैं और अधिकतर अवध (लखनऊ) में बसे हुये हैं। सारे हिंदुस्तान में प्रायः ८ करोड़ मुसलमान हैं। जो अधिकतर उत्तरी पश्चिमी हिन्दुस्तान में पूर्वी बङ्गाल में बसे हुए हैं। इन्हीं भागों के मुसलमानों ने भारतवर्ष से अलग होकर अपना पाकिस्तानी राज्य बनाया है।

समय के अनुसार हिन्दू धर्म में सुधार करने के लिए गुरु नानक ने सिक्ख धर्म की उत्पत्ति की। दसवें गुरु गोबिन्द सिंह ने सिक्खों को सिंह बना दिया, गुरु गोविन्द सिंह के मत को मानने वाले तम्बाकू नहीं पीते हैं और केश, कच्छ, कड़ा, कघा और कृपाण रखते हैं। उनके धर्म ग्रन्थ-साहब में केवल एक ईश्वर का आदेश है। सिक्ख लोग अधिकतर पञ्जाब में हैं, उनकी संख्या लगभग ४० लाख है।

पारसी—जब फ़ारस पर मुसलमानी हमला हुआ तब बहुत से लोगों ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया। लेकिन कुछ लोगों को अपना पुराना धर्म इतना प्रिय था कि उन्होंने अपना घर छोड़ना पसन्द किया, पर धर्म छोड़ना स्वीकार न किया। इसलिये ये लोग हिन्दुस्तान में बम्बई के पास आकर बस गये। इनकी संख्या प्रायः १ लाख है।

ईसाई—ये अधिकतर मद्रास प्रान्त में रहते। मालाबार तट पर पुर्तगालियों के अत्याचार से अधिकतर लोग ईसाई हो गये थे दक्षिण

में अधिकतर रोमन कैथलिक हैं। उत्तरी हिन्दुस्तान में प्रोटस्टेंट ईसाइयों की संख्या बढ़ रही है। सारे हिन्दुस्तान में आजकल प्रायः ४० लाख ईसाई हैं।

प्रकृति के उपासक—किसी विशेष धर्म को न मानने वाले किन्तु भूत-प्रेतों में विश्वास करने वालों की संख्या ९७ लाख है। ये लोग अधिकतर छोटा नागपुर, मध्यप्रान्त, मद्रास और आसाम के पहाड़ी भागों में रहते हैं।

भाषाएँ

हिन्दुस्तान एक बड़ा देश है। बड़े देश में यदि एक भाग से दूसरे भाग को आने जाने की सुविधा न हो, लोग एक दूसरे से आकर न मिलें, उनमें अनिवार्य शिक्षा न हो, आरम्भ में एक भाषा होने पर भी चिरकाल में अनेक भाषाएं हो जाती हैं। समय-समय पर भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले विदेशी हमला करने वालों के आ जाने से देश की भाषाओं में और भी अधिक भेद हो जाता है। इसी से हिन्दुस्तान में कई भाषायें हैं। सतपुड़ा पहाड़ के उत्तर में आर्य भाषायें और दक्षिण में द्राविड़ मागधी आदि प्राकृत भाषाओं से हुई है। सिन्ध के उत्तर पश्चिम में अरब सागर से ऊपर मकानी और बल्ही दो बलोच भाषाएं हैं। इनमें अरबी और फ़ारसी के अपभ्रंशों की भरमार है। ये भाषायें लिपिबद्ध नहीं हैं। अरब तट के पास मकानी भाषा है। इसके उत्तर में हलामन्द नदी से डेराइस्माइलखां तक बल्ही भाषा है। पर दोनों भाषाओं के बोलने वालों की संख्या दो लाख से कुछ कम ही है। बलोच के उत्तर में सीमा प्रान्त और स्वाधीन अफ़गानिस्तान की भाषा पश्तो है। पश्तो लिपिबद्ध भाषा है। इसमें कुछ साहित्य भी है। इसके बोलने वालों की संख्या प्रायः १२ लाख है। पश्तो के अधिकांश शब्द हिन्दुस्तानी हैं। इसका व्याकरण भी कुछ-कुछ हिन्दुस्तानी है। पश्तो के उत्तर में हिन्दूकुश के पहाड़ी प्रदेश में पिसाच भाषाएं हैं जो आर्य भाषा से और भी से अधिक समानता रखती हैं।

बलोच भाषा के दक्षिण-पूर्व में सिन्ध नदी की निचली घाटी में सिन्धी भाषा बोली जाती है। पहले इस भाषा की कोई लिपि न थी। गत शताब्दी के मध्य से यह भाषा फारसी लिपि में लिखी जाने लगी। पर हिन्दू लोग देवनागरी लिपि का प्रयोग करने लगे हैं। सिन्धी बोलने वालों की संख्या लगभग २५ लाख है। पश्तो के दक्षिण में पश्चिमी पञ्जाबी, हिन्दको या लहङ्गा भाषा है। इसके बोलने वालों की संख्या भी प्रायः २४ लाख है। इसके उत्तर-पूर्व में काश्मीरी भाषा है जिसे १८ लाख से ऊपर मनुष्य बोलते हैं।

इसके आगे हिन्दी भाषा का विशाल प्रदेश है। इसके उत्तर में पहाड़ी भाषा, दक्षिण में उड़िया और मराठी, पूर्व में बङ्गाली भाषा है। राजस्थानी पञ्जाबी और बिहारी हिन्दी, केवल बोल-चाल में ठेठ हिन्दी से कुछ भिन्न है। पढ़े लिखे लोग बोल-चाल और लिखने में सब कहीं एक सी ही हिन्दी का प्रयोग करते हैं। सब तरह की हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। अशिक्षित लोगों की बोली में शब्द और व्याकरण के कारण कोई बड़ा भेद नहीं पड़ता है। पर उनके उच्चारण में भारी अन्तर पड़ जाता है। सब प्रकार की हिन्दी बोलने वालों की संख्या प्रायः २० करोड़ है। हिन्दी समझने वालों की संख्या और भी अधिक है। इसी से हिन्दी को हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाषा का स्थान मिला है। हिन्दी का प्राचीन साहित्य अधिक है। नया साहित्य भी बढ़ रहा है।

राजस्थानी के पश्चिम में गुजरात प्रान्त की भाषा गुजराती है। गुजराती भाषा सौराष्ट्री प्राकृत से बिगड़ कर बनी है। इसकी लिपि देवनागरी लिपि से बहुत कुछ मिलती जुलती है। गुजराती भाषा का नया पुराना साहित्य बहुत है। गुजरात के दक्षिण में गोआ तक पश्चिमी घाट, खानदेश और बरार की भाषा मराठी या महाराष्ट्री है। हैदराबाद राज्य के उत्तर पश्चिम में और मध्यप्रान्त के दक्षिण में भी मराठी भाषा बोली जाती है। मराठी बोलने वालों की संख्या प्रायः

दो करोड़ है। इस भाषा का साहित्य बहुत ऊँचा है और देवनागरी लिपि में लिखा हुआ है।

५२—भाषायें
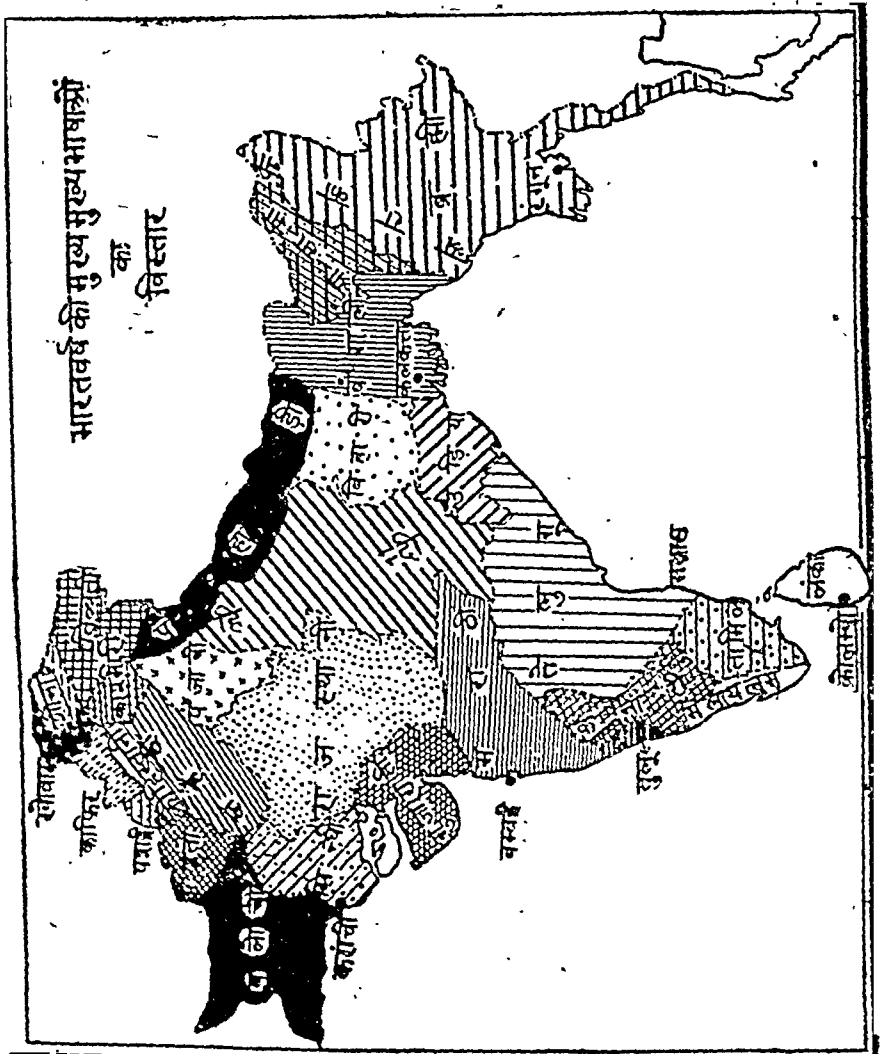
हिन्दी को छोड़कर बङ्गाली बोलने वालों की संख्या हिन्दुस्तान भर में सबसे अधिक (लगभग साढ़े चार करोड़) है। इसमें से दो लाख बङ्गाली बङ्गाल प्रान्त के बाहर हिन्दुस्तान के दूसरे प्रान्तं में फैले हुये हैं। बङ्ग-साहित्य नवीन होने पर भी बहुत ऊँचा है। बङ्गलिपि में अक्षर तो देवनागरी के हैं पर दूसरी तरह से लिखे जाते हैं। यदि मराठी की तरह बङ्गाली भाषा भी देवनागरी लिपि में लिखी जावे तो हिन्दी बोलने वाले भी इसे बहुत कुछ समझ सकें

ब्रह्मपुत्र की मध्यघाटी और कुछ ऊपरी घाटी में आसामी भाषा बोली जाती है। आसामी लिपि बहुत कुछ बंगाली लिपि से मिलती है। आसामी साहित्य बहुत पुराना है। इसमें इतिहास के अच्छे ग्रन्थ हैं। भाषा बोलने वालों की संख्या लगभग चौदह लाख है।

उड़ियाभाषा उड़ीसा तथा पास वाले मद्रास और मध्यप्रान्त के जिलों में बोली जाती है। इसका साहित्य काफी अच्छा है। यह भाषा पहले ताड़ के पत्तों पर लिखी जाती थी। ये पत्ते सीधी रेखा बनाने से फट फट जाते थे। इसलिये उड़िया लिपि में देवनागरी लिपि की तरह सीधी रेखाओं का अभाव है। इस लिपि में गोलाकार और चन्द्राकार मोड़दार रेखायें बहुत हैं। दक्षिण की जिन-जिन भाषाओं के लिखने में इस पत्ती का प्रयोग हुआ है उन सभी भाषाओं की लिपि में मोड़दार रेखाओं की अधिकता है।

द्राविण भाषायें

उड़िया भाषा के दक्षिण में मद्रास शहर तक तेलगू भाषा का प्रदेश है। मध्यप्रान्त के दक्षिणी सिरे पर और हैदराबाद राज्य के पूर्व में भी तेलगू भाषा बोली जाती है। इस भाषा में विस्तृत साहित्य है। इस भाषा के बोलने वालों की संख्या दो करोड़ से ऊपर है। तेलगू भाषा के दक्षिण में न केवल कुमारी अन्तरीप तक वरन् लंका के उत्तरी भाग (जाफना प्रान्त)में भी तामिल भाषा बोली जाती है। तामिल भाषा बड़ी पुरानी है। इसका साहित्य भी महान् है। इसकी

पूर्वी मानसून से नवम्बर और दिसम्बर के महीनों में थोड़ी सी वर्षा हो जाती है। इसलिये धान के खेतों के लिये सिंचाई की जरूरत पड़ती है। इस भाग की भाषा तामिल है।

दक्खिन-प्रदेश—इस प्रदेश में बम्बई और मद्रास प्रान्तों के पठार तथा मैसूर और हैदराबाद के राज्य शामिल हैं। इस प्रदेश में

२२—भारतवर्ष के प्राकृतिक प्रदेश

इञ्च से कम ही वर्षा होती है। यहाँ की आबादी (हिन्दुस्तान की औसत आबादी १७७ से भी) कम है। दक्खिन का दक्षिणी ऊँचा और कम आबाद है। यहां अधिकतर घास के

बारहवाँ अध्याय

भारतवर्ष के प्राकृति प्रदेश

किसी देश के राजनैतिक विभाग अक्सर बदलते रहते हैं। पर उसके प्राकृतिक प्रदेशों में परिवर्तन नहीं होता है। जिन भागों की ऊँचाई, भू-रचना, जमीन और जलवायु एक सी होती हैं। वे सब एक ही प्राकृतिक प्रदेश में शामिल किये जाते हैं। इस समानता के कारण उनकी वनस्पति, उपज और भाषा भी एक सी होती है। भारतवर्ष में निम्नलिखित प्राकृतिक प्रदेश हैं।

१—पश्चिमी तट

पश्चिमी घाट का सपाट ढाल पश्चिम की ओर है। इसके नीचे टूटा-फूटा निचला तटीय मैदान है। दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के दिनों में इस ओर प्रबल वर्षा होती है। ढालों पर सागौन के वन हैं। मैदान में धान की खेती होती है। गोआ के दक्षिण में वर्षा कुछ अधिक होती है। धान के अतिरिक्त मसाले भी उगाये जाते हैं। औसत आबादी प्रति वर्गमील में २००० है। यहां के लोग अधिकतर मलयालम भाषा बोलते हैं। गोआ के ऊपर उत्तरी भाग की भाषा मराठी है।

२—पूर्वी तट

यह तट अधिक खुश्क है। पूर्वी घाट की टूटी-फूटी और नीची पहाड़ियों पर सघन वन कम हैं। तटीय मैदान अधिक चौड़ा है। चावल ही यहां की प्रधान फसल है। कृष्णा नदी से बङ्गाल तक उत्तरी सरकार में तटीय मैदान कुछ तङ्ग है। अधिकांश वर्षा जून से अक्तूबर तक होती है। इसके उत्तरी भाग में उड़िया और दक्षिणी भाग में तेलगू बोली जाती है। औसत से प्रति वर्गमील में पांच छः सौ मनुष्य रहते हैं। कृष्णा नदी के दक्षिण में (कर्नाटक में) लौटती हुई उत्तरी-

पूर्वी मानसून से नवम्बर और दिसम्बर के महीनों में थोड़ी सी वर्षा हो जाती है। इसलिये धान के खेतों के लिये सिंचाई की जरूरत पड़ती है। इस भाग की भाषा तामिल है।

दक्खिन-प्रदेश—इस प्रदेश में बम्बई और मद्रास प्रान्तों के पठार तथा मैसूर और हैदराबाद के राज्य शामिल हैं। इस प्रदेश में
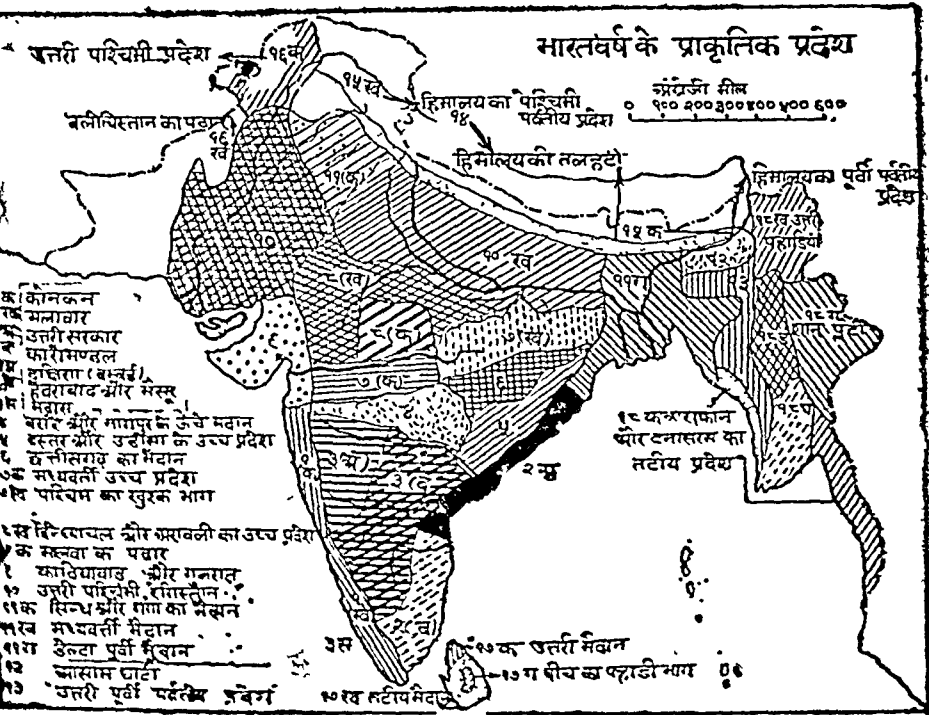
२३—भारतवर्ष के प्राकृतिक प्रदेश

प्रतिवर्ष ४१ इञ्च से कम ही वर्षा होती है। यहाँ की आबादी (हिन्दुस्तान की औसत आबादी १७७ से भी) कम है। दक्खिन का दक्षिणी भाग अधिक ऊँचा और कम आबाद है। यहां अधिकतर घास के

खुले हुये मैदान हैं। मैसूर के दक्षिण में नीलगिरि की उच्च पहाड़ियां हैं। मैसूर की ज़मीन दानेदार चट्टानों के घिसने से बनी है। यहां तालावों से सिंचाई होती है और चावल उगाया जाता है। अधिक उत्तर-पश्चिम में लावा का ऊँचा उपजाऊ और खुश्क प्रदेश है। यहां की काली मिट्टी कपास और ज्वार बाजरा के लिये बड़ी अच्छी है इस महाराष्ट्र-प्रदेश की आबादी काफ़ी घनी है।

४—बरार और नागपुर के ऊँचे मैदान—ये मैदान पूर्णा, वर्धा वैनगङ्गा की चौड़ी घाटियों से बने हैं। ये मैदान सतपुरा तथा महादेव पर्वत और दक्खिन के पठार के बीच में स्थित हैं। इनका पश्चिमी भाग खुश्क है। पर पूर्वी भाग में ४० इंच से अधिक वर्षा होती है। यहीं वन भी हैं। इसके पश्चिमी भाग में कपास और पूर्वी भाग में चावल की फसल होती है। पश्चिमी भाग में मराठी और पूर्वी भाग में तेलगू भाषा बोली जाती है। पूर्वी खानदेश और नागपुर को छोड़ कर आबादी कहीं भी घनी नहीं है।

५—बस्तर और उड़ीसा के उच्च प्रदेश—यह प्रदेश पुरानी चट्टानों के बने हैं। अधिकतर ज़मीन समुद्रतल से डेढ़ हज़ार फुट ऊँची है। कहीं-कहीं ३,००० फुट से भी अधिक ऊँची है। महानदी ने इस प्रदेश को दो भागों में बांट दिया है। साल भर में औसत वर्षा लगभग ५० इंच होती है। अधिकतर प्रदेश वनों से ढका है। इधर होकर कोई रेल नहीं निकलती है। अच्छी सड़कों का भी प्रायः अभाव है। इस प्रदेश की औसत आबादी कहीं-कहीं प्रति मील में ३६ से भी कम है। यहाँ अधिकतर मूलनिवासी रहते हैं जो पुराने ढङ्ग से खेती करते हैं।

६—छत्तीस गढ़ का मैदान—यह प्रदेश अधिकतर महानदी की ऊपरी घाटी से बना है। इसमें महानदी मध्यघाटी या सम्भलपुर का मैदान भी शामिल है। बङ्गाल, नागपुर रेलवे यहीं से होकर हावड़ा को गई है। यहां प्रायः ५० इंच वार्षिक वर्षा होती है। जिन

भागों में साल आदि का वन साफ़ कर लिया गया है वहां चावल उगाया जाता है।

७—मध्यवर्ती उच्च प्रदेश—यह प्रदेश सतपुरा की प्रधान श्रेणी से आरम्भ होकर छोटा नागपुर के पठार तक चला गया है। और समुद्र-तल से प्राय: दो तीन हज़ार फुट ऊँचा है इसके पश्चिमी खुश्क भाग में लावा की धरती है और पूर्वी भाग की ज़मीन पुरानी चट्टानों के घिसने से बनी है जहां साल में ४० इञ्च से अधिक वर्षा होती है। इस प्रदेश में आबादी कम (प्राय: १०० मनुष्य प्रति वर्ग मील में) है।

८—विन्ध्या और अरावली का उच्च प्रदेश—नर्मदा और सोन नदियों के उत्तर में मध्य भारत का पठार है। विन्ध्याचल इस प्रदेश की प्रधान पर्वत श्रेणी है। सोन नदी के उत्तर में केमूर-श्रेणी है। अरावली पर्वत इसकी उत्तरी-पश्चिमी सीमा बनाता है। उत्तर-पूर्व की ओर क्रमश: नीचा होते-होते यह पठार गङ्गा के मैदान में मिल गया है। यह प्रदेश अधिकतर खुश्क और उजाड़ है। पर मालवा पठार अधिक ऊँचा और उपजाऊ है। वहां की जलवायु भी अच्छी है गेहूँ अफीम और कपास की खेती बहुत होती है। वर्षा २० और ४० इञ्च के बीच में होती है। औसत आबादी प्रति वर्गमील में प्राय: १२० से कम है।

९—काठियावाड़ और गुजरात

यह कछारी मैदान ताप्ती नदी के किनारे से लेकर थार रेगिस्तान तक चला गया है। इस मैदान के समुद्री तट पर नमकीन दलदल है। काठियावाड़ अधिक खुश्क और उजाड़ है। इस प्रदेश के केवल दक्षिणी भाग में हर साल ४० इंच से अधिक वर्षा होती है। दूसरे भागों में ४० और २० इंच के बीच में वर्षा होती है। बड़े पेड़ों का अभाव है। और जङ्गलों में प्राय: खुश्क और कांटेदार झाड़ियां तथा बबूल होते हैं। कपास और ज्वार बाजरा यहां की प्रधान फ़सलें हैं।

१०—उत्तरी पश्चिमी रेगिस्तान

गुजरात और अरावली के उत्तर में पश्चिमी राजपूताना, सिन्ध और दक्षिणी-पश्चिमी पञ्जाब का अत्यन्त खुश्क प्रदेश है। यहीं प्रधान पाकिस्तान है। इस प्रदेश में वर्षा बहुत ही कम और अनिश्चित है पर ज़मीन प्राय: समतल और उपजाऊ है। जहां कहीं सिंचाई के सधान हैं वहां फसलें उगती हैं। यहां प्राकृतिक वनस्पति बबूल, रामबांस और दूसरी छोटी-छोटी खुश्क और कांटेदार झाड़ियां हैं। कहीं-कहीं ऊँट, बकरी और भेड़ों के झुण्ड मिलते हैं। इस प्रदेश की जन-संख्या प्रति वर्गमील में सब कहीं १०० से कम है। जैसलमेर में तो प्रति वर्गमील में केवल ४ मनुष्य रहते हैं।

११—सिन्ध और गङ्गा का मैदान

यह मैदान जलवायु के अनुसार तीन भागों में बँटा हुआ है :—

(क) पश्चिमी मैदान—यह झेलम नदी के पश्चिमी किनारे वाले पहाड़ी प्रदेश से लेकर यमुना नदी के किनारे तक फैला हुआ है। इस प्रदेश के अर्द्ध रेगिस्तानी चपटे मैदान में सरदी के दिनों में कड़ी ठंड पड़ती है। रात को पाला गिरता है। इसी ठंड की ऋतु में थोड़ा पानी बरस जाता है। पर यह पानी गेहूँ, चना, तिलहन और बाजरा

* जब द्वारका के लिये रेल नहीं बनी थी तब लेखक ने इस प्रदेश में पैदल यात्रा की थी। एक गांव से कुछ दूर चलने पर पानी बरसने लगा। दूसरा गांव ७ मील की दूरी पर था। कटीले रास्ते बास को छोड़ कर इस मार्ग में कोई ऐसा पेड़ न था। जहां वर्षा से बचाव होता। पानी पड़ने से ज़मीन बहुत ही अधिक फिसलनी हो गई थी फिसलने से बचने के लिये पैर ज़ोर से जमाना पड़ता था। पर ज़ोर से पैर रखते ही कोई न कोई मज़बूत कांटा चुभ जाता था। जामनगर पहुंचते पहुँचते एक-एक पैर में सत्रह-सत्रह कांटे चुभ कर टूट गये थे।

की भी फ़सलों के लिए काफ़ी नहीं होता है। इसलिये खेती ३ करोड़ एकड़ ज़मीन में से प्रायः डेढ़ करोड़ ज़मीन सींची जाती है। सिंचाई का सुविधा होने से ही इस प्रदेश की आबादी (प्रति वर्गमील में २०० बढ़ गई है। इसका अधिकांश भाग पाकिस्तान में स्थित है।

(ख) मध्यवर्ती मैदान—यह पञ्जाब और बङ्गाल के बीच में स्थित है। इस समतल मैदान का पश्चिमी भाग पञ्जाब से और पूर्वी भाग बङ्गाल से मिलता जुलता है। यहां गंगा और यमुना की नहरों से सिंचाई होती है। बिहार में ४० इंच से ऊपर वर्षा होती है और हवा में इतना सील रखती है कि गेहूँ के स्थान पर धान की फ़सल होती है। पूर्व की ओर जन-संख्या बढ़ती जाती है। पश्चिमी भाग की औसत आबादी प्रति वर्गमील में ५०० है, पूर्वी भाग में ७०० है।

(ग) डेल्टा या पूर्वी मैदान—इस प्रदेश में अधिकतर बंगाल और आसाम का सुरमा-घाटी शामिल है। आर्द्र (गीले) और निचले प्रदेश के धरातल को नदियां प्रायः सदा बनाती और बिगाड़ती रहती हैं। इस प्रदेश का तापक्रम (हवा का) बहुत ऊँचा है। यहां पाला कभी नहीं पड़ता है। सुन्दर बन को छोड़कर और सब भाग धान की खेती के लिये साफ कर लिये गये हैं। सारे हिन्दुस्तान का १।२ चावल यहां होता है। ब्रह्मपुत्र के पूर्व में जूट अधिक होता है। प्रति वर्गमील में औसत आबादी ६४० है, किसी किसी जिले में एक हज़ार से भी अधिक है।

१२—आसाम घाटी

आसाम की पहाड़ियों और हिमालय के बीच में ब्रह्मपुत्र की घाटी का देश गंगा के डेल्टा से ही मिलता जुलता है। यह प्रदेश डेल्टा से कुछ कम गरम है, पर गीला (आर्द्र) अधिक है। शीतकाल में यहाँ घना कुहरा रहता है। बहुत सा भाग बन से ढका है। इसी से आबादी कम है। पर जैसे-जैसे बन साफ हो रहा है वैसे-वैसे आबादी बढ़ती

जाती है। पश्चिम में औसत आबादी प्रति वर्गमील में प्राय: २०० है, पर पूर्व में १०० से कम है।

१३—उत्तरी-पूर्वी पर्वतीय प्रदेश—यह प्रदेश आसाम घाटी के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इससे गारो, खासी और जयन्तिया तथा पूर्वी सीमान्त की पटकोई है, नागा, मनीपुर और लूशाई पहाड़ियां शामिल हैं। ब्रह्मा का चीन पहाड़ियां भी इस प्रदेश में शामिल हैं। इस प्रदेश में प्रबल वर्षा होती है। पहाड़ियाँ सघन बनों से ढकी हुई हैं। २५० फुट से अधिक ऊँचाई पर देवदारु के पेड़ हैं। कई पहाड़ियों की चोटियों पर घास के खुले हुये मैदान हैं। यहाँ के पहाड़ी लोग वन को जाकर खेती के लिए जमीन साफ कर लेते हैं। दो चार फ़सल उगाने के बाद जब उपज कम होने लगती है तो वे बन के दूसरे भाग में जला कर इसी प्रकार खेती करते हैं। इस प्रकार की चलताऊ खेती को झूम कहते हैं। इस झूम की खेती से आबादी कहीं भी अधिक नहीं है। अधिकांश प्रदेश में प्रति वर्गमील में पचास से कम मनुष्य रहते हैं।

१४—हिमालय की तलहटी—हिमालय पर्वत और खुश्क मैदान के बीच में तलहटी का प्रदेश सिन्ध नदी से आसाम तक चला गया है। गंगा नदी इसको दो भागों में बांटती है।

(क) जिस स्थान पर गंगा पहाड़ से बाहर निकलती है उस स्थान से आसाम तक तलहटी का प्रयोग प्राय: तीस चालीस मील चौड़ा है। पहाड़ के पास होने से इस प्रदेश की वर्षा पास वाले मैदान से सब कहीं अधिक है। तापक्रम कुछ कम है। दलदल से भरी हुई घास से ढकी है। पश्चिम की ओर भावर के पथरीले प्रदेश में साल का वन है। जन संख्या सब कहीं प्रति वर्गमील में तीन सौ से अधिक है।

(ख) गंगा से पश्चिम की ओर सिन्ध नदी तक तलहटी कुछ अधिक खुश्क है। यहां तराई का अभाव है। भू-रचना के अनुसार साल्ट रेंज (नमक की पहाड़ी) और अधिक पश्चिम का पहाड़ी

भाग कुछ भिन्न है। पश्चिमी तलहटी अधिक उपजाऊ है। दलदली तराई न होने से यहाँ पहाड़ के ढालों तक लोग बस गये हैं। औसत आबादी प्रति वर्गमील में सब कहीं तीन सौ से अधिक है।

१५—हिमालय का प्रदेश—यह भी दो भागों में बंटा है :—

(क) पूर्वी हिमालय में आसाम से नैपाल की पश्चिमी सीमा तक सब कहीं दक्षिणी पश्चिमी मानसून से प्रबल वर्षा होती है। दार्जिलिंग में १०९ इञ्च वर्षा होती है। ६,५०० फुट की ऊंचाई तक पहाड़ी ढाल उष्ण प्रदेश के बन से ढंके हुए हैं। ६,५०० फुट से ११,५०० फुट तक अधिक ऊपर अल्पायन (वृक्ष रहित बर्फीले प्रदेश) का कटिबन्ध है। जनसंख्या बहुत कम है।

(ख पश्चिमी हिमालय में जटिल पर्वत मालायें हैं। इसी में काश्मीर राज्य शामिल है। इस ओर वर्षा कम है। तापक्रम भी नीचा है। इसलिये १,००० फुट की ऊँचाई पर ही शीतोष्ण प्रदेश की वनस्पति आरम्भ हो जाती है। दूसरे वनस्पति कटिबन्ध भी कम ऊँचाई पर आरंभ होते हैं, जनसंख्या और भी कम है।

१६—उत्तरी-पश्चिमी पर्वतीय प्रदेश--कुर्रम घाटी इस प्रदेश को दो भागों में बांटती है :—यह पाकिस्तान का अंग है।

(क) कुर्रम घाटी के उत्तर का प्रदेश हिमालय ही का सिलसिला है। वर्षा कम होती है। यह वर्षा प्रायः सर्दी के दिनों में होती है। इस प्रदेश की वनस्पति पश्चिमी हिमालय की वनस्पति के ही सामान है। पेशावर जिले को छोड़ कर जनसंख्या प्रति वर्गमील में कहीं भी १०० से अधिक नहीं है।

(ख) कुर्रम घाटी के दक्षिण में बिलोचिस्तान पठार के अतिरिक्त सुलेमान पर्वत का कुछ भाग शामिल है। सब का सब प्रदेश बहुत ही खुश्क है। शीतकाल की तूफानी वर्षा का भी यहां अभाव है। ऊँचे पर्वतों को छोड़कर ठीक ठीक वन कहीं नहीं है। जनसंख्या बहुत ही कम है। बिलोचिस्तान के पश्चिम में औसत से प्रति वर्गमील

में केवल एक मनुष्य रहता है। केवल क्वेटा—पिशीन के अच्छे भागों में प्रति वर्गमील की आवादी २६ है।

१७—लंका के प्राकृतिक प्रदेश—क) लंका का उत्तरी मैदान यह वास्तव में दक्षिणी भारत का ही अग है। यह मैदान चपटा और खुश्क है। इस भाग की मिट्टी में चूना अधिक है। यहां मेहनती तामिल किसान रहते हैं।

(ख) तटीय मैदान—यह नीचा और समशीतोष्ण है। वर्षा अच्छी होती है। पूर्वी भाग में अधिकतर वर्षा शीतकाल में होती है। दक्षिण-पश्चिमी भाग में ग्रीष्म काल में वर्षा होती है।

(ग) मध्यवर्ती पहाड़—यह पुरानी चट्टानों के बने हैं। प्रबल वर्षा होने के कारण वे घने वनों से ढके हुए हैं। वन को साफ़ करके चाय, रबड़ और नारियल के बगीचे लगाये गये हैं। इस भाग की आवादी भी घनी है।

ब्रह्मा के प्राकृतिक प्रदेश—(क) अराकान और टनासरम का तटीय प्रदेश-यह बहुत ही तर (आद्र) पहाड़ी और कम आवाद है।

(ख) उत्तरी पहाड़ियाँ—यहाँ भी बहुत वर्षा होती है। सघन वन अधिक हैं और आवादी कम है।

(ग) शान प्लेटो—यह पठार पुरानी चट्टानों का बना हुआ है। पानी काफ़ी बरसता है। आवादी कम है।

(घ) इरावदी की निचली घाटी—इरावदी का कछारी मैदान बड़ा उपजाऊ है। प्रबल वर्षा होने से मैदान में धान की खेती होती है। पहाड़ियों के ढालों पर सघन वन है। मैदान में कुछ घनी आवादी है।

(ङ) मध्यवर्ती खुश्क प्रदेश—मांडले के आस-पास चारों ओर प्रायः १०० मील की दूरी तक मैदान खुश्क है। सिंचाई द्वारा खेती होती है। जमीन प्रायः उपजाऊ है। जलवायु अच्छा होने से आवादी भी घनी है।

भारतवर्ष के राजनैतिक विभाग

— :o:o:—

१५ अगस्त, १९४७ ई० में स्वाधीन होने के पूर्व मुस्लिम लीग की नीति के फलस्वरूप भारतवर्ष का विभाजन किया गया। सिन्ध, बलोचिस्तान, पश्चिमी पञ्जाब और सीमा प्रान्त पाकिस्तान में शामिल किये गये। पूर्वी बङ्गाल नें पूर्वी पाकिस्तान बना। बहावलपुर और पश्चिमी पञ्जाब के छोटे मुसलमानी राज्य पाकिस्तान में मिला लिये गये। काश्मीर के बहु-संख्यक मुसलमान पाकिस्तान से अलग रहे। अतः यहां पाकिस्तानी आक्रमण हुये। काठियावाड़ के छोटे से जूनागढ़ के नवाब ने पाकिस्तान का साथ देना चाहा। पर प्रजा विरुद्ध थी। अतः नवाब को गद्दी छोड़ कर पाकिस्तान जाना पड़ा। दक्षिण में हैदरा-बाद के बड़े राज्य के निजाम ने भारत से पृथक रह कर पाकिस्तान का साथ देना चाहा। निजाम के इस्लामी रजाकारों ने बहुसंख्यक हिन्दुओं पर मार काट मचा कर निज़ाम का राज्य दृढ़ रखने का पूरा प्रयत्न किया। अन्त में भारतीय सरकार को शान्ति और सुव्यवस्था रखने के लिये सेना भेजनी पड़ी। अन्तमें दूसरे राज्यों की तरह उसे संघ में सम्मलित होना पड़ा।

भारतवर्ष के शेष राज्यों ने भारतीय संघ में सम्मिलित होकर अपूर्व देश भक्ति और दूरदर्शिता का परिचय दिया। कुछ राज्य अपने समीपवर्ती प्रान्तों में मिल गये। कुछ राज्यों ने मिलकर अपने स्वतन्त्र प्रान्त बनाये।

५४—भारतवर्ष (राजनैतिक)

तेरहवाँ अध्याय

हिमालय-प्रदेश के राजनैतिक विभाग

हिमालय अथवा हिन्दुस्तान के उत्तरी पर्वतीय प्रदेश में कई छोटे छोटे राज्य शामिल हैं। उत्तरी पश्चिमी सिरे पर काश्मीर और जम्मू राज्य है काश्मीर के दक्षिण-पूर्व में चम्पा रियासत है जो पञ्जाब के कांगड़ा जिले के उत्तर में स्थित है। कांगड़ा जिले के पूर्व में हिमांचल प्रदेश (शिमला) रियासतें हैं। इनके पूर्व में टेहरी और गढ़वाल का राज्य है। अधिक पूर्व में कमायूं कमिश्नरी के गढ़वाल, देहरादून अलमोड़ा और नैनीताल के जिले हैं। इनके आगे ५०० मील तक नैपाल का राज्य फैला हुआ है। नैपाल के पूर्व में बङ्गाल प्रान्त का दार्जिलिंग जिला है। दार्जिलिंग के उत्तर में शिकम राज्य है। शिकम से आगे तिब्बत प्रदेश की तंग चुम्बी-घाटी शिकम राज्य को भूटान से अलग करती है। भूटान के पूर्व में आका, डाफला, मीरी और अभोर नाम की भयानक और पहाड़ी जातियों का प्रदेश है।

काश्मीर

काश्मीर (क्षेत्रफल ८४,००० वर्ग मील, जन-संख्या ३६ लाख) का राज्य प्रायः आयाताकार है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी अधिक से अधिक चौड़ाई ३०० मील और पूर्व से पश्चिम तक सब से अधिक लम्बाई ४०० मील है। यह प्रदेश ७२ और ८० अंश पूर्वी देशान्तर और ३२ और ३७ अंश उत्तरी अक्षांश के बीच में स्थित है। काश्मीर राज्य के उत्तर में चानी तुर्किस्तान, पूर्व में तिब्बत, पश्चिम में उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रान्त और दक्षिण में पञ्जाब से घिरा हुआ है।

काश्मीर देश अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के लिए जगत् प्रसिद्ध है। काश्मीर का अधिकतर भाग पहाड़ी है। इस प्रदेश में हिमालय की

५९—काश्मीर का एक साधारण दृश्य

प्रधान श्रेणियों के अतिरिक्त उत्तर-पूर्व की ओर तिब्बत का पठार भी शामिल है। बीच में बर्फीली चोटियां और उपजाऊ घाटियां हैं। हिमालय के पूर्वी भागों में प्रधान श्रेणियां बहुत ही पास-पास हैं।

इसलिये उनके बीच में तङ्ग घाटियां हैं। पर काश्मीर में श्रेणियाँ कुछ दूर-दूर हो गई हैं इसी से इनके बीच में चौड़ी घाटियां, सुन्दर
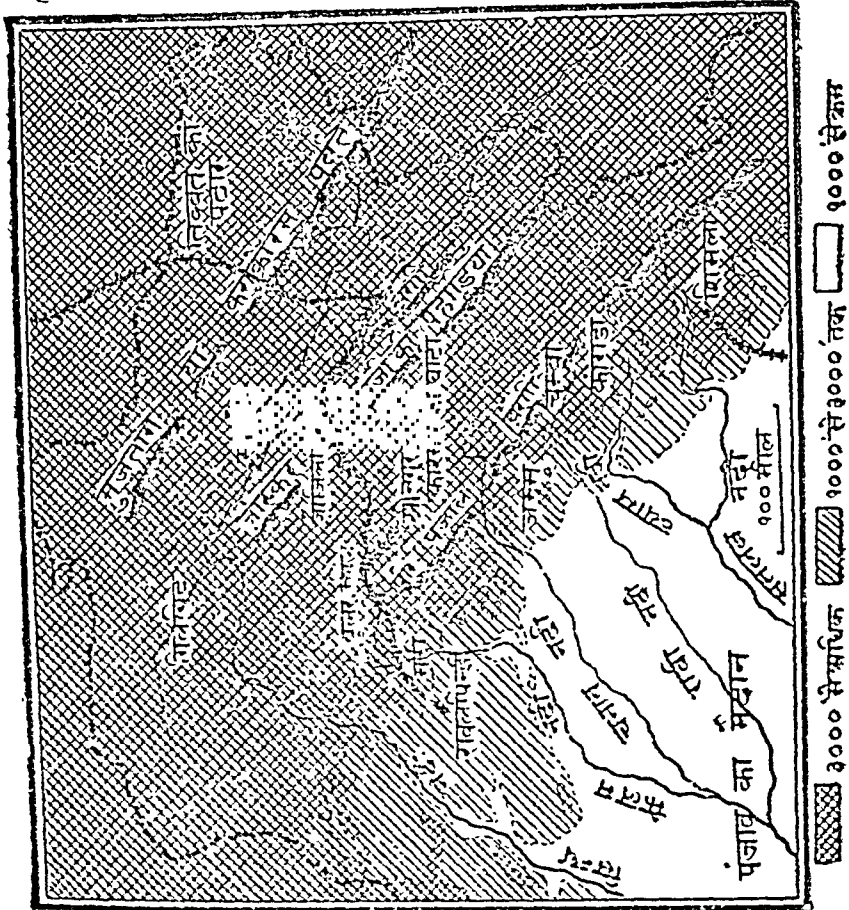
झीलें और हिमागार बन गये हैं। अगर हम पञ्जाब के मैदान से काश्मीर में प्रवेश करें तो सबसे पहले हिमालय की बाहरी श्रेणी मिलती है जो यहां पीर पञ्जाल कहलाती है। इस श्रेणी की औसत

ऊँचाई केवल दस हज़ार फ़ुट है। यह श्रेणी पश्चिम से पूर्व को मुज़फ़्फ़राबाद (झेलम के किनारे) से किश्तवार (चनाब) तक चली गई है और जम्मू प्रान्त को काश्मीर से अलग करती है। इस

१९—एक पहाड़ी पोस्ट आफ़िस
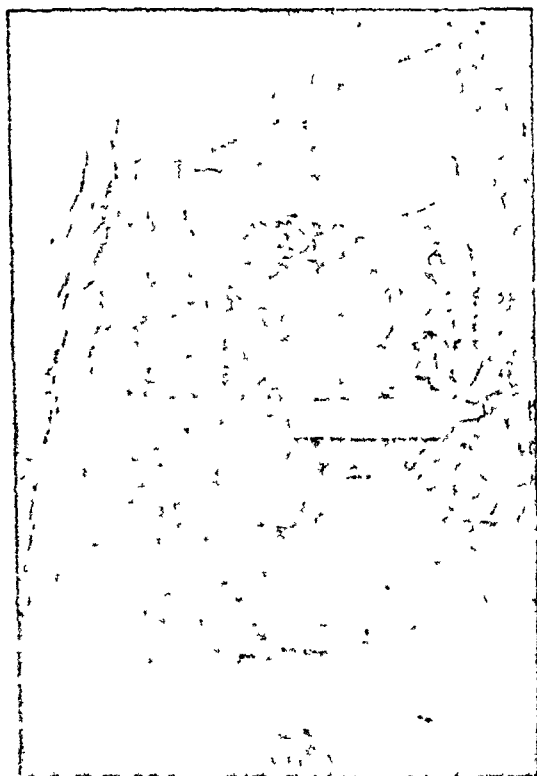
श्रेणी के आगे उत्तर में काश्मीर (झेलम) की चौड़ी घाटी है। यह घाटी प्रायः १०० मील लम्बी, ३० मील चौड़ी और समुद्र तल से ६,००० फुट ऊँची है। कहा जाता है कि यहां पहले एक विशाल झील

थी जिसके सूखने से यह प्राय: समतल मैदान बन गया। यहां झेलम नदी में ६० मील तक नावें चल सकती हैं। यह घाटी चारों ओर ऊँचे और बर्फीले पहाड़ों से घिरी हुई है। इसके उत्तर में हिमालय की प्रधान श्रेणी है जो यहां जास्कर श्रेणी कहलाती है। यह श्रेणी

५७—काराकोरम का एक ग्लेशियर (हिमागार)

सिन्ध नदी के मोड़ के पास नङ्गा-पर्वत से दक्षिण-पूर्व की ओर चली गई है। यही श्रेणी सिन्ध की ऊपरी घाटी को झेलम की घाटी से अलग करती है। जास्कर या प्रधान हिमालय की श्रेणी के उत्तर में सिन्ध की

घाटी बड़ी विकराल है। सिन्ध नदी उत्तर में काराकोरम और दक्षिण में हिमालय से घिरी हुई है। काराकोरम पर्वत की सर्वोच्च चोटी माउन्ट गाडविन आस्टेन १८,२५० फुट ऊँचा है। इसका नीचे से नीचा दर्रा भी १८००० फुट ऊँचा है। यहां पर कई विशाल हिमागार हैं। यह प्रदेश बहुत ही ऊँचा, ठंडा और उजाड़ है और तिब्बत के पठार से मिलता जुलता है। शायक और गलगिट नदियां इस प्रदेश का बर्फीला पानी सिन्ध नदी में ले आती हैं। सिन्ध नदी इस प्रदेश के एक भाग में १७,००० फुट और दूसरे निचले भाग में ४,००० फुट की ऊँचाई पर बहती है। नदी के, दोनों किनारों पर कहीं-कहीं दो तीन मील ऊँची पहाड़ी दीवारें हैं।

जलवायु

ऊँचाई के कारण गरमी का सब कहीं अभाव है। ग्रीष्मकाल अत्यन्त मनोहर होता है। पर शीतकाल में विकराल जाड़ा पडता है। उत्तरी घाटियों और हिमाच्छादित चोटियों से ठंडी हवा नीचे खिसक आती है और ठंडक बढ़ा देती है। दक्षिणी घाटियों में कुछ कम जाड़ा पड़ता है। फिर भी झीलें कुछ कुछ जम जाती हैं। वर्षा कम होती है। वर्षा की यहां दो ऋतु हैं। गरमी में जून से सितम्बर तक और सरदी मे दिसम्बर से अप्रैल तक पानी बरसता है। भीतर की ओर वर्षा की मात्रा और भी कम है। लेह के पास वर्षा और हिमपात दानों की मात्रा औसत से साल भर में ३ इंच से अधिक नहीं होती है। इसी खुश्की के कारण दक्षिणी ढालों की अपेक्षा उत्तरी ढालों पर हिम-रेखा अधिक ऊँचाई पर मिलती है।

वनस्पति

पहाड़ों के वीच के ढालों पर देवदार, सिन्दूर, और चीड़ आदि के वन हैं। धान ७००० फुट की ऊँचाई तक उगता है। धान के सिवा मकइ, कापस, तम्बाकू, ज्वार, बाजरा और दाल शीतकाल में गेहूँ, जौ, सरसों, मटर आदि वसन्त ऋतु में होता हैं। पर काश्मीर की प्रसिद्ध

उपज फल और मेवा है। सेव नाशपाती, शहतूत, अंगूर, आडू, अखरोट अनार और बादाम आदि सभी फल खूब होते हैं। शहतूत की अधिकता से श्रीनगर के आस पास रेशम भी बहुत तयार किया जाता है। ढोर छोटे पर मजबूत होते हैं। उसका रंग अकसर काला होता है। गरमी आते ही हल जोतने वाले बैलों को छोड़कर सभी जानवर पहाड़ों पर हांक दिये जाते हैं। भेड़ बकरी भी बहुत हैं। भेड़ को ऊन से शाल, पट्टू आदि तरह तरह का ऊनी सामान बनता है।

काश्मीर और हिन्दुस्तान का व्यापार दिनों दिन बढ़ रहा है। हिन्दुस्तान से काश्मीर पहुँचने के लिये तीन प्रधान मार्ग हैं सब से दक्षिणी मार्ग जम्मू और बानाहाल दर्रे से होकर, बीच का रावलपिंडी होकर और सबसे अधिक उत्तरी मार्ग हवेलियां और एबटा बाद होकर जाता है। काश्मीर में विलायती पक्का माल, शक्कर, नमक, चाय और तम्बाकू आदि सामान जाता है। वहां से ऊनी सामान, खाल और फल हिन्दुस्तान को आता है। मध्य एशिया का व्यापार काश्मीर के ही मार्ग से होता है। रूसी (सोने की) मुहरें, रेशम और ऊन हिन्दुस्तान को पहुँचाते हैं और सूती तथा रेशमी सामान वहां जाता है।

नगर

श्रीनगर झेलम नदी के दोनों किनारों पर बसा है। यह नगर घाटी के ऐसे भाग में स्थित है जहां पर पञ्जाब से आने वाला मार्ग उत्तर की ओर आने वाले मध्य एशिया के मार्ग से मिलता है। यहां अक्सर बाढ़ आ जाती है। नगर के पास ही विशाल वुलर झील है। आना जाना अधिकतर नाव के द्वारा होता है। तरकारी आदि की बिक्री भी नावों पर ही होती है। जमीन कीमती होने से झील में टट्टी बना कर मिट्टी छिड़क दी जाती है। इन्हीं चलताऊ खेतों पर ककड़ी और तरकारी भी उगा ली जाती है। कभी-कभी इन खेतों की चोरी भी जाती है। यह शहर बहुत पुराना है। पर कभी-कभी भूचाल आने से

अधिकतर मकान लकड़ी के बने हुये हैं। पहले यहां शाल दुशाले बहुत बनते थे। आजकल यहां रेशम का एक बड़ा कारखाना भी है जिसमें बिजली से काम होता है।
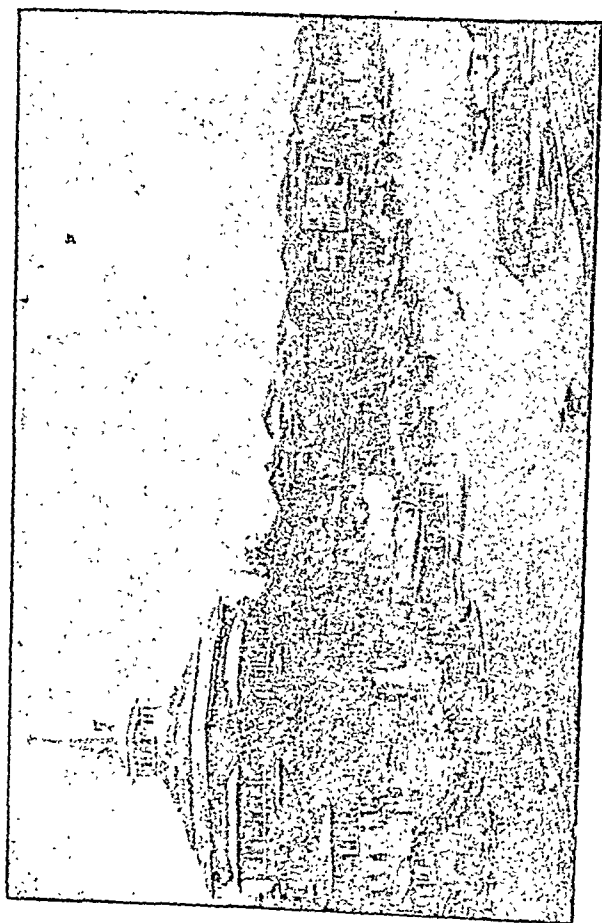
४८—झेलम नदी और श्रीनगर

जम्मू नगर बाहरी हिमालय के ढाल पर चनाव नदी की एक सहायक रावी नदी पर बसा है। काश्मीर में केवल एक यही नगर रेल का

स्टेशन है। शीतकाल में महाराजा साहब यहीं रहते हैं। यहां से एक सुन्दर सड़क बानाहाल और इस्लामाबाद होकर श्रीनगर को गई है। इस्लामाबाद तक ही झेलम में नाव चल सकती है।

लेह नगर ११ ५०० फुट की ऊँचाई पर सिन्ध घाटी में बसा हुआ

५३—लेह की स्त्रियां अपने खड्डे पर बहुत ही मजबूत कपड़ा बुनती हैं।

है। यह नगर लद्दाख की राजधानी है। यहीं से क़राकोरम दर्रे में होकर चीनी तुर्किस्तान को मार्ग जाता है।

गिलगिट नगर इसी नाम की नदी पर बसा है और ऊपरी सिन्ध

के आगे हिन्दुकुश के मार्ग की रखवाली करता है।

इतिहास—काश्मीर का इतिहास बहुत पुराना है। १४वीं शताब्दी से यहां मुसलमानी हमला आरम्भ हुआ। १५८६ ई० में अकबर ने इसे मुग़ल साम्राज्य में मिला लिया। मुग़ल राज्य के नष्ट होने पर काश्मीर में अफ़गानों का अत्याचार रहा। पर रणजीत सिंह ने शीघ्र ही अफ़गानों को मार भगाया। रणजीतसिंह के मरने पर सिक्खों और अंग्रेजों में युद्ध छिड़ गया। सिक्खों की पहली लड़ाई के बाद ७५ लाख रुपये में काश्मीर का राज्य महाराज गुलाबसिंह को इस शर्त पर दिया गया कि वह दूसरी लड़ाई में सिक्खों का साथ न दें। उसके बाद तिब्बत से लद्दाख प्रदेश छीन लिया गया। इस समय काश्मीर में चित्राल आदि कई छोटे-छोटे भाग शामिल हैं। काश्मीर की प्रायः ९० फ़ीसदी जनसंख्या मुसलमान हैं। शेष ब्राह्मण, डोंगरे राजपूत और सिक्ख हैं। उत्तर-पूर्व की ओर कुछ बौद्ध लोग रहते हैं। पाकिस्तानी मारकाट से काश्मीर को बड़ा धक्का पहुँचा।

चम्बा—काश्मीर के पूर्व में चम्बा रियासत है जो हिमाचल-प्रदेश के अधिकार में है। यह पहाड़ी प्रदेश २,००० फुट से लेकर १२०० फुट तक ऊँचा है। इसलिये केवल निचले भागों में ग्रीष्म में अधिक गरमी पड़ती है। शेष भागों की जलवायु मध्यम अथवा अत्यन्त शीत है। धान, मकई, दाल, बाजरा आदि फ़सलें काश्मीर के ही समान हैं। कुछ भागों में चाय और अफ़ीम भी होती है। यहा के ढोर छोटे होते हैं। भेड़ बकरी बहुत हैं। चम्बा शहर ही इस राज्य की राजधानी है। यहाँ कई सुन्दर मन्दिर हैं।

हिमाचल प्रदेश—शिमला की पहाड़ी रियासतें एक ओर जालंधर और अम्बाला ज़िलों और दूसरी ओर देहरादून और टेहरी के बीच में स्थित हैं। यह प्रदेश अम्बाला के मैदान से आरम्भ होकर हिमालय की मध्यवर्ती श्रेणी तक फैला हुआ है। इसके पश्चिमी भाग का पानी व्यास और सतलज नदियों में जाता है पूर्वी भाग का पानी यमुना नदी में आता है। अब इन रियासतों की यूनियन से हिमाचल प्रदेश का नया प्रान्त बना है।

चौदहवाँ अध्याय

नैपाल

नैपाल (क्षेत्रफल ५६,००० वर्गमील, जनसंख्या ५६,००,०००) का राज्य प्राय: ५२० मील लम्बा और १०० मील चौड़ा है। यह राज्य ८० देशान्तर से ८८ पूर्वी देशान्तर और २६°१० से ३०°२२ उत्तरी

६०—नैपाल का एक पहाड़ी पुल। यह पुल हिन्दुस्तान से काठमांडू को जाते समय कुलीखाने में पड़ता है।

अक्षांश तक फैला हुआ है। यह राज्य उत्तर में तिब्बत, पश्चिम में कमायूं, दक्षिण में संयुक्त प्रान्त और बिहार, पूर्व में दार्जिलिंग और शिकम से घिरा हुआ है। नैपाल के धुर दक्षिण में तराई है। अधिक उत्तर में हिमालय की दक्षिणी और मध्यवर्ती श्रेणियां शामिल हैं। यहां की पर्वत-श्रेणियों को कई घाटियों ने तोड़ दिया है। पश्चिम में प्रधान नदी घाघरा है। इसकी सहायक काली नदी नैपाल राज्य को संयुक्त

प्रान्त से अलग करती है। धौलगिरी घाघरा की घाटी को गंडक की घाटी से अलग करता है। गंडक नदी नैपाल के मध्य भाग में होकर बहती है। इसमें सात सहायक नदियों के मिलने के कारण इस नदी की सप्तगंडको भी कहते हैं। पूर्वी नैपाल की प्रधान नदी कोसी या सप्तकोसी है। कोसी और गंडक के ही बीच में हिमालय की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट*स्थित है। नैपाल और शिकम की सीमा पर किंचिंचिङ्ग पर्वत है] जो कोसी की घाटी को तिब्बत की घाटी से से अलग करता है। नैपाल की घाटियां उपजाऊ और आबाद हैं। पर यह घाटियां बहुत ही तङ्ग हैं। केवल काठमांडू की घाटी २० मील लम्बी, १५ मील चौड़ी और समुद्र तल पर काश्मीर घाटी से मिलती जुलती है।

जलवायु—नैपाल की तराई तथा तो तीन हजार फुट ऊँचे ढालों की जलवायु अच्छी नहीं है। वर्षा और गरमी की अधिकता से यहां ज्वर बहुत फैलता है। वर्षा प्रायः सब कहीं अधिक है। पश्चिमी भागों की अपेक्षा पूर्वी भागों में अधिक वर्षा होती है। काठमांडू की औसत सालाना वर्षा ६० इञ्च है। पर ऊँचे भागों की जलवायु बड़ी अच्छी और स्वास्थ्यकर है।

---

*एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने का प्रयत्न कई बार किया गया। पर इसमें सफलता न मिली। अधिक ऊँचाई की हल्की हवा में मनुष्य शीघ्र ही थक जाता है। फिर भी कुलियों ने गत यात्रा मंडली का समान २६,७०० फुट ऊँचाई पर पहुंचा दिया। इस पड़ाव से कुछ सदस्य २८,००० फुट की ऊँचाई तक पहुँच गये। पर दो सदस्यों का कुछ पता न चला। वे फिसल कर चकनाचूर हो गये अथवा घोर शीत में जम गये, अथवा काफ़ी हवा न मिलने से मर गये। दूसरे लोगों को निराश होकर लौटना पड़ा। अन्त में हवाई जहाज़ ने इस चोटी पर विजय प्राप्त कर ली।

उपज

नैपाल की साधारण उपज धान है। खेती अधिकतर हाथ से ही खोद कर होती है। कुछ-कुछ गेहूँ, जौ और जई की खेती होती है। जई घोड़ों को खिलाई जाती है। हिमालय के ढालों पर, साल ,असैना आदि उपयोगी पेड़ों के बन हैं। इसी प्रदेश में भावरघास भी होती है जो रस्सी और कागज बनाने के लिये काम आती है। बांस से यहां तरह तरह की चीजें बनती हैं।

व्यापार

नैपाल में खेती ही प्रधान पेशा है। घरेलू काम के लिये मोटा सूती और ऊनी कपड़ा बुन लिया जाता है। नेवार लोग बरतन बनाने लकड़ी खरादने और मिस्त्री का काम करते हैं। नैपाली लोग अनाज, दाल, तिलहन और सवाई घास (कागज बनाने के लिये) हिन्दुस्तान, में ले आते हैं। और बदले में सूतीकपड़े , पीतल और लोहे के बरतन, नमक और शक्कर अपने यहाँ ले जाते हैं।

नगर—नैपाल के तीन बड़े-बड़े नगर घाटी में बसे हैं। काठमांडू शहर देश की उपजाऊ घाटी में बाघमती (गंडक की सहायक) के किनारे बसा हुआ है। यही नैपाल की वर्तमान राजधानी है। यह

---

*ऊँचे और छोटे छुटे खेतों में,बैलों की सहायता से हल जोतना सम्भव नहीं। मज़बूत और मेहनती नैपाली किसान बहुत अच्छी खुदाई और गुड़ाई करते हैं।

आजकल नैपाल में चर्खे का प्रचार बड़े जोर से हो रहा है। सूती और ऊनी कपड़ा हाथ की कताई और बुनाई से बहुत ही सुन्दर और सस्ता मिलता है। आश्रम नदी के ठीक किनारे राजधानी से लगभग दो मील की दूरी पर बना है। यहीं लेखक ने अपनी एक यात्रा में शुद्ध ऊन क स्वेटर २) में लिया था। इसी संघ की शाखाएं राज्य भर में फैलने से नैपाल कपड़े के लिये स्वावलम्बी हो जायगा।

दिये गये। पर इस लड़ाई के बाद गुरखा और अंग्रेजों में बराबर मित्रता बनी रही। इसी से गुरखा सिपाही भी अंग्रेजी फौज में भरती होते रहे। गुरखा लोगों की वीरता जगतप्रसिद्ध है। नैपाली लोग प्रायः सभी हिन्दू हैं। केवल कुछ लोग बौद्ध हैं। नैपाली लोग बड़े स्वतन्त्रता प्रेमी होते हैं। इसी से वे अपने यहां विदेशियों का आना पसन्द नहीं करते हैं और न उनके सुभीते के लिये अच्छी सड़कें बनाते हैं। नैपाल का शासन वहां के प्रधान मन्त्री के हाथ में रहता है

शिकम—शिकम क्षेत्रफल ३,००० वर्गमील, जनसंख्या ६०,००० का राज्य नैपाल के पूर्व में स्थित है। शिकम के उत्तर-पूर्व में तिब्बत और दक्षिण में दार्जिलिंग है। तिब्बत के लोग शिकम को दजोंग (धान का प्रदेश) और शिकमवासियों को रोंगपा (घाटी में बसने वाले) कहते हैं। सब का सब शिकम हिमालय की बाहरी श्रेणी और मध्यवर्ती श्रेणी के बीच में स्थित है। दक्षिणी भाग समुद्रतल से केवल एक हजार से लेकर पांच हजार फुट तक ऊँचा है। पर उत्तरी भाग एक दम १७ हज़ार फुट ऊँचा हो गया है। वर्षा अधिक होती है। वार्षिक वर्षा १०० इञ्च से ऊपर होती है। तापक्रम ऊँचाई के अनुसार है। पांच हजार फुट तक उष्ण-कटिबन्ध का मध्यम तापक्रम रहता है। इससे आगे कड़ाके का जाड़ा पड़ता है और पेड़ों का अभाव है। ऊँचाई के अनुसार वनस्पति भी भिन्न-भिन्न है। वैसे वहां विषुवत् रेखा और ध्रुव के बीच की सभी तरह की वनस्पति मिलती है। मकई धान, गेहूँ और जौ यहां की प्रधान फसलें हैं। बगीचों में केला, नारंगी और दूसरे फल उगते हैं ढोर, भेड़ और याक यहां के पालतू जानवर हैं। यहां के महाराजा के महल तुङ्गजोंग और गांगटोक में बने हैं। पर रेज़ीडेन्ट गंगटोक में रहता है।

भूटान—भूटान (क्षेत्र, २०,००० वर्गमील जनसंख्या, २०००००) का देश हिमालय का मध्यवर्ती श्रेणी और पूर्वी बंगाल और आसाम के बीच में स्थित है। पूर्व में ८८ देशान्तर से लेकर पश्चिम में ९२
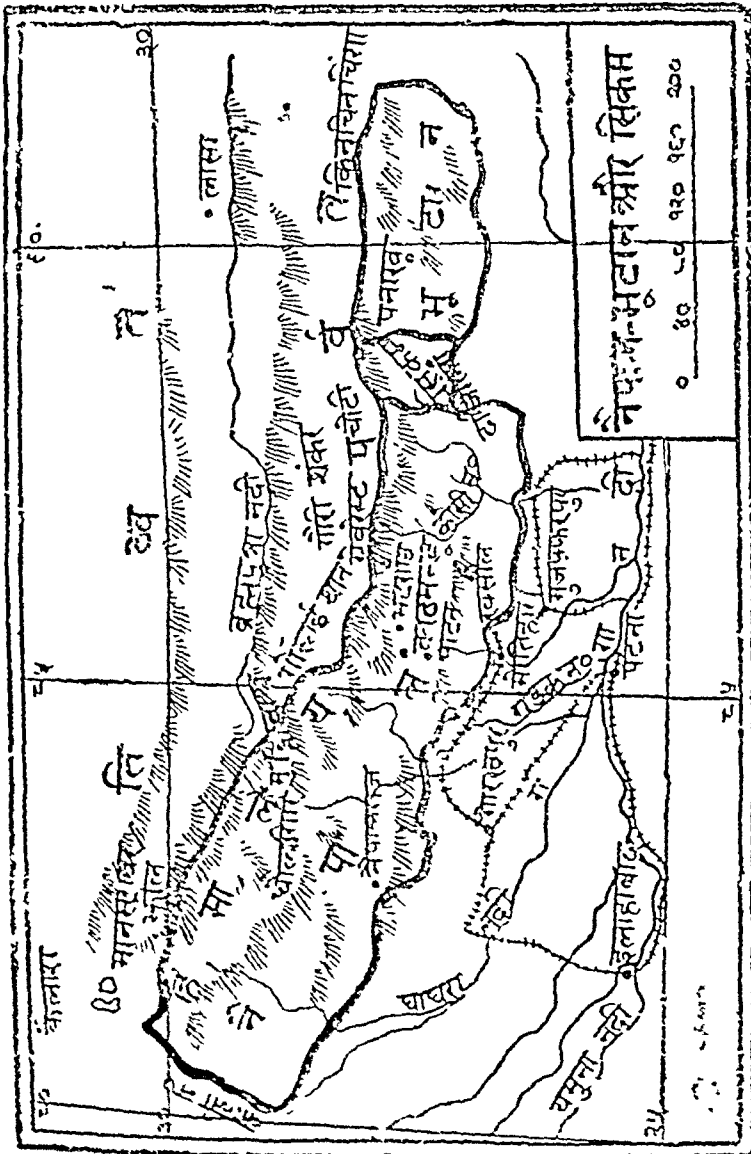
९४ — नैपाल, सिक्किम और भूटान

देशान्तर तक भूटान की लम्बाई प्रायः १९० मील है। वह सब का सब देश तंग घाटियां और ऊँचे पर्वतों का प्रदेश है। आने जाने का मार्ग अत्यन्त दुर्गम है। यहां की जलवायु और उपज शिकम की सी है। मकई ७,००० फुट की ऊँचाई तक होती है। धान, गेहूँ, सरसों और जौ भी उगाये जाते हैं। पर सबसे अधिक आमदनी दालचीनी से होती है। जीनेदार खेतों में सिंचाई की ज़रूरत होती है। पर ग़रीब भूटनी लोग सिंचाई पर अधिक नहीं खर्च कर सकते हैं। कुछ रेशम भा तैयार किया जाता है। भूटान से लकड़ी, नारंगी और ऊन हिन्दुस्तान को आती है। विलायती कपड़ा और चाय, तम्बाकू वहाँ पहुँचतो है।

इतिहास—भूटानी लोग अधिकतर बौद्ध हैं। ये लोग पेनलोप या शासक, पुजारी और किसान हैं। १७७२ ई० में जब भूटानी लोगों ने कूच विहार पर हमला किया। तब से उनका अंग्रेजों से सम्बन्ध हुआ। १८६५ ई० में भूटान के साथ एक सन्धि हुई तब से भूटानी लोगों को ४,००,००० रु० वार्षिक मिलने लगे। १९०० ई० से भूटान को १ लाख रु० सालाना मिलता है लेकिन बाहरी मामलों में उन्हें भारतीय सरकार की सम्मति के अनुसार काम करना पड़ता है। शीतकाल में पुनखा यहां को राजधानी रहती है। ताशीसूदन गरमी में राजधानी रहती है। आने जाने के मार्ग अत्यन्त दुर्गम हैं।

पन्द्रहवाँ अध्याय

आसाम प्रान्त

आसाम-प्रान्त (६३,५००० वर्गमील, जन-संख्या==८ लाख) हिन्दुस्तान की उत्तरी-पूर्वी सीमा पर स्थित है। इस प्रान्त के उत्तर में भूटान और हिमालय के वे दुर्गम पहाड़ी ढाल जहां भूटिया, आका, दाफला, मीरी, अबोर और मिश्मी जातियां रहती हैं। इसके दक्षिण-पूर्व की पहाड़ियां ब्रह्माप्रान्त को अलग करती हैं। आसाम के पश्चिम में बंगाल का निचला प्रान्त है। यहीं आसाम का सिलहट जिला पूर्वी बङ्गाल के पाकिस्तानी राज्य में मिला लिया गया आसाम के केवल एक ओर मैदान और तीन ओर पहाड़ है।

प्राकृतिक विभाग

आसाम-प्रान्त तीन प्रधान प्राकृतिक विभागों में बँटा हुआ है :—

१—उत्तर में ब्रह्मपुत्र की घाटी।

२—बीच में गारो, खासी आदि पहाड़ियां।

३—दक्षिण में सुरमा-घाटी।

१—आसाम प्रान्त में ब्रह्मपुत्र की घाटी

यह घाटी पूर्व में सदियों से आरम्भ होकर पश्चिम में ग्वालपाड़ा जिले के धुबरी नगर तक चली गई है। यह घाटी प्रायः ४०० मील लम्बी है। पर यह घाटी बहुत ही तङ्ग है। उत्तर में हिमालय और दक्षिण में आसाम की पहाड़ियों से घिरी हुई है। घाटी की औसत चौड़ाई केवल ५० मील है। घाटी से पहाड़ बराबर दिखाई देते रहते हैं। इसी घाटी के बीच में ब्रह्मपुत्र नदी बहती है। इस घाटी में

उत्तर की ओर हिमालय से और दक्षिण में आसाम की पहाड़ियों से कई सहायक नदियां आ मिली हैं। ब्रह्मपुत्र के दोनों किनारों पर कई स्थानों पर जंगल से ढके हुए दलदल हैं। ब्रह्मपुत्र की अक्सर कई
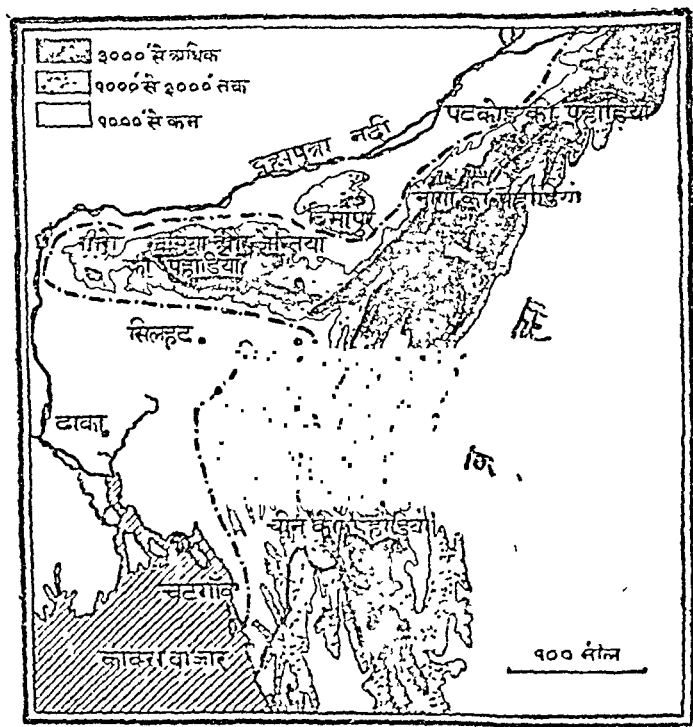
५१—आसाम प्रान्त

धारायें हो जाती हैं। फिर ये धारायें मिलकर एक हो जाती हैं। पर नदी की गहराई काफी है और डेल्टा से डिब्रूगढ़ तक नदी में स्टीमर चलते हैं। किनारों के पास की कछारी धरती बड़ी उपजाऊ है और

धान की फ़सलें उगाने के काम आता है। धान की खेतों के ऊपर ढालों पर चाय के बगीचे लगे हुए हैं।

६६ = ब्रह्मपुत्र की घाटी।

२–आसाम की मध्यवर्ती पहाड़ियां–ये पहाड़ियां ब्रह्मपुत्र की घाटी को सुरमा-घाटी से अलग करती हैं। गारो पहाड़ी पश्चिमी सिरे पर है। कुछ चोटियों को छोड़ कर गारो की औसत ऊँचाई प्रायः २,००० फुट है। यह पहाड़ी और इसकी घाटियां घने वनों से ढकी हुई हैं। जहां गोरे लोगों ने वनों को जला कर क्षणिक खेत बना लिये हैं वहीं खुले भाग हैं। गारो के पूर्व में और आसाम पर्वत-श्रेणी के मध्य भाग में खासी और ज्यन्तिया पहाड़ियां हैं। आसाम-श्रेणी का यही सब से ऊँचा भाग है क्योंकि अधिक पूर्व में नागा पहाड़ भी नीचा है। पर खासी और ज्यन्तिया-पहाड़ियों का आकार पठार के समान है। इनमें अधिकतर घास के लहरदार प्रदेश हैं। बहुत ऊँचे भागों में देवदारु के पेड़ हैं। निचले भागों में गरम और घने बन हैं। नागा पर्वत के आगे पटकोई की पहाड़ी है जो ब्रह्मकुण्ड के पास आसाम की पहाड़ियों को हिमालय से मिलाती है और ब्रह्मपुत्र के प्रवाह प्रदेश को चिंडविनके प्रवाह-प्रदेश से **अलग करती** है।

३–सुरमा घाटी–गारो, खासी, जयन्तिया और नागा-पहाड़ियों के दक्षिण में सुरमा घाटी स्थित है। इस उपजाऊ और आबाद घाटी में सिलहट और कछार के जिले शामिल हैं। सुरमा नदी मनीपुर के उत्तर से पहाड़ों से निकलती है और २३ मील बहकर पूर्वी बङ्गाल में ब्रह्मपुत्र से मिल जाती है। इस नदी के मार्ग में प्रबल वर्षा होती है जिससे उत्तर में आसाम की पहाड़ियों की ओर दक्षिण में लुशाई और टिपरा पहाड़ियों से निकल कर कई सहायक नदियां सुरमा में आ मिलती हैं। पानी काफी रहने से (वर्षा में) सुरमा नदी में बादरपुर तक स्टीमर चला करते हैं। सुरमा का चौरस कछारी मैदान लगभग १२७ मील लम्बा और ६० मील चौड़ा है। इसके दक्षिण-पूर्व में भी जमीन क्रमशः ऊँची होती जाती है और अन्त में मनीपुर और लूशाई की पहाड़ियां आ जाती हैं।

जलवायु–आसाम का औसत तापक्रम इन्हीं अक्षांशों में स्थित दूसरे प्रान्तों से कहीं अधिक कम रहता है। हिन्दुस्तान के दूसरे कम भागों में वसन्त बाद खुश्क ग्रीष्म-ऋतु आरम्भ होती है और मई के अन्त में तापक्रम अधिक से अधिक ऊँचा हो जाता है। पर आसाम में वसन्त के बाद अप्रैल मास से ही वर्षा होने लगती है। इस वर्षा और हवा में अधिक सील होने के कारण आसाम का परम तापक्रम ८३ अंश फारेनहाइट से अधिक ऊँचा नहीं होता है। नमी का प्रभाव सर्दी पर भी पड़ता है। आसाम में तापक्रम प्रायः ६४ अंश फारेनहाइट से कम नहीं होता है। आसाम की नमी और बदली हिंदुस्तान भर में प्रसिद्ध है; यहाँ चेरापूंजी में दुनिया भर से अधिक (प्रायः ५००इञ्च) वर्षा होती है। कम वर्षा वाले भागों (मनीपुर और ब्रह्मपुत्र घाटी) में भी ७० इंच से कम पानी नहीं बरसता है। सितम्बर के अन्त में आसाम में मानसूनी वर्षा बन्द हो जाता है और फरवरी तक वर्षा का प्रायः अभाव रहता है। इस प्रकार आसाम में एक छोटी शीत-ऋतु

और दूसरी लम्बी वर्षा ऋतु होती है। खुश्क ग्रीष्म-ऋतु का अभाव है। यहां सर्दी-गर्मी सभी ऋतुओं में तूफान आते हैं और कभी-कभी भयानक भूचालों का भी दौरा हो जाता है।

उपज—ब्रह्मपुत्र और सुरमा की घाटियों में सब से बड़ी फ़सल धान की होती है चावल यहां के लोगों का मुख्य भोजन है। कुछ खेतों में दाल, जूट और रेंडी भी उगाते हैं। रेंडी के बीज से तेल निकाला जाता है. पर पत्तियां रेशम के कीड़ों को खिलाई जाती हैं जिनसे अंडी रेंढी का मोटा और मजबूत रेशम तैयार किया जाता है।

पहाड़ियों पर चावल के अतिरिक्त आलू और कपास की भी खेती होती है। पर अधिकतर पहाड़ी लोगों में झूम की खेती की चाल है। झूम की खेती इस प्रकार होती है:—किसी पहाड़ी ढाल का वन काट कर साफ कर लिया जाता है। पेड़ जला दिये जाते हैं। इसी राख वाली धरती में चावल, कपास आदि के बीज बो दिये जाते हैं। कुछ वर्षों के बाद फसलें कमजोर होने लगती हैं। तब पहाड़ी लोग दूसरी जगह जाकर इसी तरह की खेती करते हैं। पहाड़ी ढालों और कुछ मैदानों में चाय बहुत है। आसामी लोग मजदूरी करना पसन्द नहीं करते हैं। इस लिये चाय के बगीचों में काम करने के लिये गोरे पूंजीपतियों ने दूसरे दूसरे सूबों से मजदूर मँगाये हैं। सिलहट के पास पहाड़ी ढालों पर नारंगियों के सुन्दर पेड़ हैं जहां से हर साल प्रायः एक लाख मन स्वादिष्ट नारंगियां दिसावर को भेजी जाती हैं। बनों की लकड़ी नाव और घर बनाने के काम आती है लाख बाहर भेज दी जाती है। आसाम के वनों में जंगली हाथी भी बहुत हैं। जिन मुहल्लों में हाथी मिलते हैं उनका हर साल सरकारी नीलाम होता है। इसके सिवा हर नये पकड़े गये हाथी पर सरकार को १००) रु० मिलता है।

खनिज—कोयला, पत्थर और मिट्टी का तेल आसाम की मुख्य खनिज हैं। खनिज का प्रधान केन्द्र उत्तरी-पूर्वी आसाम में (नागा पहाड़ के पास) डिगबोई नगर है। यह नगर एक रेल द्वारा आसाम बंगाल रेलवे और डिब्रूगढ़ से जुड़ा हुआ है। डिब्रूगढ़ तक ब्रह्मपुत्र में स्टीमर आ सकते हैं। आसाम के तेल में रोशनी देने वाला हलका भाग कम होता है। मोमबत्ती का मोम अधिक होता है।

नगर और मार्ग—आसाम में जल और स्थल-मार्गों की सुगमता है। उत्तरी-पूर्वी आसाम के व्यापार (चाय) के सुभीते के लिये आसाम-बंगाल रेलवे खोली गई है। यह रेलवे चिटगांव बन्दरगाह से आरम्भ होती है और बीच की पहाड़ियों का पार करती हुई उत्तर-पूर्व में डिब्रूगढ़ सदिया रेलवे से मिल गई है। लुम्बडिंग जंक्शन से कुछ ऊपर दीमापुर या मनीपुर रोड से (बैलगाड़ी की) एक सड़क कोहिमा होती हुई मनीपुर-राज्य की राजधानी इम्फाल को गई है। लुम्बडिंग जङ्क्शन से एक शाखा गौहाटी शहर को गई है। विशाल ब्रह्मपुत्र के बाएँ किनारे पर गौहटी शहर की स्थिति बड़ी रमणीक है। इसके दूसरे किनारे पर पूर्वी-बंगाल रेलवे का अन्तिम स्टेशन (आमिनगांव है) दोनों के बीच में स्टीमर चला करते हैं। नदी के बीच में एक सुन्दर द्वीप है जहां एक प्राचीन मन्दिर है। गौहाटी शहर से एक मोटर-सड़क शीलांग को जाती है। प्रथम १६ मील में चढाव बिल्कुल नहीं मालूम पड़ता है, पर बाद को चढ़ाव-उत्तर के कारण मोटर को भी देरी लगती है और ६४ मील की यात्रा में ६ घंटे लग जाते हैं। शीलांग प्रायः ६,००० फुट की ऊँचाई पर बसा होने से गरमियों में ठंडा रहता है। यही शहर आसाम-प्रान्त की राजधानी है। यहीं से एक सड़क चेरापूञ्जी को गई है जहां वर्षा की अधिकता से नालों में पथरीली तली को छोड़कर मिट्टी का नाम भी नहीं बचा है। चेरापूञ्जी सफेद सपाट पहाड़ियों की दूसरी ओर सिलहट जाने

के लिये रास्ता है। इस प्रकार सुरमा और ब्रह्मपुत्र घाटी एक दूसरे से मिली हुई हैं।

लोग—आसाम के अधिकाँश लोग गांवों में बसते हैं। शीलांग, गौहाटी डिबरूगढ़, और सिलहट दो चार ऐसे नगर हैं जिनकी आबादी १० हजार से ऊपर है। गांवों की अधिकता होने ,के कारण यह है कि यहां ८० फ़ीसदी लोग खेती के पेशे में लगे हुये हैं।
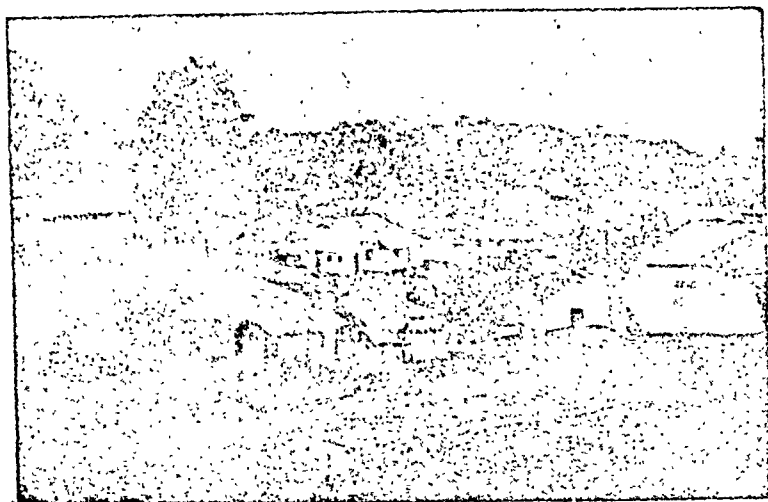
६७—शीलोंग का एक साधारण दृश्य

रेशमी और सूती कपड़े का काम भी घर पर ही होता है, बड़े-बड़े कारखानों में नहीं होता है। आसाम के प्रायः प्रत्येक घर में स्त्रियां कपड़ा बुनना जानती हैं। पर वे सूत कातना नहीं जानती हैं। इसलिये सूत विलायत से आता है। केवल पहाड़ी गांवों में बुनने के साथ-साथ कातने का भी काम घर पर ही होता है। नाव बनाने शीतलपाटी और चटाई बुनने और जेवर आदि का काम करने में अधिक लोग लगे हुए हैं। शीतलपाटी बुनने का काम अधिकतर सिलहट में होता

है। चाय के बगीचों में काम करने वाले छः सात लाख कुली बाहर से आये हैं। आसाम का पुराना नाम कामरूप है। यहां बहुत ही प्राचीन समय से हिन्दू सभ्यता का प्रचार हुआ। अहामवंशी राजाओं का संगठन इतना जबरदस्त था कि मुसलमान हमला करने वालों को भगाने में वे सदा सफल रहे अन्त में उनमें आपस में फूट फैली। एक दल ने १७९२ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी से मदद ली। दूसरे वर्ष वह फौज तो सर जान शोर साहब ने बुला ली, पर १८०७ में बहुत सा रुपया देकर ब्रह्मी (ब्रह्मा के लोग) बुलाये गये। इन लोगों के बर्ताव से आसाम के राजा को सन्तोष हुआ। उधर ब्राह्मा और ईस्ट इण्डिया कम्पनी में भी खट-पट हो गई। इसलिये १८२९ ई० में आसाम ब्रिटिश राज्य में आ गया। बङ्ग विच्छेद के समय १९०५ में यह प्रान्त पूर्वी बङ्गाल में मिला दिया गया। पर १९०१ में फिर अलग कर दिया गया। १९१९ के सुधारों के बाद यहां भी गवर्नर नियुक्त होने लगा। इस समय यहां आधे से अधिक लोग हिन्दू हैं। $\frac{1}{4}$ मुसलमान थे। शेष प्रेतपूजक हैं। आसाम भाषा बङ्गाली से मिलती जुलती है। ये दोनों भाषाएँ प्रायः सघन मैदान में बोली जाती है। ४४ फी सदी लोग बङ्गाली बोलते हैं। २२ फी सदी लोग आसामी बोलते हैं। पर पहाड़ी भाग में गारो खासी आदि कई पहाड़ी भाषाएँ हैं। बड़े शहरों में कुछ लोग हिन्दी भी बोलते हैं।

मनीपुर या मणिपुर (८४५ वर्गमील, जनसंख्या प्रायः ४ लाख) राज्य चारों तरफ से ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों से घिरा हुआ है। बीच में २ हजार फुट ऊँचा होने के कारण यहीं की जलवायु उत्तम है। आसाम की तरह यहाँ भी जङ्गली हाथी पाये जाते हैं। टट्टू और गाय, बैल आदि वहा के पालतू जानवर छोटे पर सुन्दर और सुदृढ़ होते हैं। इम्फाल यहां की राजधानी है। यहा के ८० फीसदी निवासी हिन्दू हैं। लगभग १०,००० मुसलमान भी बसते हैं। पुरुष खेती करते हैं और स्त्रियां लेन देन और व्यापार का काम करती हैं।

खासी, जयन्तिया आदि छोटी-छोटी रियासतें आसाम में कई (प्रायः २०) थीं। वह अब आसाम प्रान्त में मिल गई हैं।

सोलहवाँ अध्याय

बङ्गाल प्रान्त

बंगाल प्रान्त (८८२४७ वर्गलीन जनसंख्या ४ करोड़ ६० लाख) उत्तर में शिकम और भूटान, पूर्व में आसाम और बरमा, पश्चिम में बिहार उड़ीसा और दक्षिण में बंगाल की खाड़ी से घिरा हुआ है। कर्क रेखा इस प्रान्त को दो विषम भागों में विभाजित करती है। छोटा और आयाताकार भाग इस रेखा के दक्षिण में रह जाता है। बड़ा त्रिभुजाकार भाग इस रेखा के ऊपर स्थित हैं। बंगाल प्रान्त का सबसे बड़ा भाग गंगा और ब्रह्मपुत्र की निचली घाटियों और डेल्टा से बना हुआ है। इस प्रदेश की प्रायः सभी भूमि नदियों की लाई हुई बारीक कछारी मिट्टी या कांप की बनी है। दक्षिणी भाग नदियों की असंख्य धाराओं से कटा फटा है। उत्तर में दार्जिलिंग का जिला हिमालय के दक्षिणी ढाल पर स्थित है। इसके नीचे जलपाईगुड़ी के जिले में तराई का प्रदेश है। प्रान्त के दक्षिण पूर्व में चिटगांव और त्रिपुरा में भी पहाड़ियां हैं। पश्चिम की ओर मिदनापुर वर्दवान, बीरभूमि और बांकुड़ी जिलों के पश्चिमी भाग छोटानागपुर पठार के ही रूपान्तर हैं। इस प्रकार प्रान्त का सबसे बड़ा भाग प्रायः सब का सब) बहुत ही नीचा और उपजाऊ है। हजारों वर्गमील में पहाड़ या पत्थर का नाम नहीं है। भारत के स्वाधीन होने पर बंगाल दो भागों में बांटा गया। पश्चिमी बङ्गाल भारतीय सङ्घ का अंग बना रहा। पूर्वी बङ्गाल में पूर्वी पाकिस्तान बना।समूचा बङ्गाल निम्न प्रकृतिक भागों में बांटा जा सकता है :-

१—उत्तरी बङ्गाल—यह भाग वास्तव में गंगा और ब्रह्मपुत्र का द्वाबा है। हिमालय से निकलने वाली अनेक छोटी-छोटी नदियां इस

प्रदेश में बहकर गंगा से मिल जाती हैं। वर्षा ऋतु में यही छोटी नदियां फैलकर भयानक रूप धारण कर लेती हैं। बाढ़ के दिनों में वे अक्सर

६६—गोवालंडो-स्टीमर घाट और गांव
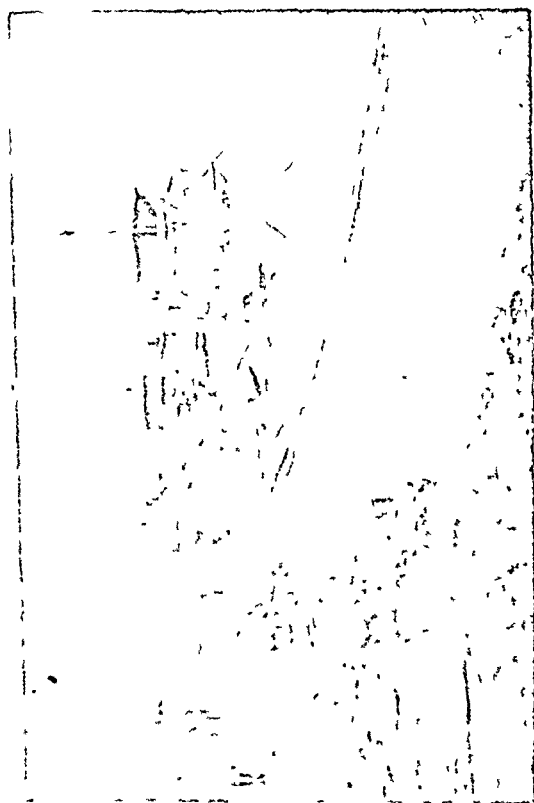
अपने मार्ग बदल कर अनेक गांवों को काट डालती हैं। साधारण बाढ़ में भी बहुत से गांव छोटे-छोटे द्वीप बन जाते हैं। शुष्क ऋतु में इन नदियों में बहुत ही कम पानी रहता है। अधिकांश प्रदेश में धान और पाट (जूट) होता है। कुछ भागों (बेरिंद, में जंगल और झाड़ियां

२—पुरानी डेल्टा—इस प्रदेश में मध्यवर्ती और पश्चिमी बङ्गाल शामिल है। गत चार-पाच सदियों में कांप के लगातार जमा होने से इधर की जमीन कुछ ऊँची हो गई, इससे गङ्गा और ब्रह्मपुत्र नदियों

६८—दार्जिलिंग का बोटेनिकल गार्डन

का विशाल डेल्टा धीरे धीरे पश्चिम से पूर्व की ओर मुड़ गया है। गंगा का पानी जिन धाराओं द्वारा मध्य बंगाल में होकर समुद्र में पहुँचता था उनमें गङ्गा का पानी आना बन्द हो गया अथवा बहुत ही
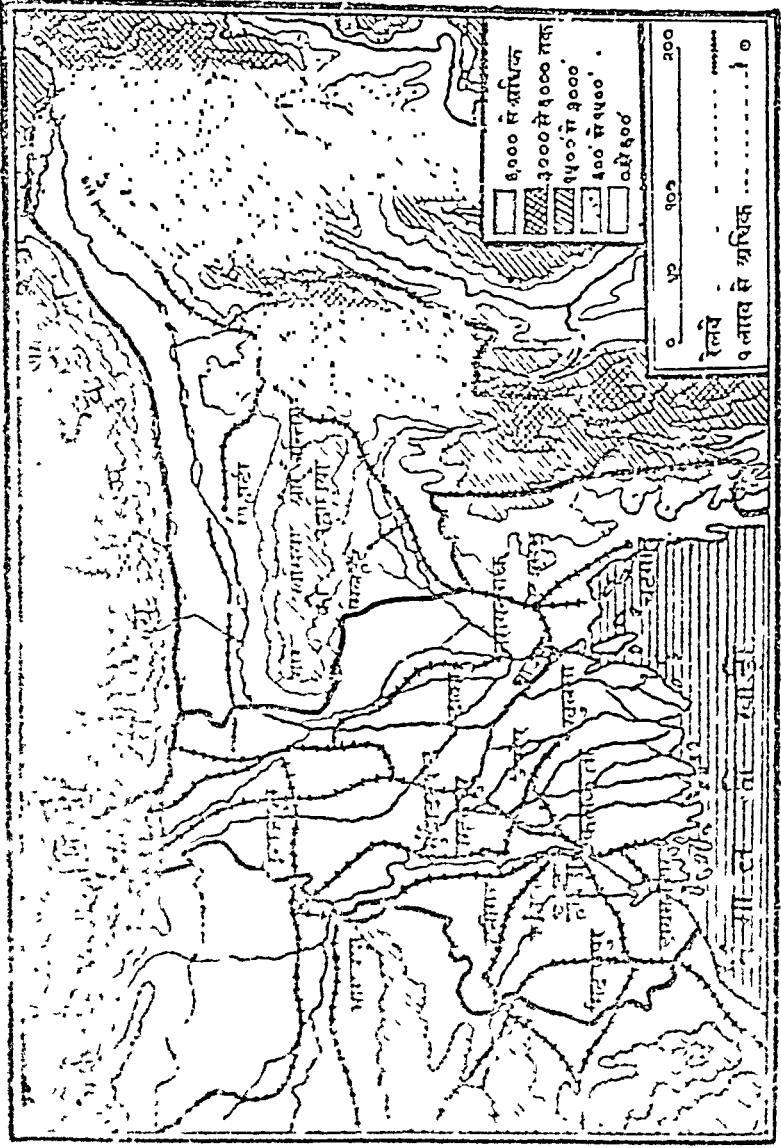
१०—बंगाल और आसाम के दो त्रिभुजाकार नक्शों को एक साथ रखने से एक विषम चतुर्भुज बन जाती है।

थोड़ा आने लगा*। इसलिये वे पुरानी धाराएं प्रायः नष्ट हो गईं। उनके स्थान पर बड़े बड़े दलदल या झीलें बन गईं। इन दलदलों का का बहुत सा प्रदेश सुखा लिया गया और धान उगाने के काम आने
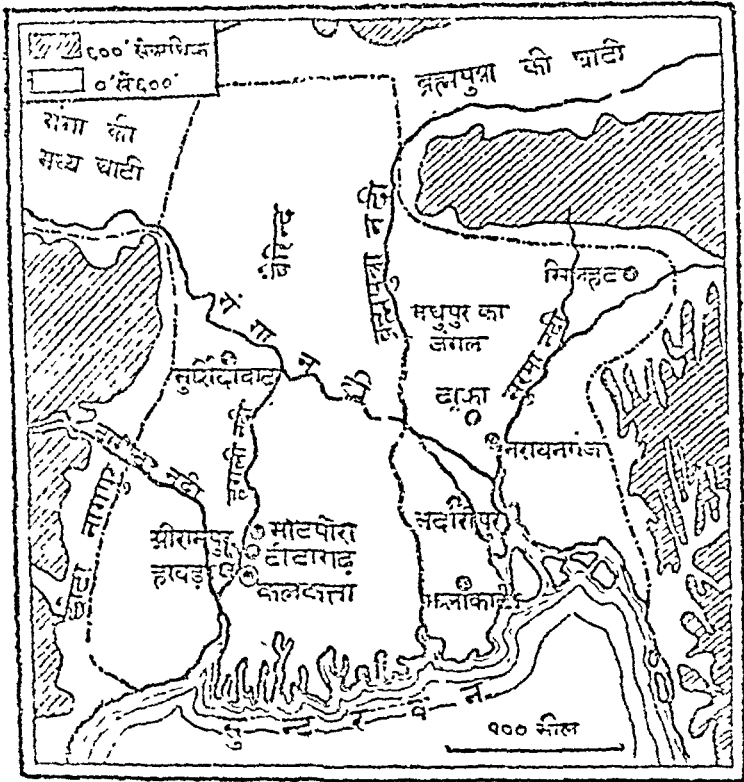
७१—गङ्गा का डेल्टा

लगा धुर दक्षिण में समुद्र-तट से प्रायः तीस चालीस मील भीतर की ओर तक अब भी दलदल से घिरा हुआ वन है। इस वन में सुन्दरी नाम के पेड़ों की अधिकता है। इसलिये यह सुन्दर वन कहलाता है।

*दूसरे कारणों के लिये विद्यार्थियों को हमारी इण्डिया देखो।

इस दलदली बन में असंख्य छोटी-छोटी धाराएं हैं। पर उनके किनारों की ऊँचाई एक हाथ से भी कम है। इसलिये जब समुद्र से (प्रायः दो तीन गज) ऊँचा ज्वार आता है। तब यह प्रदेश समुद्र-जल डूब जाता है। इस समय सुन्दर बन की धाराओं में विशाल मगर रहते हैं। खुश्क भागों में जंगली, सुअर, हिरण और चीते रहते हैं।
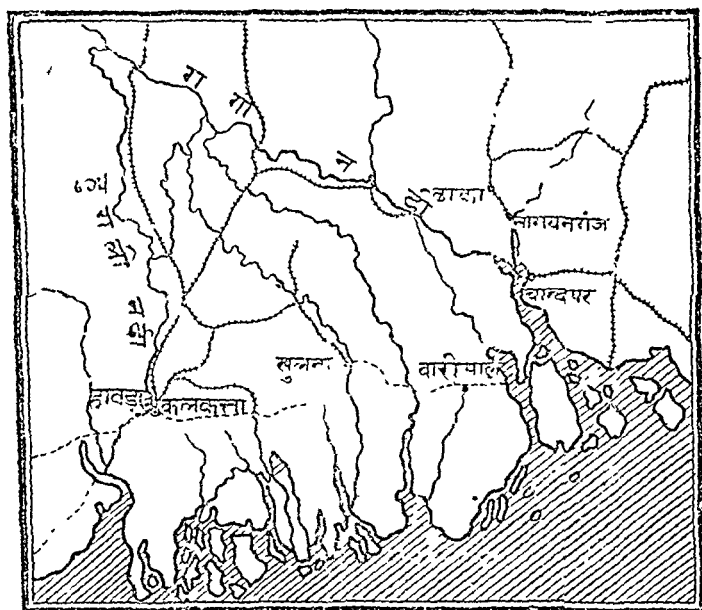
७१—गङ्गा नदी का दृश्य।

पर पहले जब यह भाग कुछ अधिक ऊँचा था। यहां खूब खेती होती थी और मनुष्य रहते थे। इस सारे डेल्टा में पक्के मकानों, तालावों, मन्दिरों, मसजिदों और महलों के भग्नावशेष मिलते हैं। सत-गुम्बज नाम का यहां एक विशाल भवन था। इस भवन में ७७ गुम्बज थे।

इसके चारों ओर मेंहराबदार २६ दरवाजे थे। भीतर की ओर प्रायः ४९ गज लम्बा और ३२ गज चौड़ा कमरा था। अनुमान किया जाता है कि जब से गंगा ने पूर्व की ओर ब्रह्मपुत्र के संगम के लिये मुड़ना आरम्भ किया तभी से यह प्रदेश नीचे दब गया। सम्भव है कि आगे चल कर फिर यह प्रदेश पहले की तरह उन्नत हो जावे।

डेल्टा के पश्चिम में दामोदर आदि नदियां छोटा नागपुर पठार से पानी लाती हैं। पठार की ओर भूमि क्रमशः ऊँची होती जाती है। पर जमीन कड़ी और वीरान है। इसमें कांटेदार झाड़ियां अधिक हैं। बंगाल के पश्चिमी भाग में ही छोटा-नागपुर पठार का सिरा है। इसी सिरे पर रानीगञ्ज, आसनसोल और झरिया में पश्चिमी बंगाल की लोहे और कोयले की प्रसिद्ध खानें हैं। भारतवर्ष का प्रायः ९० फी सदी कोयला इन्हीं खानों से आता है।

३—पूर्वी डेल्टा और सुरमा घाटी—इस ओर विशाल नदियां अपनी कांप लाकर तेजी से डेल्टा बनाने का काम कर रही हैं। बाढ़ के दिनों में इस प्रदेश के गांव छोटे-छोटे द्वीप बन जाते हैं। बिना नाव की सहायता के एक गांव से दूसरे गांव को जाना असम्भव हो जाता है। इसलिये इस प्रदेश में गाड़ियों की जगह नावें बहुत चलती हैं। बाढ़ के दिनों में इधर के लोग एक गांव से दूसरे गांव को। और कभी-कभी अपने घर से दूसरे घर को नाव पर जाते हैं। पर बाढ़ कम होने हर साल इस प्रदेश में बारीक और उपजाऊ कांप की नई तह बिछ जाती है। इसी से यहां धान और पाट (जूट) बहुत होता है।

गंगा और ब्रह्मपुत्र के संगम से उत्तर और पूर्व की ओर मधुपुर के टीले घास और वन से ढके हैं। मधुपुर का वन समुद्र-तल से केवल ४० फुट ऊँचा है। पर वह गंगा को और अधिक आगे पूर्व

१—प्राचीन इतिहास (रघुपदिग्विजय) में इस बात का उल्लेख है कि बङ्गदेश (बङ्गाल) के सिपाही नावों पर चढ़कर लड़ा करते थे।

की ओर मुड़ने से रोकता है। इसके पूर्व में सुरमा की उपजाऊ घाटी है जो वास्तव में नवीन डेल्टा का अंग है।

जलवायु—कर्क रेखा बंगाल प्रान्त को दो भागों में बांटती है। पर उत्तरी भाग की जलवायु शीतोष्ण कटिबन्ध की सी नहीं है। दार्जिलिंग के पहाड़ी जिलो को छोड़कर समस्त बंगालमें उष्ण कटिबन्ध की जलवायु पाई जाती है। यह प्रान्त मौसमी हवाओं के रास्ते में स्थित है। इसलिये यहां वर्षा खूब होती है। सब कहीं ५० इञ्च के ऊपर ही वर्षा होती है। वर्षा की मात्रा पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ती जाती है। इस प्रकार सिलहट जिले में १५० इञ्च वर्षा होती है। कभी कभी बंगाल की खाड़ी के चक्रवात यहां आ जाते हैं और निचले भागों में बहुत क्षति पहुँचाते हैं। बंगाल प्रान्त समुद्र के पास है। यहां वर्षा अधिक होती है। हिमालय और पठार आदि दूसरे भागों का बहुत सा जल इस प्रान्त में होकर समुद्र में पहुँचता है। इन कारणों से बंगाल की हवा आर्द्र (नम) रहती है। आर्द्र (नम) हवा स्वास्थ्य के लिये अच्छी नहीं होती है, पर वह ताप क्रम में कोई भारी अन्तर नहीं पड़ने देती है। यही कारण है कि बंगाल में शीत-काल में भी मामूली गरमी रहती है। औसत ताप-क्रम ६० अंश फारेनहाइट से अधिक ही रहता है। कलकत्ते में रहने वालों को शीतकाल में आग तापने या अधिक गरम कपड़ों की आवश्यकता नहीं होती है। गरमी की ऋतु में यहाँ विकराल गरमी भी नहीं पड़ने पाती है। बंगाल के प्रत्येक भाग में ग्रीष्म का औसत तापक्रम ९६ अंश फारेनहाइट से कम ही रहता है। दार्जिलिंग का ताप-क्रम ऊंचाई के कारण प्रान्त भर में कम रहता है। एक शब्द में बंगाल की जल-वायु उष्णार्द्र कही जा सकती है।

उपज—उष्णार्द्र जलवायु और उपजाऊ भूमि होने के कारण बंगाल-प्रान्त सदा हरा-भरा रहता है। वर्षा के बाद समतल मैदान

हरियाली का समुद्र बन जता है। जहां तक दृष्टि पहुंचती है वहां तक धान या पाट के खेत लहलहाते नज़र आते हैं। थोड़ी थोड़ी दूर पर केला, कटहल, आम, सुपारी आदि के बगीचों के बीच में बसे हुये गाँव द्वीप के समान दिखाई देते हैं। तालावों और दलदलों में भी कमल आदि के पौधे रहते हैं। ग्रीष्म ऋतु में जब दूसरे प्रान्त झुलसने लगते हैं और उनमें धूल उड़ने लगती है उन दिनों में भी बंगल प्रान्त में हरियाली का सर्वत्र अभाव नहीं होता है।

मनुष्य—उपजाऊ होने के कारण यह प्रान्त बहुत ही घना बसा है। प्रति वर्गमील में प्राय: ६०० मनुष्य रहते हैं। इस प्रान्त के रहने वालों में प्राय: ५२फीसदी सुन्नी मुसलमान है। ये लोग अधिकतर पूर्वी बंगाल में रहते हैं। प्राय: ४५ फीसदी निवासी हिन्दु हैं। शेष दो फीसदी मूल निवासी और ईसाई आदि हैं। इस प्रान्त में ९५ फीसदी लोगों की भाषा बंगाली है। लगभल ४ फीसदी लोग हिन्दी बोलते हैं। शेप १ फीसदी में दक्षिण-पश्चिम की ओर उड़िया भाषा और दार्जिलिंग की ओर नैपाली बोलने वाले हैं। इस प्रान्त के अधिकतर लोग धान या पाट की खेती में लगे हुये हैं। उन्हें अपने खेतो के पास अलग घरों में या छोटे छोटे गावों में रहना पड़ता है। इसलिये बंगाल में प्राय: ९३ फीसदी लोग गावों में रहते हैं। ७ फीसदी लोग शहरों में रहते हैं। इसलिये ५०,००० से अधिक की जन-संख्या वाले शहर बंगाल में केवल सात हैं। कुछ शहर पुराने हैं। ये शहर या तो किसी समय में राजधानी थे। अब उनमें हाट (बाजार) लगता है। पर इस तरह के शहर प्राय: घट रहे हैं। नये कारबार और व्यापार वाले शहर धान या जूट की मिलों के पास बढ़ गये हैं।

कलकत्ता—शहर (जन-संख्या प्राय: १२ लाख) हिन्दुस्तान भर में सबसे बड़ा है। पर अब से प्राय: ढाई सौ वर्ष पहले यह एक बहुत ही छोटा गांव था। १६८६ ई० में (जब हिन्दुस्तान में अँग्रेजी

राज्य था और अँग्रेज लोग हिन्दुस्तानी प्रजा की हैसियत से रहते थे) अँग्रेजी सौदागरों ने मरहठों के डर से यहीं बसने में अपनी खैरियत समझी। यह नगर समुद्र से प्रायः ७० मील ऊपर हुगली नदी के बाएं किनारे पर स्थित है। हुगली नदी गंगा की सब से बड़ी और सबसे अधिक पश्चिमी शाखा है, यह गहरी इतनी है कि बड़े से बड़े जहाज यहां तक आ सकते हैं। इस विशाल और गहरी नदी को पार करके कलकत्ते पर चढ़ाई करना मरहठा लोगों के लिये आसान था १७५७ की साजिश के बाद जब अँग्रेज लोग इस नगर और आस-पास के प्रदेश के मालिक बन गये तब उन्होंने वहां फोर्ट विलियम नामी किला बनवाया। १७७२ ई० में कलकत्ता शहर बङ्गाल की राजधानी बना। फिर जैसे जैसे हिन्दुस्तान में अँग्रेजी राज्य बढ़ा वैसे-वैसे कलकत्ते की भी वृद्धि हुई। यहाँ विश्वविद्यालय, हाईकोर्ट आदि तरह-तरह की आलीशान इमारतें बनीं। १९१२ ई० से हिन्दुस्तान की राजधानी दिल्ली हो गई। पर इससे कलकत्ते के कारबार और व्यापारिक महत्व में कोई अन्तर न पड़ा। कलकत्ता न केवल हिन्दुस्तान का वरन् एशिया का सबसे बड़ा व्यापारिक केन्द्र है। इस शहर के पीछे उत्तरी-पश्चिमी सीमा-प्रान्त और आसाम को पहाड़ियों के सिरे तक प्रायः समतल, सघन और उपजाऊ देश है। इस प्रदेश में सस्ते दामों में आसानी से रेलें, सड़कें और नहरें बनाई बनाई जा सकती हैं। गंगा के डेल्टा और मध्य घाटी की असंख्य नदियां स्वाभाविक जलमार्ग बनाती हैं। इसलिये गंगा की घनी घाटी की अपार उपज कलकत्ता से ही दिसावर को जाती हैं। भिन्न-भिन्न विदेशों से आने वाला पक्का माल भी कलकत्ते में ही उतारा जाता है और यहां गंगा की घाटी में वितरण होता है। कलकत्ता का बन्दरगाह हुगली के किनारे पांच मील तक फैला हुआ है। किदरपुर में डाक (या जहाजी घाट) हैं यहां तक समुद्र से जहाज बराबर आया जाया करते हैं। पर हुगली नदी में कांप लगातार जमा होती रहती है। इसलिये नदी

को साफ़ रखना पड़ता है। जहाज को लाने और ले जाने के लिये शिक्षित और अनुभवी मल्लाह भेजे जाते हैं। इसमें व्यापारिक
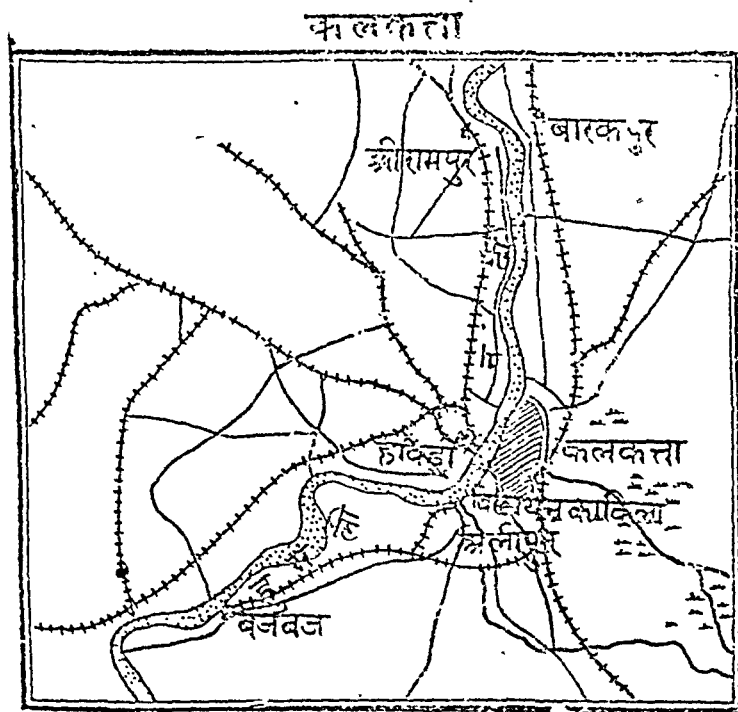
७२—इस नकशे के स्केल में एक इञ्च = १६ मील

दृष्टि से असुविधा अवश्य है। पर सैनिक दृष्टि से लाभ यह है कि यदि कोई विदेशी दुश्मन अपने जहाजों से कलकत्ता पर हमला करना

चाहे तो उसके जहाज बीच में ही हुगली की तली से टकरा कर नष्ट हो जावें।*

७३—दार्जिलिंग की पहाड़ी रेलवे का एक दृश्य
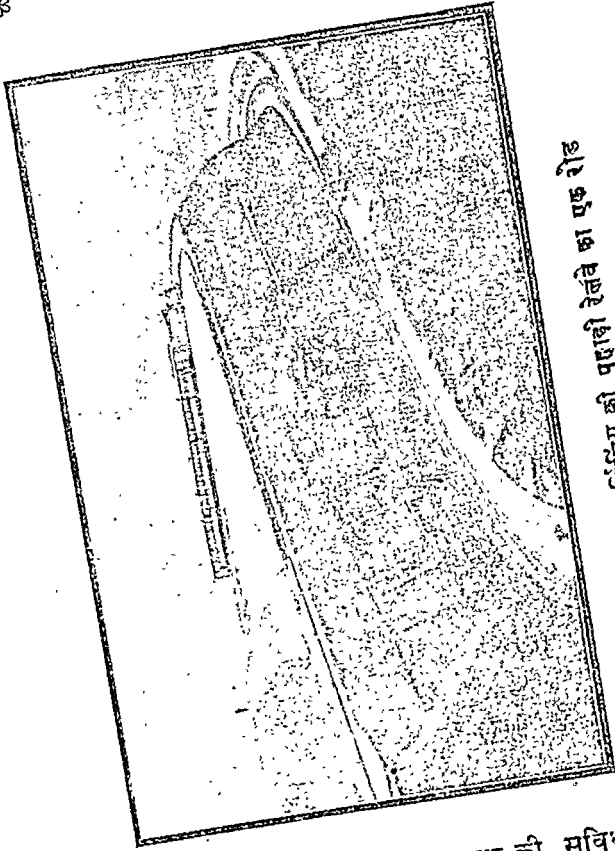
व्यापार के अतिरिक्त कलकत्ते में कारबार की सुविधा है। इसके

*१९१४ की बड़ी लड़ाई के दिनों में जर्मनी के एमडन नामी जंगी जहाज ने मद्रास पर गोलाबारी की। पर कलकत्ता सुरक्षित रहा।

आसापास बहुत सा पाट (जूट) और चावल होता है। पास में रानीगंज से लोहा और कोयला मिल जाता है। पृष्ठ प्रदेश में घनी आबादी होने से असंख्य सस्ते मजदूर मिल जाते हैं। इसलिये कलकत्ते में हुगली के किनारे-किनारे मीलों तक बड़े बड़े कारखाने हैं जिनमें बोरियां, बोरी का कपड़ा, रस्सी, सूती, कपड़ा, कागज मशीनें आदि चीजें तयार होती हैं। पास ही अलीपुर और काशीपुर में बन्दूकों का कारखाना है। हुगली के दाहिने किनारे पर हावड़ा शहर हैं। यह रेलों का अन्तिम स्टेशन है। यहां भी कई कारखाने हैं। दोनों शहरों के बीच में लकड़ी का पुल है जो जहाज आने के समय अलग कर लिया जाता है। हुगली के ही किनारे पर भाटपाड़ा, टीटागढ़ और श्रीरामपुर में जूट की मिलें हैं। टीटागढ़ में कागज़ भी बनता है।

पश्चिमी बङ्गाल में रानीगञ्ज और आसनसोल कोयले की खानों और रेलों के लिये प्रसिद्ध केन्द्र हैं।

दार्जिलिंग—यह शहर समुद्र-तल से प्रायः ८,००० फुट की ऊँचाई पर पहाड़ी लाइन का अन्तिम स्टेशन और बङ्गाल प्रान्त की ग्रीष्म-ऋतु की राजधानी है यहां से हिमालय की सर्वोच्च चोटियों का उत्तम दृश्य दिखाई देता है। निचले ढालों पर चाय के बगीचे हैं।

सत्रहवाँ अध्याय

बिहार-उड़ीसा*

बिहार-उड़ीसा (प्राय: १,१२,००० वर्गमील, जनसंख्या ५ करोड़ २३ हजार) प्रान्त उत्तर में हिमालय से ले कर दक्षिण में बंगाल की खाड़ी तक चला गया है। यह प्रान्त§ सन् १९१२ ई० में बनाया गया। इस प्रान्त के ऊपरी भाग में बिहार अथवा गंगा की मध्य घाटी, बीच में छोटा नागपुर का पठार है इसके दक्षिण में उड़ीसा अर्थात् महानदी का डेल्टा है। इसके उत्तर में नैपाल राज्य और उत्तरी पूर्वी सिरे पर दार्जिलिंग जिला है। इसके पश्चिम में सयुक्त प्रान्त और मध्य प्रान्त, पूर्व में बंगाल और दक्षिण में बंगाल की खाड़ी और मद्रास प्रान्त का उत्तरी पूर्वी सिरा है।

बिहार का प्रदेश गंगा और गंगा की सहायक नदियों के द्वारा लाई हुई बारीक मिट्टी (कांप) से बना है। केवल दक्षिण बिहार में कुछ पठार हैं। छपरा जिले के पास गंगा नदी संयुक्त प्रान्त से बिहार प्रान्तमें

---

*सन् १९३५ से उड़ीसा एक अलग प्रान्त बन गया है।

§भारतीय प्रान्तीय विभागों में यह औरों की अपेक्षा नय है। पर भारतवर्ष के प्राचीन से प्राचीन इतिहास में इस प्रान्त का उल्लेख है। सीता जी के पिता राजा जनक का मिथला राज्य यहीं था। श्रीकृष्ण जी के विरोधी जरासन्ध का मगध देश यहीं था। महात्मा बुद्ध के बाद सम्राट अशोक के शासन काल में इस प्रान्त भर में बौद्ध संघ या "विहार" स्थापित हो गये। शायद इसी से आगे चल कर इस प्रान्त का बिहार पड़ गया।

१५०० से अधिक
५०० १५०० तक
० से ५०० तक
रेलवे
नगर जिनकी आबादी एक लाख से अधिक
मुजफ्फरपुर
पटना
गया
भागलपुर
कटिहार
गिरिडीह
रानीगंज
हावड़ा
कटक
महानदी का
मुहाना
अंग्रेजी मील
० ५० १०० २००

१४—बिहार और उड़ीसा

प्रवेश करती है बिहार के उपजाऊ और कछारी मैदान को दो भागों में बांटती हुई गंगा नदी पूर्व की ओर बढ़ती है। बिहार प्रान्त छोड़ते समय राजमहल की पहाड़ियों ने पूर्व की ओर बढ़ कर गंगा को दक्षिण पूर्व की ओर मोड़ दिया है। बिहार का कछारी मैदान सब कहीं समुद्रतल से ३०० फुट से कम ही नीचा है। इतना नीचा होने पर भी इसका ढाल गङ्गा के उत्तर में दक्षिण-पूर्व की ओर है। इसलिये न केवल हिमालय का वरन् दक्षिणी पठार का पानी भी गंगा नदी में बह आता है। आरम्भ में छपरा के पास घाघरा या सरयू नदी गंगा में उत्तरी, किनारे पर मिलती है। इस संगम से कुछ और आगे दानापुर के पास सोन नदी मध्य भारत का पानी गंगा (दक्षिणी किनारे पर) में मिला देती है। कुछ ही मील और आगे गंडक नदी हिमालय का जल गंगा में छोड़ देती है। इसके बाद मुँगेर के नीचे बूढ़ी गंडक और बाघमती हिमालय से चल कर गंगा में मिलती हैं। भागलपुर के नीचे हिमालय की कोसी नदी गङ्गा में मिलती है। इस प्रकार बिहार प्रान्त थोड़ी-थोड़ी दूर पर नदियों से गुँथा हुआ है। लेकिन दक्षिणी किनारे को छोड़ कर इस विशाल उपजाऊ मैदान में पत्थर या पहाड़ का नाम नहीं है।

जलवायु—बिहार प्रान्त में संयुक्त प्रान्त की अपेक्षा अधिक पानी बरसता है। पर बंगाल के मुकाबिले में यहां कम वर्षा होती है। साल भर में औसत से प्राय: ६० इञ्च पानी बरसता है। पर हिमालय के पास उत्तरी भाग में ७० इञ्च और कभी-कभी ८० इंच तक पानी बरस जाता है। दक्षिणी भाग में गया जिले के आस-पास १० इंच से अधिक पानी नहीं बरसता है। कभी-कभी इस ओर की वर्षा ४२ इंच होती है। इसी से दक्षिणी बिहार में सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। यह वर्षा ग्रीष्म ऋतु की मानसून के आने पर होती है। यहां का औसत तापक्रम ६० और ९० अंश के बीच में रहता है। इस प्रकार यहां का शीतकाल बंगाल से अधिक ठंडा होता है। इसी

इस प्रकार यहां का शीतकाल बंगाल से अधिक ठंडा होता है। इसी प्रकार यहां ग्रीष्म ऋतु में भी बंगाल से अधिक गरमी होती है। पर संयुक्तप्रान्त की अपेक्षा यहां की दोनों ऋतुएं मृदुल होती हैं। इस प्रान्त में जमीन इतनी उपजाऊ है और वर्षा इतनी काफी है कि ७५ फ़ी सदी ज़मीन खेती के काम आती है। उपजाऊ प्रदेश में प्राचीन बन का अभाव हो गया है। यहां की प्रधान फ़सल चावल और मक्का है। कुछ-कुछ गेहूँ, जौ और चना होता है। पर ज्वार बाजरा और कपास कम है। सरसों आदि तिलहन भी काफ़ी है। पहले यहां नील भी बहुत होता था पर जर्मनी में सस्ते कृत्रिम नीले रंग के तैयार हो जाने से इस फ़सल को बहुत धक्का पहुँचा। निलहे गोरों के अत्याचार से इस ओर नील की खेती प्रायः बिलकुल नष्ट हो गई। पहले यहां अफीम भी (पोस्ते से) बहुत होती थी। पर जब से चीन ने अफीम का खाना कम कर दिया तब से यहां अफीम का होना भी बन्द हो गया।

मनुष्य—बिहारी लोग बहुत ही सीधे सादे और परिश्रमी होते हैं। बिहार की भाषा सब कहीं हिन्दी है, मानों बिहार ने बंगाल की ओर पीठ फेर कर अपना मुँह सदा के लिए संयुक्तप्रान्त के सामने कर लिया है। बिहार के अधिकतर लोग खेती में लगे हुये हैं। यहां की आबादी बहुत घनी है। सब लोगों को काफी जमीन या काम नहीं मिलता है। इस लिये खेती से फ़ुरसत पाने पर चार-पांच महीने के लिए यहां के किसान कलकत्ते की मिलों में मजदूरी करने चले जाते हैं। फ़सल कटने के समय में फिर घर लौट आते हैं। प्रधान पेशा खेती होने के कारण प्रायः ९० फी सदी लोग गांवों में रहते हैं। बड़े बड़े शहर कम हैं।

नगर—पटना शहर बिहार प्रान्त की राजधानी और प्रान्त भर में सबसे बड़ा शहर है। गंगा नदी के दाहिने किनारे पर उपजाऊ मैदान के प्रायः मध्य और स्थल मार्गों के केन्द्र होने से पटना शहर

की स्थिति राजधानी होने के लिये बिलकुल अनुकूल रही है। इसी से पुराने समय में पटना शहर (पाटलीपुत्र) न केवल इसी प्रान्त का वरम् एक बड़े साम्राज्य की राजधानी था। आजकल पुराना शहर एक छोटा नगर रह गया है। नया शहर जिसे बांकीपुर भी कहते हैं बढ़ रहा है। यहीं ई० आई० आर० का जंकशन, सरकारी इमारतें और बाज़ार आदि हैं। चावल आदि व्यापार की चीजें भी यहीं इकट्ठी की जाती हैं।

पटना के दक्षिण में फलगू नदी के किनारे गया शहर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ स्थान है। यह शहर मुगलसराय और कलकत्ता के बीच में सीधे रेलवे लाइन पर स्थित है और रेल द्वारा पटना शहर से भी जुड़ा हुआ है। उसके पास ही एक हवाई स्टेशन भी बन गया है। यहां से ६ मील की दूरी पर बुद्ध गया नाम का प्रसिद्ध बौद्ध मन्दिर है। पूर्वी सिरे पर गंगा के दक्षिणी किनारे पर मुंगेर और भागलपुर नगर हैं। मुंगेर में पहले एक मजबूत क़िला था और यहां शस्त्र बनते थे। आजकल यहां पेनिन्सुला टुबेको कम्पनी ने दुनिया भर में एक बहुत बड़ा सिगरेट का कारखाना खोला है। इसी से मुंगेर के आस-पास तम्बाकू की खेती भी बढ़ने लगी है। जमालपुर में रेलगाड़ियों की मरम्मत के लिये ईस्ट इण्डियन रेलवे ने एक बड़ा कारखाना खोल रक्खा है। गंगा के उत्तर में छपरा, मुजफ्फरपुर और दरभङ्गा प्रसिद्ध शहर हैं। दरभङ्गा जिले में पूसा का प्रसिद्ध कृषि-कालेज* था। पर १५ जनवरी सन् १९३४ के भूकम्प ने उत्तरी बिहार केनगरों को बहुत कुछ उजाड़ दिया।

गङ्गा और गंडक के संगम पर सोनपुर नगर दुनिया भर में सब से बड़े प्लेटफार्म (अवध तिरहुत रेलवे की) और हरिहर क्षेत्र के मेले के लिये प्रसिद्ध है। यह मेला कार्तिकी पूर्णिमा को होता है और

*अब यह कृषि-अनुसन्धान संस्था दिल्ली पहुँच गई है।

महीने तक रहता है। यहां हाथी आदि बड़ी से बड़ी और छोटी से छोटी प्रायः सभी चीजें बिकने आती हैं।

छोटा नागपुर उस विशाल पठार का पूर्वी भाग है जो खम्भात (खम्बे) की खाड़ी से आरम्भ होकर मध्यप्रान्त को पार करता है। छोटा नागपुर में वह सब पहाड़ी प्रदेश शामिल है जो बिहार के दक्षिण ओर वर्दवान कमिश्नरी के पश्चिम में मध्यप्रान्त और रीवां-राज्य तक फैला हुआ है। छोटा नागपुर पठार में कोई बड़ा पहाड़ नहीं है। पर यह पठार समुद्र-तल से प्रायः २,००० फुट ऊँचा है। जगह जगह पर नदियों ने इसे बहुत गहरा काट दिया है। पठार के ऊपर कई स्थानों मे चपटी चोटी वाली पहाड़ियां पठार के धरातल से २,००० फुट ऊँची हैं। राजमहल की पहाड़ियां उस कोण को घेरे हुये हैं जो बिहार के मैदान और गङ्गा डेल्टा के बीच में बन गया है इस पठार में सबसे ऊँची (४,४०९ फुट) चोटी पारसनाथ की है। यहीं जैनियों के महात्मा पारसना का मन्दिर होने से तीर्थ स्थान भी है।

छोटा नागपुर में साल भर में औसत से ५० इंच पानी बरसता है। ऊँचाई के कारण यहाँ का तापक्रम बिहारी मैदान से नीचा रहता है। अधिकांश प्रदेश साल आदि पेड़ों के वनों से ढका है। वनों में लकड़ी के अतिरिक्त लाख* छुटाने का काम बहुत होता है। मानभूम, पलामू, रांची और गया लाख के मुख्य केन्द्र हैं। पार के चपटे भागों में चरा-गाह या कांटेदार झाड़ियां हैं। घाटियों के ढालों पर सीढ़ी (कोने) के आकार में धान के खेत बने हुये हैं। घाटियों की जमीन पठार के बारीक कणों से बनी है। इसलिये यह बहुत उपजाऊ है। पर पहाड़ी टीलों की जमीन इतनी अच्छी नहीं है। इन टीलों पर मकई, ज्वार, बाजरा आदि की फ़सल होती है। इस पठार में खेती के लिये उपयोगी जमीन अधिक नहीं है। पर यहां मूल्यवान खनिज बहुत हैं। उत्तर की ओर हजारी बाग (कोडर्मा) में अभ्रक की खान

*लाख से स्याही, वार्निश आदि बहुत सी चीजें बनती हैं।

दुनिया भर में सबसे बड़ी है। पठार के सिरे पर (खास कर दामोदर नदी की घाटी में सिंहभूमि, मानभूमि और हजारीबाग जिले में कोयले और लोहे की विस्तृत खानें हैं। झरियाँ, रानीगंज, गिरडिह, बोकरो-रायगढ़ और कर्णपुरा की कोयले की खानें सर्व प्रसिद्ध हैं। कलकत्ते से प्रायः १५० मील उत्तर पूर्व की ओर सिंह भूमि जिले के जमशेदपुर या टाटानगर में "टाटा आयरन एण्ड स्टील वर्क्स" नाम का प्रसिद्ध कारखाना है। लोहे और फौलाद का यह कारखाना दुनिया के सबसे बड़े कारखानों में से एक है। इसके आस-पास टिन प्लेट कम्पनी, एग्रीकल्चर, इम्पलीमेन्ट्स कृषि-यन्त्र) लिमिटेड, तार बनाने की कम्पनी आदि कई और कारखाने खुल गये हैं। इन सब कारखानों में प्रतिवर्ष १८ लाख टन कोयला खर्च होता है। जहाँ पहले निर्जन और ऊसर जमीन थी वहीं कुछ ही वर्षों में एक लाख की आबादी वाला जमशेदपुर नगर बस गया है। टाटा महाशय के उद्योग से यह प्रदेश अत्यन्त धनी हो गया है। उत्तर की ओर इस प्रदेश तथा कुछ और स्थानों को छोड़कर यह पठार अब भी घोर बनों से ढका हुआ है इन जंगली और पहाड़ी भागों में कोल आदि जंगली लोग रहते हैं। ये लोग तीर कमानसे जंगली जानवरों का शिकार किया करते हैं। इनका कद नाटा होता है। पर ये लोग बड़े ही वीर और ईमानदार होते हैं। दुर्गम भागों में रहने के कारण वे एक दूसरे से या बाहर के लोगों से बहुत नहीं मिलते हैं। इसलिये उनकी भाषा और रहन-सहन हम लोगों से बहुत भिन्न है। इस प्रदेश की जन-संख्या भी अधिक नहीं है। पर प्रतिवर्ग मील में केवल ६० मनुष्य रहते हैं। हजारीबाग और रांची यहां के प्रसिद्ध शहर हैं। रांची नगर में ही ग्रीष्म ऋतु में विहार प्रान्त के गवर्नर रहते हैं।

उत्काल या उड़ीसा प्रान्त—यह प्रान्त छोटा नागपुर के दक्षिण में स्थित है। इसके पूर्व में बंगाल और पश्चिम में उत्तरी सरकार और मध्यप्रान्त है। वास्तव में उड़ीसा का विशाल प्रदेश महानदी की

निचली घाटी और डेल्टा का देश है। वैसे सुवर्ण रेखा वैतरणी आदि छोटी नदियाँ यहां बहुत हैं। नदियों का पाट कम चौड़ा है। इसी से वर्षा ऋतु में अक्सर बाढ़ दूर तक फैल जाती है। समुद्र तट पर आरम्भ में रेतीले टीले और गोरन के दलदल हैं। इनके पीछे धान के उपजाऊ खेत हैं। अधिक भीतर की ओर बना अच्छादित पहाड़ियां हैं। इन पहाड़ियों के बीच बीच में उपजाऊ घाटियां स्थित हैं। इस प्रदेश की जलवायु उत्तरी सरकार से मिलती जुलती है। औसत ताप-क्रम प्रायः ८१ अंश फ़ारेनहाइट है। वार्षिक वर्षा का औसत प्रायः ५७ इंच है। पर यहां वर्षा बहुत ही अनिश्चित है। इस लिये कभी यहां के लोगों को बाढ़ से और कभी अकाल से पीड़ा उठानी पड़ती है। यहां की उपज धान है। कुछ भागों में पाट (जूट) भी होता है। भीतर की ओर विकरालवन हैं। जिनमें हाथी आदि सभी तरह के जङ्गलीजानवर पाये जाते हैं। इस विभाग में देशी रियासतें कई (१७) थीं इनमें मयूर गंज की रियासत सब से अधिक बड़ी है। उड़ीसा प्रान्त में मिल गई हैं। यहां के लोगों की भाषा उड़िया है। आबादी अधिक घनी नहीं है। बड़े शहर कम हैं।

कटक—यह शहर महानदी के किनारे ऐसे स्थान पर बसा है जहां इसमें कठजोड़ी (एक छोटी नदी) मिली है। बाढ़ के दिनों में यह छोटी नदी महानदी से भी अधिक भयानक होती है। इसलिये इसके किनारे ऊँचा बाँध बना है। यह नगर उड़ीसा के प्रान्त की राजधानी और उड़ीसा की नहरों का केन्द्र है। यहां सोने और चांदी के बेल बूटे का काम होता है।

पुरी—कटक से ५० मील दक्षिण की ओर मद्रास प्रान्त की सीमा के पास पुरी या जगन्नाथ पुरी है। यहां पर जगन्नाथ जी का प्रसिद्ध प्राचीन मन्दिर है जिसका दर्शन करने के लिये हर साल एक लाख से ऊपर यात्री आते हैं। यहां की जलवायु अच्छी है। इसलिये (कुछ) लोग यहीं स्वास्थ्य सुधारने को भी आते हैं।

बालासोर—यहां इस समय एक छोटा बन्दरगाह रह गया है। पर पहले यहां अंग्रेजों, डच और फ्रान्सीसी लोगों की कोठियाँ थीं।

सम्भलपुर—यह महानदी के किनारे ऐसे स्थान पर बसा है जहां तक नावें आ सकती हैं।

अठारहवाँ अध्याय

संयुक्त प्रान्त*

संयुक्त प्रान्त (१,१२,९६२ वर्गमील, जन-संख्या लगभग ५ करोड़) उत्तरी भारत के मध्य में स्थित है। इस प्रान्त के उत्तर में प्राय: १६,००० वर्गमील पठार है। शेष सब प्रदेश (८०,००० वर्गमील) गङ्गा और उसकी सहायक नदियों का उपजाऊ मैदान है। इस मैदान की लम्बाई प्राय: ४८० मील और चौड़ाई १६० मील है। लेकिन संयुक्त प्रान्त की अधिक से अधिक लम्बाई ५०० मील और चौड़ाई ३०० मील है। यह प्रान्त प्राय: ११ उत्तरी अक्षांश और ३१ उत्तरी अक्षांश के बीच में स्थित है। इस प्रकार कर्क रेखा प्रान्त से केवल २२ मील या प्राय: ६ अंश की दूरी पर दक्षिण की ओर छूट जाती है। इस प्रान्त के उत्तर में काली और यमुना नदियों के बीच का पहाड़ी प्रदेश ('कमायूं की कमिश्नरी) तिब्बत से घिरा हुआ है। इससे आगे सारदा या काली और गंडक नदियों के बीच में तराई का जंगली दलदल नेपाल के पहाड़ी राज्य को संयुक्त प्रान्त के मैदान से अलग करता है। पश्चिम की ओर दिल्ली से प्राय: ६० मील नीचे तक अथवा मथुरा से ३० मील ऊपर तक यमुना नदी प्राकृतिक सीमा बनाती है और पञ्जाब प्रान्त को संयुक्त प्रान्त से अलग करती है। इसके आगे संयुक्त प्रान्त और राजपूताना की भरतपुर आदि रियासतों के बीच में कोई प्राकृतिक सीमा नहीं है। मथुरा से आगे जमुना नदी दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है। इसके दोनों ओर संयुक्त प्रान्त के जिले हैं। इसकी सहायक चम्बल नदी कुछ दूर (लगभग ५० मील) तक ग्वालियर

---

*इसका विस्तृत वर्णन इसी नाम की पुस्तक में अलग से पढ़िये

राज्य और संयुक्त प्रान्त के बीच में प्राकृतिक सीमा बनाती है। चम्बल के संगम से इलाहाबाद गङ्गा के संगम तक यमुना नदी और आगे चलकर चुनार तक गंगा नदी केवल मैदान और पठार को अलग
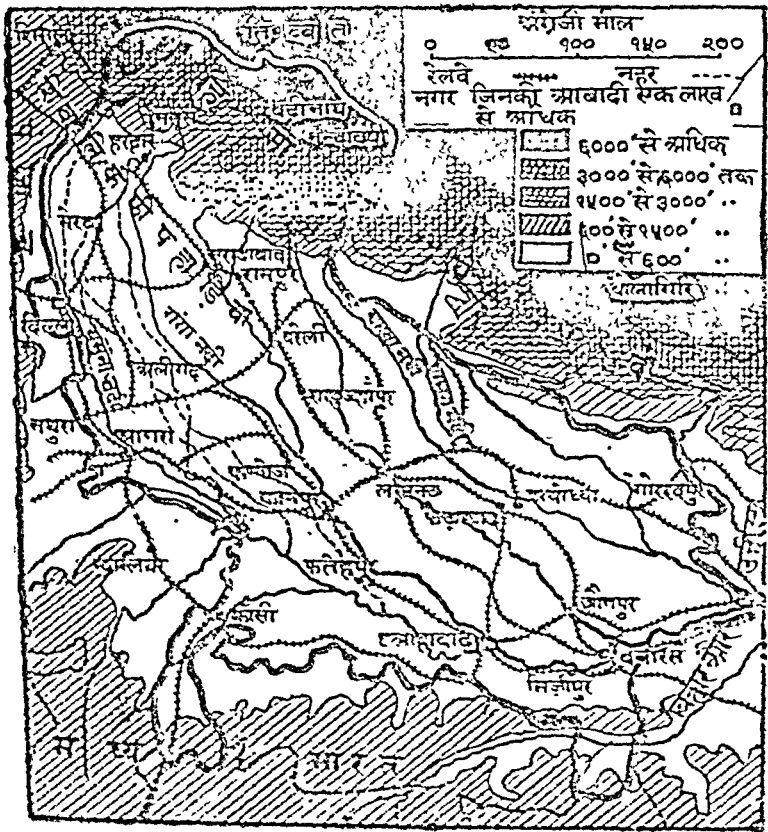
७६—संयुक्तप्रान्त के नगर और मार्ग

करती है। हमीरपुर, झांसी, जालौन और बांदा के जिले पठार में स्थित होने पर भी संयुक्त प्रान्त में शामिल है। गंगा के दक्षिण में मिर्ज़ापुर का जिला और भी अधिक पहाड़ी है। कुछ दूर तक बेतवा नदी फिर

एक बार ग्वालियर और संयुक्त प्रान्त (झांसी जिले) के बीच में प्राकृतिक सीमा बनाता है। झांसी के दक्षिण में मध्य प्रान्त का सागर जिला है। इसके आगे मध्यभारत के पन्ना, रीवा आदि राज्य संयुक्त प्रान्त की दक्षिणी (राजनैतिक) सीमा बनाते हैं। केवल कुछ मील तक संयुक्त प्रान्त के दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर छोटा नागपुर है। पूर्व की ओर सब कहीं बिहार प्रान्त है। इस ओर भी प्राकृतिक सीमा का प्रायः अभाव है। संगम से पहले केवल कुछ मील तक घाघरा और गंगा नदियां प्राकृतिक सीमा बनाती हैं और बलिया जिले को बिहार के छपरा और आरा जिलों से अलग करती हैं।

संयुक्त प्रान्त निम्न प्रधान प्राकृतिक भागों में बटा हुआ है:—

१—हिमालय का पर्वतीय प्रदेश—इस प्रदेश में टेहरी राज्य और गढ़वाल, अलमोड़ा तथा देहरादून के जिले शामिल हैं। नैनीताल जिले का टौंस (यमुना की सहायक) और सारदा के बीच में इस प्रदेश की चौड़ाई १८० मील और क्षेत्रफल ७५०० वर्गमील है। इस प्रदेश के सब से बाहरी (दक्षिणी) भाग में मैदान से मिली हुई सिवालिक की असम्बद्ध पहाड़ियाँ हैं। सिवालिक की अधिक से अधिक ऊँचाई समुद्र-तल से केवल २,००० फुट है। जब हम रुड़की से हरद्वार को जाते हैं तो हमारे मार्ग में सिवालिक की ही पहाड़ियां पड़ती हैं। सिवालिक के आगे दून नाम की चपटी घाटियां हैं, जो सिवालिक की पहाड़ियों को हिमालय की सबसे बाहरी श्रेणी से अलग करती हैं। दून का प्रधान नगर देहरा दून है यहाँ सर्व प्रसिद्ध फारेस्ट कालेज और मिलटरी कालेज हैं समीपवर्ती मैदान की अपेक्षा सिवालिक और दून में वर्षा अधिक है पर ताप क्रम में कोई विशेष अन्तर नहीं है। इसीलिये घाटियों और अनुकूल ढालों पर मैदान की ही उपज है इसके भागों की वनस्पति उष्ण कटि-बन्ध से मिलती है। पर बाहरी श्रेणी पर चढ़ते ही अन्तर मालूम पड़ने लगता है। यह बाहरी श्रेणी

दून के ऊपर एकदम ऊँची खड़ी हुई है। आठ दस मील की यात्रा में हम समुद्रतल से पांच छः हजार फुट ऊँचे चढ़ जाते हैं। उष्ण कटिबन्ध की वनस्पति पीछे छूट जाती है शीतोष्ण कटिबन्ध या शीत कटिबन्ध की वनस्पति सामने आती है। इनमें सुई के समान पत्तो वाले ऊँचे-ऊँचे देवदारु के पेड़ विशेष उल्लेखनीय हैं। यहां ग्रीष्म ऋतु में भी इतना कम तापक्रम रहता है कि गरम कपड़े पहनने पड़ते हैं। इधर लोग रात को जून के महीने में भी दरवाजा बन्द करके घरों के अन्दर सोते हैं और आग तापते हैं। पहाड़ी धाराओं का पानी इतना ठंडा रहता है कि कोई अलग बरफ इस्तेमाल करने का नाम भी नहीं लेता है। मानसून के दिनों में यहाँ प्रबल वर्षा होती है। सरदी के दिनों में बरफ पड़ती है। इधर वन बहुत हैं। पर उपजाऊ जमीन के प्रायः अभाव से खेती कम होती है। पहाड़ी ढालों पर यहां के छोटे-छोटे खेत जीने के समान दिखाई देते हैं। खेतों में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। फिर भी उनमें पत्थरों के टुकड़े भरे रहते हैं। इसी से इधर आबादी कम है। पर लधौर, मंसूरी, नैनीताल, चकराता, रानीखेत आदि स्थानों में मैदान के धनी लोग गरमी बिताने के लिये आ जाते हैं; टेहरी और अलमोड़ा पुराने नगर हैं। बाहरी श्रेणी को पार करने के बाद हिमालय की प्रधान श्रेणी मिलती है। इसी के विशाल हिमागारों में गंगा और यमुना का स्रोत है। इसकी औसत ऊँचाई २०,००० फुट है। त्रिशूल और नन्दादेवी आदि चोटियों की ऊँचाई २२ हजार से २९ हजार फुट तक है। यहां सदा बरफ बनी रहती हैं। वनस्पति का प्रायः अभाव है। इसी से स्थायी आबादी का भी प्रायः अभाव है। यात्री लोग केवल ग्रीष्म ऋतु में आते हैं। समस्त पहाड़ी प्रदेश का ढाल उत्तर-पूर्व से दक्षिण की ओर है।

२–तराई या हिमालय की तलहटी–पर्वतीय प्रदेश के नीचे तराई की पतली पेटी है। इस नीचे के प्रदेश की जमीन बड़ी उपजाऊ है। इसी से यहां पानी और दलदल की अधिकता है। इसी से यहां

सघन वन और वनस्पति है। यहां बीमारी बहुत फैलती है, इसलिये यहां मनुष्य कम रहते हैं। पर जङ्गली जानवरों की भरमार है। मैदान की आबादी बढ़ने के कारण हाल में इधर भी खेती होने लगी है। सहारनपुर, पीलीभीत, खीरी और बहराइच इस प्रदेश के मुख्य नगर हैं।

३—गंगा का पश्चिमी मैदान—संयुक्त प्रान्त का आधे से अधिक भाग उस बारीक मिट्टी से बना है जिसे गंगा और उसकी सहायक नदियों ने अपनी बाढ़ के साथ लाकर यहां बिछा दिया है। यह काम लाखों वर्षों से हो रहा है। इसलिये कांप की तहें बहुत मोटी हो गई हैं। मैदान के सारे प्रदेश में पत्थर या पहाड़ का नाम नहीं है। ढाल कम होने के कारण यहां नदियां बहुत धीरे धीरे बहती हैं। इससे सिंचाई करने और नाव चलाने के लिये बड़ी उपयोगी हो गई हैं। अधिक ऊँचा-नीचा न होने पर भी यह मैदान बिलकुल समतल नहीं है। इसका ढाल प्रायः दक्षिण-पूर्व की ओर है। लेकिन उत्तर से दक्षिण की ओर ढाल इतना अधिक नहीं है जितना कि पश्चिम से पूर्व की ओर है। इसलिये मैदान की नदियां प्रायः पूर्व की ओर बहती हैं। अगर हम संयुक्त प्रान्त के किसी दक्षिणी स्थान से उत्तरी स्थान को जावें तो हमको थोड़ी-थोड़ी दूर पर कई समानान्तर नदियां पार करनी पड़ेंगी। इनके द्वाबा की ऊंचाई में कोई भारी अन्तर नहीं है। पर द्वाबा की ऊँची 'बांगर' भूमि और नदी के आस-पास वाली 'खादर' जमीन में बड़ा अन्तर है बांगर भूमि को नदी ने बहुत पहले बनाया था। आरम्भ में बांगर भूमि नदी तल से अधिक ऊँची न थी और बाढ़ आने पर पानी में डूब जाती थी। पर लाखों वर्ष बहने के बाद नदी ने उस जमीन को खोदकर अपनी तली नीची कर ली। इसलिये अब नदी की बड़ी बाढ़ का पानी भी बांगर भूमि पर नहीं पहुँच पाता है। इसलिये अब बांगर के खेतों में कुएं या नहर से सिंचाई होती है। खादर की नीची जमीन अधिक उपजाऊ नहीं है।

कहीं-कहीं इतनी बालू होती है कि इसमें बालू नहीं हो सकती है। पर वह जमीन नदी की वर्तमान धारा से दूर नहीं होती है और दो ऊँचे किनारों के बीच घिरी होती है। इसलिये बाढ़ आने पर खादर की जमीन प्रायः हर साल नदी के पानी में डूब जाती है। बाढ़ के घट जाने पर इसमें खेती होती है और अलग सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। इस जमीन में अक्सर एक ही फसल होती है। खादर के कुछ भागों में केवल घास होती है, जहां ढोर चरते हैं।

अगर हम हवाई जहाज या किसी अधिक ऊँचे स्थान से मैदान पर नजर डालें तो यह सब का सब मैदान खेतों और बागों से और छोटे-छोटे गांवों से ढका हुआ दिखाई देगा। जलवायु और उपज के अनुसार यह मैदान दो भागों में बांटा जा सकता है। इलाहाबाद के पश्चिम में ४० इंच से कम वर्षा होती है। इसके दक्षिण-पश्चिम में कुछ भाग ऐसे हैं जहाँ वर्षा के अभाव से ऊसर और रेह हो गया है। इसलिये इलाहाबाद के पश्चिम में संयुक्त प्रान्त के मैदान को सींचने के लिये बड़ी-बड़ी नहरें निकाली गई हैं। पूर्वी यमुना नहर बादशाही बाग (जिला सहारनपुर) और दिल्ली के बीच यमुना के बाएँ किनारे की ओर सहारनपुर, मुजफ्फर नगर और मेरठ जिलों में सिंचाई के काम आती है। दिल्ली के नीचे दाहिने किनारे के प्रदेश में आगरा नहर से सिंचाई होती है। गंगा और यमुना के द्वाबा के सबसे बड़े भाग की सिंचाई हरिद्वार से निकलने वाली अपर गंगा नहर और नगरों से निकलने वाली निचली गङ्गा नहर के द्वारा होती है। हाल में रुहेलखंड और अवध जिलों को सींचने के लिये ब्रह्मदेव और लखनऊ के बीच में सारदा नहर निकाली गई है। जिन भागों में नहर का पानी नहीं पहुँचता है वहाँ कुओं से सिंचाई होती है। इससे किसान अधिकतर गेहूँ, जौ, मटर, चना, तम्बाकू, आलू, ईख और कपास उगाते हैं। निर्बल जमीन में मकई, ज्वार और बाजरा होता है। अधिक सजल कछारी भागों में चावल भी होता है। इलाहाबाद के

पूर्व में सब कहीं ४० इञ्च से अधिक वर्षा होती है इसलिए इस ओर सिंचाई की बहुत कम आवश्यकता है। हवा भी बहुत नम है। इस लिये ओर गेहूँ की अपेक्षा चावल अधिक होता है।

इस प्रदेश की जनसंख्या बहुत सघन है। प्रति वर्गमील में प्रायः ५०० मनुष्य रहते हैं। बनारस जिले में प्रति वर्गमील में १,००० से अधिक मनुष्य रहते हैं। पश्चिम की ओर जनसंख्या कम है। यदि नहरों द्वारा सिंचाई का प्रबन्ध न होता तो उस ओर जनसंख्या और भी कम होता। यहां ८५ फी सदी हिन्दू, ११ फी सदी मुसलमान और २ फी सदी इसाई आदि मतावलम्बी लोग रहते हैं। यहां के लोगों की भाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी (उर्दू मिली हुई हिन्दी) है। लोगों का प्रधान पेशा खेती है। इसलिये अधिकतर लोग छोटे छोटे गांवों में रहते हैं। पत्थर का अभाव होने से वे अपने कच्चे घर मिट्टी से बनाते हैं। इसी से प्रायः हर, गांव में एक दो या अधिक तालाब मिलते हैं जिनसे मलेरिया भी फैलती है। इस प्रान्त ने भारत के इतिहास पर गहरा प्रभाव डाला है। (अति प्राचीन समय में यह मध्य देश नाम से प्रसिद्ध था। इसलिये यहां बहुत से प्राचीन और नवीन शहर हैं। प्रायः सभी बड़े शहर गंगा या गंगा की किसी सहायक नदी के किनारे बसे हैं। हरिद्वार, फ़र्रुखाबाद, कन्नौज, कानपुर, इलाहाबाद; (प्रयाग,) मिर्ज़ापुर, बनारस (काशी), ग़ाज़ीपुर और बलिया गंगा के किनारे हैं। मथुरा, आगरा, इटावा, काल्पी और हमीरपुर यमुना के किनारे पर बसे हैं। मुरादाबाद और बरेली रामगंगा के किनारे हैं। गोमती के किनारे लखनऊ सुल्तानपुर और जौनपुर या यमदग्निपुर नगर हैं। फैज़ाबाद (अयोध्या) सरयू के किनारे और गोरखपुर राप्ती के किनारे बसा है। गंगा और यमुना के द्वाबा में नदी तट से दूर बसे हुए प्रसिद्ध शहर सहारनपुर, मेरठ और अलीगढ़ हैं।

बनारस—यह (काशी शहर गङ्गा के बायें किनारे पर ऐसे स्थानपर बसा है।

जहां गंगा उत्तर की ओर मुड़ती है। इससे चन्द्राकार शहर के मंदिरों घाटों और घरों पर सूर्योदय की किरणें सामने आती हैं। यह शहर प्राचीन समय से हिन्दू सभ्यता का केन्द्र रहा है। यहीं हिन्दू
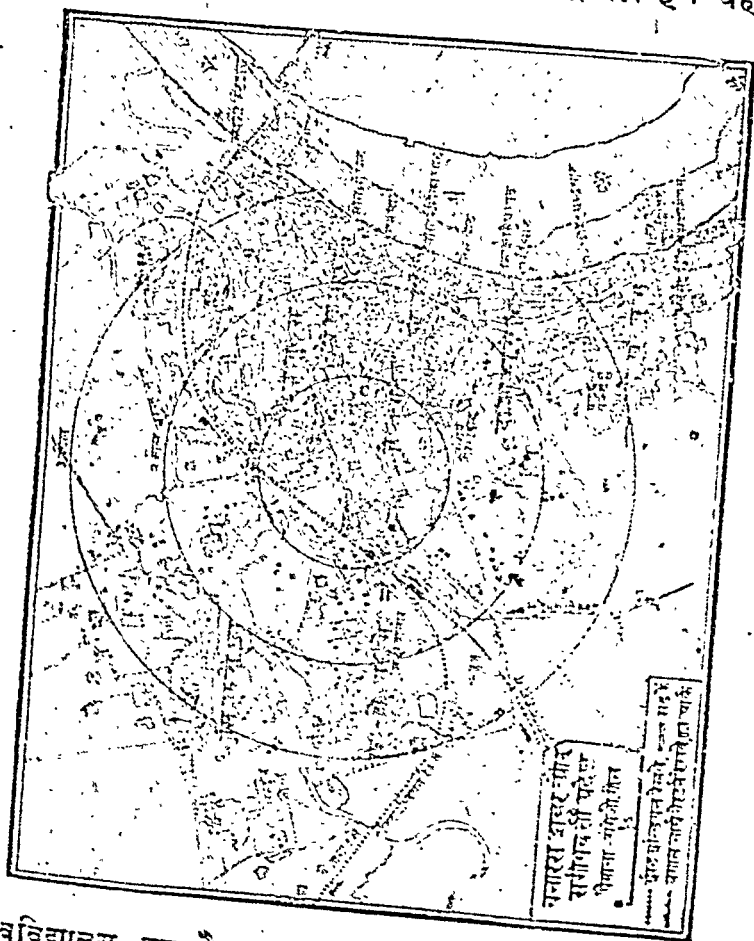
७१—बनारस की स्थिति

विश्वविद्यालय बना है। पास ही सारनाथ में बौद्ध भग्नावशेष हैं। रेशमी कपड़े शाल, (किमख़ाब) और पीतल के बरतनों के लिये प्रसिद्ध है। यहां मखमली कपड़े पर सोने और चांदी के तार का काम भी अच्छा होता है।

इलाहाबाद—यह (प्रयाग) गंगा और यमुना के संगम पर एक दूसरा तीर्थ स्थान है। संगम के पास ही यहां का प्रसिद्ध किला है। इलाहाबाद की स्थिति न केवल संयुक्त प्रान्त में वरन् प्रायः सारे हिन्दुस्तान में केन्द्रावर्ती है। यहां कई रेलवे लाइनों का जंक्शन और विद्या का केन्द्र है। पास ही बमरौली में हवाई जहाज का स्टेशन बना है। यमुना के उस पार नैनी में शक्कर और शीशे का कारखाना है। छेउकी में फौजी कारखाना है।

इलाहाबाद
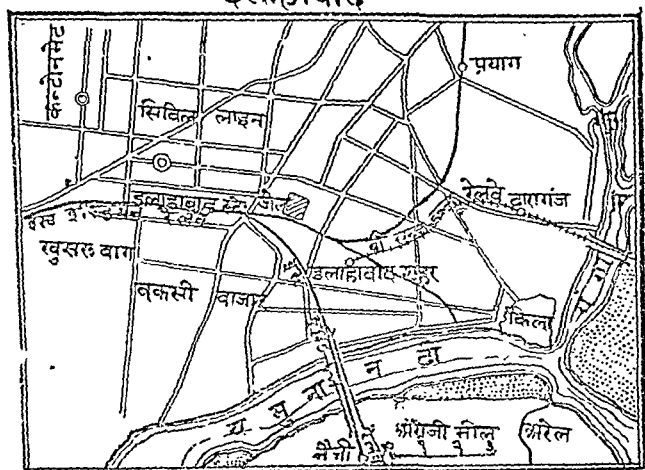
७८—इलाहाबाद शहर की स्थिति

कानपुर—यह गङ्गा के दाहिने किनारे पर एक नया, पर बहुत ही उन्नतिशील नगर है। उपजाऊ मैदान के मध्य में स्थित होने और कई रेलों का जंकशन होने से यहां कच्चा माल सुभीते से आ सकता है। ईस्ट इण्डियन रेलवे के मार्ग में रानीगंज का कोयला और विदेशी मशीनें भी सुगमता से आ जाती हैं। इसी से यहां कपास, ऊन और चमड़े के बड़े बड़े कारखाने हैं। फौजी कारखाना भी है।

लखनऊ—यह शहर गोमती नदी के दाहिने किनारे पर कुछ ऊँची ज़मीन पर बसा है। पहले यहां अवध के नवाबों की राजधानी थी। अब कुछ दिनों से यह शहर सयुक्त प्रान्त की प्रायः राजधानी बन रहा है। पुरानी इमारतें बहुत अच्छी नहीं हैं। पर नई सरकारी इमारतों
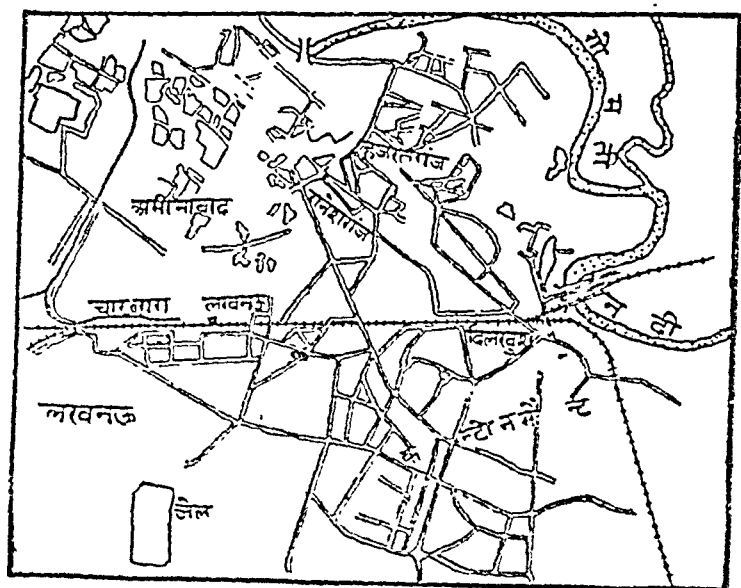
८०—लखनऊ शहर की स्थिति

और सड़कों पर बहुत खर्च किया जा रहा है। पुरानी दस्तकारी में चिकन का काम अब भी अच्छा होता है। तराई की सवाई और बैब घास से यहां की मिलों में कागज़ बनाया जाता है। यहां पर कई रेलवे लाइनें मिलती हैं।

आगरा—यह यमुना के दाहिने किनारे पर रेगिस्तान और कछारी मैदान के संगम पर बसा है। यह नगर कई वर्षों तक शक्तिशाली मुगल साम्राज्य की राजधानी रहा। इसलिये यहां ताजमहल, मोती-मस्जिद आदि कई जगतप्रसिद्ध इमारतें हैं। आजकल भी यहाँ संगमरमर

कानपुर
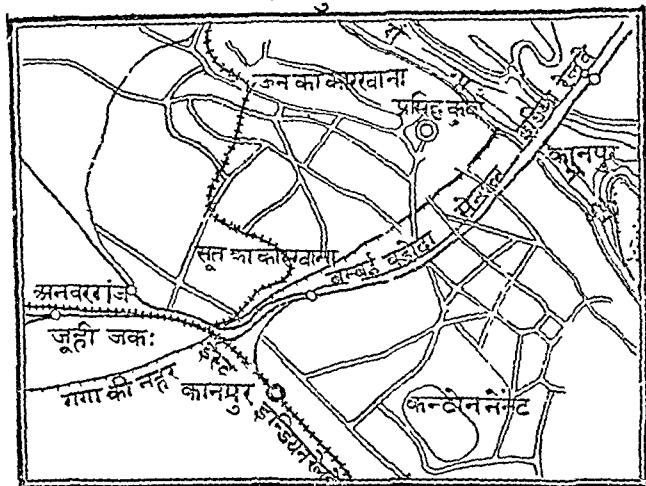
८१—कानपुर शहर की स्थिति
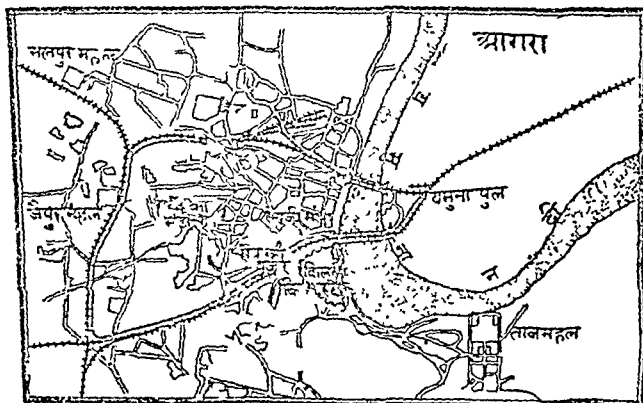
८२—आगरा शहर की स्थिति

ग्रौर दरी का अच्छा काम होता है। पास ही दयालबाग में फाउन्टेनपेन आदि आधुनिक आवश्यकता की चीजें बनने लगी हैं।

८३—हवाई जहाज से ताजमहल का दृश्य
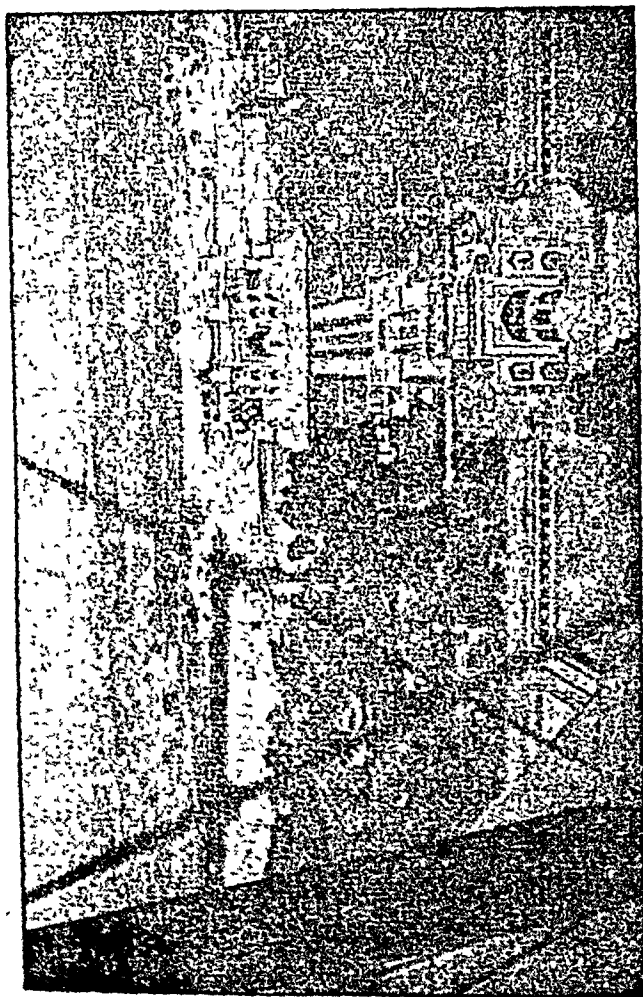
दूसरे शहर—मुरादाबाद पीतल और कलई के बरतनों के लिये प्रसिद्ध है। फर्रुखाबाद में परदे अच्छे छपते हैं। बरेली में मेज,

कुरसी आदि लकड़ी का सामान और तांगे बनाने का काम होता है। अलीगढ़ में ताले अच्छे बनते हैं। शाहजहाँपुर (रौजा) में ईख का सरकारी ईक्सपेरीमेंटल फार्म (प्रयोग करने का खेत) है यहाँ गन्नों से शक्कर बनाई जाती है और शराब तैयार होती है। पहले खन्नौत नदी के साफ पानी ने यहाँ रेशम का कारबार बढ़ा दिया था। मिर्जापुर में पीतल के बरतन, कालीन, लाख तैयार करने का काम होता है। अयोध्या, मथुरा, कन्नौज और हस्तिनापुर प्राचीन समय में बहुत प्रसिद्ध थे।

पठार—संयुक्त प्रान्त का पठार-प्रदेश वास्तव में बेतवा की घाटी है। वैसे यह प्रदेश गंगा-यमुना के दक्षिण में यमुना की सहायक सिन्ध नदी से लेकर गंगा की सहायक सोन नदी तक फैला हुआ है। यह प्रदेश मैदान के तल से अधिक ऊँचा नहीं है। पर इसमें जगह जगह पर चपटी चोटी वाले पहाड़ी टीले हैं। अधिक ऊँचा मार्ग केवल मिर्जापुर जिले के दक्षिण में है। इस प्रदेश में उपजाऊ जमीन बहुत कम है। वर्षा भी अधिक नहीं होती है। सरदी और गरमी के तापक्रम में बहुत भेद रहता है। इसलिये अधिकांश प्रदेश कांटेदार झाड़ियों से ढँका हुआ है। अनुकूल प्रदेशों में ज्वार, बाजरा, मकई, चना और गेहूँ की खेती होती है। चरागाह अधिक होने से ढोर अधिक पाले जाते हैं। इन सब कारणों से यहाँ की आबादी घनी नहीं है। इस ओर सब से बड़ा नगर झांसी है। यह नगर बेतवा नदी से कुछ ही मील की दूरी पर जी० आई० पी० रेलवे का एक बड़ा स्टेशन है। यहाँ से एक शाखा महोबा और बांदा होती हुई मानिकपुर को गई है। महोबा के पास प्राचीन भग्नावशेष हैं। इस समय यह नगर पान की खेती के लिए प्रसिद्ध है। पयस्वनी नदी के किनारे चित्रकूट एक सुहावना तीर्थस्थान है। पत्थर की अधिकता होने से पठार के गावों और शहरों में प्रायः पत्थर के मकान बने हैं।

संयुक्तप्रान्त के उद्योग-धन्धे—हमारा प्रान्त कृषि-प्रधान है। इसी से हमारे प्रान्त की कांग्रेस-सरकार ने किसानों की दशा सुधारने की ओर पूरा ध्यान दिया है। किसानों को अच्छे बीज देने के लिये जगह-जगह पर प्रबन्ध किया गया है। कई जगह (बुलन्दशहर, नैनी, शाहजहाँपुर आदि में) माडल फार्म खुले हुये हैं। फिर भी हमारी प्रान्त की खेती में बहुत सुधार की आवश्यकता है। प्रान्त की जन-संख्या धीरे धीरे बढ़ रही है। यदि इसी अनुपात से हमारे खेती की उपज न बढ़ी तो यहाँ के लोगों को भयानक स्थिति का सामना करना पड़ेगा। खेतों की उपज बढ़ाने के साथ साथ इस प्रान्त में कला-कौशल बढ़ाने की भी आवश्यकता है। इससे बहुत से कारीगरों को काम मिल सकेगा और बहुत सा रुपया जो इस समय विदेश चला जाता है यहीं ठहरेगा और इससे प्रान्त सम्पत्ति बढ़ेगी।

बड़े पैमाने के कारखाने हमारे प्रान्त मे बहुत कम हैं। कारखानों के लिये प्रान्त के मैदानी भाग के प्रायः मध्य में कानपुर नगर की स्थिति गंगा तट पर बहुत ही अनुकूल है। यहाँ रेल-मार्ग से मशीनें और बाहर (बंगाल) से कोयला आ जाता है। चमड़े के कारखानों के लिये दक्षिणी पठारी भाग (बांदा, हमीरपुर, झांसी) और पश्चिमी भाग से चमड़ा आ जाता है। ऊनी कारखानों के लिये पहाड़ी भाग से ऊन आती है। सूती कारखानों के लिये कपास भी पड़ोस में मिल जाती है। शक्कर के कारखानों के लिये गन्ना पड़ोस में उगता है। गुड़ उत्तरी ज़िलों से आता है। कागज़ का कारखाना लखनऊ में है। यहाँ उत्तर के तराई प्रदेश से घास आती है। गोमती का पानी इस काम के लिये बड़ा उपयोगी है।

अफीम का सरकारी कारखाना गाजीपुर में है। सारे संयुक्त प्रान्त की अफ़ीम और पोस्ते की पत्तियां यहाँ आती हैं। अन्दर की गोदामों में २५,००० मन अफ़ीम की पत्तियाँ और २४ लाख अफ़ीम के सकोरे आ सकते हैं। सबसे भीतर के भाग में अफ़ीम के १० हजार घड़े

रक्खे जा सकते हैं। यहाँ सब अफ़ीम जांची जाती है और उसकी टिकियों पर मुहर लगाई जाती है।

उझानी, रामपुर, हरदोई और हाथरस में सूती कपड़ा बुनने और कपास ओटने के कारख़ाने हैं। पश्चिमी भाग में रुहेलखण्ड और अवध के उत्तर भाग में मैदान की जमीन और जलवायु गन्ने की उपज क लिए अच्छी है। बहुत से स्थानों में गन्ना पेरने और गुड़ बनाने का काम पुराने खंडसारी ढंग से होता है। इसको उन्नत करने के लिये मुरादाबाद के बिलारा नगर में प्रयोग हो रहा है। मेरठ मुजफ्फ़रनगर, पीलीभीत, खीरी, बस्ती और कानपुर में शक्कर बनाने के कारखाने हैं। नैनी और भूसी (इलाहाबाद में भी कारखाना रहा है!

घरेलू धन्धे संयुक्त प्रान्त के बहुत स्थानों में होते हैं। गांवों में बनी हुई चीजों के बेचने के लिये संयुक्त प्रान्तीय सरकार ने हर जिले में स्टोर खोलने का निश्चय किया है कारीगरी की थोड़ी बहुत चीजें प्रायः हर जिले में बनती हैं। लेकिन पहाड़ी भाग में बांस की टोकरी, लकड़ी की छड़ी और हत्थे बनाने की सुविधा है। यहां मोम, राल आदि इकट्ठा करने की सुविधा है। देहरादून के फ़ारेस्ट कालेज में बन सम्बन्धी सभी चीजों का एक संग्रहालय है। पहाड़ी भाग में अच्छी ऊन मिलने से ऊनी कपड़े और कम्बल भी बुने जाते हैं। पठारी भाग की भेड़ों की ऊन कुछ मोटी होती है। इसी से यहां के कम्बल कुछ मोटे होते हैं। बांदा के पड़ोस में केन नदी की तली में कुछ ऐसे पत्थर मिलते हैं। जिनके भीतर पत्ते और पानी के निशान रहते हैं। इनको काट कर बढ़िया बटन और दूसरी चीजें बनाई जाती हैं। पठारी प्रदेश में ही मकान बनाने का पत्थर निकालने, पत्थर की गिट्टी तोड़ने और चक्की, कूँड़ी प्याले आदि बनाने का काम होता है। आगरे में राजपूताना का अच्छा पत्थर आ जाता है। इससे खिलौने (ताजमहल के नमूने कैलेंडर) बनते हैं। कांच का काम कई स्थानों में होता है। बहजोई (मुरादाबाद) में लालटीन की चिमनी, गिलास

आदि कई चीजें बनती हैं। फीरोजाबाद में कांच की चूड़ियां बनती हैं। जलेसर (एटा) की मिल में ब्लाक (बड़ा शीशा बनता है। नैनी का (शीशे का) कारखाना शीशियाँ बनाता है। सोरो के पास क़ादिर वारी गाँव में कच्ची गङ्गाजली बनती हैं। चूड़ियां बनाने का काम मनिहार लोग कई स्थानों में करते हैं।

पश्चिम के जिन जिलों में लोनी मिट्टी मिलती है वहां लोनिया लोग इसे इकट्ठा करके शोरा बनाते हैं। जुलाहे लोग जगह जगह पर (गाढ़ा, गजा) या मोटा कपड़ा बुनते हैं। लेकिन सूत कातने की प्रथा प्रायः उठ जाने से जुलाहे लोग प्रायः बाहर का सूत मोल ले लेते हैं। मेरठ, हापुड़, अकबरपुर में अखिल भारतवर्षीय चर्खा संघ की ओर से हाथ के कते हुये सूत से खद्दर तैयार किया जाता है। ठठेरे लोग कई स्थानों में पीतल और कांसे के बर्तन बनाते हैं। हाथरस, मुरादाबाद, फ़र्रुखाबाद और मिर्जापुर में यह काम बड़े पैमाने पर होता है। मुरादाबाद में पीतल के बर्तनों पर सफेद कलई भी होती है। लोहे का थोड़ा बहुत काम प्रायः सभी गाँवों में होता है। ग़दर के पहले जब सरकार की ओर से हथियार रखने की मनाही नहीं थी, जगह जगह पर तलवार बन्दूक और भाला बनाने का काम होता था आज-कल खुरपी, हँसिया और हल का फाल पीटने और तेज करने का काम कई स्थानों में होता है। मेरठ में कैंची, अलीगढ़ में ताले, हाथरस में चाकू छूरे, बिलग्राम (हरदोई) में सरौते और गुप्ती बनाने का काम होता है।

मशीनों के युग के पहले अपने प्रान्त में पुस्तकें भोज पत्र (पहाड़ी पेड़ की रेशेदार छाल) और हाथ के बने हुये काग़ज पर लिखी जाती थीं। मशीन के बने हुये सस्ते काग़ज की भरमार से हाथ का बना हुआ मोटा मजबूत लेकिन कुछ मँहगा कागज न टिक सका। इस समय काल्पी, मथुरा और कागजी सराय (सम्भलपुर) में हाथ से कागज बनाने का कुछ काम होता है। चमड़े का काम भी संयुक्त प्रान्त के कई स्थानों में होता है। गाय, बैल, भैंस आदि जानवर सब कहीं पाले जाते हैं। कुछ अपनी मौत से मर जाते हैं, कुछ

जानवर गोश्त के लिये मारे जाते हैं। उनके चमड़े से जूता, मोट (पानी खींचने का मशक) आदि कई चीजें बनती हैं। सहारनपुर में इसके ट्रंक, बन्दूक रखने का खोल और गोली रखने की पेटी बनाई जाती है। आगरे (दयालबाग) में जूते अच्छे बनाये जाते हैं। मिर्जापुर में ऊँट के चमड़े से तेल रखने की शीशी और कुप्पियां बनाई जाती हैं। अपने प्रान्त की मिट्टी अच्छी है। इससे कुम्हार लोग घड़े, सुराही, प्याले और हाँडी आदि बनाते हैं। बड़े बड़े शहरों और कस्बों के पास ईंट बनाने के भट्टे हैं। पूर्वी भाग में वर्षा की अधिकता होने से घरों की छतें ढालू रक्खी जाती हैं। इनको छाने के लिए कई स्थानों में खपरैल बनाये जाते हैं चुनार के पास मिट्टी इतनी अच्छी है और यहां के कारीगर इस प्रकार का लेप लगाते हैं कि यहां के बने हुए मिट्टी के बर्तन घी, अचार आदि रखने के लिये बड़े अच्छे रहते हैं। इनका रंग कुछ काला रहता है। लेकिन उनमें पानी नहीं भिदता है। इत्र, सुगन्धित तेल और गुलाबजल बनाने का काम कन्नौज, जौनपुर और गाजीपुर में होता है।

थोड़ा बहुत लकड़ी का काम प्रान्त भर में होता है। लेकिन सहारनपुर, नगीना और नजीबाबाद में लकड़ी की नक्काशी का काम बहुत अच्छा होता है। बरेली में लकड़ी इतनी अच्छी और सस्ती मिल जाती है कि कारीगर तांगा, कुरसी, मेज अलमारी और दूसरी चीजें बनाते हैं। यहीं दियासलाई का भी कारखाना खुला था। अमरोहा के बढ़ई बैलगाड़ियां बनाते हैं। इन्हें वे गढ़मुक्तेश्वर के मेले बेचते हैं।

चिकन और गोटे का काम लखनऊ और बनारस में अच्छा होता है। बनारस, मऊआयमा (इलाहाबाद) और शाहजहांपुर में रेशम बुनने का काम होता है। फर्रुखाबाद के साध लोग परदों पर बेल-बूटे सहित इतनी बढ़िया छपाई करते हैं कि इनके

बनाये हुये परदे योरुप और अमरीका में विकने जाते हैं।

मुज़फ्फरनगर और मेरठ जिले के कई गांवों में गड़रिये लोग बढ़िया कम्बल बनाते हैं। मोटे कम्बल बहुत स्थानों में बनते हैं। मिर्ज़ापुर को बनी हुईं कालीनें दूर दूर विकने जाती हैं।

अलीगढ़ में फेल्ट की टोपियां बनाई जाती हैं। इनके लिये ऊन बाहर से आती है रुड़की में टोप बनाये जाते हैं। इनको हलका रखने के लिये इनके भीतर ज्वार का घुआ भर दिया जाता है।

सहारनपुर और रुड़की में लोहे के तौलने के बाट और बेलेन्स और फाटक बनते हैं। पीतल की मूर्तियां मथुरा में अच्छी बनती हैं। लकड़ी की कंघियां कई जगह बनती हैं। भैंस के सींग की कंघियां सम्भल (मुरादाबाद) में बनती हैं। रंगाई और बुनाई का काम सिखाने के लिये कानपुर और बनारस में स्कूल हैं। जेलों में कैदियों को दरी, निवाड़ चटाई आदि बुनने का काम सिखाने का प्रबन्ध है। उनकी बनी हुई चीजें बड़ी अच्छी और मजबूत रहती हैं।

हमारे प्रान्त के मैदान का पूर्वी भाग नीचा है। यह अक्सर बाढ़ से पीड़ित रहता है। पश्चिमी भाग अधिक ऊँचा और खुश्क है। इसमें सिंचाई की जरूरत पड़ती है। यहाँ सिंचाई की कई नहरें हैं। इनमें गङ्गा नहर के बहादुराबाद के पास बिजली तयार करने का प्रबन्ध है। यह बिजली तार द्वारा दूर दूर तक पहुँचाई जाती है। इसके पश्चिमी भागों में ट्यूब वेल खोदने और उनसे पानी खींचने का काम लिया जाता है। और भी कई स्थानों में बिजली तयार की जाती है। यदि बिजली अधिक सस्ती हो गई तो प्रान्त में कई प्रकार के कारबार खुल जाने की आशा है प्रान्तीय सरकार ने कारबार में लगाने के लिये कई कामों को सीखने के लिये छात्रवृत्तियां देने और काम सीखे हुये लोगों को छोटे मोटे कारबार चलाने के लिए धन से सहायता देने का प्रबन्ध किया है।

उन्नीसवां अध्याय

पूर्वी पंजाब

जब साम्प्रदायिकता के आधार पर भारत का विभाजन हुआ तभी उसी आधार पर पंजाब के भी दो खंड कर दिये गये। पूर्वी पंजाब में मुसलमान अल्प संख्या में थे। हिन्दुओं की इस भाग में प्रधानता थी। अतः यह प्रान्त भारतीय संघ में सम्मिलित हुआ। इस नवीन प्रान्त में निम्न जिले शामिल हैं:—

करनाल, रोहतक, गुड़गांव, हिसार, फीरोजपुर अम्बाला, लुधियाना, जालन्धर, अमृतसर, होशियारपुर, गुरदासपुर और कांगड़ा इसी में पटियाला, और पूर्वी पंजाब को रियासतें शामिल हैं।

विभाजन के पूर्व जो स्थिति अखंड भारत में सीमाप्रान्त की थी वही स्थिति इस समय पूर्वी पंजाब है। उसी की ओरसे लूट मार और छोटी मोटी मुठ भेड़ के समाचार प्रायः आते रहते हैं। लगभग २०० मील तक पूर्वी पंजाब की कृत्रिम सीमा पश्चिमी पंजाब को छूती है। यहां कोई प्राकृतिक विभाजक नहीं है। दोनों ओर एक से ही गांव और खेत हैं। फीरोजपुर जिले में कुछ दूर तक सतलज नदी सीमा बनाती है। फिर यह सीमा उत्तर की ओर बढ़ती हुई रावी तट का अनुसरण करती है। अन्त में रावी नदी भारतीय भूमि में प्रवेश करती है और पाकिस्तानी सीमा उत्तर की ओर मुड़ कर काश्मीर के साथ साथ चलती है। पूर्वी पंजाब शेष ओर भारतीय राज्य से घिरा है इसके उत्तर में काश्मीर राज्य और हिमालय प्रदेश पूर्व में संयुक्तप्रान्त दक्षिण में राजस्थान के बीकानेर और जैपुर

के राज्य हैं। इस प्रान्त का ऊँचा भाग उत्तर में हिमालय की ओर है। दक्षिण की ओर भूमि क्रमशः नीची हो गई है। प्रान्त के बीच में सिन्ध और गंगा का जलविभाजक है। एक ओर का वर्षा जल यमुना नदी में पहुँच कर गंगा और बंगाल की खाड़ी में जाता है। दूसरी ओर का वर्षा जल सतलज में पहुँचता है। यहां से वह फिर सिन्ध नदी के द्वारा अरब सागर में जाता है। प्रान्त का केवल थोड़ा सा भाग पहाड़ी है। शेष बड़ा भाग उपजाऊ बारीक मिट्टी का बना है। इस नवीन प्रान्त की सबसे बड़ी नदी सतलज या वेद कालीन शतद्रु है। सतलज नदी हिमालय पहाड़ से उतर कर प्रान्त के प्रायः मध्य में बहती हुई पाकिस्तान की सीमा पर पहुँचती है। अन्त में यह पाकिस्तान की नदी हो जाती है। प्रान्त की दूसरी नदी व्यास या वितस्ता है। पहाड़ी प्रदेश को छोड़ने के बाद व्यास नदी का शेष मार्ग पूर्वी पंजाब में ही समाप्त हो जाता है। रावी नदी लगभग १०० मील तक पाकिस्तान और पूर्वी पंजाब के बीच में सीमा बनाती है। चनाब नदी केवल कुछ दूर तक कांगड़ा के पहाड़ी जिले में बहकर काश्मीर में चली जाती है। अन्त में यह पाकिस्तान की नदी हो जाती है। इस प्रकार पूर्वी पंजाब पचनद या पाँच नदियों का देश नहीं रहा। प्राचीन समय की सरस्वती यह घाघर नदी केवल वर्षा ऋतु में बहती है। शेष महीनों में सूखी पहाड़ी रहती है।

जलवायु—पूर्वी पञ्जाब की जलवायु कुछ अंशों में पश्चिमी संयुक्त प्रान्त के समान है। दिन और रात के तापक्रम में भारी अन्तर रहता है। सरदी की ऋतु ठंडी और गरमी की ऋतु अधिक गरम होती है।

पहाड़ से प्रायः १०० मील की दूरी तक काफी (२५ से ३० इंच तक) पानी बरस जाता है। अधिकतर वर्षा दक्षिणी-पश्चिमी मानसून से होती है। जनवरी और फरवरी मास में भूमध्य सागर की

ओर से आने वाले तूफ़ान कुछ वर्षा कर देते हैं। पहाड़ से अधिक दूरी पर हिसार और फ़ाज़िलका (फ़ीरोज़पुर) ज़िलों में बहुत कम वर्षा होती है।
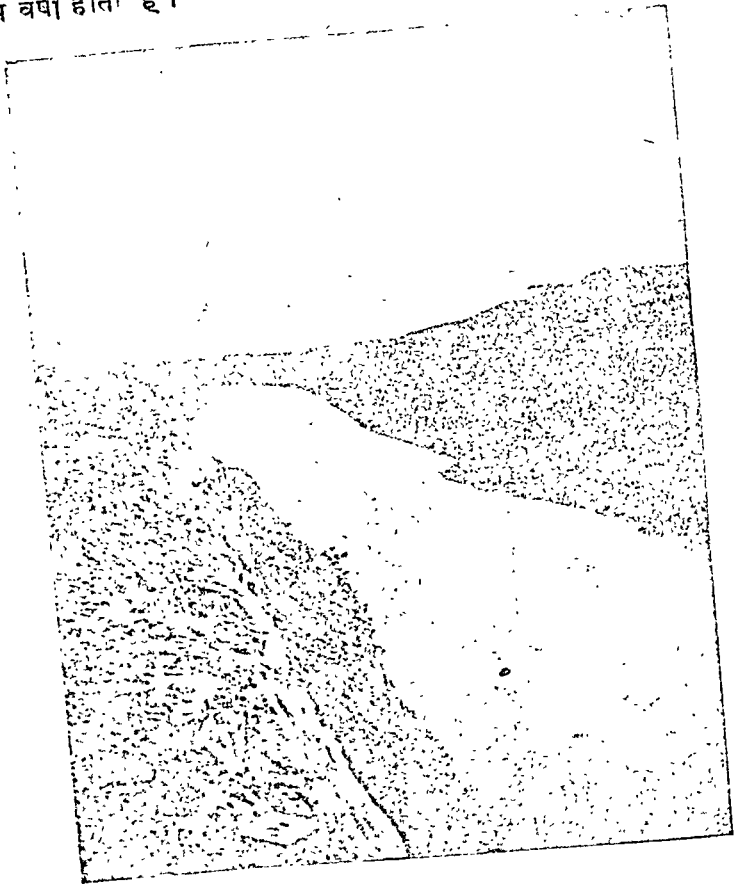
८३—मगलाघाट के ऊपर झेलम-नहर

नहरें—उत्तरी भाग के समीपवर्ती भागों में पर्याप्त वर्षा हो

जाने से सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। शेष भाग में नदियों और कुओं से तथा बीच वाले द्वाबा (मझा) में नहरों से सिंचाई

८४—पंजाब के प्राकृतिक विभाग

होती है।
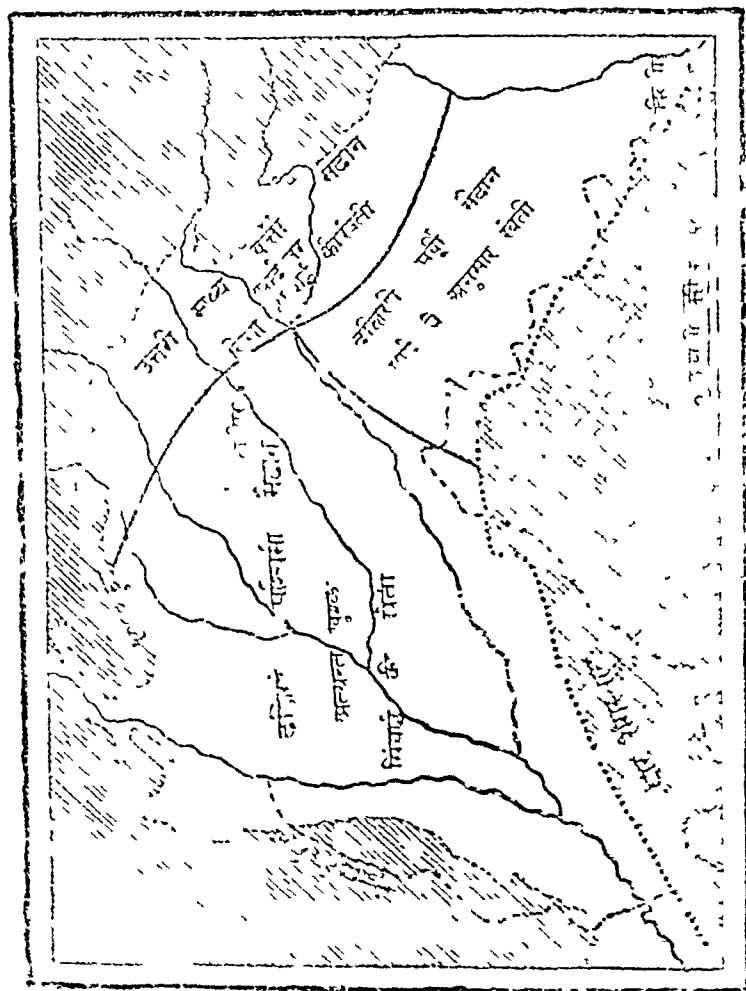
बारी अथवा व्यास और रावी नदियों के द्वाब में अपर बारी द्वाब

और लोअर बारी द्वाब नहरें हैं। सतलज के दक्षिण-पूर्व में सरहिन्द नहर से सिंचाई होती है। अधिक पूर्व की ओर यमुना नदी के पश्चिम में पश्चिमी यमुना नहर से सिंचाई होती है। इन बड़ी बड़ी स्थायी नहरों के अतिरिक्त बाढ़ के दिनों में छोटी छोटी अस्थायी नहरों से सिंचाई हो जाती है।

उपज—पंजाब के जिन पहाड़ी भागों में खेती नहीं होती है वहाँ वन हैं। जहां दक्षिण-पश्चिम की वर्षा कम होती है और सिंचाई की सुविधा नहीं है वहां रेगिस्तान है। कुछ अच्छे भागों में ढोर पाले जाते हैं। पूर्वी पञ्जाब की खुश्क जलवायु गेहूँ के लिये बड़ी अच्छी है। गेहूँ यहां की प्रधान उपज है। वैसे यहां गन्ना, कपास, जौ चना, ज्वार, बाजरा, मकई आदि कई फसलें होती हैं।

मनुष्य—पंजाबी लोग डील डौल में लम्बे और मजबूत होते हैं। यहां पाकिस्तानी लूट मार और हत्याकाँड होने से सीमा प्रान्त और पश्चिमी पजाब से प्रायः सभी हिन्दू और सिक्ख आगये। फिर कुछ शरणार्थी भारत के दूसरे भागों में भेज दिये गये।

अधिकतर लोग खेती करते हैं। कुछ लोग रूई दबाने और कपड़ा बुनने का काम करते हैं। हाथ से कपड़ा बुनने का काम प्रायः सब गांवों में होता है। कहीं कहीं कम्बल बुने जाते हैं। अमृतसर और लुधियाना में रेशमी कपड़े और शाल बुनने का काम होता है।

नगर—अमृतसर यह लाहौर से ३६ मील पूर्व की ओर सिक्खों का पवित्र तीर्थ है। सरोवर के घिरा हुआ सिक्ख स्वर्ण मन्दिर बड़ा सुहावना है। यहां रूई रेशम और शाल दुशाला तयार करने का काम होता है। इस नगर में स्थित जलियां वाला बाग के हत्याकांड ने १९२० ई० के असहयोग आन्दोलन को देश भर में फैला दिया था।

आजकल यह सीमा प्रान्तीय नगर हो जाने से इसका सैनिक महत्व बढ़ गया है।

अम्बाला - यह नया नगर अपने व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ वैज्ञानिक यन्त्र स्कूल के काम के लिये बनते हैं। जालन्धर मार्गों का केन्द्र होने से इसका व्यापार बढ़ गया है। यहाँ शिक्षा भी बढ़ रही है। यह पूर्वी पंजाब का प्रधान नगर है। इसके पड़ोस में लुधियाना दूसरा बड़ा नगर है।

स्यालकोट—लाहौर के उत्तर में काश्मीर की सीमा पर स्यालकोट व्यापार और शिल्प का केन्द्र बन रहा है। खेल का सामान बन कर यहाँ से दूर को जाता है। यहीं बाबा नानक की समाधि है।

पहाड़ी ढालों पर शिमला, मसौली, धर्मशाला, डलहौजी और मरी शहर गर्मियों में विशेष रूप से आबाद हो जाते हैं।

शिमला नगर ग्रीष्म में न केवल पंजाब प्रान्त की वरन् भारत-सरकार की राजधानी रहती है।

पहाड़ी भाग में छोटी-छोटी २० रियासतें सतलज के पूर्व में और चम्बा आदि रियासतें सतलज के पश्चिम में स्थित हैं।

दक्षिण में भावलपुर की मुसलमानी रियासत और पटियाला नाभा झींद और फिरोदकोट की रियासतें अधिक बड़ी हैं।

दिल्ली—दिल्ली (जनसंख्या ९ लाख) हिन्दुस्तान की राजधानी है। आजकल दिल्ली नगर और जिला (जनसंख्या ७ लाख ८० हजार क्षेत्रफल ५९० वर्गमील) पंजाब से अलग है। पर दिल्ली शहर की स्थिति बड़े महत्व की है। यहां कई स्थल मार्ग मिलते हैं। यहीं से करांची पेशावर, मुरादाबाद, कलकत्ता और बम्बई को को रेलवे लाइनें गई हैं। यह शहर यमुना के उस भाग में स्थित है जहां तक नावें चल सकती हैं। इस प्रकार दिल्ली से कलकत्ते तक सरल जल

मार्ग है। वायुयानों के लिये भी दिल्ली शहर की केन्द्रवर्ती स्थिति और खुश्क जलवायु बड़ी अच्छी है।

प्राचीन समय से दिल्ली शहर अनेक प्रबल राजाओं की राजधानी रही है। उनके बनाये हुये किलों और मकानों के

दिल्ली
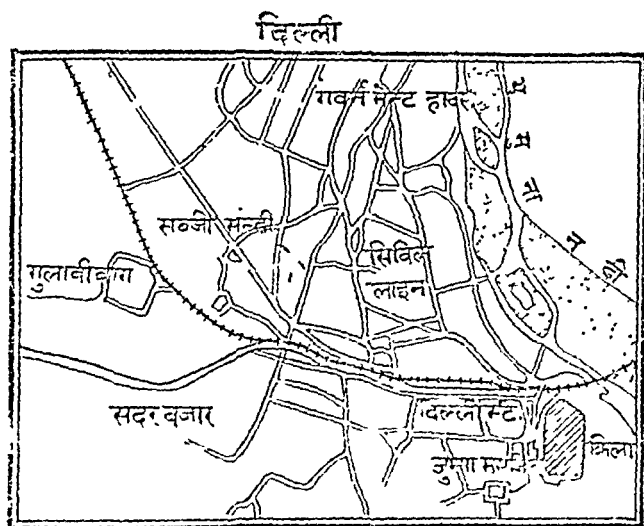
८४ —दिल्ली नगर और समीपवर्ती प्रदेश

भग्नावशेष मीलों तक फैले हुए हैं। कुतुबमीनार हुमायूँ का मकबरा और लाल किला अब भी अच्छी दशा में हैं। पर हाल में पुराने शहर के बाहर नई दिल्ली को बनाने और सजाने में ब्रिटिश सरकार ने करोड़ों रुपये खर्च किये थे। काउन्सिल आफ स्टेट एसेम्बली और

वायसराय के विशाल भवन देखने योग्य नई दिल्ली में ही एरोड्रोम (हवाई जहाज का स्टेशन) है। यहां से प्रति सप्ताह लन्दन को डाक
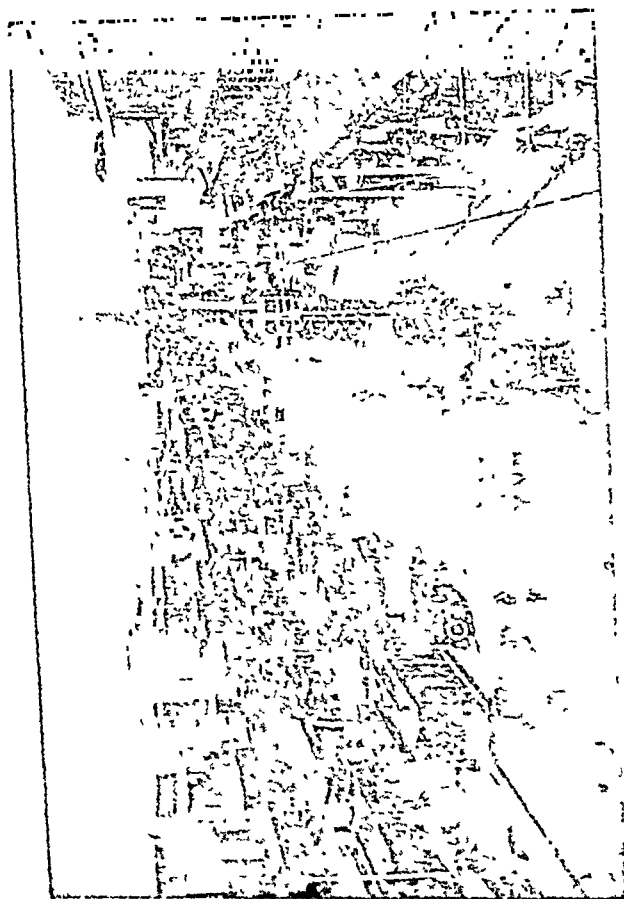
८७—दिल्ली का चांदनी चौक

का जहाज छूटता है। इसी प्रकार का एक हवाई जहाज प्रति सप्ताह लन्दन से डाक लेकर यहां आता है।

८७—कुतुबमीनार और पृथ्वीराज का दुर्ग

बीसवाँ अध्याय

बम्बई प्रान्त

राजनैतिक दृष्टि से सिन्ध पाकिस्तान का अंग है। काठियावाड़ की ४४९ रियासतों ने मिलकर सौराष्ट्र बनाया है।

बम्बई प्रान्त (क्षेत्रफल १,५२,००० वर्गमील, जनसंख्या २ करोड़) हिन्दुस्तान भर में ब्रह्मा को छोड़ कर सब से बड़ा प्रान्त है। यह प्रान्त उत्तर में सिन्ध प्रान्त (२८°७५ अक्षांश) से लेकर दक्षिण में कनारा जिले (१२°५३ अक्षांश तक १०२६ मील लम्बा, है। इसका सबसे अधिक पश्चिमी स्थान मुंज अन्तरीप ६६°४० पूर्वी देशान्तर में और सबसे अधिक पूर्वी स्थान ७६°३० पूर्वी देशान्तर में स्थित है। पर इसका आकार ऐसा विषम है कि इसकी चौड़ाई कहीं भी २०० मील से अधिक नही है। सिन्ध प्रान्त के उत्तर में बिलोचिस्तान, उत्तर पूर्व में पंजाब और राजपूताना है। बम्बई के पूर्व में मध्यभारत की रियासतें, मध्यप्रान्त, बरार और हैदराबाद की रियासत है। बम्बई प्रान्त के दक्षिण में मैसूर राज्य और मद्रास का दक्षिणी कनारा जिला है। बम्बई प्रान्त के पश्चिम में सब कहीं (अरब) समुद्र है। नये शासन विधान के अनुसार सिन्ध पाकिस्तान का प्रान्त बन गया है।

बम्बई प्रान्त में तीन प्राकृतिक प्रदेश हैं। :—

१—कच्छ, काठियावाड़, बड़ौदा और गुजरात।

२—पश्चिमी तट का आर्द्र प्रदेश जो पश्चिमी घाट और समुद्र के बीच मे स्थित है।

३—दक्षिणी लावा या काली मिट्टी का प्रदेश जो पठार का हो भाग है।
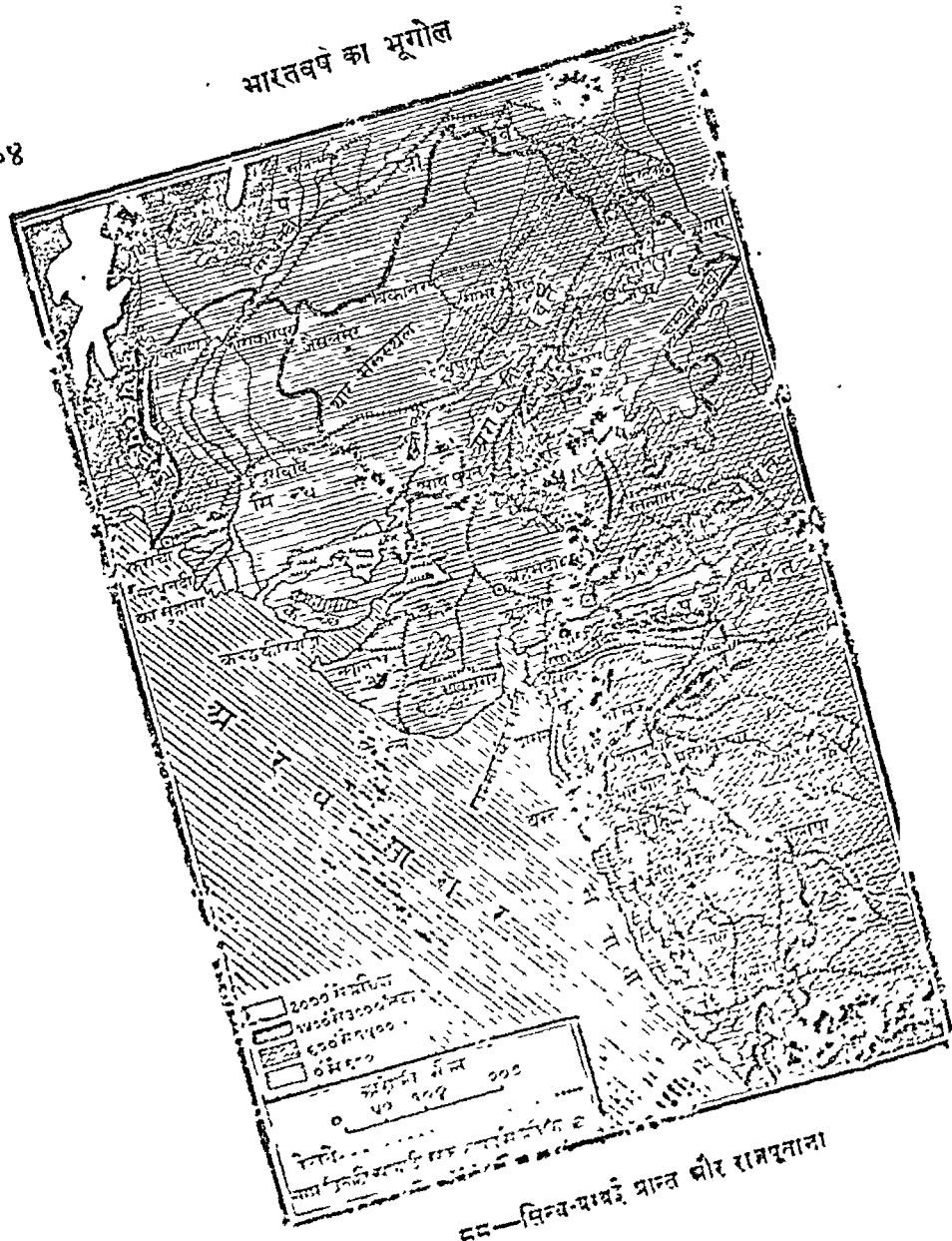
८८—सिन्ध-बम्बई प्रान्त और राजपूताना

कच्छ

सिन्ध प्रान्त के दक्षिण (९००० वर्गमील) में कच्छ प्रायद्वीप है यह तीन ओर रन के नमकीन रेगिस्तान से घिरा है। यह रन अप्रैल से अक्टूबर तक वर्षा ऋतु में एक दो हाथ पानी से घिर जाता है। और दिनों में खुश्क नमकीन उजाड़ हो जाता है। प्रायः सब का सब कच्छ प्रायद्वीप वृक्ष-रहित उजाड़ है। अधिकतर प्रदेश नीचा है। कहीं कहीं रेतीले अथवा पत्थरीले टीले हैं। भीतर की ओर कुछ सजल भागों में खेती होती है। भुज नगर यहाँ की राजधानी है।

*काठियावाड़

काठियावाड़ का खुश्क प्रायद्वीप कुछ अच्छा है। पहले यह प्रदेश छोटी छोटी रियासतों में बटा था। अब इनसे सौराष्ट्र प्रान्त बन गया है। उपजाऊ भागों में गांव हैं। ज्वार, बाजरा, कपास, की मुख्य उपज हैं। जहां सिंचाई की सुविधा है वहां गेहूँ उगाया जाता है। इसके बहुत से भागों में ऊसर भूमि है। दक्षिण-पश्चिम की ओर कुछ नग्न और कुछ वृक्षों से ढकी हुई पहाड़ियां हैं। जूनागढ़ के पास गिरिनार-पर्वत पर सुन्दर मन्दिर बने हैं। पोरबन्दर के पास मकान बनाने योग्य चूने का पत्थर निकलता है समुद्रतट के पास अक्सर स्थानों में

---

*इसका प्राचीन नाम सुराष्ट्र या सौराष्ट्र है। जब से काठी लोग यहां आकर बसे तब से इसका नाम काठियावाड़ पड़ गया है।

नमक के ढेर पड़े हुये हैं। काठियावाड़ कई छोटे छोटे देशी राज्यों में बंटा हुआ था। इसमें भावनगर, धनगोधरा गोन्दाल, जूनागढ़ और नवानगर या जामनगर मुख्य थे।

गुजरात

गुजरात की ज़मीन भी प्रायः समतल है। उत्तरी भाग की जमीन रेतीली है। पानी भी कम बरसता है। लेकिन दक्षिण की ओर बढ़ने पर अच्छी ज़मीन मिलती है। नर्मदा के आस पास सर्वोत्तम जमीन है इधर पानी भी खूब बरसता है। इसलिये दक्षिणी गुजरात में चावल, ईख, कपास आदि सभी फसलें होती हैं।

नगर

अमरावती साबरमती नदी के किनारे गुजरात के प्रायः मध्य भाग में स्थित है। इसी केन्द्रवर्त्ती स्थिति के कारण अहमदाबाद शहर पुराने समय के गुजरात की राजधानी रहा है। कपास उगाने वाले प्रदेश के बीच में होने से यहाँ सूत कातने और कपड़ा बुनने के कई कारखाने हैं। कपड़े के अतिरिक्त यहाँ चमड़े और कागज़ का भी काम होता है। नदी के दूसरे किनारे एक रम्य स्थान पर महात्मा गांधी जी का सत्याग्रह आश्रम था। जो अब हरिजन-आश्रम हो गया है।

सूरत

यह नगर ताप्ती नदी के मुहाने के पास स्थित है। अब से प्रायः डेढ़ सौ वर्ष पहले यह नगर हिन्दुस्तान का एक प्रधान बन्दरगाह था।

लेकिन नदी ने मिट्टी लाकर मुहाने को उथला बना दिया है। इसलिये जैसे जैसे बम्बई की बढ़ती हुई, वैसे वैसे सूरत का महत्व घटता गया।

बड़ौदा—यह शहर बड़ौदा राज्य की राजधानी है। यहां भी रुई के कई कारखाने हैं।

यह तीनों ही नगर बम्बई से आरम्भ होने वाली बो॰ बी॰ एण्ड सी॰ आई॰ रेलवे के स्टेशन हैं। अहमदाबाद से रेलवे की एक शाखा काठियावाड़ को गई है।

पश्चिमी तटीय प्रदेश

यह तटीय मैदान पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच में स्थित है उत्तर में नर्मदा और ताप्ती नदियों के मुहाने तथा दक्षिण में ट्रावनकोर के पास यह मैदान अधिक चौड़ा है। इस समतल तट पर केवल एक ही अच्छा द्वीप है जिस पर बम्बई शहर बसा है। शेष तट कुछ भी कटा फटा नहीं है।

पश्चिमी घाट उत्तर में ताप्ती घाटी के पास से आरम्भ होते हैं। पूना के उत्तर में वे बहुत नीचे और टूटे फूटे हैं। पूना के दक्षिण में बेलगांव के पास तक पश्चिमी घाट बहुत ऊँचा है। इस ओर वे टूटे फूटे भी हैं। बेलगांव के अक्षांश के नीचे पश्चिमी घाट में एक द्वार है जहाँ होकर एक रेल गोवा को गई है। इस द्वार के आगे नीलगिरि तक पश्चिमी घाट और भी अधिक ऊँचे हो गये हैं। इस प्रकार पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच में तटीय मैदान की चौड़ाई केवल तीस या चालीस मील है। यह मैदान अक्सर बारीक मिट्टी

से बना है। इसलिये यह प्रदेश अत्यन्त उपजाऊ है। दक्षिणी-पश्चिमी मौसमी हवाओं के सीधे मार्ग में स्थित होने के कारण यहां प्रबल वर्षा

९०—विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन

८९—बम्बई का मेंडक्स क्रोन

होती है। वर्षा की मात्रा उत्तर से दक्षिण की ओर क्रमशः बढ़ती जाती है इसी प्रकार समतल मैदान की अपेक्षा पहाड़ के पश्चिमी ढालों पर अधिक वर्षा होती है।

जमीन की बनावट और जलवायु के अनुसार तटीय प्रदेश तीन भागों में बांटा जा सकता है:—
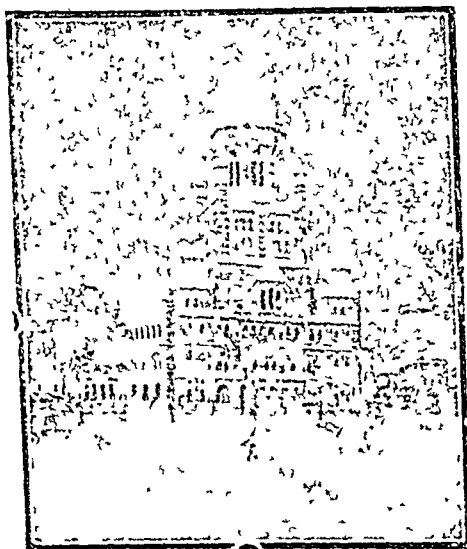
६१—म्युनिसिपल कारपोरेशन की इमारत

१—समुद्र-तट के बिलकुल पास यहां अक्सर रेतीले टीले हैं। इनमें कहीं कहीं गोरन के दलदल हैं। पर अधिकतर भागों में नारियल के बगीचे हैं। इन्हीं बगीचों के बीच में थोड़ी थोड़ी दूर पर सुन्दर गाँव हैं। गांवों के घर अक्सर नारियल के ही पत्तों से छाये जाते हैं।

२—तट से कुछ भीतर की ओर समतल भूमि है। यहां चावल की खेती है बीच-बीच में नारियल, सुपारी आदि के पेड़ हैं। कहीं कहीं पश्चिमी घाट से निकलने वाली छोटी, पर तेज नदियों से समुद्र तट के रेतीले टीलों की रुकावट के कारण अनूप (लेगून) बना दिये हैं। इन अनूपों में छोटी नावें चला करती हैं और इधर-उधर सामान ले जाती हैं। इधर के गांव हिन्दुस्तान के और गांवों से भिन्न हैं।

प्रत्येक घर में नारियल का बगीचा है। और एक घर दूसरे से दूर है। यह प्रदेश काली मिर्च और दूसरे मसालों के लिए प्रसिद्ध है।
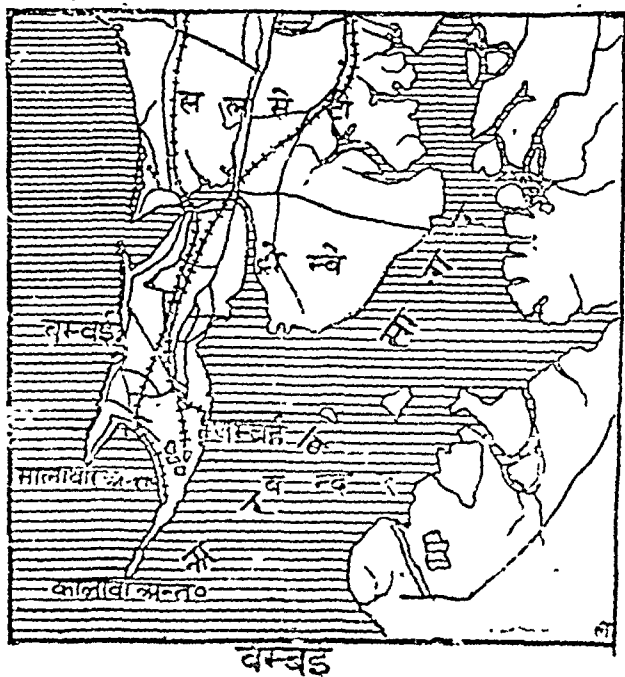
९२—बम्बई और समीपवर्ती प्रदेश

३—इधर के सपाट पहाड़ी ढाल तरह-तरह के पेड़ों से ढके हुए हैं। इनमें सागौन (टीक) के पेड़ अत्यन्त मूल्यवान हैं। पेड़ काट कर तेज़ पहाड़ी नदियों में डाल दिये जाते हैं। और किसी अनुकूल स्थान पर निकाल लिये जाते हैं। ये छोटी छोटी तेज नदियाँ नावों के चलने योग्य नहीं हैं, पर इनसे बिजली बनाई जा सकती है।

उपजाऊ होने से पश्चिमी तट अत्यन्त घना बसा हुआ है। पर अधिकतर आबादी छोटे छोटे गावों में बसी हुई है। बड़े बड़े शहर कम है।
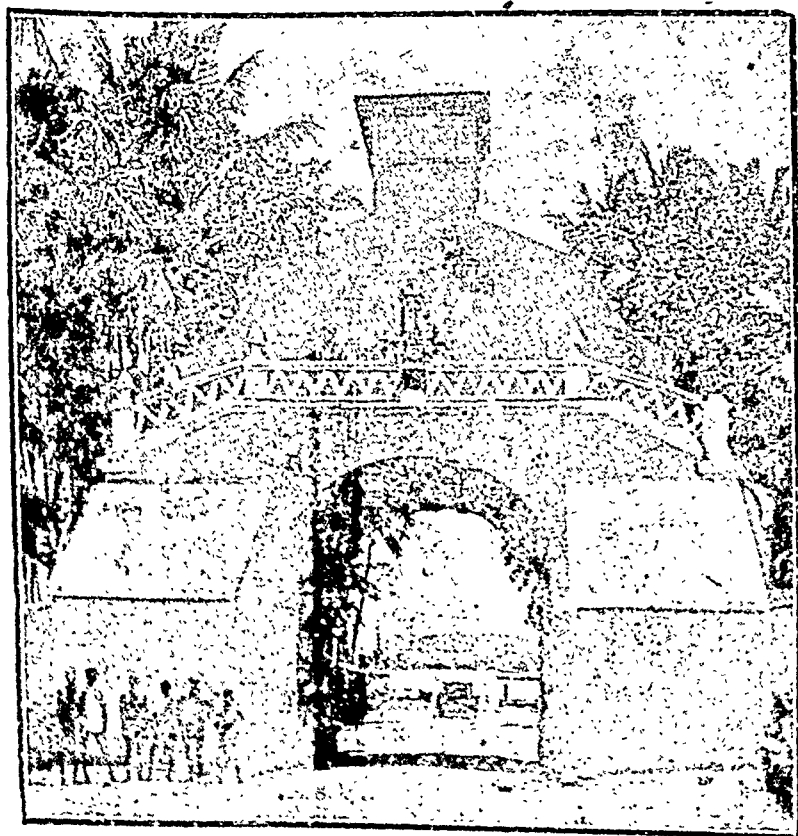
९२—गोवा नगर का एक दृश्य

बम्बई इस ओर सब से बड़ा और सारे हिन्दुस्तान में दूसरे नम्बर का शहर है। शहर इसी नाम के द्वीप पर बसा है। इसकी आबादी १५ लाख से ऊपर है। स्थल से घिरी हुई खाड़ी ने यहाँ के बन्दरगाह को अत्यन्त सुरक्षित बना दिया है। बम्बई से भीतर की ओर बढ़ने पर

मार्ग में पश्चिमी घाट पड़ते हैं। वे इतने नीचे और कटे फटे हैं कि उनमें होकर सुगम मार्ग बना लिये गये हैं। बम्बई शहर रेल द्वारा दिल्ली, इलाहाबाद, कलकत्ता और मद्रास आदि सभी प्रसिद्ध शहरों से जुड़ा हुआ है। इसलिये बम्बई को अक्सर हिन्दुस्तान का प्रवेश-द्वार (गेट) कहते हैं। बम्बई के पृष्ठ प्रदेश में रुई बहुत होती है। शहर की तर जलवायु कपड़ा बुनने के लिये बड़ी अच्छी है। इसलिये बम्बई में कपड़े बुनने की कई मिलें हैं। ये मिलें बिजली के जोर से चलती हैं। यह बिजली पश्चिमी घाट के अनुकूल स्थानों में तैयार होती है और तार द्वारा बम्बई भेज दी जाती है। इससे बम्बई के आस पास के नगरों को बिजली के जोर से चलने वाली इलेक्ट्रिक रेलें छूटा करती हैं।

पश्चिमी तट पर बम्बई के बाद दूसरा उत्तम बन्दरगाह मोरमगोवा है। यह शहर और इसके पीछे का देश पुर्तगाल वालों के अधिकार में है।

पठार—तटीय प्रदेश के भीतर पठार का प्रदेश हिन्दुस्तान में सब से अधिक पुराना भाग है। करोड़ों वर्ष पहले यहाँ से इतना लावा निकला कि उसने २ लाख वर्गमील के प्रदेश को बिल्कुल ढक लिया। लावा के पहले देश का कैसा रूप था; इसका पता लगाना भी कठिन हो गया है। केवल कुछ ही स्थानों पर नर्मदा आदि नदियों ने लावा की गहरी तहों को काट कर नीचे की पर्तों और पुरानी तहों को प्रकट किया है। बम्बई प्रान्त के पठार की अधिकतर जमीन इसी लावा की काली मिट्टी से बनी है। दक्षिण की ओर की जमीन कुछ लाल है।

बरसात है। समुद्र से दूर होने के कारण इस ओर ग्रीष्म में अधिक गरम और शीतकाल में अधिक ठंड पड़ती है। यदि इस पश्चिमी घाटी की चोटी पर चढ़ कर अरब सागर की ओर मुंह करें तो सब कहीं हरा-भरा दृश्य दिखाई देता है। पर यदि हम पूर्व की ओर मुंह फेर लें तो सब कहीं प्रायः खुश्क प्रदेश नज़र आता है।

पर काली जमीन में नमी रखने की शक्ति अधिक होती है। इसी लिये उत्तर की अपेक्षा दक्षिण की लाल भूमि में तालाबों से सिंचाई का अधिक प्रबन्ध है।

यहाँ की जमीन उपजाऊ है। इसलिये खुश्क होने पर भी प्रायः ७० फीसदी जमीन खेतों के काम आती है। १७ फीसदी जमीन वनों से ढकी है। यहाँ की प्रधान फसल कपास है। ज्वार, बाजरा भी बहुत होता है। इधर लोगों का यही मुख्य भोजन है, जैसा की तटीय प्रदेश का मुख्य भोजन चावल है। गेहूँ मूंगफली और (कहीं कहीं) ईख की भी खेती होती है।

तटीय प्रदेश की अपेक्षा इस ओर बहुत कम आबादी है। प्रति वर्ग मील में केवल १५ मनुष्य रहते हैं। इस प्रदेश के लोगों की भाषा मराठी है।

पश्चिमी घाट के सिरे के पास बम्बई से ८० मील दक्षिण-पूर्व की ओर पूना शहर बसा है यह शहर पश्चिमी घाट के दर्रे का नियन्त्रण करता है। शहर विशाल मरहठा साम्राज्य की राजधानी रह चुका है। पर १८७९ की आग में पेशवा का महल जल गया अब भी शहर शिक्षा का केन्द्र है ..०० फुट की ऊँचाई पर बसे होने से गरमी की ऋतु में यहाँ बम्बई से कुछ अधिक ठंडक रहती है। यहीं हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा मेट्योरालाजिकल आफिस है।

पूना से दक्षिण-पूर्व में दूसरा बड़ा नगर शोलापुर है। यहाँ रुई के कई कारखाने हैं।

अधिक दक्षिण में बड़ा नगर बेलगांव है। यहाँ भी सूती कपड़ों का कारबार है।

नासिक नगर बम्बई से उत्तर-पूर्व की ओर गोदावरी के निकास के पास बसा है। यहाँ के घरों में लकड़ी का सुन्दर काम है।

इक्कीसवाँ अध्याय

मद्रास

मद्रास प्रान्त (१,४२,८८० वर्गमील, जनसंख्या ४ करोड़ ७२ लाख
का समुद्र-तट बङ्गाल की खाड़ी की ओर १,२००० मील लम्बा है।
अरब सागर की ओर मद्रास प्रान्त के समुद्र-तट की लम्बाई केवल
४५० मील है। इस प्रकार यह प्रान्त पूर्व की ओर ८ अक्षांश से २०
उत्तरी अक्षांश तक और पश्चिम की ओर ८ अक्षांश से १४ उत्तरी
अक्षांश तक फैला हुआ है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई १०००
मील और बड़ी से बड़ी चौड़ाई ३८० मील है। स्थल की ओर यह
प्रान्त उड़ीसा, मध्य प्रान्त, हैदराबाद के राज्य और बम्बई प्रान्त
है। शेष सब ओर समुद्र है। यदि चिलका झील से एक रेखा
कृष्णा और तुङ्गभद्रा नदियों को छूती हुई पश्चिमी-तट के उस पार
अरब सागर तक खींची जावे तो इस रेखा के दक्षिण में सारा
मद्रास प्रान्त मैसूर और कुर्ग आ जायगा।

मद्रास प्रान्त में निम्न प्राकृतिक प्रदेश सम्मिलित हैं:—

(१) मालाबार अथवा अरब सागर के किनारे वाला पश्चिमी तट
(२) कर्नाटक।
(३) उत्तरी सरकार।
(४) दक्खिन का पठार।

(१) मद्रास का पश्चिमी तट प्रायः बम्बई के ही पश्चिमी तट
से मिलता है। यहाँ पहाड़ ढालों पर वन हैं। समस्त प्रदेश के ११४
भाग में वन हैं। तट के पास रेतीले टीलों पर नारियल के पेड़ हैं।
रेतीले टीलों के पीछे, समतल कछारी मैदान हैं। यह पश्चिमी घाट

से आने वाली छोटी नदियों ने उथले अनूप बना दिये हैं। यह अनूप नहरों द्वारा एक दूसरे से तथा समुद्र से जुड़े हुये हैं। इस प्रकार इस ओर तक सैकड़ों मीलों तक नावें चल सकती हैं। यह प्रदेश अत्यन्त उपजाऊ है। यहाँ दक्षिणी पश्चिमी मानसून से वर्षा होती है।
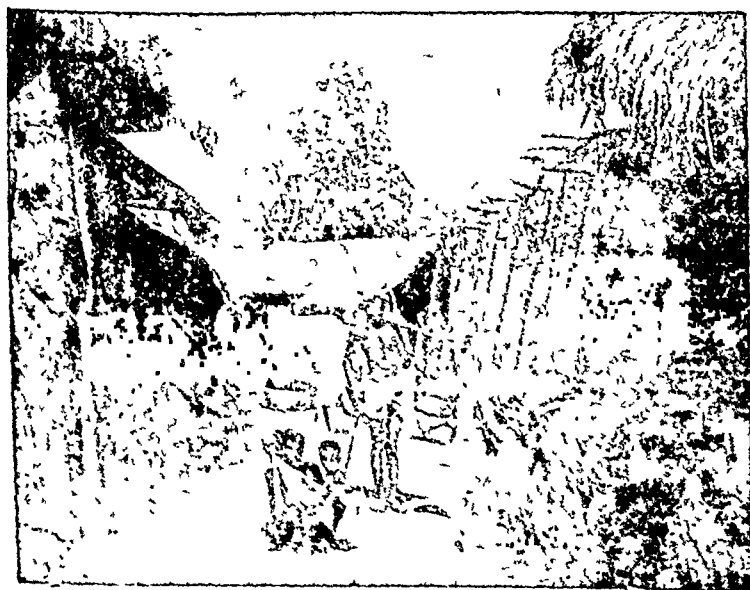
६४—मालाबार-तट के एक गांव के बोझ ढोने वाले

अनूपों (लेगून) के किनारों पर नारियल के पेड़ लगे हैं। खेतों में धान उगाया जाता है। जहां तहां सुपारी और काली मिर्च के बगीचे हैं। इस उपज को बाहर भेजने के लिये अभी तक इस ओर कोई बड़ा बन्दरगाह न था। हाल में कोचीन, ट्रावनकोर और मद्रास सरकार की सम्मति से कोचीन बन्दरगाह को गहरा करके अच्छा बन्दरगाह बनाया गया है। पहले बन्दरगाह के मुहाने पर बालू और मिट्टी की रुकावट थी अब उसमें प्रायः दो मील लम्बी, ४०० फुट चौड़ी और ३५ फुट गहरी नहर खोद दी गई है। इसमें होकर बड़े से बड़े

जहाज भीतर जा सकेंगे यह प्रदेश अत्यन्त घना है। ट्रावनकोर में प्रति वर्गमील में १२०० मनुष्य रहते हैं। अधिकतर आबादी छोटे-छोटे गांवों में रहती हैं। केवल तट के पास कुछ नगर है।

त्रिवेन्दुरम शहर ट्रावनकोर राज्य की राजधानी है और रेल द्वारा मद्रास से जुड़ा हुआ है। एलपो और क्विलन नगर भी ट्रावनकोर राज्य में ही स्थिर है, चटाई और रस्सी बनाने के लिए प्रसिद्ध है।

कालीकट पुर्तगालियों के आने से पहले एक बढ़ा-चढ़ा हुआ नगर था और मसाले के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था। इस समय भी यह नगर मद्रास प्रान्त के बड़े नगरों में गिना जाता है। यहां नारियल की गरी से तेल पेरने का काम बहुत होता है। कोचीन शहर (बन्दरगाह की नई योजना के अनुसार) इस ओर सबसे बड़ा नगर हो रहा है। मंगलोर एक साधारण नगर है और पालघाट होकर जानेवाली रेल द्वारा मद्रास से जुड़ा है।

कर्नाटक—मद्रास प्रान्त का कर्नाटक प्रदेश कुमारी अन्तरीप से मद्रास शहर के उत्तर में प्रायः १५ उत्तरी अक्षांश तक चला गया है। समुद्र-तट से भीतर की ओर कार्डामम पहाड़ नीलगिरि और पूर्वी घाट इसकी सीमा बनाते हैं। समुद्र-तट के पास चौड़ा मैदान है। भीतर की ओर पर्वतीय प्रदेश है। इस प्रदेश में पश्चिमी घाट की रुकावट के कारण दक्षिणी-पश्चिमी हवाओं से ग्रीष्म ऋतु में पानी नहीं बरसने पाता है। पर जब शीतकाल से उत्तरी-पूर्वी मानसून लौट कर इस तट पर टकराती है तो अक्टूबर, नवम्बर के महीनों में ४० इंच से ऊपर वर्षा हो जाती है। पर जैसे जैसे वह हवा तट से भीतर को ओर बढ़ती है वैसे वैसे इसकी भाप कम होती जाती है। इसी से भीतर की ओर पहाड़ी भाग में कम पानी बरसता है। इस भाग में वर्षा की कमी है। लेकिन जमीन उपजाऊ है, इसलिये कर्नाटक प्रान्त
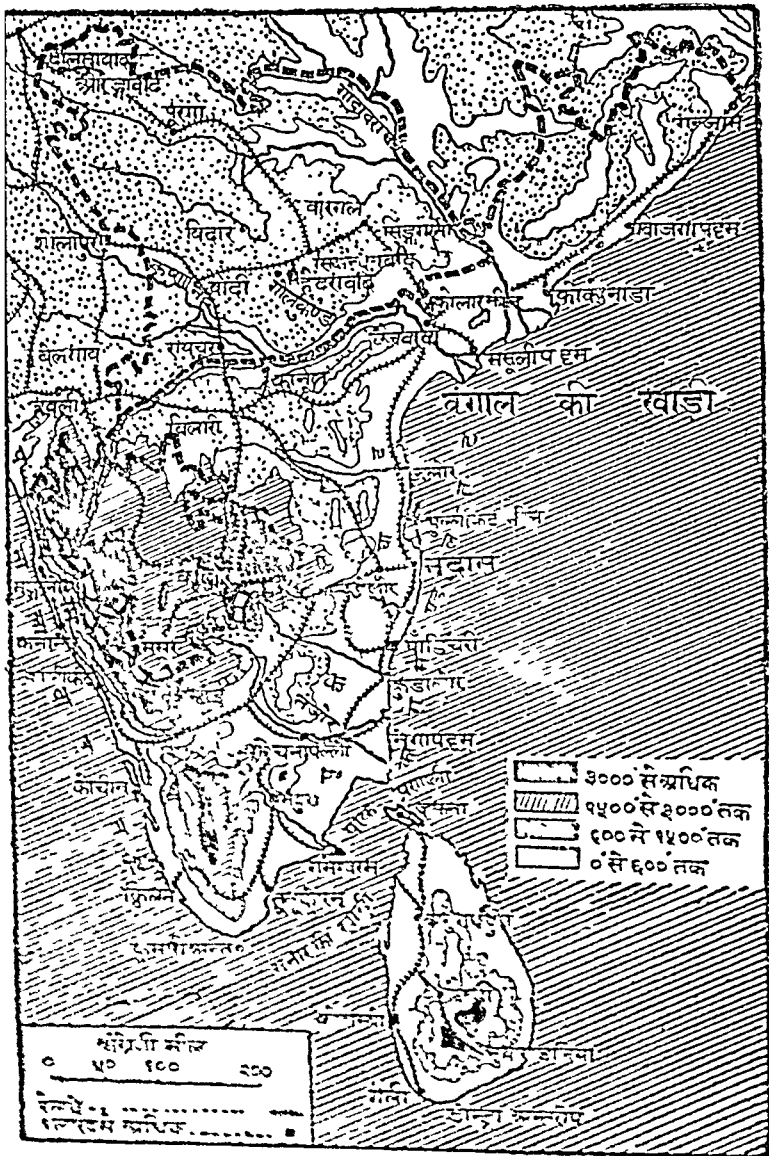
१५—मद्रास प्रान्त तथा हैदराबाद और मैसूर

प्रबन्ध किया गया है। पेरियर,प्राजेक्ट सिंचाई की विचित्र योजना है। पहले पेरियर नदी (ट्रावनकोर में) पश्चिमी घाट की प्रचुर वर्षा अरब
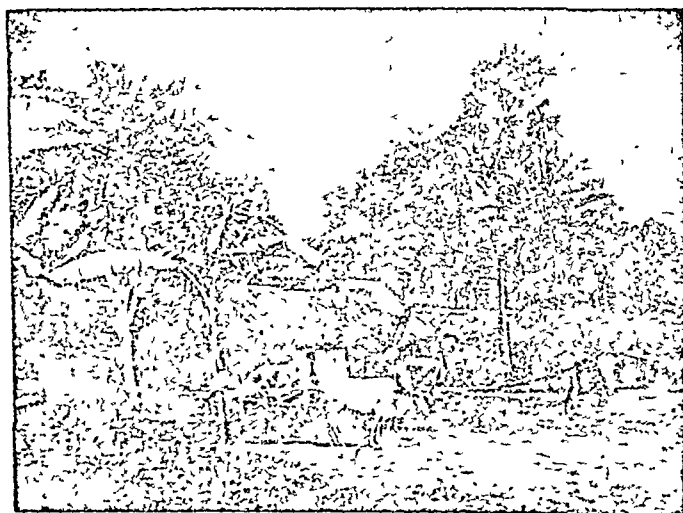
९६—दक्षिणी भारत के एक गांव का दृश्य

सागर में बहा ले जाती थी। फिर पश्चिम की ओर पेरियर की घाटी में एक बड़ा बाँध बना दिया गया। इससे ऊपरी घाटी एक विशाल झील बन गई। फिर पश्चिमी घाट में सुरंग बनाई गई। इस सुरंग द्वारा पश्चिमी घाट का पानी मद्रास प्रान्त की ओर लाया गया। अब यह पानी मैडूरा (मदुरा) के आस पास हजारों एकड़ समतल भूमि को सींचने में खर्च होता है। अर्काट के दक्षिण और मद्रास शहर के पश्चिम में पाइनी, पालार और चेयर नाम की छोटी छोटी नदियों से सिंचाई होती है। पर सिंचाई का सबसे बड़ा प्रबन्ध कावेरी डेल्टा में है। यहां सैकड़ों वर्षों से सिंचाई का काम होता है। यहाँ लगभग १० लाख एकड़ जमीन सींची जाती है।

९७—लङ्का और मद्रास के बीच वाले उथले समुद्र में मोती निकाले जाते हैं।

तटीय मैदान की प्रधान फ़सल चावल है। कपास, मूँगफली, ईख और तम्बाकू भी बहुत होती है। ऊँचे भागों में जहाँ सिंचाई की सुविधा

नहीं है वहाँ ज्वार और बाजरा उगाया जाता है। अधिक ऊँचे ढालों पर वन हैं। टीक (साल) और चन्दन के पेड़ अत्यन्त मूल्यवान हैं। साल के सर्वोत्तम वन कोयम्बटूर में और नीलगिर के ढालों पर हैं। वेलूर जिले में बहुत सा अभ्रक निकाला जाता है। समुद्र-तट से नमक मिलता है। समुद्र से ही मछली और मोती निकालने का काम भी कई स्थानों में होता है।

इस प्रदेश की भाषा तामिल है और आबादी सब कहीं घनी है। प्राय: प्रति वर्गमील में ४०० मनुष्य रहते हैं।

नगर—मद्रास (जनसंख्या ५ लाख) शहर हिन्दुस्तान में तीसरे नम्बर का शहर। पर यह शहर कलकत्ता या बम्बई से अधिक खुला हुआ है। यहां से बम्बई, कालीकट, तूतीकोरन और कलकत्ता को रेलवे लाइने गई हैं। बकिंघम नहर मद्रास को कृष्णा डेल्टा और बेजवादा से मिलती है। पर मद्रास का बन्दरगाह कृत्रिम है। इसका पृष्ठ प्रदेश भी अधिक धनी नहीं है। इसलिये यहां का विदेशी व्यापार अधिक बढ़ा चढ़ा नहीं है। यहां से दिसावर को चमड़ा अधिक जाता है। चमड़े का काम भी यहां अधिक होता है। कुछ रुई के भी कारखाने हैं। मद्रास के दक्षिण में पाण्डिचेरी बन्दरगाह फ्रांसीसियों अधिकार में हैं। तूतीकोरन और धनुषकोटि (रामेश्वरमद्वीप) से लंका को जहाज जाया करते हैं।

वैगाई नदी के किनारे मदुरा एक बहुत पुराना नगर है। यह शहर रंगने, साफा बुनने और पीतल के बर्तन बनाने के लिये प्रसिद्ध है। त्रिचनापल्ली और तंजोर भी भीतर को ओर प्राचीन एतिहासिक नगर है।

उत्तरी सरकार—यह प्रदेश नेलोर शहर के पास से आरम्भ हो कर उड़ीसा तक चला गया है। इस प्रदेश के बीच में कृष्णा और गोदावरी के विशाल डेल्टा हैं। पश्चिम की ओर पूर्वीघाट की पहाड़ियां
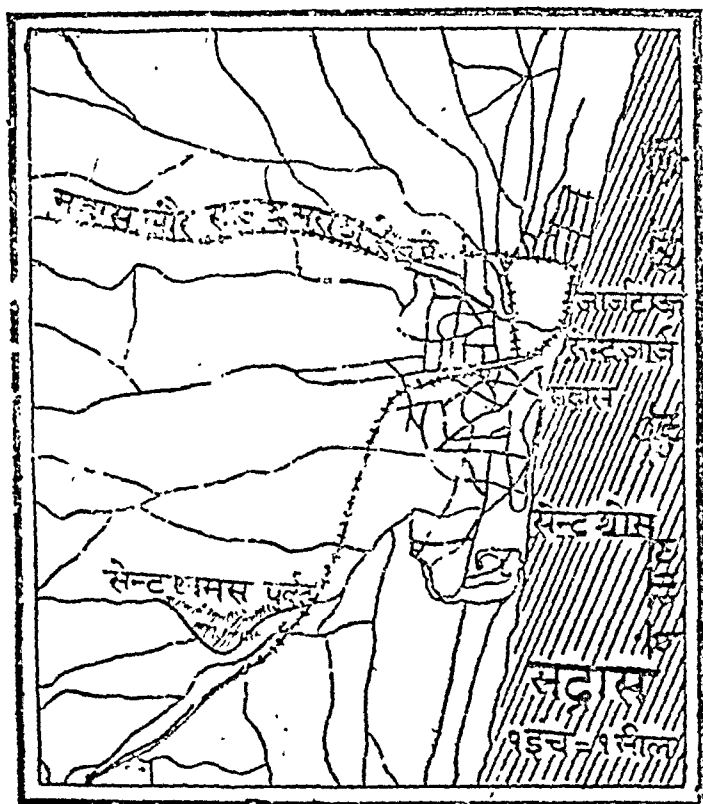
९८—मद्रास नगर की स्थिति

हैं। उत्तर की ओर महानदी के डेल्टा ने बढ़ते-बढ़ते चिल्का झील को समुद्र से अलग कर दिया है। नदियों की कांप से बनी हुई जमीन उपजाऊ है। पुरानी पहाड़ियां अक्सर नंगी और वीरान हैं। पर किसी किसी पहाड़ी की पुरानी और कड़ी चट्टानों से मूल्यवान खनिज मिलते हैं। विजिगापट्टम के पास बहुत सा मैंगनीज़ निकलता है।

जलवायु—उत्तरी सरकार में करनाटक से अधिक वर्षा होती

है। यह वर्षा दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के चलने पर ग्रीष्म ऋतु में होती है।

उपज—इसप्रदेश की प्रधान फसल चावल है। पर दक्षिण की ओर वर्षा की कमी के कारण ज्वार बाजरा अधिक होता है और चावल कम होता है। उत्तर की ओर वर्षा की मात्रा बढ़ने से चावल अधिक और ज्वार-बाजरा कम होता है। यहां तक कि उड़ीसा की सीमा के पास केवल चावल ही होता है। ज्वार और बाजरा का प्रायः अभाव है। कृष्णा और गोदावरी के डेल्टा में सिंचाई का प्रबन्ध है। इसलिये यहां पर वर्षा कम होने पर भी चावल ही उगाया जाता है। कुछ उजाड़ पहाड़ियों और चरागाहों को छोड़कर प्रायः शेष सारी जमीन खेती के काम आती है यह एक धनी प्रदेश है। प्रति वर्गमील में प्रायः ३५० मनुष्य रहते हैं यहाँ के रहने वाले तेलिगू भाषा बोलते हैं।

कर्नाटक के तट की तरह उत्तरी सरकार के तट पर भी प्राकृतिक बन्दरगाहों का अभाव है। रेत और उथले पानी कारण बड़े बड़े जहाजों को छोटे छोटे बन्दरगाहों से एक दो मील की दूरी पर ठहरना पड़ता है।इस ओर विजगापट्टम का बन्दरगाह कुछ कुछ सुरक्षित है। इसे सुधारने का काम हाल में समाप्त हुआ। कोकेनाडा बन्दरगाह का पृष्ठ प्रदेश बहुत धनी है। गोपालपुर, कलिंगपट्टम्, विमलीपट्टम् और मछलीपट्टम् दूसरे छोटे छोटे बन्दरगाह हैं जिनमें कुछ कुछ तटीय व्यापार होता है। मद्रास प्रान्त के विलारी, कर्नूल, कडापा और अनन्तपुर जिले मैसूर और हैदराबाद राज्यों के बीच में स्थित हैं और दक्खिनी पठार-प्रदेश के अंग हैं।

बाईसवाँ अध्याय

मध्यप्रान्त या महाकौशल

मध्यप्रान्त वा महाकौशल (१,३३०००) वर्गमील (जनसंख्या १ करोड़ ७० लाख) उत्तर में, इन्दौर, भूपाल, बुदेलखंड आदि मध्य-भारत की रियासत से घिरा है, इसके उत्तर-पूर्व में छोटा नागपुर, दक्षिण में मद्रास-प्रान्त और हैदराबाद, पश्चिम में बम्बई प्रान्त है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी अधिक से अधिक चौड़ाई ४६२ मील और पूर्व से पश्चिम तक लम्बाई ५०६ मील है।

इस प्रांत का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही मनोहर है! वनाच्छादित पहाड़ प्रायः प्रत्येक स्थान से दृष्टिगोचर होते हैं। वे कहीं कुछ दूर हैं, कहीं पास हैं। ऊँची जमीन और प्रबल वर्षा होने के कारण यहां से कई नदियां निकलती हैं। नर्मदा और ताप्ती पश्चिम की ओर बहती हैं। वर्धा नदी दक्षिण-पूर्व की ओर वेनगङ्गा और इन्द्रावती दक्षिण की ओर बहती हैं।

इस प्रकार इस प्रांत को कई भागों में बाँट सकते हैं:—

(१) उत्तर में विन्ध्याचल का पर्वतीय प्रदेश है, जो गङ्गा के मैदान की ओर ढालू हो गया है। विन्ध्या पर्वत प्रांत के एक सिरे से दूसरे सिरे को पार करता हुआ गंगा के तट(चुनार) तक चला गया है। पर यह पर्वत छोटी-छोटी पर्वत-श्रेणियों में बँट गया है। उनके नाम भी भिन्न हैं यह मध्य प्रांत में भानेर और आगे चलकर बुन्देलखंड में कैमूर नाम से प्रसिद्ध है। भानेर श्रेणी नर्मदा की ओर एकदम सपाट है। पर गंगा की ओर क्रमशः से ढालू है।

(२) इस प्रदेश के नीचे नर्मदा की तंग घाटी है। यह घाटी समुद्रतट से १,००० फुट ऊँची है। मध्य भाग में यह लगभग २० मील चौड़ी और २०० मील लम्बी है। पर्वतीय प्रदेश में इसकी चौड़ाई बहुत कम हो गई है। कुछ स्थानों में यह प्रपात बनाती है।
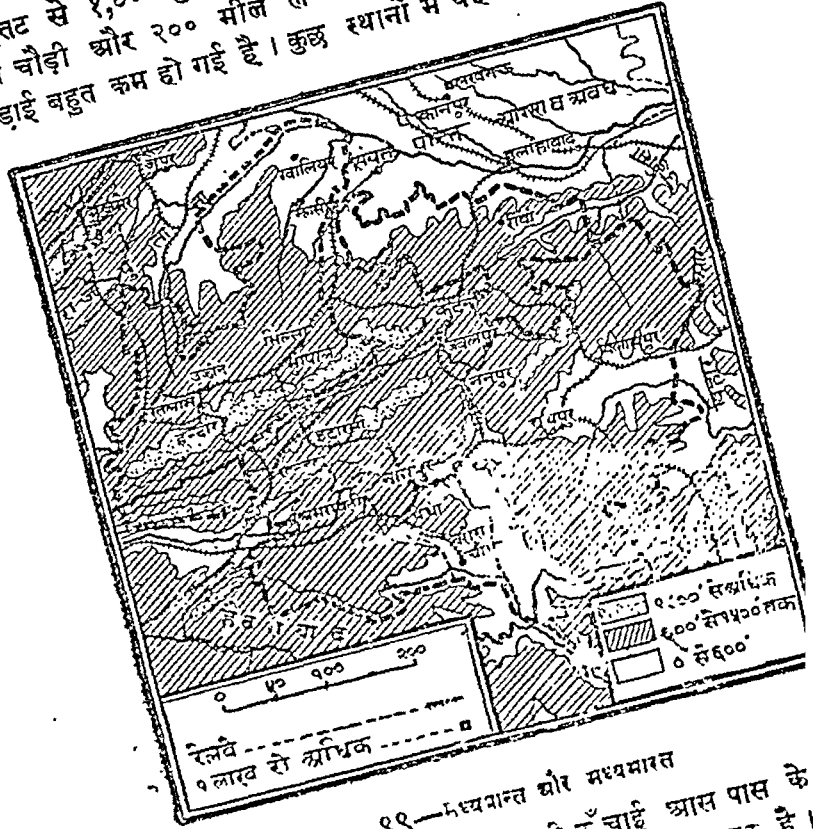
९९—मध्यप्रान्त और मध्यभारत

(३) सतपुड़ा पर्वत के पठार की ऊँचाई आस पास के मैदान से २,००० फुट है। पठार की चौड़ाई ४० मील तक है। विन्ध्या के समान सतपुड़ा पर्वत भी मध्यप्रान्त के उत्तरी भाग को पार करता हुआ छोटा नागपुर के पठार में मिल गया है। इसकी मध्यवर्ती

महादेव और पूर्वी श्रेणी मैकल कहलाती है यह पहाड़ियां दक्षिण की ओर एकदम ढालू हैं । पर उत्तर की ओर वे क्रमशः ढालू होती गई हैं। महादेव पर्वत पर ही लगभग ४,००० फुट की ऊँचाई पर पचमढ़ी नगर स्थित है । मैकल पर्वत की सर्वोच्च चोटी (अमर-कंटक ३,२०० फुट ऊँची है ।

(४) नागपुर जो विशाल और ऊँचा मैदान मध्यप्रान्त के बीच में स्थित है । इसका ढाल दक्षिण में वांधों और वानगङ्गा की घाटियों की ओर है। पूर्व में इसका ढाल छत्तीसगढ़ी मैदान में महानदी की घाटी की ओर हो गया है ।

(५) दक्षिणी कोने में गोदावरी में बायें किनारे पर ऊँचा नीचा जंगली प्रदेश है। यहीं वस्तर का देशी राज्य है ।

(६) वर्धा नदी के पश्चिम में (सतपुड़ा की) ग्वालीगढ़ और (दक्षिण) अजन्त पर्वत-श्रेणी तथा पेनगङ्गा से घिरा हुआ वरार का उपजाऊ प्रदेश है ।

जलवायु

ऊँचाई के कारण मध्यप्रान्त का तापक्रम अधिक विकराल नहीं होने पाता है। वैसे वहाँ कभी कभी (पचमढ़ी में) ३० अंश फारेनहाइट से (दक्षिण की ओर चांदी में) ११९ अंश फारेनहाइट तक तापक्रम देखा गया है। यहाँ की औसत वार्षिक वर्षा प्रायः ५० इंच है। इसी से यहाँ की पहाड़ियाँ अक्सर घास या बन से ढकी हुई दिखाई देती हैं। पर इन पहाड़ियों ने प्रान्त की ⅔ जमीन घेर रक्खी है। केवल ⅓ जमीन खेती के लिये अनुकूल है। घाटियों में उपजाऊ काली मिट्टी है। यहां कपास और धान की खेती होती है। खुश्क भागों में ज्वार, बाजरा दाल, तिलहन और गेहूँ होता है छत्तीसगढ़ के उपजाऊ मैदान में धान और गेहूँ बहुत होता है। वरार का प्रदेश कपास के लिए सर्व प्रसिद्ध है ।

इस प्रान्त की अधिकतर भूमि वन और पर्वत से घिरी होने के कारण जनसंख्या कम है। बरार और नागपुर की ओर मराठी भाषा शेष भागों की प्रधान भाषा हिन्दी है। पूर्व की ओर कुछ लोग उड़िया बोलते हैं। पहाड़ी जातियों की भाषा गोंड है। अधिकतर लोग गांवों में रहते हैं। शहर कम हैं। लगभग १ लाख की आबादी वाले केवल दो शहर (नागपुर और जबलपुर) हैं।

जबलपुर

इस शहर की स्थिति बड़े महत्व की है। यह शहर नर्मदा की ऊपरी घाटी में सतपुड़ा से उत्तर की ओर समुद्रतल से १,३४० फुट की ऊँचाई पर बसा है। यह स्थान ऐसा है जहां से उत्तर की ओर गङ्गा की घाटी में इलाहाबाद को दक्षिण की ओर नागपुर और (छत्तिसगढ़ मैदान में) बिलासपुर को सुगम मार्ग गये हैं। पश्चिम की ओर नर्मदा के किनारे किनारे और भी अधिक अच्छा मार्ग गया है। बम्बई से छिउकी, (इलाहाबाद होकर कलकत्ता जाने वाली रेल इसी रास्ते से जाती है।

जबलपुर में (पास ही अच्छी चिकनी मिट्टी मिलने से) खपड़ैल और मिट्टी के बरतन अच्छे मिलते हैं। जबलपुर के पास ही नर्मदा प्रपात और संगमरमर की खान है।

नागपुर

यह शहर सतपुड़ा के दक्षिण में एक विशाल मैदान के मध्य में स्थित है। पहले यह शहर भोंसला राज्य की राजधानी था। आजकल यह वर्त्तमान मध्यभारत की राजधानी है। कपास के प्रदेश में स्थित होने से यहां कई पुतलीघर हैं। यह नगर बम्बई से कलकत्ता जाने वाले सीधे रेल-मार्ग पर स्थित है।

नागपुर से १८० मील पूर्व उपजाऊ छत्तीसगढी मैदान के बीच में सबसे बड़ा नगर रायपुर है। खण्डवा, शहर नया है। यहां पर ग्रेट इण्डियन पेनिन्सुला रेलवे और अजमेर से आने वाली बाम्बे बड़ौदा और सेन्ट्रल इण्डियन रेलवे का जङ्क्शन है।

बरार प्रदेश में अमरावती शहर कपास का केन्द्र है। और रेल द्वारा दूसरे स्थानों से जुड़ा हुआ है।

—:—

हैदराबाद

हैदराबाद का राज्य ८२,००० वर्गमील, जनसंख्या एक करोड़ ६० लाख हिन्दुस्तान के देशी राज्यों में सब से बड़ा और धनी है। पर भारतवर्ष में स्वाधीनता का आरम्भ होते ही इस राज्य में अराजकता बढ़ गई। यहां के निजाम अपनी हिन्दू प्रजा को उत्तरदायी शासन अधिकार न देकर बाहरी मुसलमानों और बाहरसेमगाये हुये शस्त्रों के बल पर अपना निरंकुश शासन बनाये रखना चाहते हैं। उसके रजाकार लूट मार करने में अग्रसर रहे हैं। उत्तर में इस राज्य को पेनगङ्गा नदी बरार से और पर्णहिता तथा गोदावरी मध्य-प्रान्त से अलग करती हैं। दक्षिण में तुङ्गभद्रा, कृष्णा नदियां और पूर्वी घाटी की कुछ पहाड़ियां हैदराबाद को मद्रास प्रान्त से अलग करती हैं। पश्चिम में यह राज्य बम्बई प्रान्त से घिरा हुआ है। यह सब का सब राज्य पठार पर स्थित है। इसकी औसत ऊँचाई १,२५० फुट है। पर पृथिवी का ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। पश्चिमी भाग या मराठवाड़ा में लावा की काली मिट्टी है और लोगों की भाषा मराठी है। पूर्वी भाग या तेलिङ्गना की जमीन कड़ी चट्टानों के घिसने से बनी है। इस ओर के लोगों की भाषा तेलिगू है।

जलवायु

पठार के मध्य में स्थित होने से यहां वर्षा कम होती है। वर्षा भर की वर्षा का औसत प्रायः ३० इंच है। अधिकतर वर्षा ग्रीष्म-ऋतु में होती है। ऊँचाई के कारण ताप-क्रम अधिक नहीं हो पाता है। औसत ताप-क्रम ८० अंश फ़ारेनहाइट रहता है।

उपज

रेगर या काली मिट्टी में पश्चिम की ओर कपास होती है। नदियों की सजल घाटियों में अथवा तालाबों द्वारा सींचे जाने वाले भागों में

चावल होता है। ज्वार और बाजरा खुश्क भागों में बिना सिंचाई के होता है कहीं कहीं गेहूँ भी होता है। हैदराबाद राज्य में ही कोयले
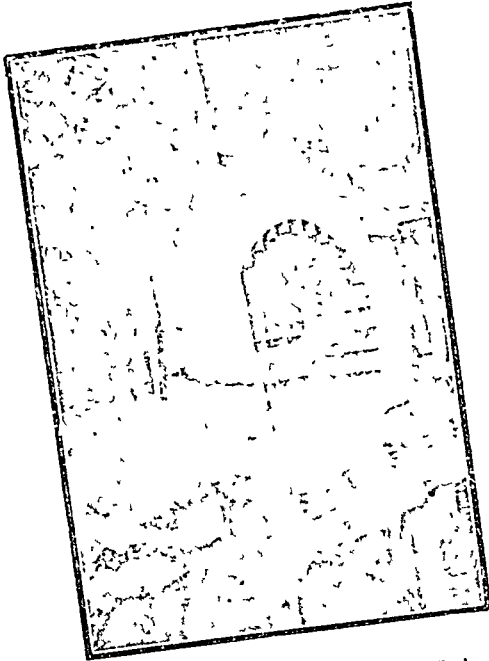
१००—अजन्ता की प्रसिद्ध गुफा

की सबसे अधिक दक्षिणी खान सिंगरेनी में स्थित है यह नगर बेल-वादी जंकशन के पास ही है। इसी कोयले से प्रायः समस्त दक्षिणी भारत का काम चलता है।

नगर—हैदराबाद शहर (जनसंख्या ४ लाख) कृष्णा की एक सहायक (मूसी) नदी पर राज्य के प्रायः मध्य में बसा है। इस छोटी सी पहाड़ी नदी पर तीन चौड़े पुल बने हुये हैं, जो हिन्दू मुहल्लों को

प्रधान नगर से मिलाते हैं। मुख्य नगर में रुहेला, अरबी और पठान लोगों की प्रधानता है।

हैदराबाद के पास ही कुछ अधिक (५० गज) ऊँची जमीन पर सिकन्दराबाद है। यहां दक्षिणी भारत भर में सबसे बड़ी छावनी है। हैदराबाद से ६ मील की दूरी पर गोलकुण्डा है, जहाँ पहले राजधानी थी, लेकिन आजकल यहाँ सरकारी कारखाना और जेल है। गुलबर्गा, बीदर, मञ्जीरा नदी पर) औरंगाबाद दौलताबाद, या देवगढ़, वारंगल पुरानी राजधानियाँ हैं। राज्य के उत्तरी-पश्चिमी कोने पर अलोरा में अति प्राचीन हिन्दू और अजन्ता में बौद्ध शिला-मन्दिर हैं। इस राज्य में प्रायः ५० फीसदी हिन्दू रहते हैं। लेकिन राजा मुसलमान हैं। राज्य की आमदनी लगभग साढ़े सात करोड़ रुपये हैं यहां के निजाम संसार भर में सबसे अधिक धनी व्यक्ति हैं।

मैसूर—मैसूर राज्य (२,२२,००० वर्गमील, जनसंख्या ६६ लाख) चारों ओर से मद्रास प्रान्त से घिरा हुआ है। यह राज्य दो प्राकृतिक भागों में बँटा हुआ है। पश्चिम की ओर मालनद या पहाड़ी प्रदेश है। पूर्व की ओर मैदान है। मालनद में वनाच्छादित पर्वत बड़े ही सुन्दर हैं पश्चिमी घाट की ओर प्रबल वर्षा होती है। पर मध्य में प्रतिवर्ष २० इंच से अधिक पानी नहीं बरसता है। शीतकाल का अल्प तापक्रम ५१ और ग्रीष्म का तापक्रम ८१ अंश फारेनहाइट रहता है। उत्तरी मैदान की काली मिट्टी में कपास और ज्वार-बाजरा की फसलें हैं। दक्षिण-पश्चिम में सिंचाई की सुविधा के कारण चावल और ईख उगाई जाती है। लगभग ४० हजार एकड़ जमीन में सहतून के पेड़ लगे हुए हैं। इनकी पत्तियां रेशम के कीड़ों को खिलाई जाती है सोने की खानों को छोड़ कर मैसूर राज्य को सबसे अधिक लाभ रेशम के कारबार से होता है। चन्दन के पेड़ों से भी लाभ होता है। मैसूर और बङ्गलौर में चन्दन का तेल निकालने के लिये कारखाने बन गये हैं।

मैसूर राज्य में शिवसमुद्रम् द्वीप के पास कावेरी नदी ३८० फुट ऊँचा प्रपात बनाती है। इसकी बिजली से १७० मील की दूरी पर कोलार की खानों में सोना निकाला जाता है। इसी बिजली से मैसूर और बङ्गलोर शहरों में रोशनी होती है। इसी राज्य में बिजली की मांग बढ़ रही है। जरसोपा प्रपात की बिजली भद्रावती में लकड़ी का कोयला बनाने, लकड़ी की शराब तैयार करने और लोहा साफ करने के काम आवेगी। हाल में कृष्णराजासागर नाम का विशाल ताल बना है। इससे सवा लाख एकड़ जमीन सींची जायगी और बिजली भी तैयार होगी। सिंचाई का इससे भी अधिक बड़ा बांध मेटूर है

मैसूर राज्य की अबादी बहुत घनी नहीं है। प्रति वर्गमील में केवल २०० मनुष्य रहते हैं। दक्षिण-पश्चिम के लोग कनारी भाषा बोलते हैं। बाकी लोगों की भाषा तेलिगू है। बङ्गलौर शहर समुद्रतल से ३,००० फुट ऊँचाई पर बसा है। यहां की जलवायु बड़ी अच्छी है। यहां अंग्रेजी छावनी थी। छावनी की जमीन अंग्रेजी राज्य में गिनी जाती थी। मैसूर शहर राज्य की राजधानी हैं। इन दोनों शहरों में रेशम और चन्दन के कारखाने हैं।

कोलार के आस पास खानों से सोना निकलता है।

श्रृङ्गापट्टम (सिरिंगापट्टम) कावेरी के एक द्वीप पर बसा है। यहां हैदरअली की राजधानी थी।

कुर्ग

यह प्रान्त (१,५८२ वर्गमील, जन संख्या २ लाख ८४ हजार) मैसूर के दक्षिण-पश्चिम में पश्चिमी घाट के ढालों पर स्थित है। १९०३ ई० से कुर्ग अंग्रेजी राज्य में आ गया था। यहां साल में प्रायः १२० इंच वर्षा होती है। इसलिये यह जिला अधिकतर बन से ढका है। यहां के लोग किसान हैं। धान की खेती के सिवा यहां कहवा और चाय भी होती है इस जिले का प्रबन्ध मैसूर के रेजीडेण्ट के हाथ में रहा है जो बङ्गलोर में रहता हैं पर उनका सहायक (कमिश्नर) मरकरा में रहता है। जो कुर्ग की राजधानी है।

तेईसवाँ अध्याय

मध्यभारत

मध्यभारत (७८,००० वर्गमील, जनसंख्या सवा करोड़) में ही १६,००० फुट ऊँचा मालवा पठार शामिल है। इस पठार का क्षेत्रफल प्रायः ३५,००० वर्गमील है। ग्वालियर के उत्तर-पूर्व में बुन्देलखंड का
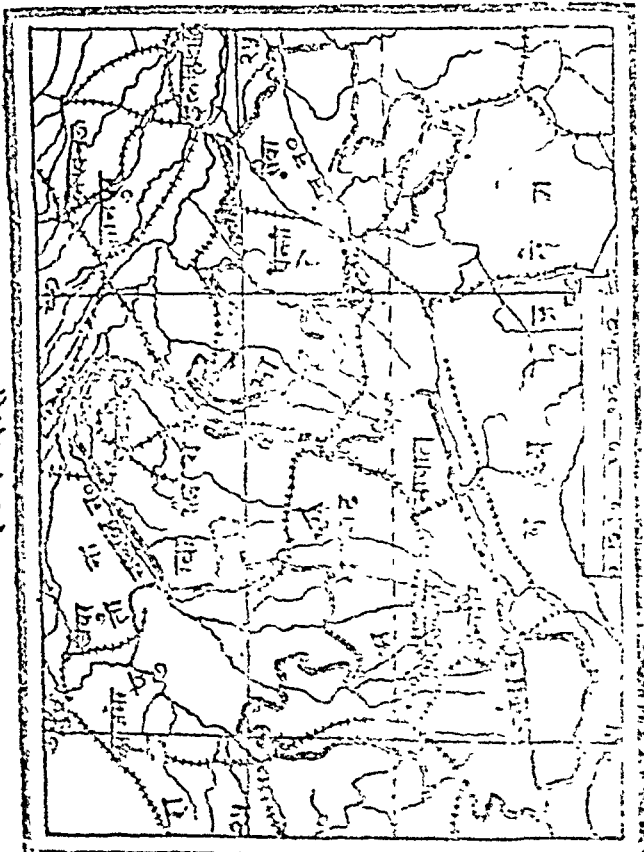
१०१—मध्यभारत के देशी राज्य

प्रदेश कुछ नीचा है। इसका क्षेत्रफल १८,००० वर्गमील है विन्ध्या और सतपुड़ा श्रेणियों के समीप मध्यभारत के पर्वतीय **प्रदेश** का क्षेत्रफल

प्राय: २५,००० वर्ग मील है। सयुक्तप्रान्त की झांसी कमिश्नरी ने मध्य भारत को दो भागों में बांट दिया है इन दोनों में पश्चिमी भाग अधिक बड़ा है। पर दोनों का ढाल उत्तर या उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां का प्राय: सब पानी चम्बल, सिन्ध वेतवा और केन नदियों द्वारा यमुना में बह जाता है। टोंस और सोन नदियां सीधा गङ्गा नदी में मिलती है। मध्य भारत के केवल १०० मील नर्मदा अपना पानी पश्चिम की ओर बहाती है। इस प्रदेश में केवल ३० या ४० इञ्च पानी बरसता है। इस लिये यहां की नदियों में अधिक पानी नहीं रहता है। पर पठारी भूमि होने के कारण वर्षा का अधिकांश पानी नदियों में बह आता है। इससे यहां की नदियों में अचानक बाढ़ आती जिस नदी में ग्रीष्म-ऋतु डुब्की लगाने भर को पानी नहीं रहता है, वही नदी वर्षा-ऋतु में उमड़ कर भयानक रूप धारण कर लेती है।

पहले मध्य भारत में १४८ रियासतें शामिल थीं। इनमें ग्वालियर इन्दौर, भोपाल, धार, देवास, ओरछा दतिया और रींवां प्रधान थीं। १८ मई १९४८ को मध्य भारत या मालव यूनियन का उद्घाटन हुआ इसमें ग्वालियर इन्दौर और मध्य भारत को अन्य छोटी रियासतें शामिल हैं। इसका क्षेत्रफल ४५००० वर्गमील जनसंख्या ७२ लाख और वार्षिक आय ८ करोड़ है।

यह राज्य (२९,००० वर्गमील जनसंख्या २५ लाख) मध्य भारत में सबसे बड़ा और धनी है। सिन्धिया महाराज राज्य प्रमुख हैं। ग्वालियर शहर अब मध्य भारतसंघ की शीत कालीन राजधानी है। यह नगर बम्बई से दिल्ली जाने वाली जी० आई०पी० रेलवे का एक प्रधान स्टेशन है। यहां का प्रसिद्ध पहाड़ी किला डेढ़ मील लम्बा और ३४ फुट ऊँचा है। पुराना शहर किले के पास है। नया शहर लश्कर कहलाता है और पुराने शहर से दो मील दक्षिण की ओर है।

उज्जैन (या अवन्ती) शहर सिप्रा नदी के किनारे एक तीर्थ स्थान और ग्वालियर राज्य के मालवा जिले की राजधानी है।

ग्वालियर राज्य में खेती के अतिरिक्त कपास ओटने का काम सब कहीं होता है। चन्देरी में सुन्दर मलमल बनती है। चमड़े का काम कई जगह होता है।

इन्दौर—यह (९,६७० वर्ग मील, जनसंख्या १६,१८,०००) राज्य कई अलग अलग टुकड़ों में बँटा हुआ है। सबसे बड़ा भाग नर्मदा के दक्षिण में स्थित है। सबसे बड़ा नगर इन्दौर है यह मध्य

भारत संघ की ग्रीष्म कालीन राजधानी है। अजमेर से खंडवा जाने वाली लाइन पर यह एक बड़ा स्टेशन और व्यापारिक केन्द्र है। यहाँ कपास ओटने और कपड़ा बुनने की कई मीलें हैं।

इन्दौर के पास ही मऊ में मध्य भारत की सबसे बड़ी छावनी है

भूपाल—यह (७,००० वर्गमील, जन संख्या ७,२०,०००) राज्य हैदराबाद के बाद सबसे बड़ा मुसलमानी राज्य है। भूपाल शहर ही इस राज्य की राजधानी है यह शहर जी० आई पी० की प्रधान लाइन का एक बड़ा स्टेशन है यहां से बी० बी० एण्ड सी आई० रेलवे की एक शाखा उज्जैन को गई है।

धार—इस (१,८०० वर्ग मील, जनसंख्या लगभग २ लाख ४३ हजार राज्य की राजधानी भी धार नगर है। यह नगर इन्दौर के पश्चिम में विन्धाचल पठार के उत्तरी भाग में स्थित है।

देवास—यह राज्य (८४० वर्गमील, जनसंख्या १ लाख और इसी नाम की राजधानी इन्दौर के दक्षिण में स्थित है।

ओरछा और दतिया—ओरछा (२,००० वर्गमील, जनसंख्या २ लाख २० हजार) दतिया (९१२ वर्गमील, जनसंख्या ४६ हजार) राज्य बुन्देलखंड में स्थित है। ओर्छा की राजधानी टीकमगढ़ और दतिया की राजधानी दतिया शहर है।

पन्ना—यह (यह २५० वर्गमील, जनसंख्या दो लाख) राज्य हीरा की खानों के लिये प्रसिद्ध है। पन्ना शहर राज्य की राजधानी है।

रीवां—(१३,००० वर्गमील, जनसंख्या १६ लाख) राज्य बुन्देलखंड में शामिल है। इस राज्य में खनिज पदार्थ बहुत है। उमरिया में कोयला निकलता है। रीवां शहर कैमूर पर्वत के उत्तर में इसी राज्य की राजधानी है। दूसरा बड़ा शहर सतना है जो जबलपुर से इलाहाबाद आने वाली लाइन पर एक बड़ा स्टेशन है। यहां से रीवां को मोटर आते जाते हैं। ४ अप्रैल १९४८ को रीवां राज्य और बुन्देलखंड के राज्यों ने मिलकर विन्ध्यप्रदेश का निर्माण किया। इस संघ का क्षेत्रफल २४६१० वर्गमील जनसंख्या ३६ लाख और वार्षिक आय ढाई करोड़ है।

चौबीसवाँ अध्याय

(राजपूताना) राजस्थान

१,३०,२५० वर्गमील जनसंख्या १ करोड़ बारह लाख ३२ हज़ार मध्यभारत के पठार और सिन्ध गङ्गा के मैदान के बीच में राजपूताना का प्रदेश स्थित है। कर्करेखा राजपूताना के बहुत ही छोटे दक्षिणी सिरे को काटती है। तीस उत्तरी अक्षांश रेखा राजपूताना के उत्तरी सिरे को छूती हुई जाती है। इस प्रकार उत्तर से दक्षिण तक राजपूताना की लम्बाई ५८० मील है। अरावली पर्वत ने राजपूताना के प्राय: वर्गाकार प्रदेश को दो विषम भागों में बांट दिया। अरावली के उत्तर-पश्चिम में राजपूताना का ३/५ भाग स्थित है। यह प्रदेश थार रेगिस्तान का ही अंग है। दूसरा २/५ भाग अधिक ऊँचा और अधिक उपजाऊ है। इस प्रदेश में कई देशी राज्य शामिल हैं। केवल बीच में अजमेर-मेरवाड़ा का गरुद्वीप का छोटा प्रान्त है।

अरावली पर्वत आबू की (५,६५६ फुट ऊंची) चोटी से आरम्भ होकर दिल्ली तक चले गये हैं। अजमेर तक इनकी अटूट श्रेणी प्राय: १५००० फुट ऊँची है। पश्चिम की ओर इनका उतार एक दम ढालू है। पर पूर्व की ओर वे क्रमशः ढालू हो गये हैं। इस ओर कुछ वर्षा होने से ये पेड़ों से भी ढके हैं। पर जैपुर से दिल्ली तक अरावली का केवल ढांचा रह गया है। दो दो या तीन-तीन मील की दूरी पर रेतीले मैदान के ऊपर छोटे छोटे पहाड़ी टीले उठे हुये हैं। वर्षा की कमी से प्राय: बिल्कुल नग्न है।

अरावली के पश्चिम में बिल्कुल रेतीला उजाड़ है। जगह-जगहपर चार-पांच सौ फुट ऊँचे रेतीले या पथरीले टीले हैं। जैसलमेर और जोधपुर के पास दो तीन सौ फुट ऊँची पहाड़ियां हैं। वर्षा का प्राय: अभाव होने से इस ओर नदी भी नहीं है। यहां की एक मात्र लूनी (या नम-

कीन नदी में कभी कभी कुछ नमकीन पानी रहता है। पीने का पानी बहुत गहरे कुओं से मिलता है। इधर का धरातल भी अक्सर रेतीला और नमकीन है। कुछ ही अच्छे भागों में कांटेदार झाड़ियां और छोटे पेड़ हैं। जहां कुछ पानी मिलता है और ज्वार या बाजरा उगाने की सुविधा है वहां गांव बसे हुए हैं। जब कुएँ का पानी खारी हो जाता है या समाप्त हो जाता है तभी गांव भी उजड़ जाता है इधर के लोग अधिकतर, भेड़, बकरी और ऊँट पालते हैं। कहीं कहीं (जैसे बीकानेर में) ऊँनी कम्बल तैयार किये जाते हैं। इसलिये इधर आबादी भी बहुत कम है। जैसलमेर राज्य (१६०८० वर्गमील जन संख्या ७६,०००) में प्रति वर्गमील में केवल ४ मनुष्य रहते हैं। इसी से बहुत दूर तक रेल या अच्छी सड़क का भी नाम नहीं है। जैसलमेर की अपेक्षा बीकानेर (२३,३१५ वर्गमील जनसंख्या ९,१६,३००)और जोधपुर ३५,००० वर्गमील जनसंख्या २२ लाख) का हाल कुछ अच्छा है। बीकानेर के उत्तरी भाग में कुछ दूर तक एक नहर भी लाई गई है। नहर का पानी कहीं तली ही न सोख जावे, इसलिये नहर की तली और दीवारें सीमेन्ट लगाकर पक्की बनाई गई हैं। बीकानेर और जोधपुर रेलों से भी जुड़े हुये हैं। इधर की रेल-यात्रा बड़ी विकराल है। स्टेशनों पर पेड़ों या फुलवारी का नाम नहीं है। पीने भर को काफी पानी नहीं मिलता है। जूठे बर्तन बालू से मलकर पोंछ लिये जाते हैं। वे पानी से नहीं धोये जाते हैं। अरावली के पूर्व जमीन ऊँची है और वर्षा भी अधिक होती है यह पूर्वी भाग दक्षिण की ओर अधिक ऊँचा और उपजाऊ है। अधिक दक्षिणी भाग मालवा पठार का ही अंग है। इस ओर पहाड़ी भागों में वन हैं। मैदान में चारागाह और खेत हैं। यहाँ रबी और खरीफ दोनों ही फसलें होती हैं। दक्षिणी भाग में उदयपुर या मेवाड़ (१२६९४ वर्गमील, जनसंख्या १६ लाख) का राज्य है। इसके पास ही हल्दीघाटी का ऐतिहासिक युद्ध क्षेत्र और चित्तौड़ का प्रसिद्ध किला है। यहां की प्रधान नदी बनास है। बनास

और कम्बल के बीच में कोटा, बूंदी टोंक और बांसवाड़ा डूँगरपुर झला वार किशनगढ़ प्रतापगढ़, शाहीपुरा राज्यों ने उदयपुर राज्य के साथ मिल कर राजस्थान का संघ बनाया। इस संघ का क्षेत्रफल २८९, ८७७ वर्गमील जनसंख्या ४२ लाख और वार्षिक आय ३ करोड़ १७ लाख है। उदयपुर के राना राजप्रमुख हैं। उत्तर की ओर अलवर ३१४० वर्गमील जनसंख्या ७ लाख) भरतपुर (१९८२ वर्ग मील जनसंख्या ५ लाख) धौलपुर ११५५ वर्गमील जनसंख्या २,४०,००० और करौली १२४० वर्ग मील जनसंख्या डेढ़ लाख) राज्य ने मिलकर मत्स्य संघ बनाया है। प्राचीन मत्स्य का जैपुर राज्य (१०५८० वर्गमील जनसंख्या २६ लाख) इस संघ से अलग एक उत्तरदायी शासन वाला राज्य है। २७ अक्टूबर १९४७ को काश्मीर भारतीय सङ्घ में शामिल हुआ।

भारतीय रियासतों का एकीकरण

पहले १४ नवम्बर को हैदराबाद से समझौता हुआ। पर यहां रजाकारों ने ऐसा उपद्रव मचाया कि विवश होकर भारतीय सरकार ने यहां सेना भेजकर शान्ति स्थापित की।

उड़ीसा की २५ छोटी छोटी रियासतें १९४८ में उड़ीसा प्रान्त में शामिल हो गई। इनका क्षेत्रफल १८००० वर्गमील जनसंख्या ३० लाख, वार्षिक आय ८० लाख रुपये हैं।

छत्तीसगढ़ के १४ राज्य १ जनवरी १९४८ को मध्यप्रान्त में शामिल हो गये। इनका क्षेत्रफल ३८००० वर्गमील था। १ फरवरी को मकराई रियासत मध्यप्रान्त शामिल हो गई।

१५ फरवरी को काठियावाड़ की ४४९ रियासतों की युनियन सौराष्ट्र निर्माण हुआ। २२ फरवरी को बङ्गनपल्ली मद्रास प्रान्त में शामिल हो गई।

२३ फरवरी लोहारू पूर्वी पंजाब में शामिल हुआ २९ फरवरी को जूनागढ़ने मतगणना द्वारा भारतीय संघ में शामिल होने का निश्चय किया २ मार्च को पुदु कोटा मद्रास प्रान्त में शामिल हुआ। ८ मार्च को दक्षिण भारत की १६ रियासतों का प्रबन्ध बम्बई सरकार ने अपने हाथ में लिया। १७ मार्च १९४८ में मत्स्य यूनियन का उद्घाटन हुआ इसमें अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली राज्य सम्मिलित हुये

इसका क्षेत्रफल ७६०० वर्गमील जनसंख्या १८ लाख और वार्षिक आय दो करोड़ है। ४ अप्रैल को विन्ध्य प्रदेश यूनियन का उद्घाटन हुआ। इसमें रीवां राज्य और बुन्देलखंड के ३४ छोटे राज्य शामिल हैं। इसका क्षेत्रफल ४६२० वर्गमील, जनसंख्या ३६ लाख और वार्षिक आय ढाई करोड़ है।

१ अप्रैल को हिमालय प्रदेश को ३४ रियासतों की यूनियन का हिमाञ्चल नाम का संघ बना। इसका क्षेत्रफल ११००० वर्गमील और जनसंख्या दस लाख है।

१८ अप्रैल को राजस्थान यूनियन का निर्माण हुआ। इस यूनियन में कोटा बांसवाड़ा, बूँदी, डूँगरपुर, झालावाड़, किशनगढ़, परतापगढ़ शाहपुरा टोंक और उदयपुर के राज्य शामिल हुये। उदयपुर के राना राजप्रमुख और कोटा नरेश उपराज प्रमुख चुने गये। राजस्थान यूनियन का क्षेत्रफल २९६७७ वर्गमील जनसंख्या ४२'६०,००० और वार्षिक आय २ करोड़ १७ लाख रुपये है।

२८ मई को मालवी यूनियन अथवा मध्य भारत का उद्घाटन हुआ इसमें ग्वालियर, इन्दौर और मध्यभारत की अन्य छोटी रियासतें शामिल हैं इसका क्षेत्रफल ४,०७० वर्ग मील, जनसंख्या ७२ लाख और वार्षिक आय ८ करोड़ है। ग्वालियर नरेश राजप्रमुख और इन्दौर नरेश उपराज प्रमुख हैं। ग्वालियर नगर शीतकालीन और इन्दौर ग्रीष्मकालीन राजधानी होगी।

१० जून को गुजरात की (१८) बंसदा बरिया, खंभात छोटा उदयपुर धर्मपुर जोहर, बलासीनेर, लूनावारा, राजपीपला सांचिनसत इदार राधनपुर वियनगर, पालनपुर जुम्बू गोधा और सिरोही पूर्ण अधिकार प्राप्त रियासतें बम्बईप्रान्त में शामिल हुईं। सरायकेला और खरस्वान रियासतें बिहार प्रान्त में शामिल हुईं। बड़ौदा अलग उत्तरदायी राज्य है।

१५ जुलाई को पटियाला कपूर्थला, नाभा, फरीदकोट, झींद, मलेर कोटला, नालगढ़ और कल्सिया राज्यों का संघ (यूनियन) बना। महाराज पटियाला आजन्म राजप्रमुख हुये। कपूर्थला नरेश उपराज प्रमुख हुये। इसके पश्चात् सुन्दर (मद्रास) बनारस, रामपुर (संयुक्त-प्रान्त) जैसलमेर (राजपूताना कुच्चबिहार, त्रिपुरा, मनीपुर, खासी की पहाड़ी रियासतें (आसाम) सम्मिलत हो गईं।

पचीसवां अध्याय

*ब्रह्मा

बरमा या ब्रह्मा के देश स्वतन्त्र राज्य २,६२,००० वर्गमील जन-संख्या १ करोड़ ४७ लाख बंगाल की खाड़ी उत्तर-पूर्व की ओर प्राय: १० और २८ अक्षांशों और ९२ और १०२ पूर्वी देशांतर के बीच में स्थित है। इस प्रकार उत्तर से दक्षिण तक ब्रह्मा की बड़ी से बड़ी लंबाई १,२४६ मील और पूर्व से पश्चिम तक अधिक से अधिक चौड़ाई ५७५ मील है। ब्रह्मा का देश हमारे संयुक्त प्रान्त की अपेक्षा दुगुने से भी अधिक बड़ा है। पर ब्रह्मा की आबादी एक तिहाई से भी कम है।

ब्रह्मपुत्र-घाटी के पूर्व में हिमालय की पूर्वी पर्वत-श्रेणियाँ दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। उत्तर-पूर्व में सबका सब प्रदेश पहाड़ी है। आगे चल कर अराकानयोमा पीगूयोमा और टनासरयोमा तीन पर्वत श्रेणियाँ स्पष्ट हो गई हैं। इनके बीच में इरावदी, सीटांग और सालवीन नदियों की घाटियाँ घिरी हुई हैं।

ब्रह्मा का विशाल देश निम्न प्राकृतिक भागों में बांटा जा सकता है

१—अराकान और टनासरम का तटीय प्रदेश।

२—डेल्टा प्रदेश।

३—मध्यवर्ती खुश्क प्रदेश।

४—शान-राज्य का पठार।

५—उत्तरी-पश्चिमी पर्वतीय प्रदेश।

*१९३५ से पहले ब्रह्मा देश भारतवर्ष का एक प्रान्त था।
बरमी भाषा में 'योमा' शब्द का अर्थ पर्वत है।

(१) अराकान का तटीय प्रदेश अराकानयोमा और समुद्र के बीच में स्थित है। इसी प्रकार टनासरमयोमा और समुद्र के बीच में टनासरम का तटीय प्रदेश स्थित है। अराकान का तटीय प्रदेश उत्तर में अधिक चौड़ा है। दक्षिण में बहुत तंग हो गया है। मध्य में कालादान नदी का डेल्टा है। डेल्टा के पास ही अक्याब नगर स्थित है। अधिक आगे समुद्र ने तट को ऐसा काट दिया है कि समरी और चेदूबा आदि द्वीप प्रधान स्थल से पृथक हो गये हैं। इस प्रदेश की मुलायम चट्टानों में पहले मिट्टी का तेल बहुत था, लेकिन बार-बार भूचाल आने से यहां की प्रस्तरी भूत चट्टानें इतनी मुड़ गई कि उनका अधिकांश तेल निकल गया। केवल कहीं-कहीं भीतरी गरमी से प्राकृतिक गैस ऊपर उबल पड़ती है और अपने साथ कीचड़ ले आती है। इस तट पर अकसर कीचड़ के ज्वालामुखी पर्वत मिलते हैं। कहीं-कहीं इन्हीं कीचड़ के ज्वालामुखी पर्वतों से पहाड़ बन गये हैं। इधर का तट कटा-फटा अवश्य है पर इस तट के पास जहाजों को भीतरी चट्टानों से टकरा जाने का डर रहता है। तटीय मैदान बहुत ही तंग और कम आबाद है। पीछे की ओर अराकान की पहाड़ी दीवार इस प्रदेश को ब्रह्मा के और भागों से अलग करती है। इसलिये आक्याब को छोड़ कर अराकान-तट पर और कोई अच्छा बन्दरगाह है।

अराकान-तट के नीचे इरावदी डेल्टा के दक्षिण में टनासरम है। टनासरमयोमा और समुद्रतट के बीच का तटीय प्रदेश ब्रह्मा के अन्तर्गत है। इस टनासरम के पूर्व में स्याम का स्वाधीन राज्य है। अराकान तट की भांति टनासरम तट भी उत्तर की ओर अधिक चौड़ा और दक्षिण की ओर तंग है। दक्षिण की ओर प्रधान स्थल के बहुत कट जाने से मरगुई द्वीप-समूह बन गया है। उत्तर के चौड़े और उपजाऊ भाग में साल्वीन नदी के मुहाने पर इस प्रदेश का सबसे बड़ा बन्दरगाह
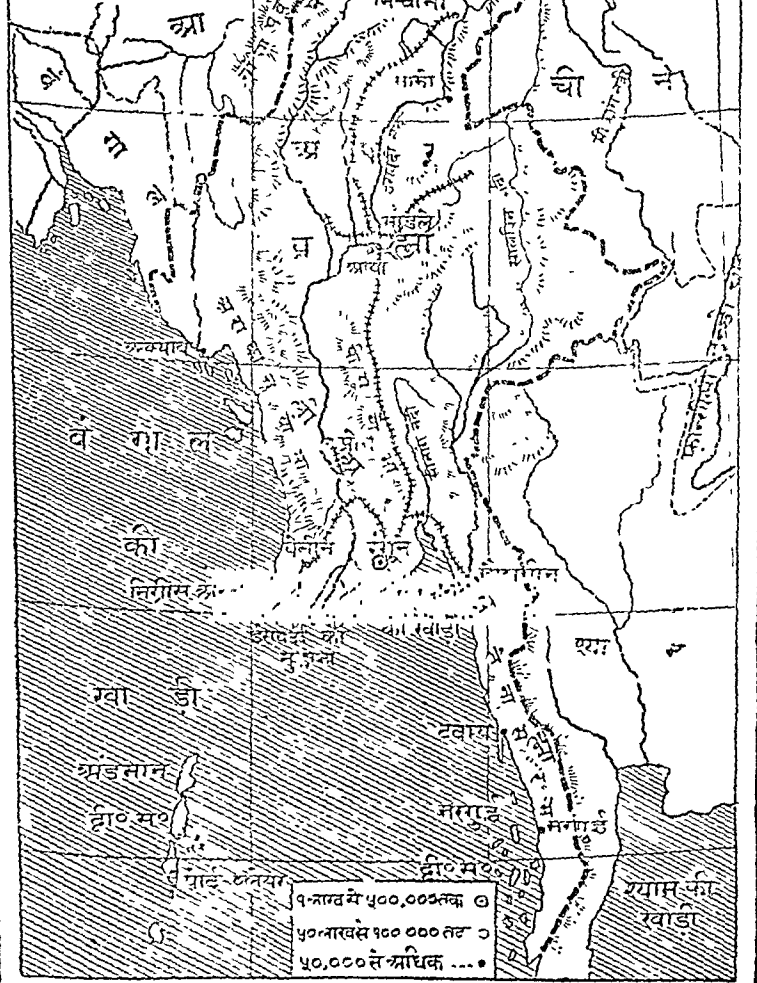
और शहर मौलमीन है। अराकान की अपेक्षा टनासरम की चट्टानें भी पुरानी और कड़ी हैं। इन कड़ी चट्टानों में टीन और टंगस्टन या वुल्फ़रैम .मशीन के काम के लिये नया फौलाद बनाने केलिये टंगस्टन लोहे में मिलाया जाता है, बहुत मिलती है। टीन को दिसावर भेजने का सबसे बड़ा केन्द्र टेवाय है।

अराकान और टनासरम के तट की जलवायु बहुत ही उष्णार्द्र है। सब कहीं ८० इञ्च से अधिक वर्षा होती है। वर्षा की मात्रा दक्षिण की ओर अधिक हो जाती है। टनासरम के दक्षिणी भागों में प्रायः २०० इञ्च वर्षा होती है। कभी-कभी प्रबल वर्षा के कारण बोये हुये खेतों के बीज तक बह जाते हैं और बेचारे किसानों को अपने खेतों दुबारा बोना पड़ता है। तापक्रम प्रायः सदा ऊँचा रहता है पर भूमध्य रेखा के अधिक पास होने से टनासरम तट पर वार्षिक-तापक्रम भेद केवल आठ या दस (फ़ारेनहाइट) अंश रहता है। उत्तर में अराकान तट पर १५ अंश रहता है।

प्रबल वर्षा होने से सघन वन बहुत हैं। जङ्गली पौधे इतनी तेज़ी से उगते हैं कि किसानों को अपना खेत साफ रखने में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। यहां की प्रधान उपज धान है। तरह तरह की तरकारी और फल भी बहुत होते हैं। तट के पास समुद्र में मछली मारने का काम सब कहीं अधिक होता है। मरगुई द्वीप समूह के आस-पास मोती भी निकाले जाते हैं।

डेल्टा-प्रदेश

बर्मा के डेल्टा प्रदेश में निचली इरावदी-घाटी और डेल्टा के अतिरिक्त सीटांग-घाटी और पीगू योमा का प्रदेश शामिल हैं। इरावदी की निचली घाटी और डेल्टा बहुत ही उपजाऊ कांप (कछारी मिट्टी) से बना है। यहां पहाड़ी का नाम नहीं है। सीटांग नदी की तंग घाटी

और छोटा डेल्टा भी बारीक कांप का बना होने से बहुत ही समतल और उपजाऊ है। सीटांग और इरावदी की घाटियों के बीच में पीगू योमा (पर्वत) प्रायः २००० फुट ऊँचा है। यह पर्वत भी नई चट्टानों से बने हैं जो बहुत कड़ी नहीं है।

जलवायु

इस प्रदेश की जलवायु उष्णार्द्र है। यहां का तापक्रम प्रायः तटीय प्रदेश के समान वर्ष भर ऊंचा बना रहता है। शीतकाल और ग्रीष्म ऋतु के तापक्रम का भेद भी अधिक नहीं होता है। इस प्रदेश में प्रायः साल भर में सब कहीं ५० इञ्च से ऊपर वर्षा होती है। वर्षा की मात्रा दक्षिण में अधिक (प्रायः १०० इञ्च) है पीगूयोमा और सीटांग-घाटी में वर्षा और भी अधिक होती है। ऊपर उत्तर की ओर यह वर्षा क्रमशः कम होती जाती है।

उपज

प्रबल वर्षा और उच्च तापक्रम ने यहां के कछारी प्रदेश को और भी अधिक उपजाऊ बना लिया है। बाढ़ के बाद बङ्गाल की तरह यह प्रदेश घास के हरे-भरे खेतों का एक विशाल समुद्र बन जाता है। जहां तक नजर जाती है खेतों में हरियाली ही नजर आती है। पर बंगाल की तरह यहां आबादी घनी नहीं है। गांव बहुत दूर-दूर हैं। पर समस्त ब्रह्मा की उपज का प्रायः ३।४ धान अकेले डेल्टा प्रदेश में होता है। आबादी कम होने के कारण बहुत सा चावल दिसावर जाता है। धान के अतिरिक्त यहां तम्बाकू, मकई आदि और भी कई चीजें पैदा होती हैं। पीगूयोमा प्रायः घने बन से ढका है। केवल कहीं कहीं साफ किये हुये स्थान में करने लोगों के गांव हैं। वहां के बनों में टीक (सागौन) के बन बड़े काम के हैं। यों तो टीक के पेड़ उत्तरी पर्वत प्रदेश में और भी अधिक हैं। पर पीगूयोमा की लकड़ी बड़ी आसानी से दिसावर को भेजी जा सकती है। बढ़ती हुई मांग के कारण यहां के

(टीक के, पेड़ बहुत पहले ही नष्ट हो गये होते। लेकिन सरकार ने यहां के टीक-वन को सुरक्षित घोषित कर दिया। इस घोषणा के अनुसार केवल बड़े पेड़ सरकारी आज्ञा से काटे जा सकते हैं। इससे यहां के पेड़ों की रक्षा हो गई। टीक के पेड़ काटने के बाद बड़े बड़े लट्ठे हाथी, भैंसो या बैलों के द्वारा किसी बड़े नाले में डाल दिये जाते हैं। वर्षा होने पर जब ये नाले उमड़ चलते हैं तो पश्चिमी ढाल की लकड़ी रंगून नदी द्वारा आरा चलाने वाले कारखानों में पहुँचती है। दिसावर जाने वाली चीजों में चावल और मिट्टी के तेल के बाद तीसरा स्थान टीक या सागौन की लकड़ी का ही है।

नगर

पीगूयोमा के वनों में करेन के लोगों के छोटे छोटे गांवों को छोड़ कर कोई बड़ा नगर नहीं है। सीटांग नदी छोटी है। इसमें बड़े बड़े स्टीमर नहीं चल सकते हैं। इसलिये नदी तटीय के नगर बहुत प्रसिद्ध नहीं हैं। लेकिन रंगून से मांडले जाने वाली रेल आरम्भ में सीटांग के ही मार्ग से ही जाती है। इस घाटी से पीगू और टोंगू आदि जो नगर इस रेल के पास हैं वे ही अधिक प्रसिद्ध हैं। पीगू नगर से एक शाखा लाइन) मौलमीनको गई है अधिक बड़े नगर इरावदी घाटीमें स्थित हैं। प्रोम नगर इरावदी के किनारे ऐसे मार्ग में स्थित है जहां ब्रह्मा का आर्द्र प्रदेश समाप्त होताहै। और खुश्क प्रदेश शुरु होता है। इस लिये इन दोनो प्रदेशों को उपज का विनिमय* यहीं होता है। इससे यह नगर व्यापार का केन्द्र हो गया है। प्रोम नगर ईरावदी नदी का एक प्रधान स्टीमर-स्टेशन है स्टीमर द्वारा यहां से रंगून पहुँचने में प्रायः चार दिन लगते हैं इसलिये ऊपरी भाग से आने वाले मुसाफिर और

* अदल बदल

आवश्यक सामान) यहां रेल पर सवार होकर रंगून जाते हैं। यहां से रेल द्वारा रंगून पहुँचने में केवल १२ घंटे लगते हैं।
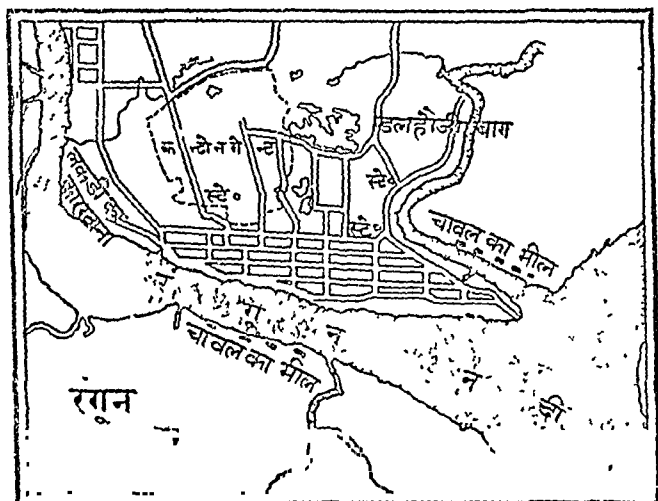
१०३—रंगून शहर की स्थित

रंगून नगर इरावदी की उपशाखा रंगून नदी पर ब्रह्मा का सबसे बड़ा बन्दरगाह है। यहां रंगून नदी काफी गहरी है। ज्वार भाटा भी कुछ ऊँचा आता है। इसलिये यहां बड़े बड़े जहाज आसानी से आकर सुरक्षित रह सकते हैं रंगून नगर की स्थित बड़े महत्व की है। यहीं पीगूयोमा नीचा होकर प्रायः समाप्त हो गया है। पीगूयोमा के जिस टीले पर वहां का जगतप्रसिद्ध श्वेडेन पगोडा या बुद्ध-भगवान का स्वर्ण मन्दिर बना है उसकी ऊँचाई केवल तीस पैंतीस गज है। इसलिये रंगून शहर से न केवल इरावदी की घाटी में, वरन् सीटांग घाटी में भी जल और स्थल मार्गों से पहुँचना सुगम है। इरावदी से ७००मील दूर भागों वाले नगरों तक स्टीमर जाते हैं। रेलें और भी दूर भिन्न भिन्न

भागों को गई हैं। इस प्रकार रंगून बन्दरगाह का पृष्ठ-प्रदेश बहुत ही विस्तृत हो गया है। ब्रह्मा का यह प्रदेश बहुत ही धनी है। यनांजाऊँ और सिंजू-मिट्टी का तेल विशेष नावों और नलों द्वारा वहां आता है। यहाँ (स रियम में) वह साफ किया जाता है और उससे पेट्रोल मोटर में जलने का तेल, मोमबत्ती और जलाने का तेल तैयार होता है। इसी साफ हालत में मिट्टी का तेल दिसावार भेजा जाता है। अपर ब्रह्म और पोगूयोमा के सागौना के लट्ठे भी नदी में बहाकर यहां लाये जाते हैं और आरा चलाने की बड़ी बड़ी मीलों में चीरे जाते हैं। फिर यह सागौन की लकड़ी दिसावर भेजी जाती है। डेल्टा प्रदेश के अपार धान से दिसावर भेजने के लिये यहाँ की मीलों में (कूट कर) चावल तैयार किया जाता है। चावल, तेल और लकड़ी ब्रह्मा कीप्रधान दिसावरी चीजें हैं। इनके अतिरिक्त थोड़ी-थोड़ी मात्रा में यहां से सीसा (नमटू की खानों का) कपास, तिलहन आदि कई चीजें दिसावर भेजी जाती हैं। बाहर का पक्का माल (कपड़े, मशीनें आदि) प्राय: सब माल यहां आकर ब्रह्मा के भिन्न-भिन्न भागों में भेजा जाता है। डेल्टा का दूसरा बन्दरगाह बसीन है। यहां भी समुद्री जहाज पहुँच सकते हैं।

मध्यवर्ती खुश्क प्रदेश

डेल्टा-प्रदेश के उत्तर में इरावदी की मध्य-घाटी पश्चिम की ओर अराकानयोमा से और पूर्व की ओर शान रियासतों के पठार से घिरी हुई है। ब्रह्मा के इस प्रदेश की जमीन तो अच्छी है लेकिन पहाड़ों की आड़ में स्थित होने से यहां वर्षा कम होती है। इस प्रदेश में साल भर में प्राय: २० और ४० इंच के बीच में वर्षा होती है। भीतर की ओर समुद्र से अधिक दूरी पर स्थित होने के कारण यहाँ शीतकाल और ग्रीष्म-ऋतु के तापक्रम में भी काफी अन्तर रहता है। ब्रह्मा का यह खुश्क प्रदेश बहुत सी बातों में संयुक्तप्रान्त के पश्चिमी भागों से मिलता जुलता है। मांडले के आस-पास का प्रदेश मेरठ के प्रदेश

की याद दिलाता है। प्राचीन समय से बरमी लोग इस प्रदेश को सींचने के लिये तालाबों और नहरों के खोदने का प्रबन्ध करते रहे हैं। हाल में कई पुरानी नहरें सुधारी गई हैं और नई नहरें खोदी गई हैं।

उपज

बरमी लोगों का प्रधान भोजन चावल है। इसलिये धान इस खुश्क प्रदेश में भी होता है। पर धान के अतिरिक्त यहाँ ज्वारा, बाजरा, तिल, मटर मूंगफली, मकई, कपास और तम्बाकू आदि की खेती होती है।

इस खुश्क प्रदेश की मुलायम चट्टानों में मिट्टी का तेल बहुत है। पहले कुआ खोदने से ही अकसर मिट्टी का तेल निकल आता था। आजकल ३,०० फुट तक मशीन द्वारा खुदाई करनी पड़ती है। इरावदी के दोनो किनारो पर इस खुश्क प्रदेश में खुदाई की मशीनें दूर से दिखाई देती हैं। यर्दाजाऊँ मिजू, यनाजौंत और मिनबू मिट्टी के तेल के प्रधान केन्द्र हैं। "बर्मा आयल कम्पनी" ने तेल भेजने के लिये रंगून तक ३०० मील लम्बा नल (पाइप) लगाया है। दूसरी कम्पनियां अपना तेल टंकीनुमा नावों में रंगून के कारखानों में साफ होने के लिये पहुँचाती हैं।

ब्रह्मा का खुश्क प्रदेश धनी होने के अतिरिक्त बहुत ही स्वास्थ्यकर है। इसी से मांडले अमरपुरा, आवाश्वेबा और पगान नगर प्राचीन समय में बरमा की राजधानी बने। सब नगरों में मांडले सबसे अधिक प्रसिद्ध है। मांडले शहर इरावदी के किनारे देश के प्रायः मध्य में स्थित है। यहाँ से ब्रह्मा के सभी भागों को सुगम मार्ग गये हैं। इरावदी नदी उत्तर की ओर भामों और मिचीनी को और दक्षिण की ओर रंगून को मांडले से मिलाती है। मिंगे नदी मांडले के पास ही इरावदी से मिलती है और उत्तर-पूर्व की ओर मिंगे नदी शान

१०४—टीला प्रदेश का एक साधारण दृश्य
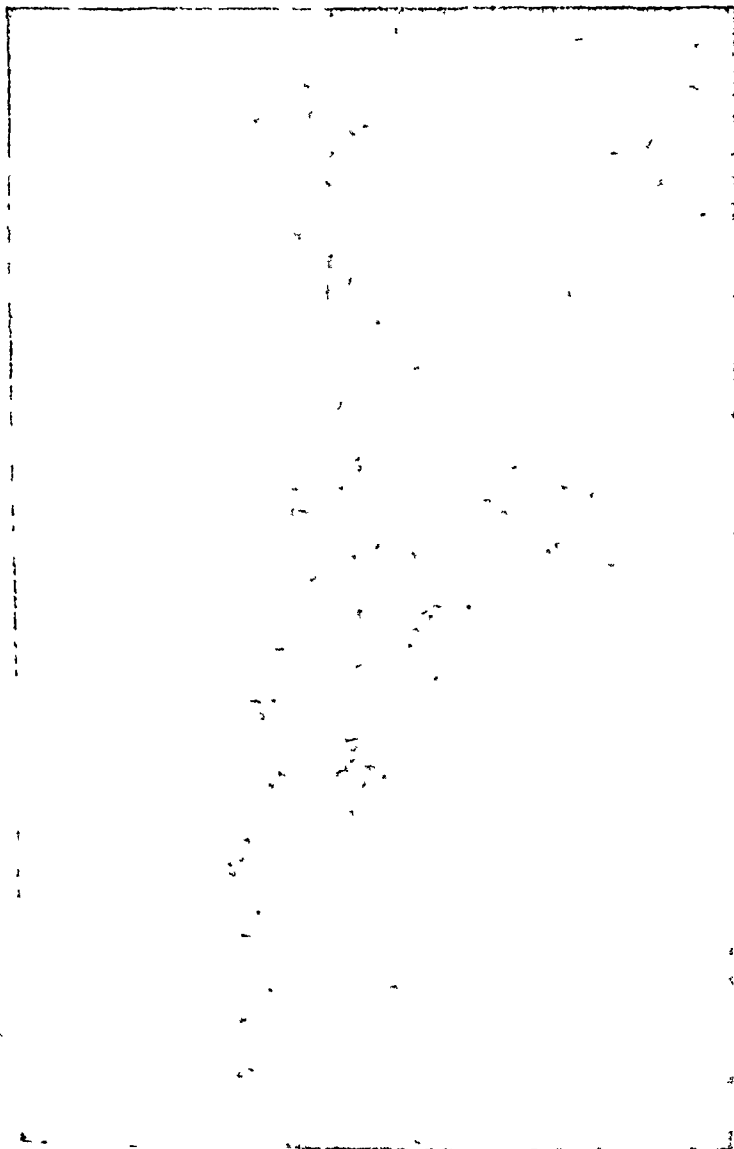
पठार में होकर कुनलांङ्ग घाट (साल्वीन नदी के किनारे) के लिये मार्ग बनाती हैं। उत्तर-पश्चिम की ओर चिंडविन नदी वनाच्छादित पर्वतीय प्रदेश में मार्ग खोलती है। माण्डले के पास ही सीटांग घाटी का उत्तरी सिरा है। आजकल प्रायः इन सब मार्गों में से रेल खुल गई है। शान-प्रदेश में मिंगे -घाटी के रास्ते से एक रेल मांडले से लाशियो को गई है उत्तर की ओर मिचीना जाने वाली रेल आरम्भ से मू-घाटी का अनुसरण करती है। उत्तर-पश्चिम में चिंडविन नदी की ओर मांडले (सगाई) से एक रेल मनीवा और एलीद को गई है सीटांग घाटी की रेल मांडले को रंगून से मिलाती है। १८८५ ई से मांडले नगर बरमा की राजधानी नहीं रहा। समुद्री मार्ग से ब्रह्मा में घुसने वाले अँगरेजों के लिये ऐसे स्थान में राजधानी बनाना अधिक अनुकूल था जहां वे अपने जहाजों से सहायता पहुँचा सकते थे या जहां से संकट के समय जहाजों पर चढ़कर भाग सकते। इसलिये उन्हों ने रंगून में राजधानी बनाई। पर जब उनके पैर जम गये और १८८५ ई० में ब्रह्मा के राजा थीबा के कैद हो जाने पर अपर ब्रह्मा भी अँगरेजी राज में मिला लिया गया उस समय भी रंगून शहर इस बढ़े हुये राज्य की राजधानी बना रहा लेकिन मांडले शहर अपनी अच्छी स्थित के कारण इस समय भी व्यापार का केन्द्र है। हाल में इरावदी नदी के ऊपर आधा पुल बन जाने से मांडले की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ गई है। यहां लकड़ी चीरने के कई बड़े बड़े कारखाने हैं। पास ही अमरपुरा में रेशम बनने का काम होता है। यहां से प्रायः १० मील की दूरी पर मिंगे में बरमा रेलवे का सबसे बड़ा कारखाना है। बरमा की गाड़ियां यहां बनाई जाती हैं। यहां उनकी मरम्मत होती है। मांडले के दक्षिण में इरावदी के किनारे मिंजान नगर भी स्टीमर का घाट और व्यापार का केन्द्र है। पास के प्रदेश की रुई से सूती सामान बनाने के लिये यहां एक बड़ा कारखाना खुल गया है।

१०५—चश्मा फ़ुट-पात

शान राज्यों का पठार

इस पठार की ऊँचाई समुद्र तल से प्रायः तीन चार हजार फुट है। इस उच्च प्रदेश की पश्चिमी सीमा प्रायः आधी दूर तक सीटाङ्ग घाटी से बनी हुई है। जहां सीटाँग घाटी समाप्त होती है वहां से आगे भागों तक इरावदी की घाटी इस (पश्चिमी) सीमा को पूरी करती है। इस पश्चिमी सीमा और सालवीन नदी के बीच में पठार का सबसे बड़ा भाग स्थित है, शेष छोटा पर अधिक ऊँचा त्रिभुजाकार भाग सालवीन नदी के पूर्व में उत्तर की ओर चीन से और दक्षिण की ओर स्याम राज्य से घिरा हुआ है। इस प्रदेश में अधिकतर चूने की पहाड़ियां हैं। इनके घिसने से जो जमीन बनी है वह अधिकतर छिद्रयुक्त है। अधिकांश पठार कर्क रेखा के दक्षिण में स्थित है। लेकिन ऊँचाई के कारण यहां का तापक्रम अधिक ऊँचा नहीं होने पाता है। मेमियो का तापक्रम ग्रीष्म-ऋतु में भी काफी नीचा रहता है। इसी से मैदान में रहने वाले धनी लोग गरमी के दिनों में यहां चले आते हैं। ऊँचाई के कारण यहाँ भी वर्षा खूब होती है।

पर छिद्रयुक्त मिट्टी होने से केवल निचले भागों में धान, मकई, आलू, तरकारी आदि की खेती होती है। कहीं कहीं गेहूँ भी होता है। ऊपरी भागों में बांस आदि के वन हैं अथवा घास है। इसी से इस ओर शान लोग गाय, बैल और भैंस बहुत पालते हैं। कुछ ढालों में चाय और शहतूत के पेड़ हैं। रेशम के कीड़ों को शहतूत की पत्तियां खिला कर यहाँ बहुत सा रेशम तयार किया जाता है। वनों में लाख इकट्ठी की जाती है। दक्षिण की ओर सागौन के भी मूल्यवान वन हैं।

लाशियो के उत्तर-पश्चिम में वीरान पहाड़ियों के बीच में नमटू गांव के पास वाडविन में चांदी और सीसे की खानें हैं। इसी से शान प्रदेश में यह सबसे अधिक धनी है।

१०६—एक शान-सी

१०७—ब्रह्मा का एक साधारण परिवार
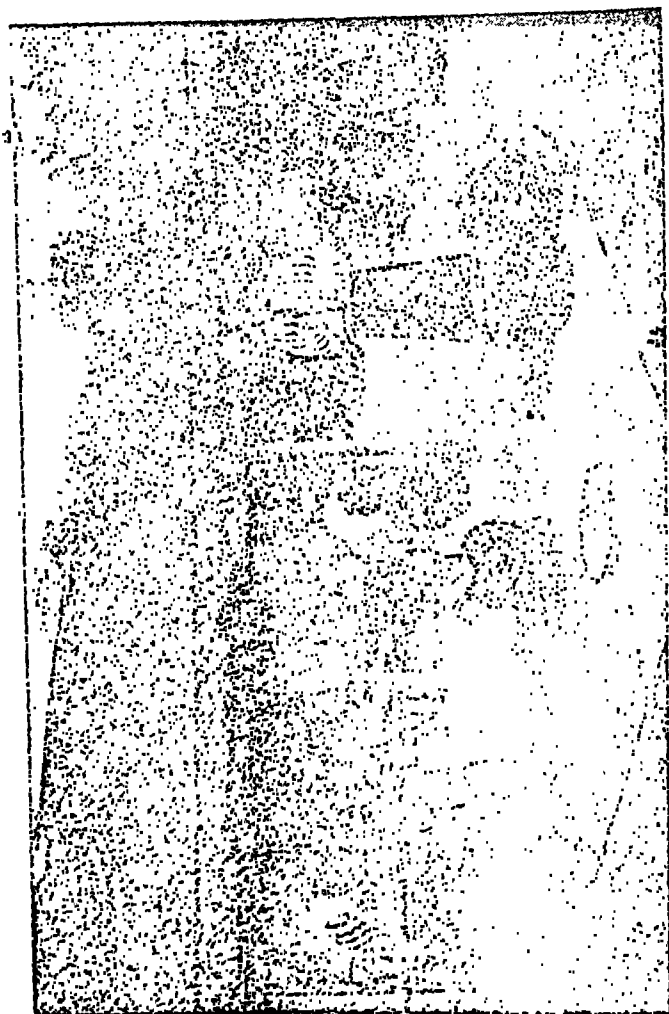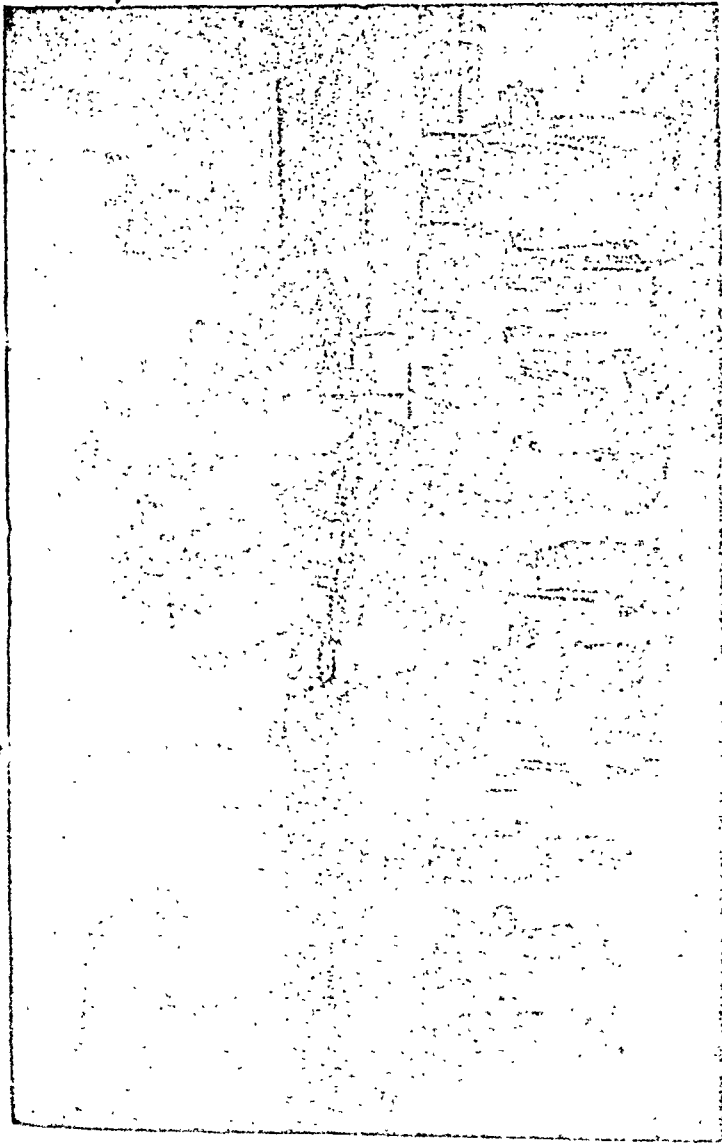
१०८—ग्रसा के भिचु नाग

माण्डले के उत्तर-पश्चिम में इरावदी से प्रायः ९० मील की दूरी पर मोगा में लाल (मणि) की खानें हैं। काला के पास लोइआन में कोयला पाया जाता है।

जन-संख्या और नगर

इस प्रदेश की आबादी बहुत कम है। यहां बरमी लोगों का प्रायः अभाव है। यहां उत्तर की ओर कछिन-मध्य के विशाल भाग में शान-जाति और दक्षिण की ओर करेन जाति के लोग हैं। श्वेली और मिंगे नदियां यहां से चीन के लिये मार्ग बनाती हैं श्वेली के मार्ग में प्रान्तीय सीमा पर नमखन नगर बस गया है। पर भामो सीमा-प्रान्त का सबसे बड़ा नगर और व्यापारिक केन्द्र है। यहां इरावदी का स्टीमर-मार्ग समाप्त होता है और चीन के लिये स्थल-मार्ग आरम्भ होता है।

मिंगे घाटी में सीपा नगर पहले बहुत प्रसिद्ध था, पर जब से रेलवे लाशियो तक बढ़ा दी गई तब से सीपा का महत्व घट गया है।

उत्तरी-पश्चिमी पर्वतीय प्रदेश

ब्रह्मा का उत्तर-पश्चिमी प्रदेश दक्षिण की ओर ढालू हो गया है। इरावदी और उसकी सहायक सिंडविन नदियां यहीं से निकल कर दक्षिण की ओर बहती हैं प्रबल वर्षा होने से यह प्रदेश घने वनों से ढका हुआ है। इसके कुछ भागों का अब तक ठीक ठीक पता नहीं लगा है। इस प्रदेश में शान लोग कम हैं। यहां अधिक कछिन लोगों की बस्तियां हैं। इस प्रदेश का अन्तिम रेलवे स्टेशन मिचीना है। यहां इरावदी की चौड़ाई केवल १०० गज रह जाती है। यह नगर बहुत ही छोटा है। मिचीना से प्रायः ३०० मील उत्तर में पुटाओं नगर तक खच्चरों के द्वारा व्यापार होता है। पहले हुकाङ्ग घाटी के मार्ग से आसाम-बङ्गाल रेलवे को ब्रह्मा की (मिचीना-माण्डले) रेलवे से जोड़ने का प्रस्ताव था। इस मार्ग में केवल एक पहाड़ी ऐसी थी जो ५,००० ऊँची थी। इसमें सुरंग बनाया जा सकता था। पर देश इतना निर्जन और जङ्गली था कि इस से रेलवे को लाभ की कोई आशा न थी। इसलिए ब्रह्मा को हिन्दुस्तान से रेल द्वारा जोड़ने का प्रस्ताव स्थगित कर दिया था। अब तो ब्रह्मा देश को हिन्दुस्तान से अलग ही कर दिया है।

छब्बीसवाँ अध्याय

अंडमान और निकोबार

अंडमान (२, ५०८ वर्गमील) निकोबार (६३५ वर्गमील) द्वीप समूह कलकत्ता से ७८० मील दक्षिण की ओर और रंगून से ३६० मील पश्चिम की ओर स्थित है। ये द्वीप समूह उस निमग्न पर्वत-श्रेणी की बनी हुई चोटियां हैं जो किसी समय अराकान योमा को सुमात्रा द्वीप की मध्यवर्ती पर्वत-श्रेणी से मिलाती थी। अराकान की तरह इन द्वीप समूहों में भी पहाड़ियां उत्तर से दक्षिण को गई हैं। इनकी चट्टानें भी एक सी हैं। पहाड़ियां अधिक ऊँची नहीं हैं। सब से ऊँची चोटी केवल २,४०० फीट ऊँची है।

भूमध्य रेखा के पास स्थित होने से इन द्वीपों की जलवायु बहुत उष्णाद्र है। वर्षा प्रायः १५० इञ्च होती है। तापक्रम सदा ऊँचा रहता है इसलिये ये द्वीप समूह सघन वनों से ढके हैं। सघन वनस्पति पानी के किनारे तक चली आई है। पर निकोबार द्वीप के कुछ भाग इतनी मोटी चिकनी मिट्टी के बने हैं कि उसमें घास तो होती है लेकिन पेड़ नहीं उगते हैं। अंडमान और निकोबार द्वीपों के बहुत से भाग चावल केला आदि उष्ण कटबन्ध की उपज के लिये अनुकूल हैं। इन द्वीप-समूहों का कटा-फटा तट बन्दरगाहों के लिये बहुत अच्छा है। बङ्गाल की खाड़ी के तूफ़ानों से सताये हुए जहाज अक्सर यहां शरण लेते हैं। अंडमन का सर्वोत्तम बन्दरगाह पोर्ट ब्लेअर है जो दक्षिणी द्वीप में पूर्व की ओर स्थित है। हिन्दुस्तान के आजन्म कैदियों या बहुत लम्बी सजा वाले कैदियों को रखने के लिये १८५८ ई० में अंग्रेजों ने इन द्वीपों पर अधिकार कर लिया। कैद की अवधि पूरी हो जाने पर कुछ स्वतन्त्र कैदी यहीं रहने लगे। हाल में भी कुछ विद्रोहियों को यहां बसाने का प्रयत्न किया गया। पर सारी आबादी २९,००० से अधिक से नहीं है। इसमें प्रायः २,००० मूल निवासी असभ्य हब्शी हैं जिनकी संख्या घटती चली जारही है। १९३२ ई० में यहां ७६५२ आजन्म कैदी थे। अब यहां राजनैतिक कैदियों का रखना बन्द कर दिया गया है। इन द्वीप-समूहों का प्रबन्ध यहां के चीफ़ कमिश्नर के हाथ है। अब यह द्वीप स्वतन्त्र भारत के अंग हैं।

सत्ताईसवाँ अध्याय

लंका

लंकाद्वीप (२५,०७० वर्गमील जनसंख्या ४५ लाख) दक्षिण भारत के दक्षिण-पूर्व की ओर हिन्द महासागर में ५,५०० और ९-५०७ उत्तर अक्षांशों के बीच में स्थित है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी बड़ी से बड़ी लम्बाई ·७० मील है और पश्चिम से पूर्व तक अधिक से अधिक चौड़ाई १४० मील है। ८० पूर्वी देशान्तर रेखा लंका के केवल पश्चिमी तट को काटती हुई गुजरती है। ८२ देशान्तर लंका के पूर्वी तट से बिल्कुल (लगभग आठ-दस मील) अलग है। द्वीप का आकार एक ऐसे लम्बे आम से मिलता है जिसका डंठल तोड़ दिया गया हो जिसका सिरा ऊपर (भारत) की ओर कर दिया गया हो।

दक्षिणी भारत (करनाटक) और उत्तरी लंका की चट्टानें, जमीन जलवायु और वनस्पति आदि में विलक्षण समानता है। तंग और उथली पाक-प्रणाली (पाक-जलसंयोजक) भी यही सिद्ध करती है। कि प्राचीन समय में लंका द्वीप भारतवर्ष का ही अंग था।

लंका की बनावट सीधी सादी है। लंका के प्रायः मध्य में कुछ दूर दक्षिण को हटा हुआ एक पर्वत-समूह है। दक्खिन के पठार की भांति लंका के पहाड़ भी बहुत कड़ी चट्टानों से बने हैं। अति प्राचीन होने से वे बहुत घिस गये हैं। सब से बड़ी चोटी पिदुरतलगली केवल ८,२६९ फुट ऊँची है दक्षिण में कुछ कम ऊँचाई (७,३५३, फुट) पर अधिक प्रसिद्ध चोटी रामपद या बुद्धपद या आदम की चोटी कहलाती है। इस मध्यवर्ती पर्वत समूह से चारों ओर को ढाल है पर दक्षिण की ओर समुद्र तट पास है। इसलिये उत्तर की अपेक्षा दक्षिण की ओर ढाल
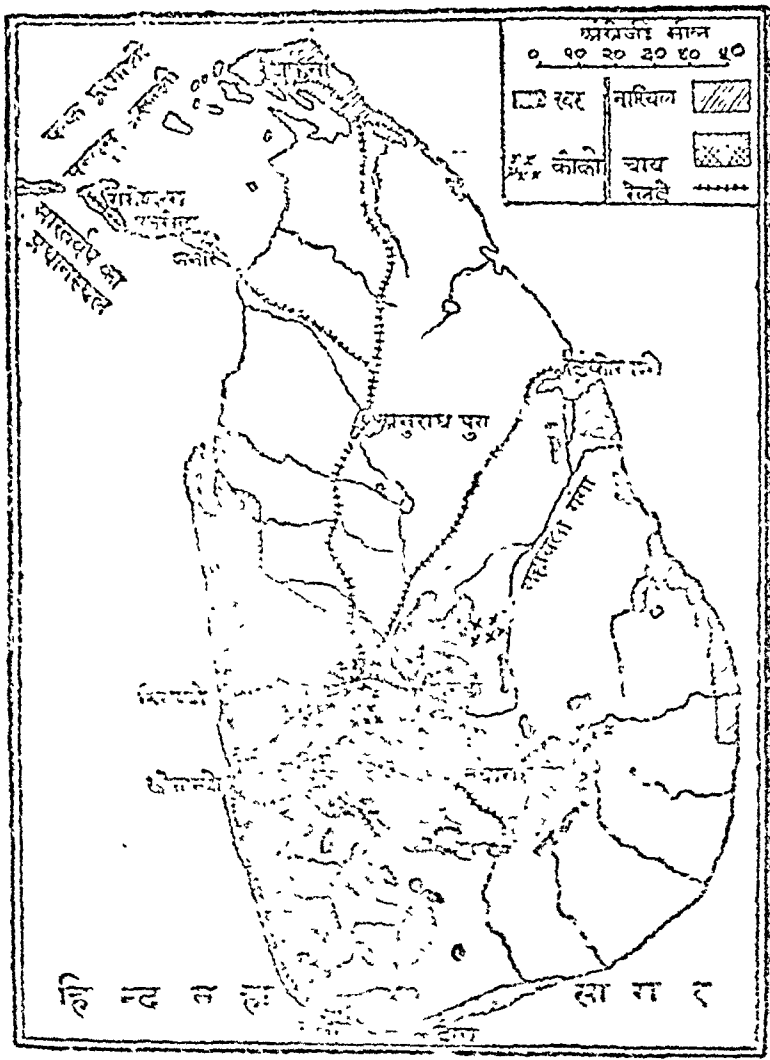
१०६—लंका—उपज, मार्ग और नगर

भी अधिक सपाट है पहाड़ों की ऊँचाई कम होने से यहां बरफ़ कभी नहीं पड़ती है। पर पानी काफी बरसता है। लेकिन द्वीप का सर्वोच्च भाग प्राय: मध्य में स्थित है। इसलिये यहां की बरसाती नदियों को बहुत दूर तक बहने का अवसर नहीं मिलता है। यहां की सबसे बड़ी नदी महाबली गंगा केवल १४३ मील लम्बी है। यह नदी पिदुरतलगला से निकल कर कैंडी होती हुई उत्तर-पूर्व की ओर ट्रिंकोमाली (त्रिकोण-मलय) की खाड़ी में गिरती है। केलानी गंगा ठीक पश्चिम की ओर बहती है। इसका मार्ग ऐसे प्रदेश में स्थित है जहां दोनों ऋतुओं में पानी बरसता है। इसलिये यह नदी कभी नहीं सूखती है। पर लंका की नदियां इतनी छोटी और उथली हैं कि उनमें नावें नहीं चल सकती हैं।

मध्यवर्ती पठार के चारों ओर ढालू मैदान है। इसकी ऊँचाई कहीं भी १,००० फुट से अधिक नहीं है। वास्तव में यह मैदान भी उन्हीं चट्टानों का बना है, जिनसे लंका का पठार बना है। पर मैदान में ये चट्टानें लाल मुलायम मिट्टी की मोटी तहों के नीचे दब गई हैं। उत्तर की ओर जाफना का चौड़ा मैदान समुद्र-तल से कहीं भी दो तीन सौ फुट से अधिक ऊंचा नहीं है। इधर की जमीन में चूना अधिक है। इसका रंग प्राय: पीला है। केवल कहीं-कहीं इसके ऊपर लाल मिट्टी की पतली तह बिछी हुई है। तट के पास जमीन सब कहीं नीची है। पर तट बहुत ही कम कटा फटा है और अक्सर गोरन या मैंग्रूव से ढका है। मालाबार-तट की तरह यहां भी समुद्री लहरों ने तट के पास रेत इकट्ठा करके अनेक अनूप (लेगून) बना दिये हैं। कई स्थानों पर ये अनूप नहरों द्वारा जोड़ दिये गये हैं।

जलवायु

लंकाद्वीप से भूमध्यरेखा प्राय: तीन चार सौ मील दक्षिण की ओर रह जाती है। इसलिये यहां के दिन रात प्राय: साल भर बराबर होते

है। समुद्र भी सब कहीं पास है। इसलिये लंका को शीत ऋतु और ग्रीष्म-ऋतु में कोई विशेष अन्तर नहीं होता है। यहां की ग्रीष्म-ऋतु उत्तरी भारत की तरह विकराल नहीं होता है। यहां जाड़े के दिनों में भी काफी गरमी पड़ती है। नुवाराएलिया और कैंडी आदि कुछ पहाड़ी स्थानों को छोड़ कर यहां के लोग दिसम्बर और जनवरी महीने में भी दोपहर को छाता लगाते हैं। नारियल के रस या शरबत में बरफ़ डालकर पीते हैं, और रात को चादर या और कोई मामूली कपड़े ओढ़ कर बरामदे में सोते हैं। नुवाराएलिया यहां का सब से अधिक ठंडा नगर है। पर यहां भी शीत-काल में इलाहाबाद के मुकाबिले में बहुत कम सरदी पड़ती है। लंका में दिन और रात के तापक्रम में बहुत कम अन्तर रहता है। पर शीत-काल और ग्रीष्म-ऋतु के ताप-क्रम में इससे भी कम अन्तर पड़ता है। उदाहरण के लिए कोलम्बो का तापक्रम अत्यन्त ठंडे (जनवरी) महीने में ८० अंश फ़ारेनहाइट होता है। अत्यन्त गरम (मई) महीने का तापक्रम ८४ फारेनहाइट से अधिक नहीं होता है। इस प्रकार वार्षिक तापक्रम भेद (दिन और रात के तापक्रम का भेद) दस या बारह अंश फारेनहाइट होता है।

लंकाद्वीप मानसून या मौसमी हवाओं के ठीक रास्ते में स्थित है। इसलिये इस द्वीप के पश्चिमी भाग में मई से सितम्बर मास तक वर्षा होती है। मैदान की अपेक्षा पहाड़ी के पश्चिमी ढालों पर अधिक वर्षा होती है। उत्तर की ओर किसी पहाड़ के न होने से और दक्षिण पूर्व की ओर मध्यवर्ती पहाड़ों की आड़ पर जाने से बहुत ही कम वर्षा होती है उत्तर-पूर्वी मानसून के अवसर पर प्रायः नवम्बर से फरवरी मास तक लंका के दक्षिणी-पूर्वी और उत्तरी भाग में विशेष वर्षा होती है। इस ऋतु में पश्चिमी भाग को छोड़ कर प्रायः समस्त द्वीप में वर्षा होती है। केवल उत्तरी-पश्चिमी सिरे और दक्षिण-पश्चिम में साल भर में ५० इंच से कम पानी बरसता है। शेष भागों में प्रायः वर्षा

होती है। उच्च पहाड़ी प्रदेश में कहीं-कहीं २०० इञ्च से भी अधिक वर्षा होती है।

वनस्पति

सदा ऊँचा तापक्रम रहने और प्रबल वर्षा होने के कारण इस समय भी लंका का प्राय: ३।५ भाग सघन वनों से घिरा हुआ है, जिनमें हाथी, बन्दर, चीता आदि जङ्गली जानवर विचरते हैं। दक्षिण पश्चिम की ओर ऊँचे पहाड़ी ढालों के वन को साफ कर चाय के बगीचे लगाये गये हैं। अधिक नीचे ढालों में रबड़ के पेड़ लगाये गये हैं। अधिक नीचे ढालों में रबड के पेड़ लगाये हैं। मैदान में तथा कुछ ऊँचे भागों में समुद्र से थोड़ी दूर पर नारियल के बगीचे हैं। अनुकूल भागों में दारचीनी मसाले के खेत हैं। धान की खेती सजल भागों में प्राय: सब कहीं होती है। पर लंका की ज़मीन बहुत उपजाऊ नहीं है। कुछ खुश्क भागों में सिंचाई का भी ठीक प्रबन्ध नहीं हुआ है। इससे इस समय में भी प्राय: ३।५ भागों में खेती होता है। शेष ·।२ भाग बेकार पड़ा है।

मनुष्य

लंका के अधिकांश निवासी सिंहाली लोग हैं। ये लोग अशोक के समय में यहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार करने आये थे और यहां के लोगों में हिल-मिल गये ये लोग सिंहाली भाषा बोलते हैं जो संस्कृत से मिलती जुलती है। उत्तर के जाफना प्रान्त में अधिकांश लोग तामिल हैं जो समय-समय पर दक्षिण-भारत से आकर यहां बस गये हैं। इनके अतिरिक्त यहां कुछ मूर लोग हैं जो पुराने अरबी सौदागरों की सन्तान हैं। कुछ बर्गर य रुपीय वर्णसंकर और कुछ शुद्ध यरुपीय लोग भी हैं। सघन वनों के दुर्गम भागों में यहां के प्राचीन मूल निवासी वेद्दा लोग रहते हैं। यहां के लोगों का प्रधान पेशा खेती है। तटीय प्रदेश में मछली मारने वाले बहुत रहते हैं। रत्नपुरा के आस पास पठार में कुछ लोग खानों में भी काम करते हैं। खानों से कुछ

मणि और पेन्सिल का सुरमा निकलता है। चाय और रबड़ के बगीचों के मालिक अधिकतर योरुपीय हैं। इन बगीचों में दक्षिण-भारत के प्रायः तामिल मजदूर काम करते हैं द्वीप की आबादी घनी नहीं है। यह आबादी अधिकतर केला और नारियल के बगीचों से

१०—लंका का एक परिवार

घिरे हुये छोटे गांवों में रहती है। इस द्वीप के प्रायः हर एक घर में एक छोटा सा बगीचा है। बड़े शहर कम हैं।

लंका की राजधानी और सबसे बड़ा नगर कोलम्बो है। यह नगर केलानी गङ्गा के मुहाने पर पश्चिमी तट के प्राय दक्षिणी भाग में बसा हुआ है। यहां पर तट कुछ मुड़ता है। इसलिये दक्षिणी, पश्चिमी मानसून से यहां के बन्दरगाह की कुछ रक्षा हो जाती है। इस बन्दरगाह को पूर्णरूप से सुरक्षित करने के लिये एक लम्बी चौड़ी दीवार बनानी पड़ी है। बन्दरगाह कुछ गहरा भी कर दिया गया है। इसलिए अब कोलम्बो न केवल लंका द्वीप का ही सबसे बड़ा बन्दरगाह है वरन् यह कई समुद्री मार्गों का जंक्शन (संगम) हो गया है। योरुप से जितने जहाज स्वेज के मार्ग से कलकत्ता, सिंगापुर, चीन,

जापान या आस्ट्रेलिया को जाते हैं वे सब यहाँ ठहर कर और कोयला* लेकर जाते हैं। यहां से दक्षिण-पूर्व अफ्रीका और दक्षिणी भारत और रंगून को भी व्यापारी जहाज आते जाते रहते हैं। कोलम्बो का पृष्ठ-प्रदेश (पीछे का देश) बड़ा उपजाऊ है। कोलम्बो शहर रेल द्वारा उत्तर में तलेमनार और जाफना से, मध्य में कैंडी और नुवारा एलिया से, पूर्व की ओर ट्रिंकोमाली से, दक्षिण की ओर गाल से जुड़ा हुआ है। इसके अतिरिक्त कोलम्बो से देश के बड़े बड़े शहरों का सुन्दर पक्की सड़कें गई हैं। इसलिये तटीय प्रदेश का नारियल और दक्षिणी पश्चिमी भीतरी भाग की रबड़ और चाय कोलम्बो बन्दरगाह से ही दिसावर भेजी जाती है। मशीन, कपड़े आदि आवश्यक विदेशी चीजें भी कोलम्बो बन्दरगाह से लंका के भिन्न-भिन्न भागों में पहुँचती हैं। कोलम्बो शहर की आबादी प्रायः ढाई लाख है। पर शहर बहुत ही खुला हुआ है। यहाँ अजायबघर आदि कई देखने योग्य चीजें हैं।

कैंडी नगर पहाड़ी प्रदेश में कोलम्बो से ७२ मील की दूरी पर बहुत ही ऊँचा नीचा बसा है। लंका की पुराना राजधानी यहीं थी। कैंडी का दलदमालगा या बुद्ध भगवान के दांत का मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। यहीं लंका के कला-कौशल के सामान का सुन्दर संग्रह है। कैंडी से प्रायः तीन मील की दूरी पर पेरडेनिया का बोटेनिकल गार्डन केवल लंका में नहीं वरन् पूर्वी देशों में सर्वोत्तम है।

नुवारा एलिया प्रसिद्ध पहाड़ी स्टेशन है और छोटी लाइन (नेरोगेज) द्वारा कैंडी से मिला हुआ है। कैंडी से उत्तर की ओर अनुराजपुर में विचित्र प्राचीन (बौद्ध) भग्नावशेष है। अनुराजपुर के

* लंका में कोयला नहीं होता है। इसलिये कुछ जहाज ग्रेटब्रिटेन नेटाल और इङ्गलैण्ड से कोयला लाकर यहाँ जमा करते हैं। जैसे रेल का इञ्जन अपनी लंबी यात्रा में अनुकूल स्टेशनों पर कोयला लेता है वैसे ही जहाज का इञ्जन भी जगह जगह पर कोयला लेता है।

धुर-उत्तर की ओर जाफना को रेल गई है। उत्तर-पश्चिम की ओर एक
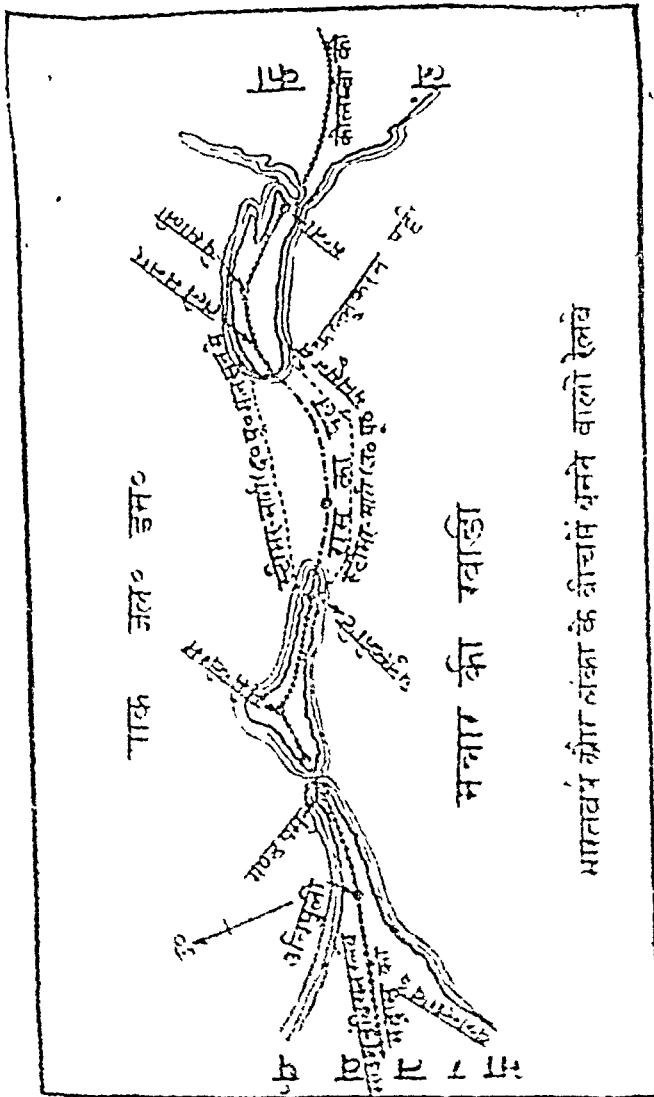
१११—दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के दिनों में स्टीमर-मार्ग पूर्व की ओर होता है। उत्तरी-पूर्वी मानसून के चलने पर स्टीमर का मार्ग पश्चिम की ओर हो जाता है। ऋतु के अनुसार मार्ग बदलने से स्टीमर धारा के प्रचंड वेग से बच जाता है।

शाखा तलेमनार को गई है। तलेमनार से धनुष्कोटि को (भारतवर्ष के

लिये) प्रतिदिन स्टीमर छूटा करते हैं। धनुष्कोटि स्टेशन रामेश्वर द्वीप के दक्षिणी सिरे पर स्थित है। साउथ इण्डियन रेलवे का अन्तिम स्टेशन है। धनुष्कोटि से तलेमनार केवल २० मील दूरी है। लंका और भारतवर्ष के इन दोनों स्टेशनों को रेल द्वारा जोड़ने की योजना हो रही है। इस बीस मील की यात्रा में भिन्न-भिन्न स्थानों पर ७ मील का स्थल है। यहाँ रेत और मूँगे की चट्टानों पर रेल की लाइन डालने में कोई कठिनाई न होगी। शेष १३ मील में थोड़ी थोड़ी दूर पर कांक्रीट के दोहरे खम्भे और महाराब बना कर एक विशाल पुल तयार करने की योजना हो रही है। यह पुल रामचन्द्र जी की प्राचीन सेतु को याद दिलायेगा और दोनों देशों के बीच की यात्रा को बहुत ही सुगम और मनोरंजक बना देगा।

ट्रिन्कोमाली (त्रिकोणमलय) लंका के उत्तरी-पूर्वी तट पर लंका का सर्वोत्तम प्राकृतिक बन्दरगाह है। इसकी विशाल और गहरी खाड़ी में जहाज बिल्कुल सुरक्षित रह सकते हैं। पर इसका पृष्ठ-प्रदेश उपजाऊ नहीं है। इसलिये ट्रिन्कोमाली एक छोटा नगर रह गया। हाल में यह नगर रेल द्वारा कोलम्बो से मिला दिया गया है।

१८०२ ई० में लंका द्वीप मद्रास प्रान्त में शामिल था। फिर यह अलग कर दिया गया। तब से लंका द्वीप ब्रिटेन का शाही उपनिवेश (क्राउन कालोनी) बन गया। अब यह देश भी स्वाधीन हो गया है।

मालद्वीप ये द्वीप-समूह लंका के दक्षिण-पश्चिम में ४०० मील की दूरी पर भूमध्यरेखा के बिल्कुल पास स्थित हैं। ये द्वीप नारियल के पेड़ों से ढके हुये हैं जिनसे सुन्दर रस्सी बनाई जाती है। यहाँ के निवासी (प्रायः [illegible] हजार) सिंहाली लोगों से मिलते जुलते हैं। पर आजकल ये इस्लाम धर्म को मानते हैं। ये लोग मछली मारने, नाव और रस्सा बनाने का काम करते हैं। नाम मात्र को इन द्वीपों का मालिक यहाँ का सुल्तान है। पर वास्तव में ये द्वीप लंका की सरकार के आधीन हैं। लंकाद्वीप या लक्षद्वीप समूह मालद्वीप से २०० मील

पाकिस्तान

अट्ठाइसवाँ अध्याय

पश्चिमी पाकिस्तान

पाकिस्तान का नया राज्य भारत को स्वाधीनता मिलने पर भारत का ही विच्छेद कर के बनाया गया। पाकिस्तान का राज्य साम्प्रदायिकता के आधार पर बना। जहाँ जहाँ मुसलमान बहु संख्या में थे वे भाग पाकिस्तान में सम्मिलित कर दिये गये। पाकिस्तान के दो खंड हैं। पश्चिमी पाकिस्तान में सिन्ध बिलोचिस्तान सीमाप्रान्त और पश्चिमी पंजाब शामिल हैं। इन के पड़ोस की मुसलमानी रियासतें भी पाकिस्तान में शामिल हैं। इनमें बहावलपुर खैरपुर कलात खारन, लासबेला, मकरान, चित्राल, दरस्वात प्रमुख हैं।

पूर्वी पाकिस्तान में पूर्वी बंगाल शामिल है। स्थल मार्ग से पूर्वी पाकिस्तान पश्चिमी पाकिस्तान से १२०० मील दूर है। दोनों पाकितानी भागों का क्षेत्रफल २,३६,००० वर्ग मील और जनसंख्या ६ करोड़ हैं। पश्चिमी पाकिस्तान उत्तर और पश्चिम में ईरान और अफगानिस्तान से घिरा हुआ है। इसके दक्षिण में अरबसागर, उत्तर में काश्मीर, पूर्व में पूर्वी पंजाब, विशाल राजस्थान और सौराष्ट्र हैं।

पूर्वी पाकिस्तान के दक्षिण में बंगाल की खाड़ी, पूर्व में बरमा और शेष ओर भारतवर्ष है।

बिलोचिस्तान

यह पाकिस्तानी फारस अफगानिस्तान सिन्ध और अरब सागर से घिरा हुआ है मध्यवर्ती बिलोचिस्तान में पहाड़ियां उत्तर से दक्षिण को गई हैं। मुख्य अन्तरीप के निकट समुद्र के पास वे बिल्कुल छिप गई हैं। यह पहाड़ियां सुलेमान पर्वत की शाखाएँ हैं जो इस प्रदेश में रीढ़ के समान स्थित हैं। पश्चिमी बिलोचिस्तान में पहाड़ियाँ बहुत हैं। मध्यश्रेणी से निकलने के बाद वे समुद्र तट के समानान्तर चलती हैं। अन्त में वे या तो समुद्र में लुप्त हो जाती हैं या दक्षिणी फारस के मैदान में नष्ट हो जाती हैं अथवा फारस के पहाड़ों से मिल जाती हैं। पूर्वी बिलोचिस्तान में (जो हरनाई घाटी के पूर्व में स्थित है) पहाड़ियों की गति पश्चिम-पूर्व को है। अन्त में वे कुछ उत्तर की ओर मुड़ कर सुलेमान की प्रधान श्रेणी से मिल गई हैं।

इस प्रदेश को हम चार भागों में बांट सकते हैं:—

(१) उत्तर पूर्व में विशाल कच्छ या कछारी मैदान है। यहां वर्षा का प्रायः अभाव है और साल में ८ महीने खूब गर्मी पड़ती है। पर जहां तहां पहाड़ी धाराओं के पास यह प्रदेश अत्यन्त उपजाऊ है। समीपवर्ती पहाड़ों में फिरकों की बस्तियां भी हैं। कच्छ गन्दाव पुरानी राजधानी है।

(२) इस विशाल कच्छी मैदान के पश्चिम में पहाड़ी देश है। इसी पठार में बलोची फिरके रहते हैं। क्वेटा के उत्तर पूर्व में जरगुन नाम की सर्वोच्च चोटी समुद्र-तल से १२,००० फुट ऊँची है। शाल या क्वेटा* ५५,००० फुट ऊँचा है।

---

* क्वेटा का पुराना नाम शालकोट है।

कलात की ऊँची घाटी (६,८००० फुट) पर खान का अधिकार है।
लास-वेला समुद्र-तट पर निचला मैदान है।
बरुही पठार की पर्वत श्रेणियां जगह जगह पर टूटी हुई हैं। इन्हीं में होकर कुछ पहाड़ी धाराओं ने अपना मार्ग निकाला है। इस प्रकार बरुही पठार इन दर्रों के द्वारा कछारी मैदान से अलग हो गया है उत्तर में बोलन दर्रा ८० मील लम्बा और क्वेटा और पिशान केलिये रास्ता बनाता है। दक्षिण में मूला दर्रा ८० मील लम्बा है और कलात और खारान के लिये रास्ता खोलता है। दोनों रास्ते तंग पथरीली घाटियों में स्थित हैं पर अब उनमें तोप, गाड़ियों के चलने योग्य सड़क बना दी गई हैं।

(३) बरुही पठार के पश्चिम बलोच पठार है। समुद्र-तट से साठ सत्तर मील तक जमीन धीरे धीरे ऊँची होती जाती है। इसकी ऊँचाई प्रायः ५०० फुट है। पर अधिक आगे बढ़ने पर एक दम डेढ़ दो हजार फुट की चढ़ाई है। यही पहाड़ियां हलमन्द के प्रवाह-प्रदेश और अरब सागर के बीच में जल विभाजक बनाती हैं। बलोच पठार के पहाड़ बरुही पठार के पहाड़ों से कम ऊँचे हैं। बलोच पठार का सबसे ऊँचा पहाड़ मियानट्रू काह है जो केवल ७,००० फुट ऊँचा है। इसी प्रदेश में समुद्र तट और प्रथम पर्वत-श्रेणी के बीच मकरान स्थित है। 'मकरान' शब्द माहेखुरान शब्द से बना है। जिसका अर्थ मछलीखोर है। यहां ऐसे भग्नावशेष मिलते हैं। जो इसके शानदार भूत काल की सूचना देते हैं। पर इस समय यह खुश्क उजाड़ और रोग ग्रस्त प्रदेश है। भीतर की ओर कई लम्बी और तंग पहाड़ियां हैं जिनके बीच बीच में विस्तृत घाटियां हैं। पर ये घाटियां अधिकतर रेतीली और उजाड़ हैं केवल पहली घाटी कुछ हरी भरी है जहां छुहारों के बगीचे, गांव और किले हैं। सिन्ध और फारस के बीच में यह एक प्राकृतिक मार्ग है।

(४) हलमन्द घाटी से दो सौ मील दक्षिण में दूसरी पर्वत श्रेणी तक बिलोचिस्तान का रेगिस्तान फैला हुआ है। इस रेगिस्तान का ढाल
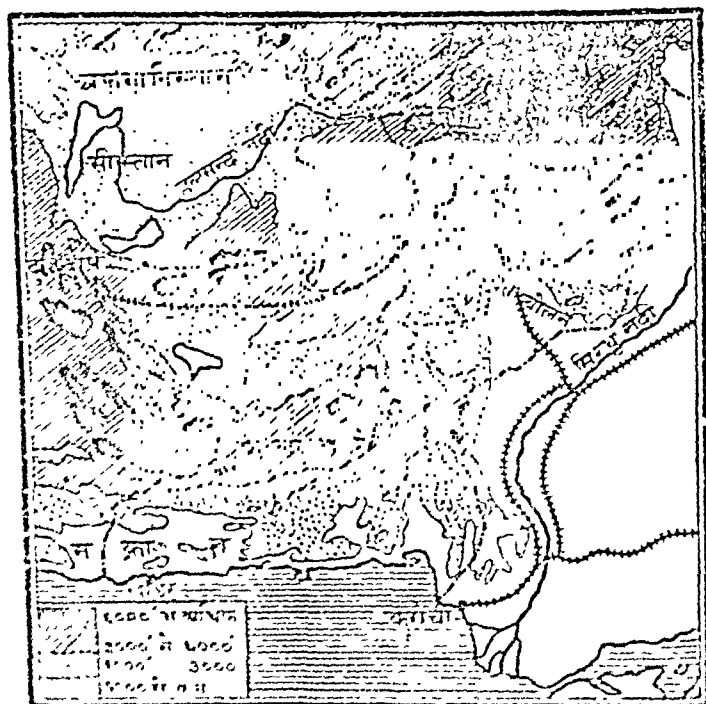
११२—बिलोचिस्तान

उत्तर-पश्चिम की ओर है, पर इसमें हामून नाम के कई विशाल आ-स्थान हैं, जिनमें समीपवर्ती पहाड़ी धाराओं का पानी समा जाता है। इन स्थानों के पास खेती के योग्य बहुत जमीन है क्योंकि पानी धरातल से दूर नहीं है।

हामून-झील के उत्तर-पूर्व में चागई प्रदेश है जहां ऊँट, बकरियां

और गधों के लिये कँटीली झाड़ियां और घास बहुत हैं।

अधिक पूर्व में पठार के सिरे पर खुश्की है। यहां चरवाहों की कुछ बस्तियां हैं।

इस प्रकार बिलोचिस्तान खुश्क पहाड़ी और उजाड़ झाड़ियों का प्रदेश है। कुछ लोग कहते हैं कि ईश्वर ने जब दुनिया के अच्छे भाग बना दिये तो बची हुई रद्दी से बिलोचिस्तान को बनाया। यहाँ पानी के बहाव के मार्ग में ही खेती होती है। ऊपरी भागों पर ऊँट, गधे और बकरे चरते हैं। अधिकांश प्रदेश बिल्कुल उजाड़ है बिलोचिस्तान में समुद्र-तट ६०० मील लम्बा है। पर बन्दरगाह एक भी अच्छा नहीं है! ग्वादर मार और पासनी नाम मात्र के बन्दरगाह हैं। इस तट से सदा पानी गिरने वाली कोई नदी भी नहीं है। ऊँचे पठार से निकलने वाली नदियां बोलन, नाड़ी और मूला हैं। मैदान में पहुँचते पहुँचते ये सब सिंचाई के नालों में समाप्त हो जाती हैं। पर ये नदियाँ वृक्ष रहित उजाड़ प्रदेश में नष्ट होने पर कुछ हरियाली पैदा कर देती हैं। पूर्वी मकरान की लोरा, पिशोन और मुश्क नदियां तथा पश्चिमी मकरान की मशखेल नदी रेगिस्तान के दलदलों में लुप्त हो जाती हैं। दश्त, हिंगोल, पुराली और हब आदि नदियाँ समुद्र की ओर जाती हैं, पर साल के अधिकांश महीनों में सूखी पड़ी रहती हैं। पहाड़ियों पर वर्षा होने पर दृश्य बदल जाता है। घाटियाँ उछलती हुई धाराओं से भर जाती हैं। अगर वर्षा कुछ दिनों तक और जारी रहे तो भयानक बाढ़ आती है। बाढ़ के बाद हैजा और बुखार फैलता है। पर वर्षा का प्रायः अभाव रहता है। जो कुछ वर्षा होती है उसके होने का समय भी निश्चित नहीं है। ग्रीष्म में विकराल गरमी पड़ती है। लोगों में इस तरह की कहावतें प्रचलित हैं—"दादर (एक नगर का नाम है) के होने पर ईश्वर ने नरक को क्यों बनाया? जो लोग गरमी के दिनों में सिबी नरक को जावें उन्हें अपने साथ गरम

कम्बल ले जाना चाहिये। पर शीतकाल में ऊँचे पठार पर, कड़ाके का जाड़ा पड़ता है।

यहाँ के जङ्गली पेड़ बहुत छोटे और मुरझाये हुए रहते हैं जङ्गली जैतून, पिस्ता, शमशाम मुख्य पेड़ हैं। सिबी के पास कत्तन में मिट्टी के तेल के कुछ चश्मे मिले हैं। सेक्रान में सीसा और जूमबेना में तांबा मिलने के निशान पाये जाते हैं। हरनाई घाटी में बढ़िया गंधक और सुरमा मिलता है। जहां कहीं पहाड़ी धाराओं या करेज (पहाड़ी ढालों से जमीन के भीतर आने वाली नदियों) से सिंचाई आरम्भ है वहाँ खेती होती है। कलात, क्वेटा, मस्तुङ्ग, पिशीन आदि स्थानों में स्वादिष्ट फल होते हैं। छोटी घाटियों में कच्चे घर और खेत अकसर मिलते हैं। दश्त और पंजगूर में अपनी बाढ़ के साथ नदियों ने इतनी उपजाऊ कांप बिछा दी है कि वहाँ अनाज, कपास, अंगूर और छुहारे बहुतायत से उगते हैं। फ़ारस की सीमा पर केज, तुम्प, और मान्द-नगर छुहारों के बगीचों के बीच में बसे हुए हैं।

बिलोचिस्तान का दृश्य दिन में बड़ा बुरा रहता है, पर मकरान का सूर्योदय और सूर्यास्त बड़ा सुन्दर माना जाता है। कुछ चोटियों पर जून तक बरफ रहती है। अधिकतर पहाड़ नंगे और उजाड़ हैं। कुछ ढालों पर हरियाली दिखाई देती है। क्वेटा और पिशीन में ऋतु के साथ दृश्य बदलता है। शीतकाल की वर्षा के बाद बसन्त में सुन्दर सुगन्धित फूल खिल जाते हैं। लहलहाती हुई फसल जून में कटती है। जुलाई अगस्त और सितम्बर में धूल भरी हुई गरम आंधियां चलती हैं अक्टूबर में रात को पाला पड़ने लगता है। आकाश में धूल का नाम नहीं रहता। शीतकाल में पत्तियां झड़ जाती हैं और जहां तहां बरफ पड़ने लगती है।

यहां की आबादी लगभग ५ लाख है। बलोच लोग पठान हैं और बलोची ही एक उपभाषा बोलते हैं। इनमें पञ्जाबी और सिन्धी के शब्द मिले रहते हैं। लिखित भाषा का अभाव है। इसी से

दूर दूर रहने वाले फ़िरके एक दूसरे की बोली नहीं समझ पाते हैं। दास लोग अपने को अरब लोगों की सन्तान बताते हैं। पंजगूर के

११६—बिलोचिस्तान का एक घुड़सवार

गिचकी लोग एक सिक्ख उपनिवेश से उत्पन्न हुये हैं। लस बेला के लूमरी लोग सोमर राजपूत हैं। खरान रेगिस्तान के नौशेरवानी लोग फ़ारसी लोगों की सन्तान हैं।

मध्यवर्ती पठार के प्रधान निवासी ब्रहुई हैं। ये लोग बलोचियों से भिन्न हैं। ब्रहुई भाषा दक्षिण भारत की द्रविड़ भाषा से मिलती

जुनती है। वहां के अधिकतर निवासी मुसलमान हैं हिन्दुओं की संख्या कम है। हिन्दू लोग प्रायः शहरों और बन्दरगाहों में बसे हैं और लेन देन व्यापार के काम में लगे हुये हैं। वहां के लोग अतिथि-सत्कार के लिये प्रसिद्ध हैं। उनमें अफ़गानिस्तान के पठानों का सा धार्मिक कट्टरपन भी नहीं है। बलोच लोग क़द में अफगानियों से कुछ छोटे हैं। वे लम्बे घूँघरदार बाल रखते हैं। अक्सर चाकू, ढाल और तलवार बंधते हैं। उनके सूती कपड़े बहुत ढीले ढाले होते हैं। साफा बहुत बड़ा होता है। चूँकि अधिकतर ये लोग चलते फिरते रहते हैं। इसलिये इनकी स्त्रियों में परदा नहीं होता है। यहां का व्यापार अधिक नहीं है। यहां की पहाड़ी ऊन बड़ी अच्छी होती है। यह व्यपार बहुत कुछ बढ़ाया जा सकता है।

उन्तीसवाँ अध्याय

सीमाप्रान्त

सीमाप्रान्त पठानों का देश है। वे पठानिस्तान चाहते हैं। पर अभी मुस्लिम लीग ने उन्हें दबा कर पाकिस्तान में मिला रक्खा है।

अगर हम डेरागाजीखां के सामने सुलेमान पहाड़ के पश्चिमी सिरे से ठीक पश्चिम की ओर एक लकीर क्वेटा तक खींचे तो उस लकीर के दक्षिण में बलोच और उत्तर में पठान जातियां मिलेंगी इस प्रकार सफेद कोह और सुलेमान का प्रदेश पठानों का देश है। इस प्रदेश की पूर्वी सीमा सिन्ध नदी और पश्चिम सीमा अफ़गानिस्तान है। इसके उत्तर में काश्मीर राज्य और कुँआर नदी है।

यह लम्बा प्रदेश बहुत ऊँचा नीचा है। यहां उजाड़, पथरीली पहाड़ियां और गहरी घाटियां हैं। कहीं कहीं पहाड़ी नदियां हैं। किसी किसी पहाड़ से सपाट ढाल या नदी के मोड़ पर कछारी धरती में एक आध खेत हैं। यहां के रास्ते बड़े भयानक हैं। इस प्रदेश में कुर्रम गोमल, स्वात, काबुल तथा उसकी सहायक चित्राल और स्वात नदियां हैं।

पश्तो या पख्तों पठानों की भाषा है। कोमल कन्धारी बोली पश्तों नाम से पुकारी जाती है। पेशावर घाटी की कर्णकटु भाषा को पख्तो कहते हैं। यह भाषा संस्कृत, प्राकृत और अरबी, फ़ारसी के मिश्रण से बनी है।

पठान लोग 'पुख्तन वाली' के नियमों को मानते हैं। इसके अनुसार ये शरणागत शत्रु को भी आश्रय देते हैं। बदला लेना इनका दूसरा धर्म है। इस प्रकार अतिथि-सत्कार करना इनका तीसरा धर्म है ये लोग बदला लेना कभी नहीं भूलते हैं। अंग्रेजी फौज में जहां

दूसरे सिपाही शादी विवाह के।लिये छुट्टी लेते थे वहां पठान।सिपाही अपने शत्रु से वदला लेने के लिये छुट्टी लेते थे।

पठान लोग अधिकतर खेतिहर या चरवाहे होते हैं। कुछ
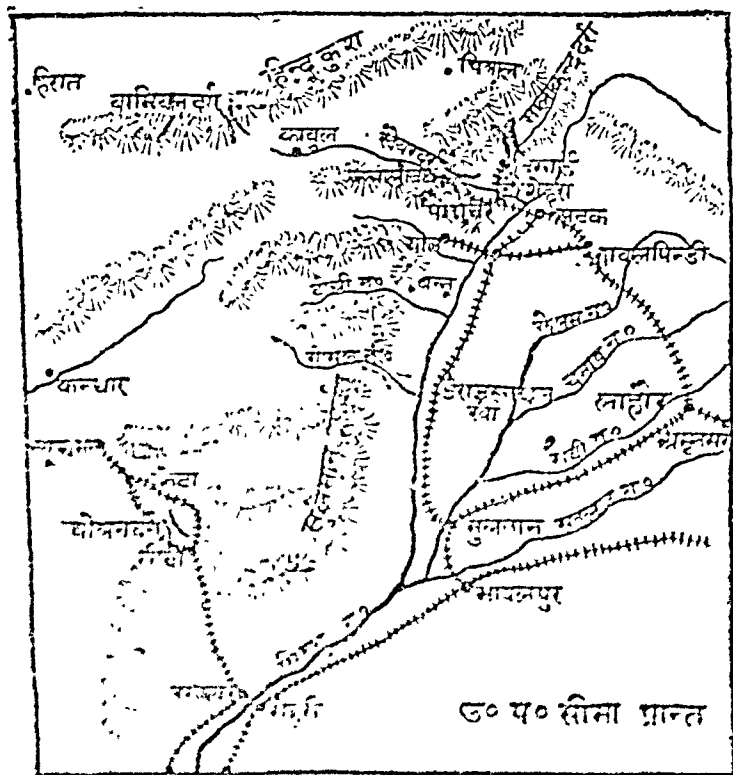
या खानदान के लोग रहते हैं। हर एक कंडी का प्रबन्ध करने के लिये एक मालिक होता है हर एक कंडी में एक जमात या मस्जिद भी होती हैं। इसकी देख भाल मुल्ला के हाथ में रहती है मस्जिद के पास ही हुजरा या सभा भवन होता है। दर्शक या यात्रीलोग यहीं ठहरते
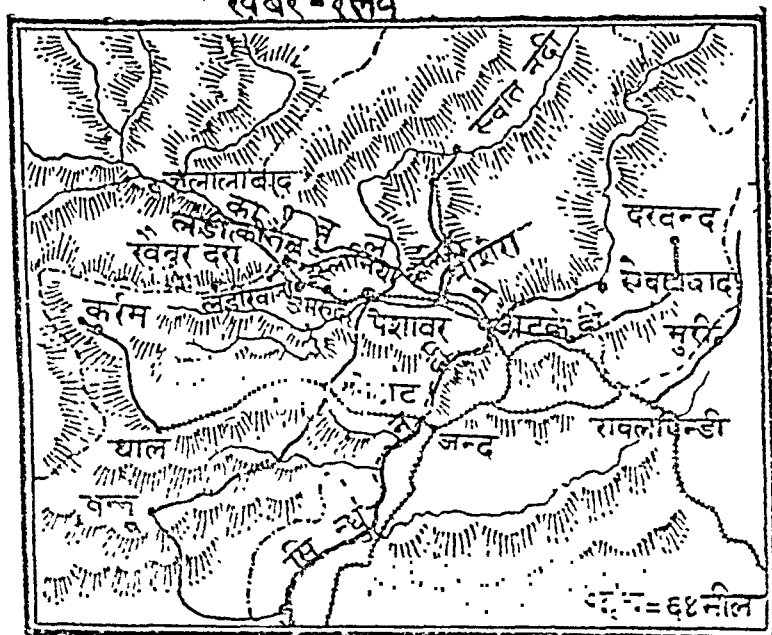
११९—खैबर प्रदेश.

हैं। गांव की सभा भी यहां होती है। महत्व की बातें इसी भाग या जिरगाह में तय होती हैं। खान या फिरके का मालिक सभापति बनता है। अधिकतर पठान कट्टर सुन्नी हैं। केवल तुरी, कुछ बङ्गश और फजई लोग शिया हैं।

उत्तरी-पश्चिमी सीमाप्रान्त भारतवर्ष का प्रायः सबसे छोटा प्रान्त है। इसकी लम्बाई प्रायः ४०० मील और औसत चौड़ाई सौ डेढ़ सौ मील है। इसका क्षेत्रफल ३८,००० वर्गमील है। इस प्रान्त का केवल १३,००० वर्गमील प्रदेश सीधे प्रान्त के शासन में है। शेष २५,००० वर्ग-मील पर भिन्न-भिन्न अर्द्ध स्वतन्त्र फिरकों का अधिकार है। भीतरी प्रबन्ध में ये लोग स्वतन्त्र हैं। बाहरी मामलों में ये पाकिस्तान सरकार के आधीन हैं। ब्रिटिश प्रदेश पाँच (हजारा, पेशावर, कोहाट, बन्नू और डेराइस्माइल खां) जिलों में बँटा हुआ है। इन जिलों की पश्चिमी सीमा प्रायः ६०० मील लम्बी है। इसी सीमा के बाद सीमा प्रान्तीय जातियों का प्रदेश है। इन लोगों पर स्वात, दीर, चित्राल-खैबर, कुर्रम और उत्तरी-दक्षिणी वजीरिस्तान की पोलिटिकल एजन्सियों के द्वारा शासन होता है। इस प्रकार इस प्रान्त की बाहरी सीमा या डयूरेन्ड लाइन ८०१ मील से कम नहीं है। यही लाइन पाकिस्तान और अफगान प्रदेश को अलग करने वाली सीमा है।

शहर को गई है। सैनिक दृष्टि से खैबर रेलवे बड़े महत्व की है। यह रेलवे जमरूद (पेशावरसे १० मील आगे) से लंडीखाना तक जाती है। इसकी समस्त लम्बाई केवल २७ मील है, पर रेल निकालने के लिये इसी २७ मील में ३२ सुरंग बनाने पड़े। खैबर दर्रे को पार करके इसने हिन्दुस्तानी रेल को अफ़ग़ानिस्तान तक पहुँचा दिया है। जमरूद के पास-पोर्ट देखे जाते हैं। बिना पासपोर्ट के कोई यात्री जमरूद के आगे नहीं बढ़ने पाता है। इनके सिवा और भी कई सड़कों का विचार हो रहा है।

इस देश में कई फिरकों का निवास है:—

यूसुफजई—यूसुफजई लोग पेशावर जिले और पास वाले स्वाधीन प्रदेश में रहते हैं।

आकोजई—ये स्वात घाटी (७० मील लम्बी और १२ मील चौड़ी) में रहते हैं। हिम-नदियों और बरफ के पिघलने से अप्रैल में नदी उमड़ आती है। पर सितम्बर से नदी फिर घटने लगती है। पहाड़ की चोटियों पर सुन्दर घने वन मिलते हैं। सजल घाटियों में मेवा के पेड़ और खेत हैं। स्वात और बाजोर में प्राचीन हिन्दू और बौद्ध भग्नावशेष गड़े पड़े हैं। कई स्थानों पर पाली के शिला-लेख मिले हैं।

उतमनखेल—इनका देश रूद, पञ्जकोरा, स्वात और अम्बहर नदियों के बीच में स्थित है।

सीमाप्रान्त के उत्तरी भाग में सबसे बड़ी रियासत चित्राल है। यह गिलगिट के पश्चिम में है। हिन्दूकुश पहाड़ इसे अफ़गानिस्तान के काफिरस्तान प्रान्त से अलग करता है। यह देश ख़ासतौर से पहाड़ी

है। यहाँ बहुत सी ऊँची बर्फीली पहाड़ियाँ और उजाड़ पहाड़ हैं खेती के योग्य जमीन यहां बहुत ही कम है। घाटियाँ बहुत ही तंग और समुद्र तल से मील डेढ़ मील ऊँची है। जलवायु ऊँचाई के अनुसार भिन्न है। एक मील की ऊँचाई पर शीतकाल का तापक्रम १२ फारेनहाइट रहता है। पर गरमी में १०० अंश हो जाता है। यहाँ भोजन की इतनी कमी है कि एक मोटा आदमी नजर नहीं आता है। जिस नदी से इस प्रदेश की सिंचाई होती है वह हिन्दूकुश के एक हिमागार से निकलती है। उत्तरी भाग में इस नदी को यारखून, मस्तूज या चित्राल नाम से पुकारते हैं। दक्षिणी भाग में यही नदी कुंआर नदी कहलाती है और जलालाबाद के पास काबुल नदी में मिल जाती है। इसे पार करने के लिये रस्सों के कई पुल हैं।

दक्षिणी मैदान और उत्तरी मैदान के बीच में ४०० मील चौड़ा पहाड़ी प्रदेश है। इसके २०० मील चित्राल में स्थित हैं। इस पहाड़ी देश की आबादी ७०,२०० है। पर ये चित्राली लोग बड़े लड़ाकू हैं। ये सब के सब सुन्नी हैं। जब एक मेहतर (यहां का राजा मेहतर कहलाता है) गद्दी पर बैठता है तो वह खून की नदी बहाने पर ही सफल हो पाता है। भाई भाई को और पिता पुत्र को मार डालने में कुछ भी नहीं समझता है।

और लगमान के लट्ठे, बाजौर का लोहा दीर और स्वात का मोम, घी चमड़ा और चावल हिन्दुस्तान पहुँचता है। नमक, शक्कर, तम्बाकू, कपड़ा, साबुन, चाय, सुई और दूसरा पक्का माल इधर आता है। गरमी के दिनों में लट्ठों या मश्कों की सहायता से काबुल नदी में बड़ी तेज़ी से व्यापार होता है।

मोहमन्द प्रदेश पहाड़ी अवश्य है, पर यहाँ के पहाड़ दुर्गम नहीं है। इसी से यहाँ कई सड़कें हैं। पेशावर से डक्का को जाने वाली सड़क सब से अधिक प्रसिद्ध है।

अफ़ीदी—अफ़ीदियों का फ़िरका बहुत बड़ा है। वे लोग पेशावर ज़िले के दक्षिण-पश्चिम में सफेद कोह के पूर्वी ढालों पर बसे हुए हैं।

अफ़ीदी प्रदेश बहुत ही वीरान और ठंडा है। वर्षा कम होने से खेती भी बहुत ही कम होती है। कुछ लोग लकड़ी काट कर और ईंधन बेच कर गुजारा करते हैं। पर अधिकाश लोग गाय, बैल, भेड़, बकरी, गधे, खच्चर और घोड़े पालते हैं। ये लोग कपड़ा और चटाई बुनने में बड़े होशियार होते हैं। मैदान और इल्म गुदार आदि स्थानों में बन्दूकें भी बनाई जाती हैं। ये लोग मजबूत और गोरे होते हैं। ये लोग लड़ाई में भी बहादुर होते हैं।

ओरकज़ई—अफ़ीदियों के दक्षिण में ओरकजई लोग बसे हैं। इनका प्रदेश ६० मील लम्बा और २० मील चौड़ा है। कुछ ओरकजई लोग कोहाट ज़िले में भी बसे हुए हैं। इनका प्रदेश प्राय: ओरकजई टिहरा कहलाता है। इनके देश का एक दरवाजा अफ़गानिस्तान की ओर खुला है। दूसरा दरवाजा हिन्दुस्तान की ओर है। यहां के लोगों की प्रधान सम्पत्ति इनके गल्ले हैं।

बंगश—ये लोग अधिकतर मीरनजई और कुर्रम घाटियों में बसे हुये हैं। कोहाट जिले का सबसे अधिक मनोहर भाग मीरनजई की ही घाटी है। जिस सफेद कोह की सफेद चोटियाँ हर एक चीज़ के ऊपर उठी हुई हैं, उसी की तलहटी में मीरनजई की घाटी है।

घाटियाँ अपने मार्गों के लिए प्रसिद्ध हैं। कोहाट से थाल तक रेलवे लाइन है। थाल से पाराचिनार तक अच्छी सड़क है। पाराचिनार से पेवार-कोतल केवल १५ मील पश्चिम में है। इसकी ऊँचाई ९,२०० फुट है। इसके बाद शुतुर्गर्दन या ऊँट के गर्दन का दर्रा है जो ११,९०० फुट ऊँचा है। इसको पार करने पर लोगर घाटी काबुल को चली गई है। यह रास्ता गरमी में ही कुछ समय के लिये खुला रहता है।

बंगश लोगों में अधिकतर अरबी ख़ून है। ये लोग शिया हैं। पश्चिमी बंगश बड़ी-बड़ी दाढ़ी रखते हैं। पर पूर्वी बंगश अपनी दाढ़ी नहीं रखते हैं दोनों ही खेती का काम करते हैं। कुछ लोग व्यापारी हैं। ये लोग अतिथि का बड़ा सत्कार करते हैं।

वजीरी—वजीरिस्तान् का पहाड़ी प्रदेश उत्तरी-पश्चिमी सीमाप्रान्त के दक्षिणी भाग से मिला हुआ है और १४० मील तक सीमा बनाता है। डेराइस्माइलखां के पश्चिम में गोमल दर्रे से कोहाट जिले तक वजीरिस्तान का प्रदेश सीमा प्रान्त से मिला हुआ है। वजीरिस्तान के पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में अफ़गानिस्तान है। इसके उत्तर-पूर्व और पूर्व में सीमाप्रान्त के कुर्रम, कोहाट, बन्नू और डेराइस्माइलखां के जिले हैं। इसके दक्षिण में बिलोचिस्तान है।

वजीरिस्तान का क्षेत्रफल प्रायः २००० वर्गमील है। इसका आकार एक समानान्तर चतुर्भुज के समान है। इस प्रदेश में कई नदियों की घाटियां हैं जो पश्चिम से पूर्व को बहती हैं और अपने मार्ग में संकुचित मैदान बनाती हैं इसके बीच में छोटे बड़े सभी तरह के पहाड़ों की गांठ है जहां से नदियों का पानी निकलता है। इसके दक्षिण में एक बड़ा पठार है।

वजीरिस्तान की दो मुख्य नदियां टोची और गोमल हैं। टोची नदी बन्नू जिले से अफ़गानिस्तान के बरमल जिले के लिये रास्ता बनाती है। गोमल नदी हिन्दुस्तान के देराजात और जोब जिलों को मिलाती है

हिन्दुस्तान और अफग़ानिस्तान के बीच में एक प्रधान मार्ग बनाती है। पोविन्दा व्यापारी इसी से आया करते हैं।

पेशावर और काबुल के बीच में ऊन, चमड़ा और रेशम आदि बहुत सा सामान मजबूत ऊँट और घोड़ों की पीठ पर लद कर आता है।

सिन्ध-प्रान्त—पहले सिन्ध प्रान्त का राजनैतिक सम्बन्ध बम्बई प्रान्त से था। इस सम्बन्ध का कारण यह था कि जब सन् १८४३ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सिन्ध को छीना उस समय पंजाब में सिक्खों का राज्य था। इसलिये सिन्ध को बम्बई प्रान्त में ही मिला दिया गया। पर भौगोलिक दृष्टि से यह (सिन्ध) प्रान्त पञ्जाब से अधिक मिलता-जुलता है। नये शासन-सुधार के अनुसार सिन्ध एक अलग प्रान्त बन गया। अब यह पाकिस्तान में शामिल है।

सिन्ध का गरम कछारी और निचला मैदान बिलोचिस्तान के पठार और राजपूताना के थार रेगिस्तान के बीच में घिरा हुआ है। सिन्ध नदी प्रायः इसके बीच में होकर बहती है। सिन्ध नदी ने इस प्रान्त पर वही कृपा की है जो नील नदी ने मिस्र देश पर की है। उत्तरी पूर्वी अफ़्रीका और अरब के मरुस्थल की रुकावट के कारण दक्षिणी पश्चिमी मानसून (मौसमी हवा) इस ओर अधिक पानी नहीं ला सकती है। मार्ग में यदि हवा कुछ पानी ले भी आवे तो सूर्य की तेज गर्मी और किसी पहाड़ के अभाव के कारण यहां पानी बरसने नहीं पाता है।

नहीं हो सकती है। इस प्रकार नदी के आस पास का प्रदेश सब कहीं हरा भरा मिलता है। पर नदी से दूर जाने पर विकराल रेगिस्तान मिलता है। कहीं कहीं पुरानी सूखी हुई नहरों और प्राचीन शहरों के*निशान मिलते हैं। सिन्ध नदी बड़ी चंचल है। कांप की मिट्टी लाकर वह लगातार नई जमीन बढ़ाती रहती है। श्रब से प्रायः १२ सौ वर्ष पहले जब अरबी लोगों ने इस प्रान्त पर हमला किया था तो समुद्र-तट पर देवल नाम का सुन्दर नगर था। पर अब इस नगर की स्थिति कई मील भीतर की ओर पड़ गई। सिन्ध प्रान्त में चौड़ी खुश्क और गहरी घाटियां भी अक्सर मिलती हैं। इनसे सिद्ध होता है कि सिन्ध नदी अपनी धारा को भी बदलती रही है। किसी समय में यह नदी वर्तमान डेल्टा से कई सौ मील दक्षिण-पूर्व की ओर कच्छ की खाड़ी में गिरती थी।

हाल में नदी के उजाड़ मुहाने से प्रायः २०० मील ऊपर सक्खर नगर के नीचे नदी के शासपास एक विशाल बांध बनाया गया। इस बांध के बन जाने से नदी के पानी से बड़ी नहरों के द्वारा दूर दूर तक सिंचाई होने लगी है।

उपज—सिन्ध की जमीन कांप की बनी होने के कारण बड़ी उपजाऊ है, केवल पानी की कमी है। जहां कहीं सिंचाई की जाती है वहां अच्छी फ़सलें होती हैं। गेहूँ और कपास यहां की मुख्य फसल हैं। थोड़ा बहुत धान और दूसरा अनाज भी होता है।

---

*मोहेंजोदड़ो के भग्नावशेषों ने संसार की सर्वोत्कृष्ट सभ्यता को प्रकट किया है।

नगर—कराची शहर सिन्ध नदी के डेल्टा से कुछ दूर पश्चिम

१११—सिन्ध प्रान्त की नहरें और रेलें

गाह और सिन्ध प्रान्त तथा पाकिस्तान की राजधानी है। कराची से ही सारे पञ्जाब और सिन्ध का गेहूँ बाहर भेजा जाता है। यहां से बहुत सी कपास भी बाहर जाती है। खुश्क जलवायु के कारण अभी यहां पुतलीघर नहीं बने हैं। यहां से एक रेल सिन्ध नदी के डेल्टा के सिरे पर उस स्थान को गई है जहां पुल बन सकता है। यहीं नदी के पूर्वी किनारे पर छोटा नगर कोटरी है। हैदराबाद से एक रेल थार
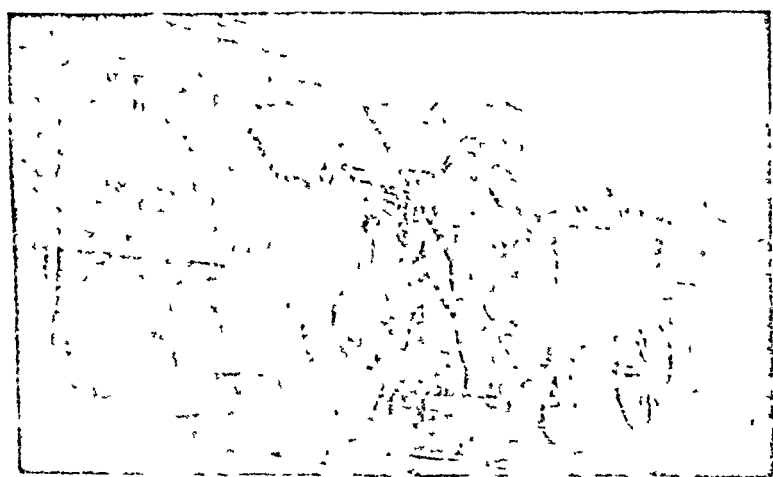
११८—कराची और दिल्ली आदि नगरों में मोटरों के होते हुये भी ऊंट-गाड़ियां शान से चला करती हैं।

रेगिस्तान को पार करके लूनी जंकशन में बाम्बे-बड़ौदा और सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे से मिल जाता है। दूसरी रेल सिन्ध नदी के किनारे किनारे रोहरी होती हुई पञ्जाब को गई है। रोहरी और सक्खर के बीच में एक दूसरा पुल है। यहां नदी के बीच में एक छोटा सा द्वीप है। इसी के सहारे से बड़ा ही अद्भुत झूले का (सस्पेंशन) पुल बना है। सक्खर शहर बड़ा ही सुन्दर व्यापारिक केन्द्र है। यहां से एक रेलवे बोलन दर्रे से क्वेटा को गई है। दूसरी रेलवे सक्खर (लक)

राजधानी रही। यहां महाराजा रंजीत सिंह का बनवाया हुआ किला और जहांगीर का मकबरा है।

मुलतान—लाहौर से प्रायः पौने दो सौ मील दक्षिण पश्चिम की ओर चनाब नदी के बांये किनारे पर मुलतान नगर स्थित है। यह व्यापार मार्गों का केन्द्र है। रुई और रेशम का अच्छा काम होता है।

रावलपिंडी—यहां छावनी है।

लायलपुर—गेहूं की बड़ी मण्डी है।

स्यालकोट काश्मीर की सीमा के पास कारबार का केन्द्र है। यहीं बाबा नानक की समाधि है।

जेहलम शहर जेहलम नदी के किनारे, अटक सिन्ध नदी पर स्थित है। सिन्ध नदी के किनारे पर बसे हुये डेरागाजी खां और डेराइस्माइल खां दूसरे नगर हैं

इकतीसवां अध्याय

भारतवर्ष की सड़कें और तार

आजकल भारतवर्ष में प्रायः ५० हजार मील पक्की और डेढ़ लाख मील कच्ची सड़कें हैं। पक्की सड़क बनाने में काफी खर्च हो जाता है। गङ्गा और सिन्ध के मैदान में प्रधान कठिनाई यह है कि सड़क बनाने के लिये पत्थर नहीं मिलता है। कहीं ईंटों को तोड़ कर सड़क की कुटाई होती है, कहीं कंकड़ों से काम लिया जाता है। दूर से कंकड़ मंगाने में अधिक खर्च पड़ता है। पुल बनाने में काफी खर्च होता है। दक्षिण के ऊंचे नीचे पहाड़ी भागों में सड़क कूटने के पत्थर तो बहुत हैं पर मार्ग को काट कर बनाने और सुगम ढाल करने में बड़ी कठिनाई पड़ती है। कच्ची सड़कों पर खर्च बहुत कम होता है, लेकिन वर्षा ऋतु में वे दुर्गम हो जाती हैं।

आजकल हिन्दुस्तान के प्रायः सभी बड़े-बड़े नगर एक दूसरे से पक्की सड़कों से जुड़े हुये हैं। पर कलकत्ते से इलाहाबाद और दिल्ली होकर पेशावर तक पहुंचने वाली ग्रांडट्रंक रोड सर्व प्रसिद्ध है। मिर्ज़ापुर से जबलपुर होकर नागपुर जाने वाली ग्रेंड डेकन रोड़ भी पुरानी प्रसिद्ध सड़क है। दिल्ली से गढ़मुक्तेश्वर, मुरादाबाद, बरेली, सांडी और रायबरेली होकर बनारस और पटना पहुंचने वाली सड़क भी पुरानी है। पुरानी सड़कों में से ही एक सड़क आगरे से अजमेर को गई है।

रेलों ने पक्की सड़कों का रुख बदल दिया है। सामान और मुसाफिर ढोने के लिये अधिकतर सड़कें रेलवे स्टेशनों तक बन गई हैं। लेकिन रेल और मोटर लारियों में होड़ हो गई है कहीं-कहीं पहले मोटर लारियाँ इतनी अधिक चल निकलती हैं कि रेल न्चुल जाती हैं। कहीं रेलों पर इतनी भीड़ मुसाफिरों को इतनी तकलीफ रहती है कि वहां मोटर लारियां चलने लगती हैं और रेल की आमदनी कम हो जाती है।

रेल और सड़कों के सिवा तार की लाइन ६३,८०० मील है जिसमें प्रायः साढ़े चार लाख मील तार लगा है। तार से आने-जाने में बड़ी सुविधा रहती है। हिन्दुस्तान में तार की प्रधान लाइनें ये हैं:—

१—कलकत्ते से मद्रास (पूर्वी तट के मार्ग से)

२—कलकत्ता से बम्बई (इलाहाबाद, जबलपुर और भुसावल होकर अथवा सिवनी, नागपुर और भुसावल होकर)

३—कलकत्ते से करांची (आगरा और हैदराबाद होकर)

४—कलकत्ते से शिमला (आगरा और दिल्ली होकर)

५—कलकत्ते से रंगून (अक्याब होकर)

६—कलकत्ते से मांडले (अक्याब और रंगून होकर अथवा गौहाटी और मनीपुर होकर)

७—बम्बई से मद्रास (ग्रेट इण्डियन पेनिन्सुला और मद्रास रेलवे के मार्ग से अथवा दक्षिणी मराठा और मद्रास रेलवे के मार्ग से)

८—बम्बई से करांची (अहमदाबाद और दीना होकर अथवा भुसावल माड़वार, जकशन और हैदराबाद होकर)

९—बम्बई से कालीकट (बङ्गलोर और मैसूर होकर)

१०—मद्रास से कालीकट (जाललपट और पोदानूर होकर)

११—मद्रास से तूतीकोरन (साउथ इंडिया रेलवे के मार्ग से)

सीमा-प्रान्त पञ्जाब और संयुक्त-प्रान्त के प्रधान नगरों में टेली-फोन-लाइनें हैं। इसी प्रकार कलकत्ता और कोयले की खानों के बीच में भी टेलीफोन लगा है।

करांची, पेशावर, इलाहाबाद, मद्रास आदि स्थानों में बेतार का तार है। बम्बई और मद्रास, बम्बई और करांची, बम्बई और कलकत्ता कलकत्ता और ढ़ाका, कलकत्ता और रंगुन, कलकत्ता और दिल्ली, दिल्ली और लाहोर, दिल्ली और करांची के बीच में हवाई-जहाज मार्ग निश्चित हुआ है।

———

बत्तीसवाँ अध्याय

भारतवर्ष के जल-मार्ग

सड़क या रेल-मार्ग कहीं से जल-मार्ग अधिक सस्ता पड़ता है। जल-मार्ग को बनाने या ठीक रखने में सड़क या रेल से कहीं कम खर्च होता है। यदि कोई इञ्जिन १ घंटे में सड़क पर १० मन के बोझ को ६० मील खींच सकता है तो वही इञ्जिन उतने ही समय में उतनी ही दूरी तक रेल की पटरी से १०० मन और नाव के द्वारा पानी में ७०० मन बोझ खींच सकेगा।

इन सब कारणों से सभ्य जातियों ने अपने देश के जल-मार्गों को उपयोगी करने में पूरा-पूरा प्रयत्न किया है। फ्रांस, जर्मनी आदि उन्नति देश अपने जल-मार्गों के ऊपर करोड़ों रुपये खर्च कर सकते हैं और नाव चलाने वालों को रेल की अनुचित स्पर्धा (होड़) से बचाते हैं। मौर्यकाल में भारत में नाव चलाने के साधन दुनिया भर से अच्छी दशा में थे। मुगल समय के अन्त तक यहां नाव चलाने का काम जोरों से होता रहा। पर जब से रेलों का आगमन हुआ तब से लाखों नाव चलाने वाले छिन्न-भिन्न हो गये। सरकारी सहायता न मिलने के कारण वे रेल का मुकाबला न कर सके। १८७८ ई० में काटन साहब ने ३० करोड़ रुपये में भारत में आवश्यक जल-मार्ग बनाने का वादा किया था। कुछ प्रधान मार्ग ये थे।

१—कलकत्ता से कराची तक—गङ्गा और सिन्ध नदी के निचले जल विभाजक में एक नहर खोदने से दोनों-जल-मार्ग जोड़ दिये जाते।

२—कोकोनाड़ा से सूरत तक गोदावरी और ताप्ती नदियों की सहायता से।

३—तुगभद्रा से कारवार (अरब सागर तट पर) तक।

४—पोनांग नदी के ऊपर पालघाट और कायम्बटोर।

पर रेल पर १ अरब १२ करोड़ रुपये खर्च हो चुके थे। इसलिये काटन साहब की सुनवाई न हुई। अब तो रेलों में और भी अधिक धन लग चुका है। इसलिये हमारे जल-मार्ग अच्छी दशा में नही है।

नाव चलने योग्य नहरें

गोदवरी नहर में दोलेश्वरम् से और कृष्णा नहर में फैजाबाद से समुद्र की ओर चपटे डेल्टा में तीन चार सौ मील तक नावें चल सकती हैं ये दोनो स्थान एक दूसरे से और वकिंघम* नहर से जुड़े हुये हैं। कनुलकड़ापा नहर भी १९० मील तक नाव चलने योग्य है। ऊँचे नीचे धरातल के कारण इसमें प्रायः ४० झील बनाने की आवश्यकता पड़ी। गोदावरी और कृष्णा डेल्टा की कपास और चावल का अधिकतर भाग नहरों द्वारा ही ढोया जाता है।

उड़ीसा-नहर और मिदनापुर-नहर में भी नावें चलती हैं। सुन्दर-वन हुगली और दूसरी (गङ्गा) उपशाखायें नहरों द्वारा जोड दीं गई हैं।

सोन नदी की नाव चलने योग्य तीन प्रधान नहरें बक्सर, आरा और दानापुर में गङ्गा से मिला दी गई है।

संयुक्त प्रान्त में गङ्गा की छोटी और बड़ी नहरों में २७५ मील तक नावें चल सकती हैं। गङ्गा-नहर कानपुर में गङ्गा से मिला दी गई है।

पञ्जाब में पश्चिमी यमुना-नहर में सिरे से लेकर दिल्ली तक नावें चल सकती है। (सरहिन्द-नहर में सिरे ऊपर स्थान) से लेकर फीरोजपुर

*वकिंघम नहर कारोमंडल तक ठीक दक्षिण की ओर २६२ मील तक जाती है और मद्रास शहर को कृष्णा-डेल्टा से मिलती है।

यह नहर पहाड़ी लकड़ी वहा लाने में विशेष रूप से उपयोगी है।

नगर तक नाव चलाने योग्य है। फीरोजपुर में सरहिन्द नहर सतलज नदी से मिल गई है। यहां से आगे करांची तक लगातार जल-मार्ग है।

नाव चलाने योग्य नदियाँ

नर्मदा और ताप्ती नदियों के निचले मार्ग में नावें चल सकती हैं। इनका शेष भाग प्रायः झाड़ी है। पर सिन्ध, गङ्गा और ब्रह्मपुत्र नदियों में मुहाने से लेकर सैकड़ों मील तक प्रायः साल भर स्टीमर चल सकते हैं। सिन्ध नदी मुहाने से लेकर डेरा इस्माइल खाँ (८०० मील की दूरी) तक स्टीमर चलने योग्य है। इसकी सहायक चनाव और सतलज में भी छोटी छोटी नावें साल भर चल सकती हैं। पर चनाव में चिनिओट और सतलज में फीरोजपुर के आगे बहुत कम नावें चलती हैं। सिन्ध की उपशाखाओं (फुलेली नहर और पूर्वी नारा) में नावें चला करती हैं।

गङ्गा नदी के मुहाने से लेकर कानपुर तक सुगमता से नावें चला करती हैं। यमुना नदी में प्रयाग से राजापुर तक प्रायः साल भर नावें चला करती हैं। गङ्गा की सहायक घाघरा नदी में भी फैजाबाद तक स्टीमर पहुंचते हैं। पर रेल की स्पर्धा के कारण गङ्गा और सिन्ध नदियों में धुआंकश नाओं को सफलता न मिल सकी। ब्रह्मपुत्र नदी में डिब्रूगढ़ तक और इसकी सहायक सुरमा नदी में सिलहट और कछार तक स्टीमर चला करते हैं हुगली नदी में नदियों तक स्टीमर पहुंचते हैं। पूर्वी नाव बंगाल में नाव चलने की सुविधायें इतनी अधिक हैं कि रेलों को बढ़ाने में बाधा पड़ती है। छोटी छोटी नहरें बड़ी नदियों को जोड़ती हैं। इस लिए कलकत्ते आसाम (७५० मील से ऊपर) तक स्टीमर बराबर चला करते हैं। अधिकांश जूट, चाय और धान नावों से ही बड़े बड़े नगरों में पहुंचता है।

महानदी, गोदावरी और कृष्णा नदियों में डेल्टा के ऊपर कुछ दूर तक नावें चल सकती हैं वर्षा ऋतु में इनकी सहायक नदियों में भी नावें चल सकती हैं।

ब्रह्मा में इरावदी नदी में साल भर मुहाने से लेकर भामो (५०० मील की दूरी) तक स्टीमर चलते हैं। कुछ छोटे स्टीमर और आगे मिचना तक पहुंचते हैं। इरावदी की उपशाखाओं तथा इसकी सहायक चिंदविन नदी में भी स्टीमर चलते हैं। ब्रह्मा की सीटांग तथा अन्य नदियों में भी कुछ दूर तक स्टीमर चल सकते हैं।

भारतवर्ष की जलशक्ति

ऊँचाई से गिरने वाले पानी में उसी तरह की स्वाभाविक शक्ति होती है। जिस तरह कोयला या तेल जलाकर भाप में शक्ति पैदा की जाती है। पहाड़ी प्रदेश में पनचक्की (पानी के जोर से चलने वाली आटा पीसने की चक्की) का प्रयोग बहुत पुराने समय से चला आया है। पानी जितनी अधिक ऊचाई से गिरेगा उसमें उतनी अधिक शक्ति होगी। इस प्रकार १०० मन पानी १,००० फुट की ऊँचाई से गिरने पर उतनी ही शक्ति पैदा करेगा जितनी शक्ति १,००० मन पानी १०० फुट की ऊँचाइ से गिरने पर पैदा करेगा।

उच्च हिमालय से निकलने वाली असख्य नदियों में अपार शक्ति छिपी हुई है। यदि इस शक्ति से विजली तैयार की जावे तो हिन्दुस्तान का कारवार एक दम चोटी तक पहुंच जाय।

हिन्दुस्तान में विजली तैयार करने का सब से बड़ा प्रयत्न बम्बई प्रान्त में हुआ है। यहां रुई आदि के कारखाने बहुत हैं। ब्रह्मा का तेल या बङ्गाल का कोयला यहां पहुंचते पहुंचते बहुत महगा पड़ता है पर पश्चिमी घाट से प्रति वर्ष डेढ़ सौ इंच वर्षा होती है। इस पानी से बिजली तैयार करने के लिये ताता महोदय ने मोर-घाट के ऊपर लोना-वाला में तीन विशाल बांध बनवाये। इस प्रकार लोनावाला में एक अगाध जलाशय बन गया। यह पानी बड़े बड़े नलों द्वारा १,७२५ फुट की ऊँचाई से नीचे खोपोली के पावर-हाउस (शक्ति-गृह) में छोड़ा गया. इस ऊँचाई से गिरने के कारण पानी के प्रत्येक वर्ग इंच में

पांच मन का दवाव हो गया इसी के जोर से पानी के पहिये चलते हैं और विजली तैयार होती है। १६१५ ई० में लोनावालो के "ताना हाइड्रो एलोट्रिक् वर्कस" वम्बई की मिलों की और ट्राम्वे की विजली चला रहे हैं इस काम में पौने दो करोड़ रूपये लगे। पर इसमें सफलता ऐसी हुई कि दूसरे ही वर्ष "आन्ध्रा वेली पावर सपलाई कम्पनी दो करोड़ रूपये की लागत से खड़ी की गई है। यह कम्पनी वम्बई और वन्द्रा तथा कुर्ला के मुहल्लों को विजली पहुंचने लगी। आन्ध्रा घाटी में छोटा वांध बनाना पड़ा। बांध बनने से जो आन्ध्रा झील वनी वह लोनावाला से १२ मील उत्तर पूर्व की ओर स्थित है। और ५६ मील की दूरी से वम्बई में विजली पहुंचाती है।

१६१६ ई० में ६ करोड़ रुपये की लागत से एक तीसरी कम्पनी वनी। इस कम्पनी ने दक्षिण की ओर नीला और मूला नदियों में बांध बना कर विजली तैयार करने का निश्चय किया। यहां ८० मील की दूरी से वम्बई को विजली पहुंचाई जाती है।

यहां से प्राय: १०० मील दक्षिण में विजली बनाने की एक चौड़ी योजना हो रही है। इसमें लगभग ८ करोड़ रुपये खर्च होंगे और वम्बई के नये कारखाने में विजली पहुंचाई जायगी।

मैसूर राज्य में कावेरी के शिव सुद्रम् ताप से हिन्दुस्तान भर में सर्व प्रथम विजली तैयार हुई। यहां से ६२ मील की दूरी पर कोलार की सोने की खानों में, और ५० मील की दूरी पर वंगलोर में विजली पहुंचाई जाती है।

शिवसमुद्रम से २५ मील मेकादात् स्थान पर कावेरी में बांध बनाकर और कावेरी की सहायक शिमला नदी के स्वाभाविक प्रताप से भी मैसूर राज्य में विजली तैयार करने का प्रयत्न हो रहा है।

काशमीर राज्य का विजलीघर विचित्र है। वारामूला के आगे झेलम नदी में प्रताप है, पर यह बहुत ऊँचा नहीं । इस लिये इस स्थान से पहाड़ी के किनारे किनारे लकड़ी के बड़े घेरे में सात मील तक पानी

पहुचाया गया है। फिर वह बडे बड़े नालों से बिजली घर में छोड़ा गया है। यहाँ जो बिजली तैयार होती है उसमें बारामूला और श्रीनगर में रोशनी होती है। श्रीनगर का रेशम का कारखाना भी इसी के जोर से चलता है।

बिजली के छोटे छोटे आयोजन शीलाँग, कालिमपोंग (दार्जिलिंग) नैनीताल और मंसूरी में है।

मन्डी राज्य में व्यास नदी की एक सहायक उहल नदी के किनारे पञ्जाब सरकार ने बिजली तैयार करवाने का काम १६३३ से खोल दिया है। इसमें शिमला, अम्बाला, करनाल और फ़ीरोजपुर को बिजली पहुंचती है और बहुत ही सस्ती है गङ्गा आदि कई सिंचाई की नहरों और झीलों से भी बिजली तैयार करने का बिचार हो रहा है जिससे खेती का काम भी बिजली की शक्ति से हो सकेगा।

पर मैदान की मन्दवाहिनी नदियां बिजली के काम के लिये व्यर्थ है।

तेंतीसवाँ अध्याय

भारतवर्ष के रेल-मार्ग

अब से प्राय: ८० वर्ष पहले हिन्दुस्तान में एक भी रेल न थी। डरते डरते परीक्षार्थ हावड़ा (कलकत्ता) से रानीगंज (१२० मील) बम्बई के कल्यान (३३ मील) और मद्रास से आर्कोनम (३९ मील) तक तीन रेलवे लाईनें बनाई गईं। इस जाँच के बाद ८ बड़ी रेलवे कम्पनियाँ बनीं। रेलवे लाइन बनाने का काम इस तेजी से हुआ कि इस समय सारे हिन्दुस्तान में २९,००० मील से अधिक रेलवे-लाइनें हैं। पर पश्चिमी देशों के मुक़ाबिले में हिन्दुस्तानी रेलों का विस्तार बहुत ही कम है। योरुप का क्षेत्रफल से प्रायः दुगना है। वहाँ की आबादी प्रायः सवाई है। लेकिन योरुप में २ लाख मील रेलवे लाइनें हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका तो हिन्दुस्तान से दुगुना भी नहीं है वहाँ की आबादी हिन्दुस्तान की आधी है। पर वहाँ हिन्दुस्तान से ठीक सात गुनी रेलवे लाइनें हैं।

रेल निकालने में बहुत खर्च पड़ता है। इसलिये लाइन और स्टेशन आदि बनाने के लिये कम्पनियों को ज़मीन मुफ्त दे दी गई। आरम्भ की कम्पनियों को सरकार ने रेलों पर लगी हुई पूंजी पर ५ फ़ी सदी लाभ की गारेन्टी (ठीका) दे दिया तिस पर भी प्रति मील पर सारी लागत का औसत पौने दो लाख रुपये से ऊपर पड़ा है। सारी लाइन में ६ अरब ५० करोड़ रुपये लगे। यदि हम चार चार रुपये एक साथ रख कर चाँदी

*इसी से कम्पनियों ने लापरवाही से खर्च किया और उचित किफ़ायत न की।

की ऐसी लाइन बनावें जिसमें रुपये एक दूसरे को छूते रहें और उनके बीच में खाली जगह न बचे तो रुपयों को यह लाइन हिन्दुस्तान में सारे रेल-पथ (३७,००० मील) पर बिछाई जा सकती है। लाइन का जो भाग देशी रियासतों में होकर गया है उसका खर्च उन रियासतों से लिया गया है। शेष में उधार लेकर व्यय किया गया है जिसका हमें सूद देना पड़ता है।

रेल निकालने का मुख्य उद्देश्य यह था कि फौज और व्यापार को सुविधा मिले। लड़ाई के अवसर पर एक स्थान के सिपाही दूसरे स्थान पर शीघ्रता पूर्वक पहुँचाये जा सकते हैं। इसलिये प्रत्येक स्थान पर अधिक फौज नहीं रखनी पड़ती है। सीमाप्रान्त और पञ्जाब की रेलें खास कर इसी उद्देश्य से खोली गईं। रेलों के खुल जाने से गेहूँ आदि देश का कच्चा माल बन्दर-गाहों तक कम समय और कम किराये में बाहर जाने के लिये पहुंचने लगा। यह उद्देश्य प्रायः सभी रेलों का है। अकाल के समय अनाज लाने में भी रेलों से बड़ी सहायता मिलने लगी।

आंधी आदि के डर से हिन्दुस्तान की रेलें अँग्रेजी रेलों (४ फुट ८½ इञ्च से अधिक चौड़ी बनाई गईं। इन रेलों के पटरियों के बीच में साढ़े पाँच फुट का अन्तर रक्खा गया। पर इनसे खर्च अधिक बढ़ने लगा। इसलिये आगे चल कर मीटर गेज रेलें बनीं। एक मीटर ३ फुट ३⅜ इञ्च के बराबर होता है। यही अन्तर इन रेलों की पटरियों में रक्खा गया। अधिक चढ़ाई के पहाड़ी स्थानों और बहुत ही कम व्यापार वाले स्थानों में तंग या नेरोगेज रेलवे खुली। इसकी पटरियों के बीच में दो या ढाई फुट का अन्तर होता है। इस तरह की रेल सारे हिन्दुस्तान में १,००० मील से अधिक नहीं है। जिन भागों में व्यापार की बहुत आवश्यकता है वहाँ चौड़ी लाइन को भी दुहरा कर दिया है। उदाहरण के लिये हावड़ा (कलकत्ता) और इलाहाबाद के बीच में दुहरी लाइन है।

हिन्दुस्तान की प्रधान रेलें

ईस्ट इण्डियन रेलवे

यह लाइन सब से पुरानी लाइनों में से है। रेलों के पहले अधिकतर व्यापार नावों से होता था। इसलिये नावों के व्यापार छीनने के लिये आरम्भ यह लाइन गङ्गा के किनारे (कानपुर तक) बनाई गई पीछे से समय बचाने के लिये मुगलसराय और सहारनपुर के बीच में गया होकर सीधी लाइन (ग्रांड कार्ड) बना ली गई। पहले पहल प्रधान लाइन को सीधा और छोटा रखने की इतनी धुनि सवार थी कि बहुत से नगर अलग छूट गये। पीछे से इनको मिलाने के लिये बहुत शाखाएँ (ब्रांच लाइनें) खोली गईं यह लाइन कलकत्ते से देहली होकर कालका जाती है। इसकी एक प्रधान शाखा इलाहाबाद से जबलपुर को गई है। अब इस शाखा पर जी० आई० पी० रेलवे का प्रबन्ध है। आजकल अवध रुहेलखंड रेलवे* भी इसमें शामिल हो गई है इस प्रकार यह लाइन देश के अत्यन्त घनी और आबाद भाग में होकर गुज़रती है। कोयले की बड़ी खानें भी इसी लाइन पर स्थित हैं। इसलिये इसकी मालगाड़ियाँ कोयला, कपास, गेहूँ, तिलहन, चावल, अफ़ीम, गुड़, नमक, कपड़ा, मशीन आदि से खचाखच भरी रहती हैं। कई व्यापार-केन्द्रों (कलकत्ता, कानपुर आदि) तीर्थ-स्थानों (प्रयाग, काशी आदि) में पहुँचने के कारण इस लाइन पर सवारियों की भी भीड़ रहती है। मेला के दिनों में स्पेशल गाड़ियाँ छोड़नी पड़ती हैं। कभी कभी तो तीसरे दर्जे के मुसाफ़िर माल

---

*यह लाइन मुगलसराय से सहारनपुर तक जाती है। इसकी एक शाखा इलाहाबाद से फैजाबाद को गई है। दूसरी प्रधान शाखा लक्सर से देहरादून (हरिद्वार होकर) को गई है। कलकत्ता से सहारनपुर को सीधा रास्ता इसी लाइन से गया है।

गाड़ियों में भर दिये जाते हैं। यह लाइन ग्रीष्म-ऋतु की राजधानी (शिमला) शीतकाल की राजधानी (दिल्ली) और व्यापारिक राजधानी कलकत्ते से मिलाती है इसलिये इस लाइन में पहले दर्जे के डब्बे भी खाली नहीं रहते हैं। इन सब कारणों से इस लाइन को प्रति वर्ष कई करोड़ रुपये का लाभ होता है। इसका समस्त विस्तार प्रायः ४ हजार मील है।

जी. आई. पी. अथवा ग्रेट इण्डियन पेनिन्सुला रेलवे

यह रेलवे भी ई० आई० आर० की तरह पुरानी है। इसका समस्त वस्तार प्रायः तीन हज़ार मील है जिसमें ४६२ मील तक दुहरी लाइन है यह रेलवे बहुत ही ऊँचे-नीचे प्रदेश में होकर जाती है। इसलिये इसके मार्ग के भिन्न-भिन्न दृश्य बड़े मनोहर हैं। पर इसके बनाने में बहुत सा धन लग गया। बम्बई से भीतर की ओर आगे बढ़ने पर शीघ्र ही पश्चिमी घाट मार्ग में पड़ते हैं। बम्बई से पूना होकर रायचूर को जाने वाली लाइन को भारघाट के ऊपर चढ़ना पड़ता है। सब ऊँचाई १,८३१ फुट है, पर चढ़ाई का मार्ग १६ मील है। इस में २५ सुरंग पड़ते हैं रायचूर में यह लाइन मद्रास रेलवे से मिल गई है। बम्बई से नागपुर जाने वाली लाइन थालघाट के ऊपर होकर जाती है। इस भाग की ऊँचाई केवल १७२ फुट है और ६ मील की चौढ़ाई में १३ सुरंग पड़ते हैं। नागपुर में यह लाइन बङ्गाल नागपुर-रेलवे से मिलती है। इसी की एक शाखा जबलपुर को गई है। नैनी में यह ई० आई० आर० से मिलती है। प्रधान लाइन इटारसी से होशंगाबाद, भूपाल बीना, झाँसी ग्वालियर और आगरा होती हुई दिल्ली को चली गई है। झाँसी से एक शाखा कानपुर को और दूसरी बाँदा होती हुई मानिकपुर को गई है। इसी की शाखाएँ भोपाल से उज्जैन को और बीना से कटनी को गई है। यह रेलवे हिन्दुस्तान के कम आबाद प्रदेश में होकर जाती है। लेकिन इस लाइन के बड़े शहर जुदे

हुये हैं। बम्बई होकर योरुप जाने वाली डाक और फौज इसी लाइन पर होकर जाती है। योरुप जाने वाले अधिकतर मुसाफिर पहले दर्जे में सफर करते हैं इसलिए हिन्दुस्तान की दूसरी रेलों के मुकाबले में जी० आई० पी० का पहला दर्जा सबसे अधिक भरा रहता है। यह रेलवे दक्खिन, बरार और खान देश में कपास के विशाल क्षेत्र को पार करती है। इसलिये इसकी मालगाड़ियाँ सब से अधिक कपास ढोती हैं। कपास के अतिरिक्त यह रेलवे अनाज पत्थर, नमक, शक्कर, तेल-लकड़ी आदि सामान ढोती हैं।

नार्थ वेस्टर्न रेलवे

आरम्भ में यह लाइन दिल्ली से लाहौर होकर मुलतान तक और कराची से कोटरी (हैदराबाद) तक खुली थी। इसलिये मुलतान और कोटरी के बीच में नाव-द्वारा सिन्ध नदी में यात्रा करनी पड़ती थी। आजकल हिन्दुस्तान की सबसे अधिक लम्बी (४,१०० मील) लाइन यही है। १७७ मील तक दुहरी लाइन है। यह लाइन फौज के सुबीते के लिये सब कहीं चौड़ी बनाई गई है। प्रधान लाइन दिल्ली से पेशावर और कराची से लाहौर को जाती है। इसकी एक प्रसिद्ध शाखा सक्खर के पास सिन्ध नदी को पार करके रुड़की जकशन से क्वेटा और न्यू चमन को गई है। बोलन दर्रे के मार्ग में इस शाखा लाइन को ढाई मील लम्बी खोजक सुरङ्ग पार करना पड़ता है। यह सुरङ्ग हिन्दुस्तान भर में सबसे अधिक लम्बी है। फौजी लाइन होने से नार्थ वेस्टर्न रेलवे को हिन्दुस्तान की और रेलों से कहीं अधिक घाटा रहता है। सीमा प्रान्त और बिलोचिस्तान में इसकी गा[illegible]ों में तीसरे दर्जे में भी भीड़ नहीं रहती है। पर पंजाब में नहरों के खुल जाने से यह रेलवे सबसे अधिक गेहूँ दिसावर

*पेशावर से यह लाइन जमरूद और खैबर दर्रे तक बढ़ गई है।

मे मती है। जब सिन्ध की नहरों से भली-भांति सिंचाई होने लगेगी तब शायद इस रेलवे को घाटा न रहेगा।

बाम्बे बड़ौदा और सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे

यह लाइन बम्बई से आरम्भ होता है। पश्चिमी तट के पास सूरत, भड़ौंच, बड़ौदा और अहमदाबाद होती हुई उत्तर में यह लाइन वीरम गांव तक चली गई है। अहमदाबाद से मीटरगेज लाइन आरम्भ होती और माउन्ट आबू, मारवाड़, जंकशन, अजमेर और जयपुर होती हुई आगरा और कानपुर को चली गई है। यह लाइन भटिंडा और दिल्ली में नार्थ वेस्टर्न रेलवे से मिली हुई है। इसकी एक शाखा अजमेर से चित्तौड़, रतलाम और इन्दौर होती हुई खंडवा में जी० आई० पी० से मिल गई है। इसी की चौड़ी लाइन बम्बई, बड़ौदा, रतलाम, क्वेटा, भरतपुर और मथुरा होती हुई दिल्ली को गई है। मालवा प्रदेश को छोड़ कर यह लाइन अधिकतर कम आबाद और रेगिस्तानी प्रदेश में होकर जाती है। लेकिन कुछ तीर्थों और प्रसिद्ध शहरों के कारण इस लाइन पर काफ़ी मुसाफिर सफर करते हैं। इसके मार्ग में सांभर झील आदि कुछ स्थानों में नमक बहुत है। इसलिये इसकी मालगाड़ियां सब से अधिक नमक ढोती हैं। नमक के अतिरिक्त अनाज, कपास, पत्थर, गुड़, लकड़ी भी इस लाइन पर बहुत ढोई जाती है।

बङ्गाल और नार्थ वेस्टर्न रेलवे

यह मीटरगेज रेलवे गङ्गा के उत्तर में घाघरा और कोसी नदियों के बीच के प्रदेश में खोली गई। कई स्थानों पर इस लाइन के मुसाफिर स्टीमर द्वारा गङ्गा को पार करके ई० आई० आर० पर सवार हो जाते हैं। बहुत दिनों तक यह लाइन सब से अलग रही। पर अन्त में यह लाइन कानपुर बी० बी० एण्ड सी० आई रेलवे से की मीटर लाइन से और कटिहार में ईस्टर्न बङ्गाल रेलवे से मिला दी गई है। भूतपूर्व अवध रुहेलखण्ड (वर्तमान ईस्ट इण्डियन)

रेलवे से यह लाइन बनारस, जौनपुर और शाहगञ्ज में मिलती है। इसकी इसकी एक शाखा बनारस से इलाहाबाद को गई है। यह लाइन हिन्दुस्तान के अत्यन्त उपजाऊ और घने बसे हुये भाग में होकर जाती है। इसलिये इस रेलवे को माल और सवारी की कमी कभी नहीं रहती है। इसकी मालगाड़ियां अधिकतर चावल, अनाज, गुड़, तिलहन, नील और अफीम ढोया करती हैं। बाढ़ के दिनों में कभी कभी कुछ भागों में रेलगाड़ी का चलना बन्द हो जाता है। गत भूकम्प में इस लाइन की भारी हानि हुई थी।

ईस्टर्न बङ्गाल रेलवे

यह लाइन पूर्वी बङ्गाल में फैली हुई है। यह लाइन उत्तर में कलकत्ते से सिलगुड़ी तक चली गई है। सिलगुड़ी से दार्जिलिंग के लिये (दो फुट चौड़ी) पहाड़ी लाइन मिलती है। उत्तर-पूर्व में इसकी एक शाखा आसाम-बङ्गाल-रेलवे से मिलती हुई है। पश्चिम में यह लाइन ई० आई० आर० और नार्थ वेस्टर्न रेलवे से मिलती है। बाढ़ और चौड़ा नदियों के कारण इस रेलवे को फैलाने में कठिनाई पड़ती है। पर यह रेलवे अत्यन्त उपजाऊ और सघनी भाग में चलती है। यह रेलवे जूट, चाय, चावल, मसाला और तम्बाकू बाहर पहुँचाती है। सूती कपड़ा, अनाज, शक्कर आदि सामान इधर लाती है।

आसाम बङ्गाल रेलवे

यह मीटर लाइन चिटगांव से शुरू होती है और सुरमा-घाटी और उत्तरी कछार की पहाड़ियों में होकर आसाम में पहुँचती है। पहाड़ी भाग में इसका दृष्य अत्यन्त मनोहर है। पर इसके बनाने में बहुत खर्च हुआ। इसका प्रदेश इतना कम आबाद है कि रेलवे मजदूर बाहर से बुलाने पड़े। घंटों की यात्रा में स्टेशन पर केले के सिवा और कोई चीज खाने को नहीं मिलती है। इस लाइन पर भीड़ कम रहती है। पर चाय, चावल और जूट बाहर पहुँचाने में इसे कुछ आमदनी होती है। लेकिन फिर भी यह रेलवे घाटे से चलती है।

बङ्गाल-नागपुर रेलवे

यह चौड़ी लाइन नागपुर से आरम्भ होकर हावड़ा कटक और कटनी को चली गई है। १९०१ ई० से पूर्वी तट पर कटक और विजिगापट्टम के बीच की लाइन भी इसी कम्पनी के अधिकार में आ गई। रायपुर से विजिगापट्टम की लाइन अभी हाल में बनी है। इसकी एक शाखा झरिया की कोयले की खानों तक पहुँच गई। बम्बई से कलकत्ता का सबसे छोटा रास्ता इसी लाइन पर होकर है। लेकिन लाइन का बड़ा भाग कम आबाद प्रदेश में होकर जाता है। यदि इस लाइन पर जगन्नाथपुरी (तीर्थ) न हो तो इसकी गाड़ियाँ प्रायः खाली ही दौड़ा करें। इसकी मालगाड़ियाँ कोयला, कपास, चमड़ा कमाने की छाल, अनाज, जूट, नमक, लकड़ी, पत्थर, तेल, लोहा और धातु का सामान ढोने में लगी रहती हैं।

मद्रास रेलवे

यह लाइन उत्तर-पश्चिम में जी० आई० पी० रेलवे तक और दक्षिण पश्चिम में पश्चिमी घाट तक पहुँचती है। पूर्वी तट में विजिगापट्टम और मद्रास के बीच की लाइन भी इसी रेलवे के अधिकार में है। यह लाइन अधिकतर आबाद और उपजाऊ भाग में होकर जाती है। इसके मार्ग का केवल कुछ भाग अकाल से पीड़ित रहता है। पर मद्रास का बन्दरगाह अच्छा न होने से रेलवे की उन्नति में बाधा पड़ती है। इसकी मालगाड़ियाँ कोयला, कपास, रङ्ग, अनाज, फल, तरकारी, तेल, शक्कर, पत्थर लकड़ी, नमक, तम्बाकू और चमड़ा ढोया करती हैं।

साउथ इण्डियन रेलवे

यह मीटर लाइन दक्षिणी भाग में फैली हुई है। रामेश्वर की यात्रा के लिये इस लाइन पर बहुत से यात्री जाते हैं। जब से धनुषकोटि और तूतीकोरन से लङ्का को स्टीमर जाने लगे तब से यात्रियों की संख्या और भी अधिक बढ़ गई। यही एक ऐसी लाइन है जिसमें माल की अपेक्षा मुसाफिरों से रेलवे को

मुसाफिरों से रेलवे को अधिक आमदनी होती हैं। कपास, फल, तरकारी चावल, तेल, लकड़ी आदि सामान इस रेलवे के द्वारा ढोया जाता है।

सदर्न मराठा रेलवे

यह रेलवे बम्बई-प्रान्त के दक्षिणी भाग, मद्रास-प्रान्त के उत्तर और मैसूर-राज्य में स्थिति है। इसकी एक शाखा (मोरमगोआ) पूर्व गाली प्रदेश से मिली हुई है। यह लाइन अकाल-पीड़ित, कम आबाद और पहाड़ी प्रदेश में चलती है। इसलिये इसको सदा घाटा रहता है। इन रेलों के अतिरिक्त देशी राज्यों में कई एक छोटी-छोटी रेलवे हैं। इनमें उन्हीं राज्यों की पूंजी लगी है। जिससे उन्हें काफी लाभ होता है।

बर्मा रेलवे

यह मीटर रेलवे एक प्रान्तीय रेलवे है। यदि आसाम-बङ्गाल रेलवे से इसे जोड़ दिया जाय तो यह रेलवे भी हिन्दुस्तान रेलों का ही अंग बन जाता है। इसकी प्रधान लाइन रंगून से मांडले को और मांडले से मिचीना को गई है। जब इरावदी में पुल नहीं था तब सामान और मुसाफिर स्टीमर द्वारा दूसरे किनारे पर पहुँच जाते थे। हाल में इरावदी पर आवा पुल तैयार हो गया है। इससे आने जाने में बड़ी सुविधा हो गई है। इसकी एक शाखा पहाड़ी रियासतों में होकर भेमिओ और लाशिओ को गई है। इरावदी में स्टीमरों के चलने पर भी इस रेलवे को चावल, लकड़ी आदि सामान और मुसाफिरों से भारी लाभ होता है। हिन्दुस्तान रेलों की तरह सवारी गाड़ियों में सब से अधिक आमदनी तीसरे दर्जे के मुसाफिरों से होती है।

बत्तीसवाँ अध्याय

भारत के हवाई मार्ग

संसार के सब-प्रसिद्ध हवाई मार्ग में हिन्दुस्तान की स्थिति अत्यन्त केन्द्रवर्ती है। हिन्दुस्तान की प्राकृतिक बनावट हवाई जहाजों के लिये बहुत ही अनुकूल है। कुछ मानसूनी महीनों को छोड़ वहाँ की जलवायु आद्र है। हवाई जहाज को रात में उड़ाने के लिये हिन्दुस्तान की जलवायु विशेष रूप से अच्छी है हिन्दुस्तान के अनेक बड़े बड़े व्यापारिक शहर बहुत दूर दूर स्थित हैं। आजकल के आवागमन के साधन बहुत कम हैं। कलकत्ता से बम्बई जाने वाली डाकगाड़ी की चाल भी औसत से फी घंटे ३० मील के कुछ ही ऊपर है और गाड़ियों का कहना ही क्या है?

हवाई मार्गों के लिये बीच वाले और अन्तिम स्टेशनों की आवश्यकता पड़ती जहाँ काफी सामान और मुसाफिर मिल सकें। दो तीन सौ मील की दूरी पर स्थित इन स्टेशनों के पास ही हवाई जहाज के उतरने का स्थान होना चाहिये। कुछ स्टेशनों पर विमानाश्रय (एरोड्राम) होने चाहिये। कारखानों और मरम्मत की कलों की दूसरी ज़रूरत है। कम से कम अन्तिम स्टेशनों ऋतु विज्ञान मेटयोरालोजीकल (सम्बन्धी) और बिना तार के तार घरों (वायरलेस) की भी आवश्यकता पड़ती है। रात में उड़ने के लिये प्रकाश-भवनों (लाइट हाउस) की जरूरत पड़ेगी। रात में उड़ने के लिये संयुक्त-राष्ट्र में सैनफ्रांसिस्को से न्यूयार्क तक २,६२० मील के फ़ासिले में रोशनी का प्रबन्ध हिन्दुस्तान में भी करना पड़ेगा। बिना तार में तार-घर और ऋतु-विज्ञान सम्बन्धी दफ़्तरों को सूचित करने के लिये विशाल प्रकाशभवन भी होना चाहिये। सुर्खी चमूत करने और उतरने के एरोड्रामों (विमानालयों) को भिन्न-भिन्न प्रकाशों से सूचित करना पड़ेगा।

आजकल के हवाई जहाजों को इस बात की जरूरत है कि उनका मार्ग अधिकतर चपटी भूमि में ही हो। पहाड़ियों और पहाड़ों के बीच पड़ने से हवाई जहाजों को बहुत ऊँचा चढ़ना पड़ता है जिससे खर्च अधिक बढ़ जाता है। सब विमानालय व्यापार केन्द्र के पास होने चाहिये जिससे हवाई जहाजों को काम मिलता रहे।

१९२० ई० में भारत-सरकार ने इलाहाबाद होकर जाने वाली बम्बई और कलकत्ता की लाइन का अनुमान लगवाया था २,००० माल का सब खर्च २६॥ लाख रुपये अन्दाजा लगाया था। मान लो यह खर्च बढ़ा कर ४० लाख रुपये रख लिया जावे, फिर भी प्रति मील पीछे हिन्दुस्तान में १ लाख रुपये हुये। इसका अर्थ यह है कि १०० मील हवाई मार्ग में उतना ही खर्च पड़ेगा जितना कि रेलवे मार्ग के एक मील में खर्च बैठता है। बहुत भारी सामान और कच्चे माल का ढोना इस समय हवाई जहाज के लिये असम्भव है। लेकिन जब एक बार बहुत से हवाई जहाज चलने लगेंगे तो अपार सामान हवाई मार्ग से ही ढोया जाने लगेगा। योरुप में इस समय के स्थलवाहक आदर्शरूप से मौजूद हैं, फिर भी मोजों से लेकर मशीनों के पुर्जों के नमूने तक प्रतिदिन हवाई जहाज से ही ढोये जाते हैं।

सोने और चांदी का माल ढोने के लिये हवाई जहाज बड़े ही उपयुक्त हैं। बहुत कम लोगों के हाथ उन पर लगते हैं। इसलिये चोरी का बहुत कम डर है। इसी से हवाई जहाज पर बीमे की दर भी कम लगती है। दक्षिण-अफ्रीका से हिन्दुस्तान के लिये केप से केरो तक हवाई लाइन खुल गई है। मिस्र से हिन्दुस्तान की हवाई जहाज का आना आसान है।

हिन्दुस्तान का पहला हवाई मार्ग दिल्ली और इलाहाबाद होकर करांची से कलकत्ता को पहुँचता है। अधिक सीधा मार्ग करांची से नसीराबाद और झांसी होकर इलाहाबाद जाता है। दूर दूर की

करने वाले हवाई मल्लाहों ने इसी मार्ग का अनुसरण किया है। इलाहाबाद और कलकत्ता में हवाई जहाजों के उतरने के लिये एरोड्रोम (विमानालय) है। बीच में गया और आसनसोल में भी हवाई जहाजों के उतरने के लिये जगह तयार हो गई है।

कराची से बम्बई हवाई मार्ग द्वारा मिला हुआ है। बम्बई से एक हवाई मार्ग मद्रास को गया है। इससे दूसरे दर्जे का मार्ग बम्बई और कलकत्ता के बीच का है बम्बई और कलकत्ता के बीच के मार्ग में असख्य मुसाफिर और अपार सामान हवाईजहाज को मिलता है। दूसरा प्रसिद्ध मार्ग कलकत्ता से बनारस इलाहाबाद कानपुर और लाहौर होकर रावलपिंडी के लिये है इस मार्ग में अपार सामान है कलकत्ते से येक दूसरा मार्ग विजीगापट्टम होकर मद्रास को और फिर यहां से आगे बढ़कर कोलम्बो को जाता है मद्रास होकर बम्बई और कोलम्बो के बीच का मार्ग भी जुड़ा है। कलकत्ता और बम्बई के बीच में दो मार्ग रहेंगे। एक मार्ग जबलपुर और इलाहाबाद होकर और दूसरा नागपुर मध्यप्रान्त होकर जायगा। नागपुर होकर जाने वाला मार्ग इलाहाबाद वाले मार्ग से प्रायः २०० मील कम बैठेगा। यह २६० मील की बचत उस लम्बे सफर के लिये बड़े काम की होगी जो कलकत्ता से रंगून तक बढ़ा दिया गया है। यह स्पष्ट है कि बम्बई और कलकत्ता के मार्ग पर हवाई जहाज रात में भी चला करेंगे। रात में चलने के लिये हिन्दुस्तान एक आदर्श देश है। गरमी के ऋतु में दिन की अपेक्षा रात का चलना बहुत ही अच्छा होगा।

हिन्दुस्तान के दूसरे नगर तो रेल द्वारा जुड़े हुये हैं। कलकत्ता और रंगून के बीच में आने जाने का एक मात्र साधन जहाज है अगर कोई मुसाफिर स्थल मार्ग द्वारा बम्बई से कलकत्ता आवे और फिर जहाज द्वारा कलकत्ता से रंगून जावे, तो कम से कम पांच दिन रास्ते में लग जायेंगे। लेकिन हवाई जहाज २५ घंटे में बम्बई से रंगून पहुँचा सकता है। कलकत्ता और रंगून के बीच में स्थित अक्याब नगर

में भी जहाज ठहरते हैं। एक हवाई मार्ग ब्रह्मपुत्र और यांगटिसी नदियों की घाटी के रास्ते से हिन्दुस्तान और चीन में नया सम्बन्ध जोड़ देगा।

भीतरी मार्गों के अतिरिक्त भारतवर्ष बाहरी मार्गों का भी प्रबन्ध केन्द्र है। हिन्दुस्तान के पूर्व में पूर्वी द्वीपसमूह में डच लोग नियम पूर्वक हवाईजाज ले जाते थे। जापान हवाई जहाज सारे जापान तथा समीप वाले देशों में चक्कर लगा रहे थे। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड भी इस दिशा में बहुत आगे बढ़ रहे हैं। पश्चिम की ओर योरुप में हवाई जहाजों का चलाना सर्वसाधारण हो गया है। लेकिन पूर्वी और पश्चिमी मार्गों का जंक्शन हिन्दुस्तान ही। इस प्रकार मिस्र और कराची तथा कराची और रंगून के बीच में सुविधा होने से संसार के हवाई मार्गों को बड़ी सहायता मिलती है योरुप से साइबेरिया होकर जो पूर्वी मार्ग है वह भू-रचना जलवायु जनसंख्या और व्यापार की अधिक दक्षिणी (लन्दन, पेरिस, वियना, कुस्तुन्तुनिया, बगदाद और कराची) अर्थात् भारतीय मार्ग के मुकाबिले से बहुत ही तुच्छ है। इसलिये हिन्दुस्तान में हवाई मार्ग का पूर्ण विकास होगा।

———

तेंतीसवाँ अध्याय

संसार से भारतवर्ष का व्यापारिक सम्बन्ध

भारतवर्ष की प्राकृतिक सम्पत्ति अपार है। यहाँ बहुत सी ऐसी चीजें पैदा होती हैं और पाई जाती हैं जो देश की आवश्यकता को पूरी करने के बाद भी फालतू बच जाती है। इसके विपरीत कुछ ऐसी चीजे हैं जो दूसरे देशों में बहुतायत से मिलती हैं। लेकिन इस देश में उनका प्रायः अभाव है। जल और स्थल मार्गों द्वारा अपने देश की फालतू चीजों को विदेश में भेजने और उन देशों में अपनी आवश्यकता की चीजें यहाँ लाने के लिये हिन्दुस्तान की भौगोलिक स्थिति भी बड़ी अच्छी है। इसलिये अति प्राचीन समय में यहाँ संसार के भिन्न भिन्न देश में भारतवर्ष का व्यापारिक सम्बन्ध रहा है। पर पहले यह व्यापार स्थल जानवरों की पीठ पर और जल में बड़ी नावों द्वारा होता था व्यापार की चीजों को एक देश से दूसरे देश को भेजने में बहुत खर्च पड़ता था। इसलिये प्राचीन समय में केवल ऐसी चीजों का व्यापार होता था जो हलकी और बहुत कीमती होती थीं। मसाला, रेशम, बढ़िया कपड़े सोना चाँदी, हीरा, मणिकादि का ही अधिक व्यापार होता था। पर जब से बड़े धुआंकश (जहाज) चलने लगे और देश में रेल खुल गई तब से हिन्दुस्तान के व्यापार की काया पलट गई। रेलों और जहाजों ने दूर दूर के देशों को पड़ोसी बना दिया अगर दूसरे देशों के धनी लोग अधिक दाम लगा सकते हैं तो देश का भारी से भारी आवश्यक माल (चाहे गरीब देशवासियों को भले ही न मिले) बाहर चला जाता है। इसी तरह यदि देश का बना हुआ माल कुछ महँगा पड़ता है। तो यह माल पड़ा पड़ा सड़ता है और विदेशी माल हाथों हाथ बिक जाता है। पांच वर्ष पहिले

प्रतिवर्ष हिन्दुस्तान प्रायः ६०० करोड़ रुपये का व्यापार समुद्री मार्ग से दूसरे देशों के साथ करता था। आजकल यह व्यापार २५ करोड़ रुपये का रह गया है। बाहर जाने वाले माल का निर्यात और बाहर से देश में आने वाले माल को आयात कहते हैं। हिन्दुस्तान के आयत में प्रायः फी सदी विदेशों में बना हुआ पक्का माल रहता है। या तो विदेश से बहुत सी चीजें आती हैं। पर अधिक दाम* की चीजें निम्न हैं :—

मूल्य करोड़ रुपयों में

	१९२८	१९३४
रुई और सूती माल	७० करोड़ रुपये	३४
लोहा और फौलादी सामान	२८ ,, ,,	१०
शक्कर	२० ,, ,,	२
मशीनें और मीलों का सामान	१६ ,, ,,	९
मिट्टी का तेल	११ ,, ,,	६
रेशमी और ऊनी माल	१० ,, ,,	५
मोटर आदि गाड़ियाँ	८ ,, ,,	४
रेल का सामान	५ ,, ,,	३
कागज और किताबें	४ ,, ,,	३
शराब	४ करोड़ रुपये	२
तम्बाकू (सिगरेट)	३ ,, ,,	१
रंग	३ ,, ,,	२॥
शीशे का सामान	२॥ ,, ,,	२॥
दवाएँ	२ ,, ,,	२
नमक	२ ,, ,,	१

* गत पाँच वर्षों से हिन्दुस्तान का व्यापार बड़ी तेजी के साथ घट रहा है। आजकल भारतवर्ष का व्यापार आधा रह गया।

साबुन स्याही. सीमेन्ट, छतरी, घड़ी आदि अनेक ऐसी चीजें विदेशों से आती हैं जिसमें प्रत्येक का दाम २ करोड़ रुपये से कम ही रहता है।

हिन्दुस्तान से बाहर जाने वाली चीजों में अधिकतर कच्चा माल या खाद्य-पदार्थ रहते हैं। इनमें मुख्य चीजें निम्न हैं :—

मूल्य करोड़ रुपयों में

	१९२८		१९३४
जूट कच्चा और बना हुआ	८० करोड़	रुपये	३०
रुई और कुछ सूती माल	७० करोड़	,,	२३
अनाज दाल और आटा	४० करोड़	,,	१६
तिलहन	३० करोड़	,,	११
चाय	३० करोड़	,,	१७
चमड़ा	१० करोड़	,,	३
लाख	७ करोड़	,,	१
ऊन	६ करोड़	,,	२
मैंगनीज आदि कच्ची धातु और धातु का सामान	५ करोड़	,,	४

भारतीय कपास की कहानी बड़ी हृदय-विदारक है। पहले भारत-वर्ष सूती कपड़ों के लिये न केवल स्वावलम्बी था वरन् बहुत सा बढ़िया सूती माल बाहर भी भेजता था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की दुर्नीति से हिन्दुस्तान में रुई का कारबार प्रायः नष्ट हो गया और बाहर से विलायती सूती माल अधिकाधिक मात्रा में आने लगा। १९ वीं सदी के प्रायः मध्य में हिन्दुस्तान के बम्बई आदि शहरों में मिलें खुलीं। पर इनकी रक्षा के लिये कोई विशेष प्रयत्न नहीं किया गया। एक बार जब सरकार ने अपनी आमदनी को बढ़ाने के लिये कपड़े पर कर लगाया तो उतना ही कर हिन्दुस्तानी मिलों के कपड़े पर भी लगाया गया।

आजकल हिन्दुस्तान में लगभग ५ करोड़ रुपये की रुई, ७ करोड़ का सूत और २४ करोड़ का कपड़ा आता है। अब यह प्रश्न उठता है कि जब हिन्दुस्तान में ही अपार रुई होती है तो बाहर से क्यों मँगाई जाती है। कारण यह है कि हिन्दुस्तान में अधिकतर छोटे रेशे की रुई होती है बड़े रेशे की पञ्जाब-अमरीकन धारवाड़-अमरीकन और कम्बोडिया अमरीकन कपास बम्बई से दूर पैदा होती है। इस लिये बम्बई की कुछ मीलें मोम्बा-बन्दरगाह से यूगांडा की लंबे रेशे वाली कपास मंगा लेती हैं। कुछ रुई अमरीका से भी आती है। पहले जितना सूत हिन्दुस्तान में आता था उसका प्रायः ६५ फी सदी जापान से और ३१ फी सदी लंकाशायर से आता था। हिन्दुस्तानी जुलाहे प्रायः यही सूत अपने करघों पर बनाते थे कपड़ों में उलटा हाल था। २४ करोड़ रुपये के कपड़े में ८५ फी सदी लंकाशायर से और १४ फी सदी जापान से आता था। विगत कानून के अनुसार जापानी कपड़े पर २० फी सदी और लंकाशायर के कपड़े पर १४ फी सदी कर लगता था। इसमें जापानी कार-बार को धक्का पहुँचा। पर स्वदेशी के प्रचार से आजकल है कि दोनों ही देशों से हिन्दुस्तान में कपड़े आने बन्द हो गये और हिन्दुस्तान में खोई हुई लक्ष्मी फिर लौटने लगी। हिन्दुस्तान से प्रायः २३ करोड़ रुपयों की रुई बाहर जाती थी। इसमें प्रायः ५० फी सदी जापान को, १२ फी सदी चीन को, १० फी सदी इटली को जाती थी। बेलजियम, ग्रेटब्रिटेन, जर्मनी और फ्रांस को भी लगभग पांच पांच फी सदी जाती थी।

बम्बई से सूत की मिलों हाल में बहुत घाटा रहा। सन् १९१४ तक प्रायः १८ करोड़ पौंड सूत बम्बई से चीन को जाता था। फिर केवल ९७ लाख पौंड वहां जाता था। यही नहीं, दूसरी तरह का लगभग सवा करोड़ पौंड सूत चीन से हिन्दुस्तान में आने लगा था।

हिन्दुस्तान की मिलों में अभी इतना कपड़ा तैयार नहीं होता है जिससे देश की मांग पूरी हो सके। लेकिन यहां विलायती कपड़े से

होड़ करनी पड़ती है। पर हिन्दुस्तान मिलों का कपड़ा काफी मोटा और मजबूत होता है, इसलिये यहां का कपड़ा लंका, मलय प्रायद्वीप फ़ारस, इराक और पूर्वी अफ्रीका में बहुत बिकता था। पहले चीन और जापान में यहां से कपड़ा जाता था। अब वहां जाना बन्द हो गया है। फिर भी सात-आठ करोड़ रुपये का कपड़ा बाहर जाता है।

लोहा और फौलादी सामान

जमशेदपुर नगर में बिहार प्रान्त के कलकत्ते से लगभग १५० मील उत्तर-पश्चिम की ओर में टाटा आयरन एण्ड स्टील वर्क्स और दूसरी कम्पनियां लोहे, खेती के यन्त्र और छत पाटने के लिये गाडर आदि बहुत सी चीजें तैयार करती हैं। बड़ी लड़ाई के दिनों में दूसरे देशों के कारखानों ने मनमाने दाम बढ़ा दिये थे। लेकिन टाटा कम्पनी ने भाव के बारे में सरकार से पहले ही ठेका कर लिया था। इसलिये टाटा कम्पनी बड़ी लड़ाई से कोई विशेष लाभ न उठा सकी। बड़ी लड़ाई के बाद दूसरे देशों की कम्पनियां अपने फालतू फौलादी माल को ऐसे दामों में हिन्दुस्तान में बेचने लगीं कि टाटा कम्पनी को नष्ट होने का डर था १९२८ ई० से कम्पनी की रक्षा के लिये सरकार ने विदेशी फौलादी माल पर ३३॥ फीसदी का कर लगा दिया। तब से कम्पनी में नई जान आ गई। आजकल लगभग ४ लाख टन फौलाद हिन्दुस्तान में तैयार होता है। पर अभी हिन्दुस्तानी कम्पनियां देश की मांग को पूरा करने में असमर्थ हैं। इसलिये लोहे और फौलाद का बहुत सा सामान ग्रेट ब्रिटेन बेल्जियम और अमरीका से आता है।

शक्कर—अब से प्रायः ८० वर्ष पहले हिन्दुस्तान में इतनी शक्कर होती थी कि यहां बाहर से शक्कर मंगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। आजकल भी ३५ लाख एकड़ ज़मीन में ईख बोई जाती है, पर मांग इतनी अधिक बढ़ गई कि पहले भारत व सरकार को शक्कर की बचत और बिक्री पर नियन्त्रण (कन्ट्रोल) करना पड़ा

१६,००० टन ईख की शक्कर संयुक्तराष्ट्र अमरीका से और कुछ शक्कर मारीशस से आती थी।

हिन्दुस्तान में मशीन और मिलों का सामान अधिकतर ग्रेटब्रिटेन जर्मनी से आता था। अब अमरीका से आने लगा है।

मिट्टी का तेल—हिन्दुस्तान में मिट्टी के तेल की मांग बहुत बढ़ गई है। ब्रह्मा का अधिकांश तेल हिन्दुस्तान में ही आता है। ब्रह्मा का प्रायः सवा छः लाख टन तेल हिन्दुस्तान में आता है। केवल तीस या बत्तीस हज़ार टन तेल दूसरे देशों को जाता है। इसमें अधिकतर (मोटर चलाने का) पेट्रोल होता है। पर इससे हिन्दुस्तान को मांग पूरी नहीं होती है। इसलिये ५ करोड़ गैलन रोशनी करने का तेल संयुक्तराष्ट्र अमरीका से और ७ या ८ करोड़ गैलन इञ्जनों में जलाने का तेल फारस से आता है। कुछ तेल बोर्नियो और सुमात्रा से भी आता है। पहले रूस से बहुत तेल आता था। बीच में लड़ाई के दिनों में बन्द हो गया। हाल में रूस का तेल बहुत ही सस्ता आने लगा है।

रेशम—हिन्दुस्तान में रेशम की मांग कुछ कुछ बढ़ रही है। सबसे अधिक रेशम चीन से आता था। पर बनावटी (कृत्रिम) रेशम प्रायः सब का सब इटली और ग्रेटब्रिटेन से आता था।

ऊपर के विवरण में हम देख चुके हैं कि हिन्दुस्तान प्रायः सब का सब पक्का माल बाहर से मंगाता है और कच्चा माल दिसावर भेजता है। सब से अधिक पक्का माल (कपड़ा, मशीन आदि) ग्रेट-ब्रिटेन से आता था। सारे आयात का प्रायः पचास या साठ फ़ीसदी भाग ग्रेटब्रिटेन से आता था लेकिन जूट, चमड़ा आदि सब मिला कर ग्रेट-ब्रिटेन हिन्दुस्तान के सारे निर्यात का केवल २० फीसदी माल अपने यहाँ मँगाता था। इस प्रकार हिन्दुस्तान ग्रेट-ब्रिटेन के पक्के माल

का सबसे बड़ा खरीदार था। लेकिन ग्रेटब्रिटेन हिन्दुस्तान से बहुत सा माल नहीं मँगाता था। यहां से चाय की ब्रिटेन में बड़ी माँग है। यहां के शाल दुशाले और पीतल के बर्तन भी यहां बहुत बिकते हैं। जर्मनी मशीन आदि पक्का माल हिन्दुस्तान को भेजता था और बदले में चावल, कच्चा जूट, कच्ची रुई और चमड़ा हिन्दुस्तान से खरीदता था। जापान और सयुक्त राष्ट्र का व्यापार हिन्दुस्तान के साथ बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। जापान हिन्दुस्तानी रुई का सबसे बड़ा खरीदार था। जापान से यहां कपड़ा दियासलाई आदि तरह तरह का सस्ता और दिखावटी सामान आता है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका हिन्दुस्तान से जूट चमड़ा, लाख और तिलहन खरीदता है और मोटरकार, मिट्टी का तेल और दूसरा पक्का माल (फाउनटेनपेन, पेन्सिल, बिजली की लैम्प आदि यहा बेचता है।

जावा द्वीप हिन्दुस्तान में सब से अधिक शक्कर बेचता है। पर कुछ जूट के बोरे और चावल को छोड़ कर जावा हिन्दुस्तान से कोई अधिक सामान नहीं खरीदता है। इसके विपरित फ्रांस इटली, बेल्जियम और हालैंड देश हिन्दुस्तान के माल खरीदते हैं और अपना माल यहां कम बेच पाते हैं। फ्रांस हिन्दुस्तान से बहुत सा तिलहन, पक्का जूट और कच्ची रुई खरीदता है। मार्सेया (मार्सेल्स) में तिलहन को पेर कर तेल बनाया जाता है। जिससे साबुन बनता है या शुद्ध कर जैतून का तेल तयार कर लिया जाता है।

चीन के साथ हिन्दुस्तान का व्यापार बहुत कम हो गया है। पहले यहां से बहुत सा अफीम चीन को जाती थी। फिर केवल आज्ञा मिलने पर भारत की सरकार चीन की सरकार के हाथ अफीम बेच सकती है। पहले यहां का सूत और सूती कपड़ा भी चीन में बहुत बिकता था। अब इसका जाना बन्द सा हो गया है। लेकिन चीन से रेशम बढ़िया अब भी बहुत आता है।

लंका में हिन्दुस्तान से चावल, कपड़ा और कुछ कोयला जाता है।

पर लंका में प्रायः वही चीजें होती हैं जो हिन्दुस्तान में होती हैं। इस लिये सुपारी और कुछ मसाले को छोड़ कर हिन्दुस्तान में लंका से कोई चीज नहीं आती है। मलय प्रायद्वीप में भी हिन्दुस्तान से चावल कपड़ा और कुछ जूट का पक्का माल जाता है। वहाँ से बदले में टीन और मसाला आता है। आस्ट्रेलिया के साथ हिन्दुस्तान का व्यापार अधिक नहीं है। पर यह व्यापार धीरे धीरे बढ़ रहा है। अस्ट्रेलिया से टीन के डब्बों में अचार आदि खाने का सामान, कोयला अन्न और वेलरे घोड़े आते हैं। हाल में वहां से कुछ गेहूँ आने लगा है। यहाँ से आस्ट्रेलिया को जूट के बोरे जाते हैं।

फ़ारस अपने यहाँ से (इञ्जिनों में जलने के काम का) मिट्टी का तेल भेजता है और बदले में सूती कपड़ा और अनाज मोल लेता है।

ईराक से यहां छुहारे आदि फल और तरकारी आती है, बदले में सूती कपड़े और चावल वहां जाता है।

पूर्वी ब्रिटिश अफरीका (कीनिया उपनिवेश, यूगांडा, जेञ्जीबार और पेम्बा) से हिन्दुस्तान में केवल लम्बे रेशे वाली रुई आती है।

दक्षिण-अफ्रीका और पूर्चगाली पूर्वी अफ्रीका में हिन्दुस्तान से चावल और जूट के बोरे आते थे। वहां से हिन्दुस्तान के पश्चिमी तट को कोयला जाता था। रेल का किराया अधिक होने के कारण रानी-गंज का कोयला पश्चिमी भाग में पहुँचते पहुँचते बहुत मँहगा हो जाता था लेकिन दक्षिण-अफ्रीका की ओर से हिन्दुस्तान आने वाले जहाज कोयला मालिकों से नाममात्र का किराया लेते थे। इसलिये दक्षिण अफ्रीका का कोयला यहां बहुत सस्ता पड़ता था। हिन्दुस्तान का व्यापार विदेशी जहाजों के द्वारा होता है। इससे हिन्दुस्तान का बहुत सा धन किराये में देना पड़ता है। हिन्दुस्तान हर साल प्रायः चालीस पचास करोड़ रुपये केवल ग्रेट-ब्रिटेन को जहाज के किराया में देता है। हिन्दुस्तान का सब से अधिक माल अंग्रेजों के जहाजों में आता जाता है। जापान जर्मनी और इटली के जहाज भी हिन्दुस्तानी माल को ले

११६—भारतवर्ष के बन्दरगाहों का पृष्ठ प्रदेश और व्यापार
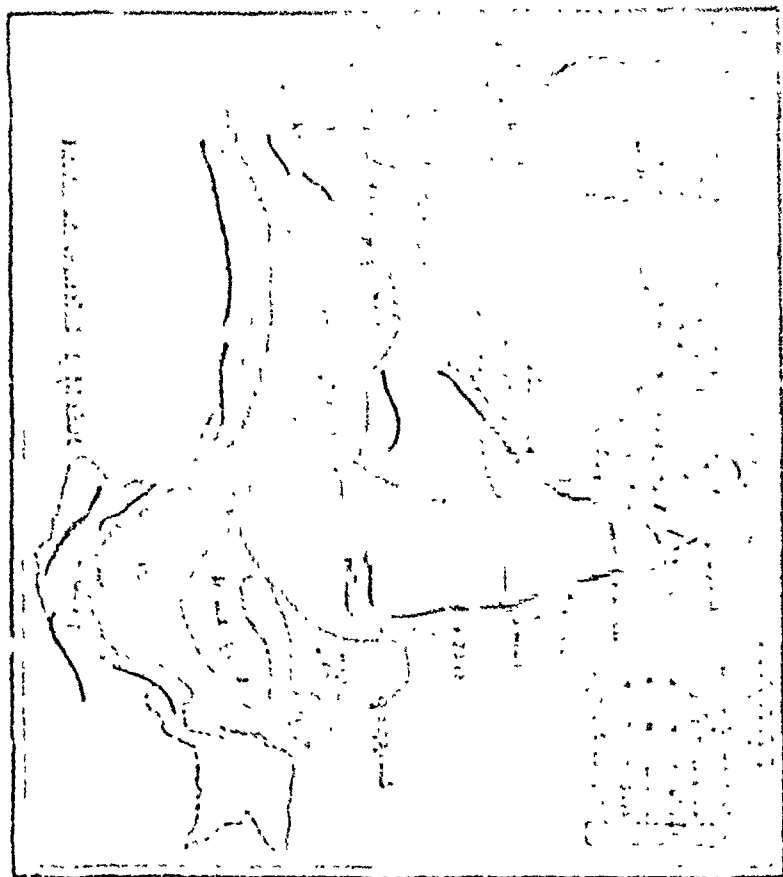
जाते थे। हिन्दुस्तान से प्रायः कच्चा माल ही दिसावर भेजा जाता है। कच्चा माल अधिक जगह घेरता है और वजनी भी अधिक होता है। इसलिये इस माल को ले जाने के लिये अधिक जहाजों की जरूरत

होती है। उधर से पक्का माल आता है जो कीमत में अधिक और वज़न में कम होता है। इस लिये उधर से पक्का माल लाने के लिये बहुत से जहाजों की जरूरत नहीं पड़ती है। लेकिन उधर से फ़ालतू जहाज न लावें तो पूरी तादाद में हिन्दुस्तान से कच्चा माल कैसे ले जावें। बिल्कुल खाली जहाज लाना भी कठिन है। इसलिये जहाज कोयला नमक, सीमेंट आदि बोझीले सामान को बहुत ही कम किराये पर हिन्दुस्तान में डाल देते हैं। अब दशा सुधर रही है।

व्यापार में स्थिरता तब आती है। जब दो देशों के बीच में प्रायः सामान मूल्य वाले, सामान वजन वाले और सामान स्थान घेरने वाले सामान का विनिमय (अदल बदल) हो। पर जब तक देश स्वतंत्र न था और उसके पास व्यापारी जहाज न थे तब तक बराबरी का व्यापार होना प्रायः असम्भव था। उदाहरणार्थ-अगर हिन्दुस्तान योरुप को तिलहन भेजता तो जहाज कम किराया लेते और वहां की सरकार कच्चे माल पर कोई चुङ्गी नहीं लगाती थी। अगर हिन्दुस्तान तिलहन का पेर कर तेल भेजे या तेल से साबुन बनाकर) भेजे तो जहाज भी अधिक किराया मांगते और वहां की सरकार भी भारी चुङ्गी लगाती पक्का माल आने से देश में बेकारी फैलती है। कच्चे माल से तरह तरह का कारबार बढ़ता है। इसलिये अब अपना स्वाधीन और सुरक्षित देश बेकारी से बचने की कोशिश करता है।

हिन्दुस्तान के प्रधान बन्दरगाहों का व्यापार

हिन्दुस्तान का ९० फ़ी सदी से अधिक व्यापार चार बड़े बड़े बन्दरगाहों में बंटा हुआ है। कलकत्ते में हर साल प्रायः सवा सौ करोड़ रुपए का माल उतरता और चढ़ता है। इस प्रकार कलकत्ते में सारे हिन्दुस्तान का प्रायः ३६ फ़ीसदी व्यापार होता है। बम्बई में सारे हिन्दुस्तान का प्रायः ३२ फ़ीसदी व्यापार होता है। करांची में प्रायः १० फ़ी सदी, रंगून में ६ फ़ीसदी और मद्रास में २ फ़ीसदी व्यापार होता था।

करची

जिस प्रकार बम्बई और कलकत्ता में प्रथम स्थान के लिये। होड़ रहती है उसी प्रकार रंगून और कराची में तृतीय (तीसरे) स्थान के लिये होड़ लगी रहती है। अक्सर कराची का व्यापार तीसरे नम्बर का रहता है। पर कभी कभी रंगून तीसरा स्थान ले लेता है। कराची के पुष्ट प्रदेश में नहरों के खुल जाने से गेहूं बहुत पैदा होता है। बाहर भेजने के पहले (कभी जहाज के आने में देरी होने से और कभी पञ्जाब से काफी गेहूँ न आने के कारण) गेहूँ को अक्सर बन्दरगाह में रखना पड़ता है। इस काम के लिये कराची की खुश्क जलवायु बड़ी अच्छी है। कराची ही योरूप के लिये निकटतम बन्दरगाह है। यहाँ से दिसावर जाने वाली मुख्य चीजें निम्न है :—

गेहूँ

कपास

अनाज और आटा,

तिलहन

रंगून

जिस प्रकार कलकत्ता नदी के मुहाने ऊपर समुद्र से ७२ मील की दूरी पर बसा है उसी प्रकार रंगून भी नदी के मुहाने के ऊपर समुद्र से २४ मील की दूरी पर बसा है। पर दोनों बन्दरगाहों में समुद्र से बड़े बड़े जहाज आ सकते हैं। रंगून के प्रधान निर्यात हैं :—

चावल (कुछ दाल और केनाज भी)

तेल

लकड़ी

रुई और सूती माल

धातु

*मिल में साफ होने से चावल का पुष्टिकारक भाग नष्ट हो जाता है।

देश का नाम	भारतीयों की संख्या	गणना का वर्ष (सन्)
जमैका	१८४०१	१६२२
ट्रिनीडाड	१,२१,४२०	१६११
ब्रिटिशगायना	१,२४,६३५	१६११
फीजी	६०,६३४	१६२१
बसूटोलैण्ड	१६७	१६११
स्वीज़रलैंड	७	१६११
रोडेशिया	१,३०६	१६२१
कनाडा	१,२००	१६२०
आस्ट्रेलिया	२,०००	१६२२
न्यूज़ीलैंड	६०६	१६२१
नैटाल	१,४१,३३६	१६२१
ट्रांसवाल	१,४,५	१६२१
केपकालोनी	६,४६८	१६२१
आरेंजफ्रीस्टेट	१००	१६२१
ब्रिटिश-साम्राज्य	२२,६४,७२२	
संयुक्तराज्य	३,१७५	१६२०
मेडेगास्कर	५,२७२	१६१७
रूमानिया	२,१६४	१६२१
डच ईस्ट इण्डीज़	५०,०००	१६२१
सुरीनाम	३४,६५७	१२०
मोज़म्बीक	१,१००	अज्ञात
फ़ारस	३,८२७	१६२२
अन्य प्रदेश	१,००,५२५	
समस्त प्रवासी भारतीय	२३,६५,२६४	

तालिका

भारतवर्ष की उपज का

	धान	गेहूँ	दाल इत्यादि	ईख
मद्रास	१२,६३५	३६	२५-०३४	८६
बम्बई	३८२५	३८१७	२६,५८२	६३
बङ्गाल	४४,५३५	२,६५७	१२,४१३	१,००८
संयुक्तप्रान्त	६,४२५	१२,२१०	२६,८६५	१,७०४
पञ्जाब	१,०७५	१२,२१५	१३ ३५५	५१७
ब्रह्मा	१४,५४२	५३	२,५१७	२०
मध्यप्रान्त और बरार	७,०१४	५,२७३	१७,०१८	३०
आसाम	६,१८८	१६	१५७	६३
उ० प० सीमाप्रान्त	५१	१,४११	८१५	४३
योग	१,०१,६०७	३६,८६१	१,२४,७८६	३,५६३

नं० २

विस्तारक्षेत्र (वर्ग मीलों में)

[illegible]	चाय	पोस्ता	तम्बाकू	नील	रुई
३७३	१६	..	२२६	४०६	२,७६५
२५	...	...	१२६	६	५,६०५
१०६	११२	२३५	८४०	३६०	१२५
१,५४४	१३	६८६	८१	२२०	१,३०६
३,३३०	१५	१०	८४	८४	१,६३७
४०	१	...	१०८	१	२४६
४३०	...	...	५०	...	१,४६५
[illegible]	५३८	...	७	...	६
८०	...	...	१०	...	८
[illegible]	[illegible]	१,०३८	१,५२४	१,२२३	१८,५३६

तालिका

भारतवर्ष के प्रसिद्ध स्थानों की ऊँचाई (फुटों में समुद्र तापक्रम और वर्षा। प्रत्येक स्थान के सामने ऊपर की

पर्वतीय

नाम स्थान		स्थिति	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
शीलांग	अ	२५-३५	४६-५	५१-८	६०-४	६५-२	६६-६	६८-८
(४,६२०)	दे	९१-५८	०-४६	०-८१	१-८५	४-२६	१०-०६	१६-४६
दार्जिलिंग	अ	२७-२०	४०-१	४१-६	५९-७	५६-२	५८-३	५६-६
(७,३७६)	दे	८८-२३	०-७६	१-०८	२-०१	४-०८	७-८३	२४-१६
शिमला	अ	३१-५	३८-८	४०-७	५१-५	५६-३	६६-०	६६-६
(७,२२४)	दे	७७-१२	३-२१	३-०७	७ ४८	२-३२	३-७१	७-८४
मरी	अ	३३-५०	४०-५	४१-१	५१-१	६१-२	६८ ३	७२-३
(६,३३३)	दे	७२-२५	३-७३	४-१४	३-६६	३-६२	२-६६	३-४१
श्रीनगर	अ	३४-२	३०-७	३३-०	४५-१	५५-७	६३-६	६६-३
(५,२०४	दे	७४-५०	३-३६	४-२४	३-१०	३-३०	२-७२	१-७७
आबू पर्वत	अ	२४-३६	५८-२	६१-०	६६-६	७८-०	७६-८	७४-६
(३,६४५)	दे	७२-४५	०-२७	०-३१	०-१५	०-०८	०-६७	५-५६
ऊटकमंड	अ	११-२३	५४-०	५५-५	५८-६	६१-५	६१-३	५८-२
(७,३२७)	दे	७६-४०	०-३५	०-३८	१-००	३-४६	५-६३	६-१८
कोदईकनाल	अ	१०-१३	५५-०	५५-७	५६-६	६१-५	६१-६	५६-४
(७,६८८)	दे	७७-३२	१-१७	१-४८	३-५६	५-२६	६-४७	४-०१

समुद्र-तट के नगर

नाम स्थान		स्थिति	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
कराची	अ	२४-५५	६५-४३	६८-४	७५-०	८०-६	८४-७	८६-८
(४६)	दे	६७-०	०-६४	०-३०	०-१५	०-१३	०-०३	०-४३

नं० ३

वल से ऊपर) अक्षांस, देशान्तर, मासिक तथा वार्षिक पँक्ति में तापक्रम और नीचे की पँक्ति में वर्षा दी गई है :—

प्रदेश के नगर—

जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वार्षिक	
७०.०	६६.०	६८.४	६३.१	६६.५	५०.७	६१.७	तापक्रम
१३.४८	१२.७६	१४.७५	६.२३	०.६८	०.२५	८२.४४	वर्षा
६१.५	६०.६	५६.४	५५.२	४७.८	४१.८	५२.७	तापक्रम
३१.७४	२५.६८	१८.३४	५.३५	०.१४	०.२०	१२१.८०	वर्षा
६४.३	६२.८	६०.६	५६.७	५०.१	४३.४	५५.१	तापक्रम
१८.४२	१७.८१	६.१७	१.१६	०.४१	१.२८	६७.६७	वर्षा
६६.४	६७.२	६५.६	६१.३	५२.८	४५.०	५८.०	तापक्रम
१२.५१	१३.५०	५.६४	१.८६	१.२७	१.३७	५७.६०	वर्षा
७३.०	७०.८	६४.४	५३.२	४४.०	३६.२	५३.३	तापक्रम
२.७८	१.६५	१.१८	१.१४	०.४१	१.०८	२७.०३	वर्षा
६६.८	६६.६	६६.६	७१.६	६५.२	५६.०	६८.८	तापक्रम
८२.०५	२१.५१	६.५८	१.४६	०.२८	०.२४	६२.४६	वर्षा
५६.६	५७.४	५७.३	५०.२	५५.०	४४.३	५७.३	तापक्रम
५.६४	४.५०	४.४४	८.५०	४.००	१.६५	४६.६०	वर्षा
५७.६	५८.७	५०.६	५६.६	५४.६	५५.०	५७.८	तापक्रम
३.८२	५.६६	६.५०	१२.४६	८.१७	५.५०	६४.८२	वर्षा
८४.३	८२.४	८२.०	८०.०	७४.४	६७.४	७७.६	तापक्रम
३.१६	१.००	०.६६	०.०४	०.१६	०.१६	७.६६	वर्षा

नाम स्थान		हियान	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
बरावल	अ	२१-०	६६.६	७०.२	७० ०	७६-१	८१ ५	८२-५
(१८)	दे	७०.२०	०.०१	०.०३	०.००	०.००	०.०२	५.३१
बम्बई	अ	१८.५७	७४.५	७४.८	७४.८	८२.१	८४.६	८२.४
(३७)	दे	७२.५५	०.१२	०.०२	००.१	००.५	०.५५	२०.५६
रत्नागिर	अ	१६.५६	७३.२	७६.०	७८.५	८२.८	८४.३	८०.७
(११०)	दे	७३.२३	०.६०	०.०२	०.०५	०.१५	१.२७	२.१२
मंगलोर	अ	१२.४६	७८.२	७६.३	८१.१	८३.६	८३.५	७८.८
(६२)	दे	७४.५४	०.१३	००.७	०.११	२.८६	७ २६	३८.४७
कालीकट	अ	११.१२	७७.८	७६.८	८१-६	८३.६	८३.१	७८.५
(२७)	दे	७५.५०	०-१७	०.१६	०.७६	३.७१	६.०४	३६.४६
नौगापट्टम	अ	१०.४२	७५.५	७७.४	८०.५	८४.८	८७.७	८७०
(२१)	दे	७८.४६	१.१५	०.७२	०.३२	१.०२	१-८१	१.३०
मद्रास	अ	१३ ५०	७५.३	७६.६	७६.५	८४-१	८८ १	८८.४
(२२)	दे	७६.२०	० ८३	०.२८	०.३७	०.६५	१.६६	२ ०६
मसूलीपट्टम	अ	१६.४	७३.६	७६.७	८०.३	८५.२	८६.८	८७८
(१५)	दे	८१ ३३	०.१७०	०.१६	०.२६	०.४०	१.३४	४.३३
गोपालपुर	अ	१६.२३	७०.०	७४ ७	७८ ३	८१.६	८४.१	८३.७
(१)	दे	८४.६८	०.२३	०.४३	०.५६	०.७३	२.०१	५.७६
रंगून	अ	१६.५६	७४.७	७७.३	८१.२	८५.०	८२.२	७६.५
(५७)	दे	६६ २०	०.११	०.२३	०.१६	१.७४	११.७३	१८.३०
मैदान के नगर								
टांगू	अ	१८.५६	७०.०	७४.७	७१.६	८६.७	८५.३	८१.२
(१२८)	दे	६६.४०	०.०६	०.१२	०.०८	१.६०	६.४१	१३.६१
मांडले	अ	२२.०	६८.८	७१-८	८२.१	८६.२	८८.५	८५.४
(२५०)	दे	६६.१५	०.०६	०.०८	०.२१	१.१६	५.२६	५-१७

जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वार्षिक	
८०-०	७६-१	७६-०	७६-५	७२-७	७२-३	७७-३	तापक्रम
८-६२	७-२७	२-४०	०-८१	०-३६	०-१०	२५-५३	वर्षा
७६-५	७६-४	७६-४	८७-७	७६-३	७६.४	७६-३	तापक्रम
२४-४६	१४-६१	१०-६३	१-७६	०-४७	०-०५	७३-६६	वर्षा
७८-३	७८-४	७८-२	७६-५	७७-६	७७-६	७६-२	तापक्रम
३४-२५	२०-१६	१२-५३	३-६२	०-६५	०-०६	१०४-१७	वर्षा
७७-१	७७-२	७७-६	७८-६	७६-८	७६-०	७६-६	तापक्रम
३७-३६	२२-८८	११-०६	७-६०	१-६७	०-४०	१२६-८२	वर्षा
७६-७	७७-४	७८-२	७६-१	७६-४	७८-६	७५-६	तापक्रम
२२-३६	१४-८६	७-३६	६-१२	३-८०	१-३२	११६-२०	वर्षा
८१-६	८४-४	८२-४	८०-६	७८-३	७६-०	८१-८	तापक्रम
१-७४	३-२[illegible]	३-४४	१०-०८	१५-७८	११-२३	५१-२३	वर्षा
८१-७	८४-४	८३-[illegible]	८८-८	७७-६	७५-७	८६-८	तापक्रम

स्थान	स्थिति	जनवरी	फ़रवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
सिल्चर	अ २४-५०	६३-८	६७·०	७३-६	७८·०	८०-१	८·-४
(१०४)	दे ९२-५१	०-६४	२·३२	७-६३	१३-५६	१५-७६	२०-३६
कलकत्ता	अ २२-३२	६५·२	७०·३	७६·३	८५·०	८५ ७	८४-५
(२१)	दे ८८-२६	० २६	१-०२	४·१४	१ ५४	५ ६०	११-०४
बर्दवान	अ २३-२०	६५ ७	७०·०	८०-४	८६·७	८६-५	८४-६
(६६)	दे ८७-५५	०·३८	०·८६	१ २४	२-२०	५ ५६	१०-१७
पटना	अ २५-३८	६० ८	६५ ३	७६ ६	८६ २	८८ ०	८६·५
(१८३)	दे ८५-१२	०-२७	०-५३	०·३५	०·३०	१-७०	७-७६
बनारस	अ २५-२५	६०-०	६५-३	७६ ६	८६ ८	८१-३	६८-४
(२६७)	दे ८३·०	०-७४	०-३३	०-१५	०·५६	०-५६	५-४५
प्रयाग	अ २५-३०	५६-५	६५-६	७६·८	८७-५	६२ ५	६०-८
(३३६)	दे ८१-५५	०-८२	०·४८	०-३८	०-१४	०-२६	५-०६
लखनऊ	अ २६ ५३	५८·७	६३ ७	७५·२	८६-४	६०·६	६०-२
(३६८)	दे ८०-५२	०-६०	०-४५	०-३२	०१-१	०-६१	५ ३४
आगरा	अ २७-१८	६० १	६४-८	७६-७	८८ १	६४-०	६३ ४
(५५५)	दे ७७-५७	०-५५	०-३३	०-२५	०-१६	०-६४	२-२८
मेरठ	अ २६-०	५६-०	६०-१	७१-१	८२-७	८८-४	८६-४
(७१८)	दे ७७-३८	१०-१	०·८३	०-६३	०-३४	०-७०	३-१३
दिल्ली	अ २८-३८	५७·६	६२-२	७४-१	६८-२	६१-७	६१-२
(७१८)	दे ७७-१०	१-०२	०-६१	०-६७	०-३५	०-७१	३-१८
लाहौर	अ ३१-३५	५३-०	५७ ३	६६-०	८०-६	८८-६	६३-०
(७०२)	दे ७४-२०	०-८७	१ १३	०-८६	०·६०	०-८०	१-८३
मुलतान	अ ३०-१०	५५-६	५६-८	७१-६	८२-६	६१-४	६४-६
(४२०)	दे ७१-३२	०-३६	०-३६	०-४२	७७-२	०-३३	० ४३
फ़ैज़ाबाद	अ २८ २०	५७-३	६२-४	७४-५	८५-५	६४-२	६७-७
(१८६)	दे ६८-२८	०-२८	०-२७	०-२५	०-१७	०-१५	०-१०

जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वार्षिक	
८२-६	८२-४	८१-७	७९-७	७३-१	६६-१	७५-४	तापक्रम
१९-९८	१८-७९	१३-९५	६-४०	१-३१	२-५४	१२१-४३	वर्षा
८३-०	८२-४	८२-६	८०-०	७२-४	६५-३	७७-९	तापक्रम
१२-३१	१२-६९	१०-४०	३-८७	०-६२	०-३१	६०-८३	वर्षा
८३-६	८२-८	८३-१	८०-७	७३-०	६६-३	७८-१	तापक्रम
१२-३२	११-४९	८-५९	३-९३	०-६४	०-१३	५७-५४	वर्षा
८३-५	८३-१	८२-३	७९-५	७०-१	६२-२	७१-१	तापक्रम
११-४१	१०-७२	७-८२	३-८९	०-२०	०-१४	४४-५४	वर्षा
८४-१	८३-१	८३-०	७७-९	६७-८	६०-२	७२-२	तापक्रम
१२-५५	११-१९	६-५४	२-२४	०-१७	०-१७	४०-५९	वर्षा
८४-५	८३-२	८३-०	७७-६	६७-५	५९-८	७३-३	तापक्रम
१२-२४	१०-८८	६-३२	२-४०	०-२५	०-२३	३९-५२	वर्षा
८५-३	८३-४	८३-२	७७-०	६६-३	५८-९	७६-६	तापक्रम
११-३९	११-३२	६-६१	१-३३	०-०८	०-४४	३९-२०	वर्षा
८६-०	८४-२	८४-२	७९-४	६८-७	६१-२	७८-४	तापक्रम
९-६७	७-११	४-४१	०-३९	०-०६	०-२९	२६-७०	वर्षा
८५-०	८३-२	८१-७	७४-७	६३-५	५६-७	७४-४	तापक्रम
९-३७	७-६४	४-५५	०-४३	०-०८	०-०४	२९-६२	वर्षा
८६-४	८४-५	८३-९	७८-५	६७-६	५९-६	७७-१	तापक्रम
८-३८	७-४४	४-४२	०-३९	०-१०	४-४३	२७-७०	वर्षा
८९-१	८७-१	८४-८	७५-७	६३-२	५४-६	७४-७	तापक्रम
६-६५	४-८८	२-१०	०-४३	०-११	०-४७	२०-७०	वर्षा
९२-७	९०-४	८८-०	७८-६	६६-१	५७-७	७७-५	तापक्रम
२-१९	१-६६	०-६०	०-०७	०-०६	०-२७	७-११	वर्षा
९५-०	९१-६	८८-८	७९-२	६७-५	५८-९	७९-३	तापक्रम
१-१८	१-१५	०-१९	०-०१	०-१०	०-१५	४-१०	वर्षा

स्थान	स्थिति	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
हैदराबाद सिन्ध	अ १८-०	६३-६	६७-१	७७-६	८६-२	९१-६	९१-७
(९६)	दे ७८-०	०-२४	०-२२	०-१०	०-०७	०-०१	०-४१
बीकानेर	अ २८-०	५९-२	६३-६	७६ ६	८८-४	९४-१	९४-७
(७७१)	दे ७३-१२	०-३८	०-२४	०-१८	०-१४	०-८४	१-६५
राजकोट	अ २७-२५	६६-८	७०-०	७७-४	८५-१	८९-२	८७-५
(४२९)	दे ७९-४१	०-०५	०-१०	०-०१	०-०१	०-३१	५-२१
अहमदाबाद	अ १९-१२	७०-३	७४-०	८२-७	९१-२	९२-९	८९-४
(१६६)	दे ७४-३४	०-०२	०-१०	०-१०	०-०३	०-४६	३-९४
पठार के नगर							
अकोला	अ २०-४४	६८-५	७३-७	८१-०	९०-१	९३-३	८३-२
(९३०)	दे ७६-५७	०-४५	०-१८	०-४३	०-१६	० ३१	५-१२
जबलपुर	अ २३-१२	६१-८	६६-८	७६-५	८३-३	९१-९	८५-७
(१,३२७)	दे ७९-५९	०-७२	०-५२	०-४८	०-२२	०-४७	८-५३
नागपुर	अ २१-१२	६८-८	२७-३	८२-४	९० ६	९४-५	८६-०
(१,०२५)	दे ७९-४	०-५८	०-४२	०-५७	०-४६	०-६८	८-४४
रायपुर	अ २१-३८	६७-७	७३-६	८१-९	९२-३	९३-३	८६ ०
(९७०)	दे ८१-४७	०-३८	०-३३	०-५९	०-५९	०-७६	६-३८
अहमदनगर	अ २३-५	६७-१	७१-३	७७-५	८२-५	८३-८	७९-२
(२,१५२)	दे ७२-३५	०-२७	०-१२	०-१५	०-४०	१-१६	४-७३
पूना	अ १८-२५	६९-८	७३-९	८०-१	८३-९	८३-८	७८ ७
(१,८४०)	दे ७३-५२	०-१८	०-०५	०-१३	०-३८	१-४५	५ ३५
शोलापुर	अ १७-३७	७२-७	७७-७	८४-२	८८-४	८८-९	८१-८
(१,५९०)	दे ७५-५४	०-०६	०-०८	०-२९	०-६३	१-०९	४-४१
बेलगाँव	अ १५-५०	६९-८	७२-०	७७-५	७९-२	७८-०	७२-८
(२,५३९)	दे ७४-३२	०-०६	०-०३	०-४९	२-०५	२-७३	९-३२

जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नव०	दिसम्बर	वार्षिक	
८८-६	८६-०	८६-०	८२-१	७१-४	६५-०	७९-९	तापक्रम
२-६१	२-७७	०-५४	०-००	०-१०	०-०५	७-२२	वर्षा
९०-४	८७ ३	८७-४	८२-४	७०-५	६१-१	७९-६	तापक्रम
३-२९	३-१४	१-०८	०-०९	०-०६	०-१८	११-२७	वर्षा
८१-७	८०-६	८०-८	८०-४	७४-१	६८-४	७८-५	तापक्रम
१०-८९	६-४१	३-७५	०-६७	०-३३	० ०६	२७-८०	वर्षा
८३-७	८३-३	८३-५	८४-३	७८-३	७२-९	८२-[illegible]	तापक्रम
११-४९	८२-६	४-४२	०-५५	०-१९	०-०५	२९-५२	वर्षा
८०-६	७८-९	७९-७	७७-९	७१-७	६६-८	७९-२	तापक्रम
८-७४	६-४८	६-२४	२-१४	०-४४	०-५८	३१-१७	वर्षा
७९-९	७८-०	७९-०	७४-८	६१-६	६०-१	७५-६	तापक्रम
१८-८२	१५-१३	८-३८	२-५५	०-१७	०-२६	५५-४५	वर्षा
८०-४	७९-४	८०-४	७८-४	७२-२	६७-१	७९-९	तापक्रम
१३-४९	९-७९	८-११	२-१४	०-५१	८-४६	४५-६२	वर्षा
७९-६	७९-०	८०-३	७८-१	७१-५	६६-०	७९-०	तापक्रम
१४-४९	१२-७१	७-७५	२-०९	०-६२	०-२०	५०-२७	वर्षा
७६-२	७४-९	७४-५	७५-१	७०-५	६७-१	७५-०	तापक्रम
३-०३	३-६०	६-७५	३-१२	०-८९	०-४४	२४-२६	वर्षा
७४-९	७३-७	७४-४	७६-२	७२-५	६८-९	७५-९	तापक्रम
६-९०	४-०३	४-४३	४-११	०-८५	०-२०	२८-३६	वर्षा
७८-९	७७-७	७७-३	७७-७	७६-६	७१-३	७९-१	तापक्रम
४-१९	६-५२	७-७७	३-६२	०-८७	०-३०	२८-७४	वर्षा
७०-१	६९-७	७०-४	७२-९	७०-९	६९-३	७२-८	तापक्रम
१५-३७	९-१५	४-०५	५-०९	१३-२	०-२५	४९-११	वर्षा

स्थान		स्थिति	जनवरी	फ़रवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
हैदराबाद द०	अ	२५-३०	७०-४	७७-१	८३-१	८८-०	६०-१	८२-६
(१,६६०)	दे	६८-२२	०-०५	०-१२	०-५७	०-७३	०-७८	४-४४
बङ्गलोर	अ	१२-७५	६५-५	७२-०	७६-७	७६-६	७८-५	७४-०
(३,०२१)	दे	७७-३०	०-०६	०-२२	०-७२	१-१६	४-५३	३-१३
विलारी	अ	१५-१२	७३-२	६७-६	८५-६	८६-२	८६-०	८३-४
(१.४५)	दे	७६-५०	०-१०	०-०३	०-४२	०-८३	१-९३	१.८४

लाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नव०	दिसम्बर	वार्षिक	
७७-६	७७.१	७७-४	७६-६	७२-३	६६-१	५८-५	तापक्रम
६-२२	६-७६	७-१०	२-८६	१-५३	०-१७	३१-५५	वर्षा
७२-०	७१-८	७१-८	७१-८	६६-६	६५-५	७२-८	तापक्रम
४-१३	६-००	७-११	६-६४	२-६१	०-३६	३६-८३	वर्षा
८०-६	८०-६	८०-२	७६-१	७५-३	७२-५	८०-८	तापक्रम
१-४१	२-१८	४-१२	४-०४	१-२०	०-२०	१८-३०	वर्षा

तालिका नं० ४

भारतवर्ष के प्रसिद्ध स्थानों की दूरी (मीलों में)

समुद्री मार्ग से दूरी

बम्बई—अदन	१६५०	कलकत्ता—डेलेड	५७३६
,,—बन्दर अब्बास	९७०	,,—अदन	३३५३
,,—बसरा	१४९७	,,—बसरा	३५८१
,,—कलकत्ता	२१०६	,,—बम्बई	२१०६
,,—कोलम्बो	८०३	,,—कोलम्बो	१२३१
,,—डरबन	३८२१	,—डरबन	४७६१
,,—कराची	४८०	,,—कराची	२५६६
,,—लण्डन	६२६२	,,—लण्डन	७९५४
,,—मार्सेल्स	४५५३	,,—मार्सेल्स	६२ ७
,,—प्लीमथ	६०००	,,—प्लीमथ	७७००
,,—पोर्टसईद	३०४७	,,—पोर्टसईद	३७४१
,,—सिंगापूर	२४५०	,,—सिंगापूर	१६३०
,,—रंगून	२१०७	,,—रंगून	७३७
,,—हांगकांग	३८४१	,,—हाँगकाँग	४३५३
,,—शंघाई	३९१०	,,—शंघाई	५२२६
,,—सिडनी	६४३१	,,—सिडनी	५८४०
,,—जैंजीबार	२५०९		
,,—एडेलेड	५३५४		

तालिका नं० ५

रेल-मार्ग से दूरी

कलकत्ता—शिमला	११२६ (ई०)	बम्बई—लखनऊ	८८५
	१०८९ (ओ०)	,,—सिकन्दराबाद	४९७
,,—दिल्ली	९०३	,,—मद्रास	७९४
,,—बम्बई	१३४७ (ई०)	,,—बङ्गलोर	७४४ पू० लों०
	१२२३ (बी०)	,,—	६९२ वा०
,,—लाहौर	१२१३ (ई०)	दिल्ली—शिमला	२२३
	११७६ (ओ०)	,,—लखनऊ	३१५
,,—पेशावर	१५०१ (ई०)	,,—दिल्ली-आगरा	१२२
	१४६३ (बी०)	,,—कानपुर	२७०
बम्बई—शिमला	११८९ (जी०)	,,—मद्रास	१५६९
	१०९८ (बी०)	,,—कोलम्बो	२२२३
,,—कराची	९९२	,,—कराची	७८१ (बी०)
,,—क्वेटा	१३०७		९०७ (ना०)
,,—दिल्ली	९५७ (जी०)	,,—क्वेटा	८५२
	८६५ (बी०)	,,—लाहौर	३१०
,,—लाहौर	१२५४ (जी०)	,,—	
	२११६ (बी०)		
,,—रावलपिंडी	१४३४ (बी०)	दिल्ली—रावलपिंडी	४५७
	१३४२ (जी०)	,,—पेशावर	५८५
,,—पेशावर	१५४२ (जी०)	रंगून मांडले	३८६
	१४५० (बी०)	,,—मिचीना	७२५

ई० = ईस्ट इण्डियन बी० = बी० बी० एण्ड सी० आई, जी० = जी० आई० पी०, ओ = अवध रुहेलखंड, ना० = नार्थ वेस्टर्न, पू० = पूना लोंडा होकर, वा — वाड़ी रायचूर होकर।

तालिका

भारतवर्ष के प्रसिद्ध

(सिर्फ ४० लाख रुपये से अधिक खर्च वाले शामिल किये गये हैं)

नहरों के नाम	प्रान्त	मुख्य नहरें और शाखायें मील
आगरा की नहर	संयुक्त प्रान्त	१००
बेतवा की नहर	"	१६८
कावेरी डेल्टा प्रणाली	मद्रास	१,५०७
घसान नहर	संयुक्त प्रान्त	१०७
पूर्वी यमुना नहर	"	१२६
पूर्वी नारा के काम	(बम्बई सिन्ध)	६३१
गंगा की नहर	संयुक्त प्रान्त	५६८
घाघरा की नहर	"	६८
गोदावरी की नहर	बम्बई	११६
गोदावरी डेल्टा-प्रणाली	मद्रास	५११
जमराव की नहर	(बम्बई सिन्ध)	१०६
केन— नहर	संयुक्त प्रान्त	८६
कृष्णा की डेल्टा-प्रणाली	मद्रास	३४६
करनाल कटापा की नहर	"	४१४
चनाव की नीची नहर	पंजाब	४२०
गंगा की नीची नहर	संयुक्त प्रान्त	६६२
झेलम की नीची नहर	पंजाब	१८६
स्वात नदी की नीची नहर	उ० प० सीमाप्रान्त	२२
महानदी की नहर	मध्य प्रान्त	१०५
मांडले की नहर	ब्रह्मा	४०
मिदनापुर की नहर	बंगाल	७०

नं० ६

सिंचाई की नहरें

उपशाखायें और बम्बे	लगी हुई पूंजी	आमदनी
मील	रु०	रु०
९०२	१,२२,८५,९१८	८,८८,४६०
५६८	८३,०१,६३८	४,०६,६१२
१,९७१	४५,५२,०९७	११,१४,७४८
१८९	५०,८७,३१७	१,५२,६३९
७९५	५२,८७,८८५	२१,८९,३६६
	७३,५१,४३९	३,६७,२२७
३,१९९	३,९७,८३,११३	६२,८८,३७०
११३	४०,८१,८१९	६०,८१५
५८	१,०१,६०,६७०	३८१,५६२
१,९९४	१,५६,४८,१७९	४०,१२,११४
४९३	०.४४,७९२	३,९४,६३९
२५८	६०,०६,०१८	२,४४,१३३
२,१८६	१,६६,७१ ७७५	३७,२८,०१९
२८९	२,३३,६६,४८४	३,५७,७०३
२,२४२	३०,६४,७८४	१३,९३,२८२
३,१३४	४,१७,५०,८५५	४३,५९,९३८
९९२	१,७३ ३०,४७३	४३,८२,६४३
१४७	४२,९२,८२९	५,३९.०३३
४६९	१,००,२१,२८६	५३ = ४
१२२	५७,१४,३८१	१.४४,०९३

नहरों के नाम	प्रान्त	मुख्य नहरें और शाखायें
मान की नहर	ब्रह्मा	५४
मूथा की नहरें	बम्बई दक्षिण और गुजरात	६८
नीरा की नहर	,, ,, ,, ,,	१०७
नीरा के दाहिने किनारे की नहर	,, ,, ,, ,,	—
उड़ीसा का बाँध	बिहार और उड़ीसा	३२७
पिनर नदी की नहरें	मद्रास	३०
पेरियर नहर	,,	१४५
परवरा की नहरें	बम्बई दक्षिण और गुजरात	३३
उशीकुल्य नहर	मद्रास	८०
श्वेबो की नहर	ब्रह्मा	७६
सरहिन्द की नहर	पञ्जाब	३१८
सोननहर	बिहार और उड़ीसा	३५७
तेंदुला की नहर	मध्य प्रान्त	६८
त्रिवेनी की नहर	बिहार और उड़ीसा	६१
ट्रिपिल—नहरें	पञ्जाब	४३३
ऊपरी बड़ी द्वाब नहर	,,	३२४
,, स्वात की नहर	उत्तरी प० सीमाप्रान्त	४५
वानगंगा की नहर	मध्य प्रान्त	२८
पश्चिमी यमुना की नहर सिरसा की शाख को लेते हुए	पञ्जाब	२६४
यूकी नहर	ब्रह्मा	५३

उपशाखायें और बम्बे	लगी हुई पूँजी	आमदनी
मील	रु०	रु०
२२५	८४,६६,४६०	२,३६,१३६
११४	५६,७७,८१५	३,०५,१३८
८४	६५,००,६५३	३,५३,०६६
१३६	६५.६३,३१७	६,४६,६०७
—	१,६७,२३,४३६	—
१,२६४	२,७०,८०,७२३	६,१५,७५६
४७७	६७ ३३,१४३	५, ८५, ८५३
१०६	१,०६,७८,५७६	८,०२,८८८
१३	१,०५,०४,३६६	१४,७६४
१५१	५१,२०,८७५	१,८६,७६४
२६३	६१,१३,५४६	६,५६,२५१
१,६१३	२,५८,२६,७००	४७,:६,४७५
१,२३५	२,६८ ८८,२५७	२१,३६,३७१
२६२	६६,६६,६१६	३,५६१
१७३	८०,३८,६१८	२,४५,६१३
३ ००६	१०,२४,६६,४५५	६३,६७,४२१
१,५६१	२,२४,५३,५६४	५१,४८,२७४
३०६	२,१५ ७०,३३२	४,७१,५२६
२२३	४१,८५,७३४	३०,१४२
१,७३४	१,७६,०४,४३३	३७,६४,२११
२००	५०,६७,१२६	६६,३६१

तालिका नं० ७

संगठित कारबार

सारे भारतवर्ष के कारबार में लगे हुए मनुष्यों की संख्या

	१९२१
चाय का काम	९,४७,०००
रुई कातने और बुनने की मिलों में	३,५०,०००
पाट (जूट) की मिलों में	२,८७,०००
कोयलों की खानों में	१,८१,०००

रेलवे के कारखाने	१,१२,०००
रुई का धुनना और दवाना	८३,०००
धातु और इञ्जीनियरिङ्ग के काम	८२,०००
ईंट और खपड़ों के कारखाने	७५,०००
आटा और चावल की मिलें	४६,०००
छापाखाने	४६,०००
काफी के पौधों के लगाने का काम	४०,०००
लोहे और फौलाद के कारखाने	३६ ०००
पेट्रोल साफ़ करने के कारखाने	३३,०००
पत्थर और संगमरमर की खाने	२५,००
चीनी के कारखाने	२२,००
सोने के खाने	२०,०००
डाक और बन्दरगाह के काम	२१,०००
लकड़ी चिरने की मिलें	२०,००
अफीम तम्बाकू और मसाले के कारखाने	२०,००
लोहे की खाने	१८,०००
चूने के भट्टे	१८,०००
अभ्रक के कारखाने	१८,०००
	१९२१
कुम्बक की खानें	१७,०००
रबर के काम	१७,०००
तेल की मिलों में	१६,०००
पीतल, टीन और तांबे के कारखाने	१४,०००
नमक	१३,०००
दूरी और नाल के कारखाने	१३,०००
गैस और बिजली के कारखाने	११,०००
चमड़े के कारखाने	११,०००
चमड़े के कारखाने	११,०००
लोहार के कारखाने	११,०००

तालिका ८

भारतीय सरकार का वार्षिक आय-व्यय

आय	रुपये
चुङ्गी (आयात-निर्यात कर)	५०,२२,००,०००
इनकम टैक्स	१७,००,००,०००
नमक	७,००,००,०००
अफीम	५,००,००,०००
विविध कर	२,२०,००,०००
रेल	३६,००,०००
सिंचाई	१२,००,०००
डाक और तार	६०,००,०००
सूद	३,००,००,०००
सरकारी प्रबन्ध	१,०१,००,०००
टकसाल और नोट	४,१५,००,०००
विनिमय (इक्सचेंज)	२०,००,०००
सिविल कारबार	१६,००,०००
विविध आय	८०,००,०००
फौज और छावनी आदि	३,००,००,०००
असाधारण	८०,००,०००
देशी राज्यों से कर	८०,००,०००
वन	२,१६,००,०००
कृषि	२३,०७,००,०००

व्यय	रुपये
फौज	६२,००,००,०००
सरकारी प्रबन्ध आदि	१२,००,००,०००
सरकारी काम	२,००,००,०००
कर्ज का सूद आदि	०६,००,००,०००
रेल	३३,००,००,०००
[illegible]	२०,००,०००

नमक आदि	७,००,००००
टकसाल और नोट	७०,००,०००
डाक और तार	१५,००,०००
कर	४,२५,००,०००
विविध	४,१५,००,०००
असाधारण	२०,००,०००
शिक्षा	१०,००,००,०००
अस्पताल आदि	५,००,००,०००
कचहरी, पुलिस, जेल	१८,००,००,०००

उक्त संख्या स्थिर नहीं है। प्रति वर्ष उसमें कुछ घटी-बढ़ी होती है।

तालिका भारतवर्ष की

	गाय बैल	भैंस भैंसा	बछड़े (पड़िया पड़वा)	भेड़
मद्रास	८२,६४,७५८	२४,७६,७८३	४३,८५,६३६	८२,३४,२६२
बम्बई	४६,२०,४१८	१० ६७,०६२	१८,५६,४८६	१६,८८,८८८
संयुक्तप्रांत	१ ८४,६६,६४५	४२,८५,७२१	६५,५४,०५४	२७,३८,०४८
पंजाब	७१,५६,५३६	२४,००,७४६	३६,८१,८६१	४०,८४,६५१
ब्रह्मा	२८,००,५७१	७,५८,४२८	१४,११,४०२	१६,००५
मध्य प्रान्त और बरार	६६,६६,८०५	१०,५६,६३४	२३,६४,२११	४,८८,४८६
आसाम	२२,४६,४०३	२१,६६,००३	१५,०८,३८६	१२,६०६
उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रान्त	६,३०,६६१	१,३३,४३३	१२,६०,१८४	३३,७७१
अजमेर-मेवाड़	१,५८,४६८	२८,३६८	४१,६३८	२,०७,०६६
कुर्ग	६१,३०३	१६,६२१	१६,०६६	६२६
देशी राज्य	५६,८१,६३४	१२,४८,६३३	२४,१६,१६६	...

नं० ४
पशु-सम्पति

बकरी	घोड़े टट्टू गदहे खच्चर	ऊँट	हल	गाड़ी
५१, ८१, ६३, ६४०, २३६ २१८ ग० ११, २७, ४६, ७०१ ५,२४ ०४१				

,१६, ८६७ ग०

२७, ८०, ७६८१,६४, २३०६८६ ग० १,०२,०६५११,६७,७१

१,३४,२५६ ख०

८७,८७५५३५,८१ ६७५१५,६५६ ग० २२०५६३५१, ८७४६५७, ४६, २६

२.११,७५६ ख०

५४.७१.६६२१,८७,२०४२५,४१६ ग० २,२६, ७६६२०, ७२. १०५२, ६१

५५६

५.०५,६६१ ख०

१,१२,१७६ ४६ ५६८१,१६४ ग० १४,०२,६२२५,११ २००

६ ख०

१४ ५५,६०२१ १२,३८६ ६३८ ग० ५२११२,१५,५५५ १७८२६

३१,७२६ ख०

४,२८,६४७१०,२०० ८ग० ८८१ ४१३ १२, १६८

३१ख०

४,३४,४८८२४,४६२ ६५७६ग० १६, २६२, १, ८४, ६४४४५६७

८५,१७० ख०

२५,५६० २, १२७ ४,५६५ ग० १, १४२, ३५, ६६६ १०, ०६४

४ ख०

१. ७५५ ४०१ २७० ख०...२६, ६७६ ७१५

६४,५४,६३५६२,३६७१, २१, ८३५ ४३, ०६१ १२ २७, १८, ३२१, ६४१

प्रश्नमाला

पृष्ठ १—५०

१—भारत वर्ष का एक नक्शा खींचो और उसमें स्थल-सीमा बनाने वाले सभी देशों के नाम लिखो। पैमाने से नाप कर यह भी बतलाओ कि प्रत्येक देश कितनी दूर (मील) तक भारतवर्ष के साथ सीमा बनाता है?

२—उन सब प्रान्तों और प्रधान शहरों और नदियों के नाम लिखो जो कर्क रेखा के उत्तर में स्थित हैं। कर्क रेखा हिन्दुस्तान के किन-किन पर्वतों और नदियों को काटती है।

३—जल स्थल और हवाई मार्गों को ध्यान में रख कर भारतवर्ष और इङ्गलैंड की भौगोलिक स्थिति की तुलना करो।

४—भारतवर्ष के मुख्य प्राकृतिक विभाग क्या हैं। प्रत्येक की विशेषता पर

सचित्र वर्णन करो।

५—भाबर, तराई, कछार और दून से क्या अर्थ समझते हो?

६—हिमालय के दर्रों ने भारतवर्ष के इतिहास पर क्या प्रभाव डाला है?

७—कुमारी अन्तरीप से नंगा पर्वत तक एक कल्पित यात्रा का वर्णन लिखो।

८—हिमालय प्रदेश की नदियों से दक्षिण भारत की नदियों की तुलना करो।

९—भारतवर्ष में खानज सम्पत्ति की बहुतायत होने का कारण क्या है?

१०—ताजमहल और दक्षिण भारत के प्रसिद्ध मन्दिरों के बनाने में भौगोलिक परिस्थित से किस प्रकार की सुविधा मिली है?

११—कोयला और पेट्रोलियम किस प्रदेश में अधिक पाया जाता है और क्यों।

१२—भारतवर्ष के किन भागों में सब से अधिक उपजाऊ धरती मिलती है, वह किस प्रकार बनी है।

पृष्ठ—५०—१००

१३—भारतवर्ष में कई प्रकार की जलवायु क्यों है। सब से अधिक खुश्क और सब से अधिक नम भागों को एक नक्शे में अङ्कित करो।

१४—दक्षिण-पश्चिमी मानसून से किन-किन भागों में प्रबल वर्षा होती है। किन-किन भागों में दूसरी मानसून के वर्षा होती है और क्यों?

१५—गर्मी की मानसून किन-भागों में सब से अधिक देर से पहुँचती है। वहाँ की वर्षा पर इसका क्या फल होता है।

१६—भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न भागों में सिंचाई के क्या साधन हैं?

१७—पंजाब में सिंचाई की नहरों को इतनी सफलता क्यों मिलती है।

१८—पेरियार और स्वात नहरों के बनाने में बहुत अधिक कठिनाइयाँ क्यों हुईं।

१९—भारतवर्ष का नक्शा खींचो, उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की वनस्पति को अङ्कित करो।

२०—[illegible] की अध्याय में पर्वतीय वनस्पति और मैदान की वनस्पति में क्या भेद है। इसका क्या कारण है।

२१—चा, [illegible], और तम्बाकू की उत्पत्ति और जलवायु सम्बन्धी किन किन

सुविधाओं की आवश्यकता होती है ?

२२—चाय, जूट, नारियल, अफ़ीम और मसाले हिन्दुस्तान के किन भागों में पैदा होते हैं और क्यों ?

पृष्ठ १०१—२००

२३—भारत के फ़ौलाद और रुई के कारखानों पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

२४—कौन-कौन से छोटे कारखाने आज कल भारतवर्ष में बढ़ रहे हैं।

२५—भाषाओं के अनुसार भारतवर्ष किन-किन प्रान्तों में विभाजित किया जा सकता है ? भाषा सम्बन्धी प्रत्येक प्रान्त का संक्षिप्त वर्णन करो।

२६—दक्षिणी भारतवर्ष के प्राकृतिक प्रदेश क्या हैं।

२७—बिलोचिस्तान के कम आबादी होने का कारण क्या है।

२८—बोलन और खैबर दर्रे की तुलना करो।

२९—खैबर रेलवे का विस्तृत वर्णन करो।

३०—कम आबाद होने पर भी सीमा प्रान्त भारतवर्ष के इतिहास में भारी महत्व क्यों रखता है।

३१—सिन्ध और ब्रह्मपुत्र नदियों के बीच में जो पर्वतीय राज्य और ज़िले स्थित हैं उनका क्रमशः नाम लिखो।

३२—काश्मीर के भूमध्य, प्राकृतिक सम्पत्ति, मार्ग और उपज को ध्यान में रख कर एक लेख लिखो।

३३—नैपाल का एक नक़शा खींचो और उसमें एक प्रसिद्ध नगर नदियों और पर्वतों को अंकित करो।

३४—प्रयाग से काठमांडू पहुँचने के लिये सर्वोत्तम मार्ग क्या है।

३५—शिकम और भूटान की तुलना करो।

३६—ब्रह्मपुत्र की घाटी की जलवायु और उपज का वर्णन करो।

३७—आसाम, बंगाल रेलवे का महत्व क्या है ?

३८—चेरापूंजी में संसार भर में सबसे अधिक वर्षा क्यों होती है।

पृष्ठ २००—३००

३९—बंगाल प्रान्त के प्राकृतिक प्रदेशों का संक्षिप्त वर्णन लिखो।

४०—यदि हम हुगली से हिमालय तक सीधे मार्ग द्वारा यात्रा करें तो हमको

किस प्रकार की उपज और भू-रचना देखने को मिलेगी ?

४१—जूट के कारबार का विस्तार-पूर्वक वर्णन करो।

४२—कलकत्ते की उत्पत्ति और वृद्धि इतनी शीघ्रता के साथ किन कारणों से हुई है।

४३—बिहार-प्रान्त और संयुक्त प्रान्त की जलवायु और उपज में क्या अन्तर है।

४४—बिहार प्रान्त की खनिज सम्पत्ति किस प्रदेश में स्थित है ?

४५—टाटा नगर या जमशेदपुर का विस्तृत वर्णन करो।

४६—पटना प्राचीन समय से अब तक क्यों प्रसिद्ध रहा है।

४७—उड़ीसा की प्राकृतिक सीमाएँ क्या हैं।

४८—इस प्रान्त के प्रधान नगर कौन-कौन हैं और वे क्यों प्रसिद्ध हैं।

४९—संयुक्त प्रान्त में प्रधान प्राकृतिक विभाग कौन-कौन से हैं ?

५०—इस प्रान्त के पश्चिमी भागों में सिंचाई की क्यों जरूरत पड़ती है।

५१—संयुक्त प्रान्त का कौन-सा भाग पठार प्रदेश में स्थित है।

५२—इस प्रान्त के उन जिलों को एक नक्शे में अंकित करो जो शक्कर, ऊनी समान, कलई के बर्तन, रेशम और अफ़ीम के कारबार के लिये प्रसिद्ध हैं।

५३—संयुक्त प्रान्त की रेलों का विवरण एक नक्शे के साथ लिखो।

५४—क्या कारण है कि पंजाब की रेलें नदियों के समीप बनी हैं।

५५—व्यापारिक महत्व की दृष्टि से सिन्ध और गंगा के मैदानों में क्या तुलना करो।

५६—बम्बई प्रान्त में कौन से प्राकृतिक प्रदेश शामिल हैं ?

५७—सिन्ध का भौगोलिक सम्बन्ध किस प्रान्त के साथ है ?

५८—नई नहरें के खुल जाने से सिन्ध प्रान्त पर क्या असर पड़ेगा ?

५९—गुजरात की उपज क्या है ?

६०—पश्चिमी तटीय प्रदेश और पठार प्रदेश की उपज, जलवायु और आबादी का संक्षिप्त वर्णन करो।

६१—बम्बई, अहमदाबाद और शोलापुर में पुतली घरों की भरमार क्यों है।

६२—हैदराबाद राज्य की प्राकृतिक सम्पत्ति क्या है ? यहाँ के निवासियों का संक्षिप्त वर्णन करो।